

अर्पण

मनहर छंद

परम उपकारी गुनी सरल स्वाभाव धरि।
 महान् तपस्वी जपी शुद्ध आचरन है ॥
 संसार के पिना जेष्ट संयमें पूजीता ॥
 पायो आपही के प्रसाद ज्ञान तप धन है।
 आपके सहाय रचे ग्रंथ भये प्रसार ॥
 भयो प्रसिद्ध हैद्रावाद यह दक्खन है ॥
 श्रीकेवल ऋषिजी महाराजको अमाल शिशु
 अघाटार कथागार रची कगन अर्पन है।

अक्षर

मनहर छंद

कच्छ स्वच्छ देश भाय अष्ट कोटी सम्प्रदाय ॥
 मोटे पक्षे पूज्य श्री कर्म सिंह के चले हैं ॥
 शुद्धा चारी कविश्वर समीक्षी ज्ञानागरा ॥
 मुनिश्री नागचन्द्र ज्ञाना नन्दे खेले हैं ॥
 आपने याद दी कयारी किनर्नाता के अनुसारी ॥
 स्व बुद्धि ग्रंथ आधार यामे सम्बन्ध मेलें हैं ॥
 लिखी पोथी तहां पठाइले परशंस्था पीछी आइ ॥
 तालिये अभार ताको मानत अमोल है ॥

•

•

•

प्रस्तावना.

श्लोक—अष्टादश पुराणाय । व्यासस वचनं द्रव्यं ॥

परोपकाराय धर्मायः । पापाय पर पीडनं ॥

चोपाइ—सर्व बिस्व में प्रकट बात। धर्म से सुख पापसे दुःख पात
यों जान सूखेच्छुओं धर्म करो। पाप का नाम लेते ही डरे
परन्तु धर्म पाप का भेद । जानत कोइक यह बड़ी खेद
धर्म नाम ले पाप निपाय। धर्म को पाप जान छिटकाय॥
मनुष्य को अग्नि मांहे जलाय। नरमेध सोयज्ञ कहलाय
यज्ञका कर्ता स्वर्ग में जाय। यों जूलम करन धर्म दुच्छाय
जग भूषण नरको ही जलाय। धर्म माने यह आश्चर्य आय
तो क्या कहूं अन्यको लघु पाप। जो करते भोग ते संताप।
दुःखी बीमार को मारने मांय। कितने ही धर्म रहे मनाय
सिंह सर्प बिच्छु पट मल तांय। क्षुद्रि कहें मारे धर्म कहाय
यों छोटा धर्म रह केइ कर। जिससे दुःख पाते हैं अपर ॥
ताते केते कहें धर्म दुःख दाय। पाप ही से कहते सुख पाय
केते बने हैं नास्तिक मति । धर्म पाप सब झूठे कथी ॥
ऐसी भ्रमणा जग की देख। बोले व्यासजी कर्न विवेक

ता अनुसार गणधर महाराज । शास्त्र रचे सो तारे आज ॥
 जिन में पृथक् २ अधिकार । दुःख दायक जो पाप अठार ॥
 दृष्टांत भी पृथक् २ दिये । बहु सूत्री सो जाने रिये ॥ २७ ॥
 सर्व धर्मोच्छु को जानन काजा एकही ग्रंथ में साजा सो साज
 दृष्टांत से शीघ्र समझ में आया तालिये छत्तीस कथी कथाय
 कितनी मूल शास्त्र अनुसार । कितनी ग्रंथ से पढी सुनी धारा ॥
 क्षेत्र काल भाव समय के जोग । वा ग्रंथ ये बुद्धिके योग ॥
 छन्द बंध बनाया यह ग्रंथ परन्तु अशुद्धीयों रही अत्यन्त ॥
 पिंगल गण से यह है विरुद्धा कोविद कवी के भाव अशुद्ध ॥
 ज्यों शिशु प्रकट तें जवाना बोले तोतला अशुद्ध उमंगान ॥
 ताको शुद्ध करे प्रेमी सज्जनान्यों यह ग्रंथ मानो कवी जन ॥
 शिशु आप को जान अजाना हैं सो मत्त सुधारो करुणा आन
 यह विज्ञासि पंडितों से करी ताके सनर्पण पोथी यह धरी ॥
 पाठ को ! पढीये इस दत्त चित्तायत्ना से सोधी ग्रहण करो हित
 मुरोल मति ये अवगुण त्याग । अघोद्वार कीजो महाभाग ॥
 येही नभ्र अमोलक अरजी मान ना तो है आपकी नरजी ॥
 कथक पाठक को आशय प्रमाना फल निश्चय होवेगा सुजान

ग्रंथ रचिता का संक्षिप्त जीवन.

इंदुविजय-छंद.

मरुस्थल देश के मेरुत शहर में श्रेष्ठ कस्तूर चंदजीधन धारी ।
दयोपार काज आये मालये में आसटे में रहे परनी संगारी ॥
चार पुत्र तज सगे अकस्मानुसो। परनी जयाराथाइदीक्षाधारी।
बड़े अष्टादश संयम पाल सो। पहोंनी स्वर्ग में आरम उछारी ।
माके मुनिये पुत्र केवल चंदारहे सो शहर भोपाल में आइ ॥
मोक्ष मार्गी का प्रतिक्रमण । आदिपदे तान के मत सांइ ॥
धर्म के स्थान देगे हिंमकृत्या। मात्र मति से सो न रुचाइ ॥
पुण्य जोग तरो माधु मार्गी के। माधु कुंवरजीकपिपथार्थइ ॥
मुन सटोपमय जानदयाधर्माधर्मका ज्ञान पठण जयारीया
दयाल वेगमय न ज भये दीक्षाको। यलात्कार सज्जनमोहमरीया
पुत्र पालन कान लक्ष्मीमगा। चले मागवाड रतलाम उतराया
तदा। मिले श्रावक कस्तूर चंदजी। नमण स जोड प्रहसन धारी
सो लाये पुण्य उदय सागर दिग। विवहाकीयान दीनी। दर्शाने
पुत्र कस्मायदेगो। वनदयनो। दुल। विवयाला किम्वीकारी।
मुन केवलचंद दी घाग इहचंद। आये भोपाल धर्मकनारी।
उर्ध्व। सो नेनार्ल। म के चेत मोयरी। म यये वये दीक्षा लीनी ॥
। दि। २३ दे श्री मुदा रूपी जीका। ज्ञान पदे फिर नयन्याकीनी

ग्रन्थ प्रसिद्ध कर्ता का संक्षिप्त

जीवन चरित्र.

—*—
मनहर—छंद.

लाला राम नारायण, के पुत्र सुखदेव सहाय ॥
धर्म ज्ञान नीती दया लक्ष्मी से सोभावे हैं ॥
अम्रवाल वंश में अवतंस जवेरी में श्रेय
लख्खो रूपे लेन देन दरबार में थावे हे ॥
संसारिक कार्यों माहोलख्खो रूपे खरच करे ॥
स्वजन पर जन को सो शक्ति सर पोपावे हैं ॥
दान शाला चलत मिलत सदायत तहां ॥
“राजा बाहदर” पदवी सिरकार से पाये हैं ॥ १ ॥
रहते दिल्ली के पास महेंद्रगढ़ ग्राम मांहे ॥
उल्लासो वीस पोष पुनम जन्म पावे हैं ॥
पुज्य श्री मनोहर दासजी के समुदाये ॥
मंगल सेन महाराजाके शिष्य सो कहावे हैं ॥
व्यापार करण आये (दक्षिण,) हैद्राबाद, मांये ॥

खरची हजारों रूपे मंदिर बंधाये है ॥
 स्वामी वत्सल प्रभावना आदिधर्मोन्नति करी ।
 साधु दर्शन विन जैन मंदिर में जावे हैं ॥ २ ॥
 वत्सल शाल पुण्य अधिक विशाल भये ॥
 तीन ठाने साधुजी महाराज यहां आये हैं ॥
 तपस्वी केवल ऋषीजी अमोलक ऋषिसंग ।
 सुखाऋषिजी क्षेत्र नवा यह बनाये हैं ॥
 चारकमानमांय दीनीलालाजी रहनेको जाय !
 ताते जैन धर्म सबगाम में फैलाये हैं ॥
 लालासुखदेव नितसुनेमुनिके व्याख्यान
 ताते सत्यधर्महीका तत्वहीये पाये हैं ३ ॥
 बने द्रष्ट श्रद्धावन्त शक्तिस्त्री करणी करंत ।
 महा लाभकारी ज्ञान दान जान लिया है ॥
 हजारों खरचरूपे छपाइ पुस्तक हजारों ।
 भारतके धर्मच्छुहों अमृत्य लानदिया है ॥
 तोपेनर्व धर्मीयांको कान्फरन्त शमाकरी ॥
 धर्मके सबत्वानेपोप यशजवर लिया है ॥
 ज्वालाप्रनाद जसे पुत्रग्ल है लालजीके ।
 सदाग्हो सुखी यह ऐसीका सफल जिया है ॥ ४ ॥





दक्षिण हैद्राबाद, के ज्ञान वृद्धि खाते से, जैन तत्त्वप्रकाश आदि ग्रंथों तथा मदन श्रष्ट के आदि चरितों वगैर, जो पुस्तकें प्राप्ति हुई थी उनकी प्रतों अब सिलक में नहीं रह ही हैं, इस लिये कोई भी साहेब मंगलकीतकलीफ, लेना नहीं

खुश—खबर

(१) ध्यान कल्प तरु . ग्रंथ की प्रतियावृत्ति और केवल मंद छंदावली की चतुर्थावृत्ति, फक्त इन दो पुस्तकों की थोड़ी सी प्रतों सिलक में हैं जिनों को चाहिये सो टपाल खर्च के चार आनेके स्टांपमेजकरनिम्नलिखितपते से मंगा लीजियेजा-

राजा बहादुर लालनेतराम, राम नारायण, जौहरी
चार कमान—(दक्षिण,) हैद्राबाद.

और

गुरुस्थान रोहण शत द्वारी

बाल ब्रह्मचारी भुनि श्री अमोलम्ब, ऋषिजी लिख रहे हैं यह ग्रंथ बहुत ही गहन (ऊँह) विषय का होने से इसे लिखने में बारह महीने व्यतीत होने का संभव है. फिर प्राप्ति हुई बाद जो टपाल खर्च के आठ आने के स्टांप के साथ थोड़ा गुणस्थान के नाम अर्थ सहित लिख कर ऊपर सिंगे हुये पते पर भेजेंगे उन को ही भेजा जायेगा.

“सम कीतोस्तव जय विजय चरित्र”

यह ग्रन्थ अति रसिक रास बाल ब्रह्मचारी भुनि श्री अमोलम्ब ऋषिजी रचिनहोले तक छापकर बाहिर पढ़नेवा लाई सो यहांकेज्ञानवृद्धि स्थानकेतरफसेअमन्य दियाजायगा.

मेमेटरी—ज्ञानवृद्धिसुता.

अधोद्धार कथागार ग्रंथकी विषयानुक्रमणी.

नं०	विषय	पृष्ठांक
१	मंहुला चरणम्	१
२	प्रयोगिका	२
३	तीन लोक का वर्णन	३
४	मन्य लोक का वर्णन	४
५	भरत देश का वर्णन	५
६	चवानगरी का वर्णन	६
७	पुष्पमद्र राज का वर्णन	७
८	पुष्प मद्र देश का वर्णन	८
९	कौटिल्य राज का वर्णन	९
१०	पाण्डो राज का वर्णन	१०
११	सुसुदि अयन का वर्णन	११
१२	कौटिल्य राज का वर्णन	१२
१३	नकुल का वर्णन	१३
१४	नकुल का वर्णन	१४
१५	नकुल का वर्णन	१५
१६	नकुल का वर्णन	१६
१७	नकुल का वर्णन	१७
१८	नकुल का वर्णन	१८
१९	नकुल का वर्णन	१९
२०	नकुल का वर्णन	२०
२१	नकुल का वर्णन	२१
२२	नकुल का वर्णन	२२
२३	नकुल का वर्णन	२३
२४	नकुल का वर्णन	२४
२५	नकुल का वर्णन	२५
२६	नकुल का वर्णन	२६
२७	नकुल का वर्णन	२७
२८	नकुल का वर्णन	२८
२९	नकुल का वर्णन	२९
३०	नकुल का वर्णन	३०

नं०	विषय	पृष्ठांक
३१	घन देवना का वर्णन	३१
३२	मठारह पाप का वर्णन	३२
३३	मठारह घन का वर्णन	३३
मजिल पहिला-धणातिपात पापोद्धार.		
पूर्वविभाग-हिमा		
३४	हिमा का वर्णन	३४
३५	सुप्र तुमार हिमा का वर्णन	३५
३६	हिमा के दुर्गुण	३६
३७	हिमा के तीन नाम अर्थयुक्त	३७
३८	हिमा के पाप में भेद	३८
३९	निर्दय पदोद्भय के भेद	३९
४०	पदोद्भय का हिमा का वर्णन	४०
४१	घन के लिये हिमा	४१
४२	घन के अर मांस के लिये हिमा	४२
४३	रक्त के और हड्डी के लिये हिमा	४३
४४	रक्त के लिये हिमा	४४
४५	पाप के लिये हिमा	४५
४६	हिमा के दृष्ट	४६
४७	विह्वला के भेद और हिमा	४७
४८	मठारह घन के और हिमा	४८
४९	हिमा के मठारह	४९
५०	कथा पहिली हिमा के अर्थयुक्त	५०
मजिल पहिला का उत्तर विभाग-दया		
५१	दया का वर्णन	५१

अधोद्वार कथागार ग्रंथ की विषयानुक्रमणी.

नेव	विषय	पृष्ठांक	नेव	विषय	पृष्ठांक
५२	दया के ६० नाम अर्थयुक्त	५४	विभाग—“सत्य”		
५३	दया पालने वाले कोना	५५	७३	सत्य के सर्वगुण	७८
५४	दया की महिमा	५८	७४	सत्य बचन के नाम	७९
५५	दया का महात्म	५९	७५	सत्यकोलिये व्याकरण के नियम	८५
५६	कथा दूसरी-दया के फलवताने- याली मेघरथराजा की	६०	७६	योग्य बचन के ८ धोल	८२
मंजिल दूसरा—मृगवाद्			७७	बचन के घन	८९
पापोद्धार पूर्वविभाग-श्रुत ६८			७८	सत्य बचन का प्रभाव	९०
६७	मृगवाद् का अर्थ	६८	७९	कथा चौथी-सत्य के फल वताने याली “सुनन्द की”	९१
६८	सुवानुमार श्रुत का चरणन	६८	मंजिल तीसरा अदत्तादान		
६९	श्रुत के दुर्गुण	६८	पापोद्धार पूर्वविभाग-चोरी		
६०	मृगवाद् के नाम अर्थयुक्त	६९	८०	अदत्तादान का अर्थ	१०१
६१	श्रुत पालने वाले के नाम	६९	८१	सुवानुमार चोरी का चरणन	१०१
६२	सत्य बचन भी श्रुत जैसा	७०	८२	अदत्तादान के दुर्गुण	१०१
६३	माटे श्रुत के ५ प्रकार	७१	८३	अदत्तादान के नाम अर्थयुक्त	१०२
६४	दोपल के लिये श्रुत	७१	८४	सुख चोरी और बड़ी चोरी	१०४
६५	चोर के लिये श्रुत	७२	८५	चोर की अठारह प्रसूनी	१०४
६६	अदत्त सु शीदक काल के श्रुत ७३		८६	सान चोर और चोरी से	
६७	पापक माला	७३	कुल		१०५
६८	कुड़ी माला और सत्ता माला	७५	८७	कथा पाँचवी-चोरी के फलवताने याली-प्रमत्त सेन चोर की	१०८
६९	रक्षक भाषण और मिथ्याउप देश	७६	मंजिल तीसरे का उत्तर वि-		
७०	सं. दे. लेन और मत्त भी भव त्यंजना	७७	“भाग-अचोरी”		
७१	श्रुत के दुर्गुण	७८	८८	सुवानुमार अदत्त के गुण	११४
७२	कथा तीसरी-श्रुत के फल वताने याली-चतुर्गुण की	७९	८९	अचोरी के नाम अर्थ युक्त	११४
मंजिल दूसरे का उत्तर			९०	चोरी व्यागने के प्रकार	११५
			९१	चोरी व्यागने के गुण	११६

क्र.	विषय	पृष्ठांक	नंबर	विषय	पृष्ठांक
१३	कथा छद्म-नामों के फल			मंजिल पांचवां का-उत्तर वि	
	बताने वालों चांगी शहर की ११७			भाग-"अकिंचन."	
मंजिल चौथा-मैथुन	पापो	११०		परिग्रह के नाम अर्थ युक्त १११	
दार पूर्व विभाग-"कुरील"		१११		निष्परिग्रही के मुग ११२	
१३ मैथुन का अर्थ	११४	११२		कथा दशमी-परिग्रह त्याग के फल	
१४ मैथुन का नाम अर्थ युक्त	११५	११३		बताने वालों-"व्यभिचारी शेट की ११३	
१५ मैथुन से पाप और दुःख	११६	मंजिल छद्म-क्रोध पापोदार			
१६ मैथुन का प्रभाव	११७	पूर्वविभाग-क्रोध			
१७ मैथुन से खुशियों	११८	११३ क्रोध के नाम अर्थ युक्त ११३			
१८ कथा सनका-मैथुन के फल यतता		११४ क्रोध के प्रकार ११४			
ने वाली कम "कुमार की" ११८		११५ क्रोध से दुःख ११४			
मंजिल चौथे का-उत्तरविभाग		११६ क्रोध से अर्थ दुर्गुण ११३			
"ब्रह्मचर्य"		११७ कथा इग्यारहों-क्रोध के फल			
१९ ब्रह्मचर्य के नाम अर्थ युक्त ११६		बताने वालों-वन्धुमति वन्धुदत्त की ११४			
१२० शेट की ३२ ओपना १२३		मंजिल छद्म का उत्तर विभा-			
१२१ शेट की १ बाड १२८		ग "क्षमा"			
१२२ ब्रह्मचर्य की महिमा १३१		१२० क्षमा करने की रीति १३८			
१२३ ब्रह्मचर्य का प्रभाव १३१		१२१ क्षमा करने की भावना १३९			
१२४ कथा आठवीं-ब्रह्मचर्य के फल य		१२२ क्षमा के फल १४३			
तने वाली-"सुदर्शन शेट की ११९		१२३ कथा बारहों-क्षमा के फल यताने			
मंजिल पांचवां-परिग्रह		यात्री खदेक मुनि की १४३			
पापोदार पूर्वविभाग-परिग्रह		मंजिल सानवा-मान पापोदार			
१२४ परिग्रह के नाम अर्थ युक्त		पूर्व विभाग-"अभिमान"			
१२५ परिग्रह के प्रकार १२८		१२३ मान के नाम अर्थ युक्त १२९			
१२६ परिग्रह का फल १२९		१२४ मान के ८ प्रकार १२९			
१२७ परिग्रह से दुःख १२९		१२५ मान के दुर्गुण १३१			
१२८ कथा नववीं-परिग्रह के फल यतता		१२६ मान का पराक्रम			
ने वाली-"मान" शेट की १२९					

क्र.सं.	विषय	पृष्ठांक	क्र.सं.	विषय	पृष्ठांक
१२३	कथा मेयो मान के फल मताने		१४३	राम बन्धन का कथन	२४८
	यात्रो मेमम सचयति की	११५	१४४	राम के भेद और लक्षण	२४९
	मंजिल मरगया का उतर		१४५	राम से दुःख-दुष्टान युक्त	२५०
	विभाग -- "विनय"		१४६	कथा उच्छासवी-राम का फल व	
१२४	मान की मर्दन करने का उपयोग	११६		मानेवाली पुण नंदी रजा की	२५१
१२५	मनुनादे दिने बाध	११७		मंजिल दशया का -उतर	
१२६	मनुना में गुण	११८		विभाग -- "वैराग्य"	२५२
१२७	कथा शत्रुयो-विनय के फल वना		१४७	रामो कथन और भावना	२५३
	मे बाधो- मदा मेमम की	११८	१४८	वैराग्य में गुण	२५४
	मंजिल भाटया-मारा पापो-		१४९	कथा बीम मो-वैराग्य के फल व	
	कार पुर्णविभाग कथन			ताने व ने "गुणयो शत्रु राभावी"	२५५
१२८	म दा के न न भाग युक्त	११९		मंजिल उपायया-द्वेष पापो-	
१२९	कथन के फल	१२०		कार पुर्णविभाग-द्वेष	२५६
१३०	कथा मंजिल उपायया के फल व		१५०	द्वेष में लुब्धकान	२५७
	ताने वाया मोमम ममम के	१२०	१५१	द्वेष के प्रकार	२५८
	मंजिल मरगया-मोम पापोका		१५२	द्वेष में दुःख	२५९
	द्वेष विभाग-मोम	२५८	१५३	कथा ईश्वरयो-द्वेष के फल	२६०
१३१	मान के नम मर्दन युक्त	१२१		मे वाया पुण्डित कोटकाद की	२६०
१३२	मान में दुःख	१२२		मंजिल वायवा-का-उतर वि.	
१३३	कथा मरगया-मोम के दुःख			भाग -- "ममभाग"	२६१
	मे व नी की मोम ममम की	१२३	१५४	ममभाग ध्यान करने की विधि	२६२
	मंजिल मरगया का-उतर वि.		१५५	मममयी की भावना और विचार	२६३
	भाग -- "मंजिल"		१५६	कथा वायोवायी-मोम भाग के फल	
१३४	मान के मर्दन की विधि	१२४		कथाने वायोदमरेत मुंमगायरी	२६४
१३५	मान की मोम ममम	१२५		मंजिल वायवा-कथन पापो-	
१३६	कथा मरगया-मोम के फल			कार पुर्णविभाग कथन	२६५
	मे व नी की मोम ममम की	१२६	१५७	कथन में वा वायवा	२६६
	मंजिल दशया-मारा पापो-		१५८	कथन का कथन	२६७
	कार पुर्णविभाग-भाग	२६५	१५९	कथन के फल	२६८
			१६०	कथा मेमम की-मेम के फल वना	

नं०	विषय	पृष्ठं	नं०	विषय	पृष्ठं
	ने वाली चर्चा में निबोधी	२२२		विभाग "गंभीर्यता" ... ३२२	
	मंजिल चारवा का उत्तर वि-		१३३	गंभीर्यता धारण करने की रीती	३२२
	भाग—"सम्प"	२२२	१३४	क्या अठावीसकी गंभीर्यता के फल	
१२१	मन्त्र में सुख	२२२		बनाने वाला-परदेशी राजाकी	३२४
१२०	सम्प के लिये दुःखले	२२३		मंजिल पंद्रवा-परपरिवाद-	
१२१	क्या चौबीसवीं-सम्प के फल बता			पापोद्धार पूर्वविभाग—निंदा	
	ने वाली-धनदत्त देश के	२२२	१३४	निंदा की निंदा सूत्र के अनुसार	३३२
	मंजिल तेरवा-अभ्याख्यान		१३५	निंदा में दुर्गुण	३३३
	पापोद्धार पूर्वविभाग-कू आल		१३६	क्या एकुनतीसवीं-निंदा के फल व	
१२२	कू आल देने का कारण	२२५		ताने वाली "पंचवती-ही"	३३४
१२३	अभ्याख्यान के दुर्गुण	२२६		मंजिल पन्द्रवा का उत्तर वि-	
१२४	क्या पचीसवीं अभ्याख्यान के फल			भाग—गुणानुवाद	३३५
	बताने वाली भयभूत हरी की	२२६	१३७	गुणानुवादके गुणसूत्रके दासले	३३५
	मंजिल तेरवा का-उत्तरविभाग		१३८	गुणानुवाद में गुण	३४०
	"मौन"	३०३	१३९	गुणानुवादी की भावना	३४०
१२५	मौन साधन का दोष	३०३	१४०	क्या सौंदर्य-गुणानुवाद के फल	
१२६	अभ्याख्यान के करने की रीती	३०४		बनाने वाली श्री हृषीकेशसुखकी	३४२
१२७	दिनशिक्षा और मुक्ति का उपराग	३०५		मंजिल सोलवा रति अग्नि	
१२८	क्या छहसवीं-मौन के फल बता			पापोद्धार पूर्वविभाग-वहनि	
	ने वाली सूर्योदय सुंदरी की	३०५	१४१	वहनि प्रवृत्ति में का कारण	३४५
	मंजिल चउदहवा-पेशुन्य पा-		१४२	वहनि का अर्थ	३४६
	पोद्धार-पूर्व—विभाग चुगति		१४३	रति अग्नि में दुर्गुण	३४८
१२९	चुगल खोरे का स्वभाव	३१३	१४४	क्या अठारहवीं-रति अग्नि के फल बता	
१३०	चुगली में दुर्गुण	३१३		ने वाली प्रवृत्ति का अर्थ	३४८
१३१	चुगली में दोनो भय में दुर्गुण	३१४		मंजिल सोलवा का उत्तरवि-	
१३२	क्या अठावीसवीं पेशुन्य पर फल			भाग—निवृत्ति	३४९
	बनाने वाली-पद्म देव की	३१५	१४५	निवृत्ति का रति	
	मंजिल चउदहवा का-उत्तर		१४६	निवृत्ति का अर्थ	

नं०	विषय	पृष्ठांक	नं०	विषय	पृष्ठांक
१८८	निवृत्ति का उद्देश्य ...	३५४	२०३	सम्यक्त्व के भेद	३१०
१८९	कथं चरे नवो निवृत्ति के फल बता ने वाली जंबु कुंमर की	३५५	२०४	व्ययहार सम्यक्त्व के ६७ बाल	३११
मंजिल सतरवा मायामोसोपा पोद्धार-पूर्वविभाग-गुह्यसत्य			२०५	मध्यमार्गाद्य विचार	३१४
१९०	माया मोमा केलक्षण ...	३६१	२०६	कथा छत्रोपवी सम्यक्त्व के फल बताने वाली-विजय गङ्गा की	३१६
१९१	कथा तैत्तिरीय माया मोमा के फल बताने वाली कालु नाइक ...	३६३	श्रीस्वर—उपसंहार—सर्व पा पोद्धार पुर्याविभाग—पाप ४३		
मंजिल सतरवा का उत्तर वि भाग—"सरल सत्य"			२०७	अडरु पापकथा के सनु उपनाम १०३	
१९२	सरल सत्य के लक्षण	३६७	२०८	नरक का धरणन्	४०४
१९३	सरल सत्य के लिये गङ्गोव	३६८	२११	नरक के दुःख और क्षेत्र वेदना ४०६	
१९४	कथा चौतीसरी सरल सत्य के फल बताने वाली केशी गौतम स्वामिनि ३७०	३७०	२१०	परमात्म्या हृत्त वेदना	४०७
मंजिल अडरुवा—मिथ्या दं- शान शल्य पापोद्धार पूर्व-वि- भाग—मिथ्यात्व			२१३	तिर्य्यक के दुःख का धरणन्	४०८
१९५	मिथ्यात्व का अर्थ	३७३	२१२	मनुष्य के दुःख का धरणन्	४१०
१९६	पाँच मिथ्यात्व का स्वरूप	३७६	२१३	देवता के दुःख का धरणन्	४१२
१९७	कु देव के लक्षण	३७८	श्रीस्वर—का उत्तरविभाग धर्म		
१९८	हृत्त के लक्षण	३७८	२१४	अडरु पापकथा के नूतन नाम १०३	
१९९	कु देव के लक्षण	३८१	२१५	नरक में सुख का धरणन्	४१३
२००	मिथ्यात्व का कथा	३८४	२१६	तिर्य्यक के सुख का धरणन्	४१७
२०१	सामान्य मिथ्यात्व	३८४	२१७	मनुष्य के सुख का धरणन्	४१७
२०२	कथा चरे नवो-मिथ्यात्व के फल बताने वाली जंबु कुंमर की	३८५	२१८	देवता का धरणन्	४१८
मंजिल अडरुवा का—उत्तर विभाग—सम्यक्त्व			२१९	देवता के सुख का धरणन्	४१९
			२२०	मोक्ष के सुख का धरणन्	४२०
			२२१	भोगधन	४२१
			२२२	विज्ञान	४२२
			इति अष्टोद्धार कथागार ग्रंथ की विषयानुक्रमणी		
			समाप्तम्		

ॐ परमेश्वरायः नमः

गुरुदेव भूरीदान संलिया ।
जैन ग्रन्थालय ।
बीकानेर (राजपूताना)

अधोद्वार-कथागार



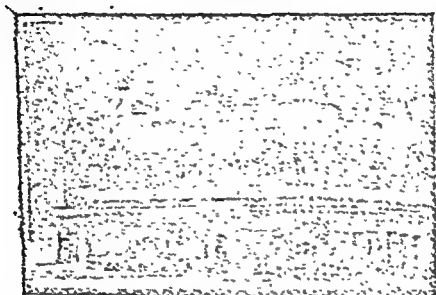
मङ्गलाचरणम्
ॐ जय जय श्री जिनदेवकी । जय जय श्रीगुरुदेव ॥
ॐ जय श्री व्याधर्म की । शिव सुखदे वह मेव ॥ १ ॥
ॐ अरिहंत लिखको । आचार्य उपाध्याय ॥
ॐ समाधि सर्व साधुको । प्रणालं जीत नमाय ॥ २ ॥
ॐ नमूं आदिनाथको । नमूं शांति जिनराय ॥
ॐ नैनि पार्श्व प्रभू । नमूं दृष्ट मानके पाय ॥ ३ ॥
ॐ कलं श्रीगुरुचरण । ज्ञान दान दातार ॥
ॐ जिनवाणी गुरी । शारदा दाता तार ॥ ४ ॥
ॐ नर्व जेठ पद । वारन्दार नमस्कार ॥
ॐ कृपा ने रत्न । अपोदा कथागार ॥ ५ ॥

नंबर	विषय	पृष्ठांक	नंबर	विषय	पृष्ठांक
१८८	निवृत्ति का उद्देश्य ...	३५४	२०३	सम्यक्त्व के भेद	३९०
१८९	कथं परं नरो नेत्रसि के कठ धत्ता ने पाटी जंघु कुंमर की	३५५	२०४	इत्यथहार सम्यक्त्व के ६ उद्देश्य	३९१
मंजिल सतरया मायामोसोपा			२०५	महयान्यास विचार	३९५
पोद्धार-पूर्वविभाग-गुह्यअसत्य			२०६	कथा छत्रीपयी सम्यक्त्व के फल वर्तनि याद्वि-विषय गान्धी	३९६
१९०	माया मोषा के लक्षण...	३६१	शीखर—उपसंहार—सर्वे परा		
१९१	कथा तैत्तिरीय माया मोषा के फल		पोद्धार पुर्वविभाग—पाप ४३		
१९२	यतानेवाली काल नादिक ...	३६३	२०७	अ. १. १५ पाठ के लक्षण	४०१
मंजिल सतरया का उत्तर वि			२०८	नरक का धरणम्	४०४
भाग—"सरल सत्य"			२०९	नरक के दुःख और क्षेत्र वेदना	४०६
१९३	सरल सत्य के लक्षण	३६७	२१०	परमात्म्या का धरणम्	४०७
१९४	सरल सत्य के लिये मन्त्रोक्त	३६८	२११	तिर्यक् के दुःख का धरणम्	४०८
१९५	कथा चौतौ नशे सरल सत्य के फल		२१२	मनुष्य के दुःख का धरणम्	४१०
१९६	यतानेवाली केशी गौतम स्वामिनि	३७०	२१३	देवता के दुःख का धरणम्	४१२
मंजिल अष्टारवा—मिथ्या द्-			शीखर—का उत्तरविभाग धर्म		
घाण शल्य पापोद्धार पुर्व-वि-			२१४	अ. १. १५ पाठ के लक्षण	४१३
भाग—मिथ्यात्व			२१५	नरक में सुख का धरणम्	४१५
१९७	मिथ्यात्व का अर्थ	३७५	२१६	तिर्यक् के सुख का धरणम्	४१७
१९८	पांच मिथ्यात्व का लक्षण	३७८	२१७	मनुष्य के सुख का धरणम्	४१७
१९९	कु द्वेष के लक्षण	३८३	२१८	देवता का धरणम्	४१८
२००	गुह्य के लक्षण	३८८	२१९	देवता के सुख का धरणम्	४१९
२०१	कु द्वेष के लक्षण	३८९	२२०	मोक्ष के सुख का धरणम्	४२०
२०२	मिथ्यात्व का कथन	३९४	२२१	अनेकवार	४२१
२०३	पाप का विचार	३९४	२२२	विज्ञप्ति	४२२
२०४	क. १. १५ पाठ—मिथ्यात्व के फल व-		इति अष्टोद्धार कथागार प्रबंधी		
तने व ३ ज ३ के ज ६			विषयानुक्रमणी		
मंजिल अष्टारवा का—उत्तर			समाप्तम्		
वि भाग—सम्यक्त्व					
		२९			

ॐ परमेश्वरायः नमः

गुरु भगवान् संविता ।
जैन धर्माग्र्य ।
दीक्षानंद (यज्ञप्रताप)

अधोद्धार-कथागार



मङ्गलाचरणम्

दोहा जय जय श्री जिनदेवकी । जय जय श्रीगुरुदेव ॥
जय जय श्री दयार्थकी । शिव सुखदे अह मेव ॥ १ ॥
प्रणमं अरिहंत सिद्धको । आचार्य उपाध्याय ॥
गौतमादि सर्व साधुको । प्रणामं शीत नमाय ॥ २ ॥
आदि नमूं अदिनाथको । नमूं शांति जिनराय ॥
नमूं नेति पार्श्व प्रभु । नमूं बृह्म मानके पाय ॥ ३ ॥
नमन कलं श्रीगुरुचरण । ज्ञान ज्ञान दातार ॥
नमस्ते जिनवर्णा नगी । शारदा दाता नार ॥ ४ ॥
गुणोद्भूत सर्व जेष्ट देव । वरदा र नमस्कार ॥
इतकं कृपे न रवे । जय ॥

✽ प्रवेशीका. ✽

लोकालोक वरणन्-मनहर-छन्द

सर्वज्ञ केवल धार । अनंत ज्ञान मझार ।
 लोकालोक अवलोके । कगमल वत है ॥
 अलोक अनन्तान्त । आकास्ति काय व्यापन्त ॥
 ताके मध्य लोक पिन्ड । पंचास्ति रूपत है ॥
 धर्मो धर्म आकाश । जीवैरु पुद्गल खास ।
 इनो से व्यवहार सध । सत्यासत्य भापत है ॥
 पुद्गल पर्याय रूप । पलटत ज्यू छांय धूप ।
 अमोल अनूप गत । जिन धेन सत है ॥ १ ॥

“ लोक वरणन् ॥ इन्द्रविजय-छन्द ”

तीन विभाग बने इस लोकके । अधो मध्यपातालबटानो ॥
 नीचे नरक मध्ये तिर्य लोक । ऊचमें स्वर्ग ऽपवर्गवखानो
 घनवायतनवायधनोदधी ॥ ७ व्योमवीलये सर्वलोकघेरानो
 सप्तनरकमध्यद्वीप असंख्यहैं । स्वर्गछब्बीसवर अपवर्गमानो ॥
 प्रथमनरककेक आंतरमें । दशजातिके भवनवासी सुररहावे ॥
 मध्य लोकके अंतरेमें । सोलह जातिके व्यन्तर वसावे ॥
 मध्य तिर्यच नर जोतपी दीपे संपूर्ण लोकमें सुक्ष्मभरावे
 वादर जीव हैं लोक के देशमें । यह प्रमानसिद्धान्त बतावे ॥

१ “ रहें आवल के फलके माफिक. ४ मो. ✽ आकाश

मध्यलोक वरणम्—चोपाइ छन्द

मध्य लोकमध्य मेरुपहाड । दशसहस्राजजनमूलमें जाड ॥
 एक लक्ष जोजन जंबाकहा । चारुवन जुलिका सदिपरहा ॥
 उत्तके चोफेर गोळाकार । जंबूद्वीप लक्षजोजन वित्सार ॥
 पूर्वपश्चिममेंमहाविदेह क्षेत्राउत्तरदक्षिणगिरीक्षेत्रविविचित्र ॥
 देव कुरु उत्तरकुरु पात । निपड नीलवंत पर्वत स्वात ॥
 ताडिगक्षेत्रहरी रम्यकवात । महाहेम रुषी गिरीतापात ॥
 ताडिगक्षेत्रहेमवपएरणवया चूलेहमशीखरीगिरीतांगये ॥
 ताडिगक्षेत्रभरतएरावंतालवणो दधी सर्व द्वीप घेरंत ॥
 ताहे घेरा द्वीप धातकी मंडाजंबू ने दुगुने क्षेत्रगिरी मंडा ॥
 ता चोफेर कलो दधी सनुद्र। पुष्कर द्वीप ताहे घेरा सुद्र ॥
 पुष्करमध्यमानुपोत्तरपहाडाआगेस्तुप्यनहीं हे गडआड ॥
 आगे द्वीप सागर दुगुने जलमय । तामेरहने देव तिर्यंच ॥
 अंतिम तपेनूरनग सागर । समुचय रचना कही इत्तर ॥
 अथआगे कथूंमूल मडाणानमाइ नज पडो सुनो दयान ॥

भारत क्षेत्र वरणम्—शोहा छन्द

प्रथम जंबूद्वीप में । दक्षिणदिशीमहासागर ॥

भारत क्षेत्रमें वर्तते । काल उभय प्रकार ॥ ११ ॥

उत्तरिणी अक्षरिणी । सागर धीन केहाकोड ॥

छः छः जारे दोनुको बहने उतगने प्रोट ॥ १२ ॥

सुखलां सुखन सुखन मं । सुखलां दुःखन नीन ॥

दुःखमां सुखम दुःखमरुं । दुःखमां दुःखम चीन ॥
 सागर कोडा कोडके । चार तीन दो एक ॥
 सहस्र बेचाली वर्ष नुन्य । पंचम पष्टम लेख ॥ ।

चंपानगरी वरणन्—चोपाइछन्द

इस अक्षरर्षणी कालके मांय । चौथा आरा गया वर्ताय ॥
 ता समय अंग नामे देशमझार।चंपानगरीवसतीमनोहार
 याह जोजन की लम्बी कही।नय जोजन चौडाइसे रही
 म्हाद्धी म्ममृद्धी करी पूर्ण भरी ।शोभित सञ्जातु स्वर्गपुरी
 रजाजी के ऊंच आवास । जाने जाकर लग हैं आकाश ॥
 माहुकारों की हवेलीयाँ । दुकानों की श्रेणी छद्दीलीयों॥
 इनो में भल्लके भरे नयरंग । गुमट कलश देख होयें दंग ॥
 धर्मशास्त्र देशालय जान । दानशास्त्र विद्याशास्त्र बखान
 पुस्तकशास्त्र और औषधशास्त्र।अहारपानीकी शास्त्रविशास्त्र
 मध्य में राज भुवन चौपामा जोहरी बाजार सराफा ग्यास
 यजाज,मेषाफगेम सोनार।कंटाली काळी मणीआर ॥
 लोहकार चित्रकार कुंभार । अनुक्रमें सब भरे भण्डार॥

- पहिला गुग्गुना गुग्गुमी आग चार कोडा कोटी
 सागरों पमका.

दुग्गुना गुग्गुम आग तीन कोडाकोटी सागरोंपमका.
 तीसरा गुग्गुमां दुग्गुम आग दो कोडा कोटी सागर.
 चौथा दुग्गुमा गुग्गुन आग द्वायन्त्रिम हजार वर्ष कम
 एक कोडा कोड सागर का.

पांचमां दुग्गुम आग २००० वर्ष का.

छठा दुग्गुमा दुग्गुम आग २००० वर्ष का.

सत्यवंत अल्यइच्छिदयाल । व्योपारीलेने देते बहूत माल ॥
 सत्यवंत है लक्ष्मी वास । निश्चिन्त करते सुख विलास ॥
 दाता भुक्ता दानी विनीत । गुणी गुणग्राही चले सूरीत ॥
 परधन हरण पांगूसे जान । परस्त्री निरक्षण अंध समान ॥
 मुक़ चोलन पर अवरण वाद । बहिरे सुणन पर निंदा नाद
 चोरचुगल नट खट अरुजार । नगरी में नहीं बहुत नरनार
 साता पाते सती संत गुणवंत । भिरुयारी थोडे तहां मिलंत
 यह तो कहा नगरी अलंकार । और क्या करें ज्यादा विस्तार
 दोहा—चंपानगरी को घेरीया । प्रकार द्रढउतंग ॥
 विचित्र कांगूरे लगे । बुरज गौख सुरंग ॥ ११
 मूल विस्तीर्ण वर सांकडा । गौ पूछ संस्थान ॥
 ऊंडी अंध जल से भरी । दुर्गम खाइ जान ॥ १२
 अस्त्र शस्त्र सब सज भरे । सत्यनी नाल कथान ॥
 तीर तेग भालादिके । अनेक अरी गंजान ॥ १३ ॥

पूर्ण भद्र वाग वरणन्—उपजति—छन्द,
 वागों वगीचे बहुतगा वारे । पूर्णभद्रवागसवमें सिरकारे
 अनेक वृक्षों वेली बहुत प्रकारे । पटकृतके सुख सदा उ समझारे
 आमजामलीं वूंरुनीम अनार । मोरछली नारंगी कचनार ॥
 बहुडपिंपल उम्बर करे केला । आसो पल्लव से तूत वेल वेल ॥
 सागपलासरुतालममाला । अरणी विगण गति मरु और ताल
 वटामफणतसीना फल गसफल चंदन अगरत गरकोटवल

इत्यादिशाडौंसेवनसोभराहे।घटघोरछाड़पेग्वतहराहे।१६
 मंडप पे वेलीयोंकेइप्रकार।अंगूरचमेली चंपककचनार ॥
 तोरुंककडी धीयारुनागरवेल।जाइजूइमोगरा कदूफेल १७
 मध्यमध्यक्यारोंमेपुष्परंगढंग।केइकलीकेइफूलेहैं चंग ॥
 गेंदाकेवडा।रुगुलावगुलजारसेवतीकेतकीमालतीगंधसार
 भ्रमर मकरंद मदमस्तकरेशोर।पक्षियोंकेगमधेठेढोरढोर
 हंससारसचकवा रुचकोरा।भेनातोतालवातीतरचीडीमोर
 बदक बगले कउबेटेंक चंडूलारुपारेलगणेशवेटेर बुलबुल
 नीलकंठकोकिलमुर्गरुकावराचालिचांसगरुडपपयराशिकरा
 तालावकूवेवावहोदेपुष्करणी।नेरोकुंडझरणेलगेजलझरणा
 छोडेहैंफूवारेचहुतप्रकार कोठीबंगलेहैंछप्परछटादार॥२१
 उसवागेकेमध्यआशोकवृक्ष।अतिरमणिकसर्ववृक्षोंमेश्रेष्ठ
 मूलजुंडाकन्दरहोफलाय।स्कन्धऊपरशाखाबहुतीशोभाय
 प्रतिशाखपत्रपुष्पफलभार।सधनरक्तवरणसदासुखकार
 तसतलसपृथ्वीशलापटएक।सोतिहासनसंस्थानसूरेक
 श्यामवरणकोमलरेशमजैसा।चित्राविचित्रसफाकांचतेसा
 इत्यादिवरणन्वागकाजानों।अनेकजीवउसभरेहेसुखमानों

पूर्णभद्र यक्षकावरणन्-शीखरिणीछन्द

उसीचर्गीचिमांही॥पूर्णभद्र यक्ष देवालय ॥

पुराना कहवाइ । घुमट कळशा सुवर्ण मय ॥

इजा पाताका घंटा । पुष्प धूप दीप मुद्रल सय

महिमा जम फेलाइ । जातरी बहु आते आकर्षय ॥ २५ ॥

राजाकावरण-मनहरछन्द-

चंपा नगरी के श्वामी । कोणिक नामे सुनामी ।

राज राजेश्वर महा-हेमवन्त समान हैं ॥

बल प्रथम सधेन । तनु प्रथम संस्थान ।

लक्षण व्यंजन वपु शोभे देव वान हैं ॥

न्याय नीति में निपुण । शांत दांत आदि गुण ।

अपनी प्रजा को सोने । जाने जिन जान हैं ॥

धर्म कर्म मर्म जान । अपने पर को पैछान ।

पलावे अखंड आन । नृप गुण खान हैं ॥ २६ ॥

पुरुषों में सिंह समान । कमल पुंडरिक मान ।

गंध हस्ती ज्यों प्रधान । ऐसे गुनवान हैं ॥

दल है प्रबल पात । कोप पूर्ण धन रात ।

शत्रूओं का कीया नाश । दात रहे रान हैं ॥

राज है इन्द्र के जैसा । तेज है अग्नि के तैसा ।

यम जैसा क्रोध । योधा भीम के समान हैं ॥

न्यायी जैसे राम । दोनों देश के हैं श्वाम ॥

इत्यादिक गुणों के धाम । कोणिकराजन है ॥ २७ ॥

राणी गुण वरणन-हरीर्गात छंद

धारणी राणी सधुरवाणी नमणस्त्रमणगुणज्ञ है ॥

दूषण रहित है शीलभूषण । रूपअपहारा सुज्ञ है ॥

कलावती विधाराते कौशल्यता सब मन ठरें ॥

व्यवहार स धन धर्म राधन इन गुण पतिवित्तरहे ॥

प्रधान गुण वरणन् सवेया (२३) सा

सुबुद्धिप्रधानचोविद्यानिधाननीतिन्यायजानीविचक्षणत
रग्वराजमानाप्रजासन्मानाभगेहेंकोपानामुदक्षणते ॥

हंसजोन्यायकर्तिसमजायासवेसुखदायासुरक्षणेते ॥

रूपनेजयानेहगुणपुण्यग्यान। ऐमहेदावाना हैजकुसनते ॥

कौणिक गय का नियम-भुजंगीलंद

श्रीशारभक्ताकौणिकराया, जिनवचननित्यसुणनेउमाया
पगवादुकंपुनपगवाडमकामं, जिमसंजिनेन्द्रकथानित्यपमे
नांकायदृनउमकीआशामाहीं, समाचारनित्यसोदेतेपठइ
महार्वागजिनआजयहपिपधारे। ओरभीयोग्यदेनाममचार
यांप्रवादुकदेकौणिककांमुणाड। प्रीति। दानउमेदेने दहृताइ
तिनृरने। जनगृह कार्यकरताजिनदर्शनउंमगीदलधारता
दांदा-यो धर्म कर्म दीपावने। यने कौणिक गय ॥
कर्म कथा नां अयाह है। यह धर्म कथा वगणाय ॥३३॥

॥ श्री महावीरश्वामिके गुणकावर्णन ॥

नमुयुग का अर्थ-मदका लंद

नरमकार अगिहंत नमयंत। चनधार्मिक धर्मेनदुरपाये

। यहुनों के सिद्ध। इनका स्थान धर्म कथा करन याया

ज्ञान वाणी अथायापागम पूजा।इनचोगुण अगवंतपदपाय
आदिकरधर्मचउतीर्थस्थापनकिये । गुरुविनस्त्रयमेववोपये
पुल्पमेउत्तमपशूमेज्योतिहसना। पुंडरिकपुष्पज्योमहकाये
शूरगंधहस्तीज्योअभयदसेवकीज्ञानचक्रुदधर्मसगलगाये
शरणसबजंतुकोजिवितसंयमदेहीपसमजगोदधीसुखदाये
भ्रमणभवसागरवेठज्योगुणागर चाउरंतचक्रवर्ती जिनंदा
अप्रतिहतज्ञानदर्शनधारक निवृत्तछद्मस्तकेवलीदिणंदा
कर्मोकोजीतेजीतातेहोअन्यकोजगतिरेतारोंप्राणीभविदा
बुद्धतत्वज्ञबोधितकरोनर्वको । मुक्तरागेद्वेषमूकावो वन्दा
सर्वज्ञसर्वदर्शीइच्छकशिवअचलआरोग्यअनंतअक्षयस्थान
अव्या बाध सदा पूनरावर्ती नकदा । ते प्राप्त भयेभगवान् ।

श्रीमहा वीर प्रभु का शरीर का वर्णन-नाराच छंद
श्री वीर धीर का शरीर सुवर्ण वर्ण शोभता ॥

सम चतुरस्र सस्थान सत हस्त उंच लोभता ॥

वज्र वृषभ नारच संघयण प्राक्रमी होजा अति ॥

सहस्र अष्ट लंडने वधु दीपे दिव्याकृति ॥ ७ ॥

जल मल कलंक रज लेप कदा नहींलागता ।

नहीं दुष्ट लक्षण व्यंजन न दुष्ट जागता ॥

महकंता सुगंध स्वादा प्रकाशिक सुंय है ।

अत्युत्तम जगके प्रमाण आप अंग निपाये है ॥

शिवरी शिवर सम उंच चारा अंगुल दीर्घ है ।

धन श्याम चांगटे फिरते, कुर्वली बाल ईश है ॥
 अर्ध चन्द्र सम तेज भल भलाट भाल है।
 संपुर्ण दासी सम मुख, कान्ती धर विस्माल है
 कृष्ण भमुख धनुष्याकार प्रमाणो पेश कान है ।
 शिस्मिल नेत्र युगल सो तो कमल के समान है ॥
 गम्भीर पक्षी जैसा भाव होछा रुण भाँस है ।
 दाडिम कली के समान तीसरे दोय दाँत है ॥ ४ ॥
 सिंह समो बंध प्रिया चतु अंगुल प्रमाण है ।
 जानु लग वहाँ लक्ष्य करतल रक्त यान है ॥
 सूर्य चन्द्र चक्र मन्द आदि शुभ लक्षणे ।
 कामल का कमल पुन दीपन मुखशणे ॥ ५ ॥
 करां गुटी अश्लिष्ट नाथ अरुण रंग दीपना ।
 श्रुति वन्द्य स्वनिष्ठ युक्तहृदय अंगे जीपना ॥ ॥
 उनाता उदा मन्द सम नानी कमल विकश्या ।
 सिंह समान कटि भाग गुनेन्द्रा अर्थ वर ॥ ६ ॥
 न लग रंजित स्थान कदा अशुची लेप है ।
 केटी मन उन्मत्ता जेय जानु गुण रंग है ॥
 चाग कृष्ण मुख नग रक्त दिव्य माक है ।
 दाँत मगर इजा आदि लक्षण शुभ व्याप है ॥ ७ ॥
 नन शिख मरु वधु सूर्य सम प्रकाशना ।
 अर लक्षण दृग्गम मन किञ्चन नदी भयाना ॥ ८ ॥

पेखत वदन मन हरण करे नरेन्द्र इन्द्र का ॥
 वंदन सदा होवे मेरा पदे ऐसे जिन्द का ॥ ८ ॥

चौतीस अतिशय—मनहरछन्द

बधे नहीं नख केश । रोग नहीं तन लेश ।
 उज्ज्वल हे मांस रक्त । सुगन्धी उँश्वास हे ॥
 न दिखे अहार निहार । धर्म चक्र नभ मझार
 तीन छत्र श्वेत चमर । मणी आसनास हे ॥
 द्रजा पतार्की परिवार । अशोक तैरू हे लार
 प्रभा मंडल प्रकाश । भू होवे समरास हे ॥
 कंटक उलट होवे । ऋतू सुखदाइ सोवे ।
 योजन में वायु शुभ । अचित्त वैपास हे ॥ १ ॥
 अचित्त पुँषों के दग । इन्द्री विषय मन लग
 शब्द दिक पांचों खोटे नौशी अँछे होवे हैं ॥
 योजने वाणी सुँणाय । अर्ध माँगधी भापाय ।
 आर्या नार्य समजे सर्व । बेर भाव खोवे हे ॥
 मानी नर नैमें आय । वादी से उत्तर न थाय
 पच्चीस जोजन चौवाज । उँपद्रव्य विगोवे हैं ॥
 मरी मारी रोग नाशे ! चँक्री नय न आवे पास
 अति वृँष्टि अना वृँष्टि । दुर्भिँष्ट न जावे हैं ॥ २ ॥
 वरोक्त उपद्रव्यहोय । प्रभू आगमने मोय ॥

नाश पाये क्षीण मांहे । अतिशय चौतीस के ॥
जन्म से तो होवे चार । पंदरे केवल धार ।
पंदरे देवता किये । होवे जग दीस के ॥
तीर्थका नाम कर्म । उपार्जन ताके धर्म ।
जाणन जगत् जंतु । होवन पुनीश के ॥
ऐसे पद धारक । निवारक सकल अघ ।
यंदन अमोल पद । नित्यही जिनीश के ॥ ३॥

पैनीम दाणीगुण-छपयछन्द.

दाणीगुण पैनीम । भंस्कारे युक्तउचारे ॥
यांजन ऐरु मुगाय । नुच्छनानहीलगार ॥
गजाय जोक्षिन्द । प्रनिन्दनी उपजाये ॥
रगम रोगणी युक्त । धोता तद्धान बनाये ॥
यह मात गुन कंद उचारके । अथ कहूं अर्थके जेह ॥
शद थोट और अर्थ यहून । मृत्र कहाते तेह ॥
आद्यअन्त अंगिगंध । अरुंग अर्थममजाये ॥
मंगप उंयजन नाय । दोष किंचिन्हें नहीं पाये ॥
सर्वको शैल मुहाय । देश काल उचिन्हेंमिलताकही ॥
नन्व ही नन्वेहममय । निगार नैवदेकदाही ॥
कहानी जेना शानी म्बुटी । न्वम्बुनि मेंही परनिदहे ॥
निष्ट अन्त से अधिक । मर्मन कंद जग बिंद हे ॥२॥

योग्यता सैम गुण कथे । उपकार औवस्थहा थावे ॥
 छिन्न भिन्न अर्थ न करे । नियम व्याकरण से गावे ॥
 मध्यस्त वचन सुखवार श्रोता अश्चर्य सुणी धार ॥
 दृढ प्रेम अर्थ । विलम्ब विश्राम न उधारे ॥
 प्रश्नार्थ विन पूछे लहे । कह अपेक्षा युत स्फुटक ॥
 स्तविके वाक्य अर्थ सिद्ध करे । धकते नहीं कभी कथक

अटारह दोष रहित—इन्द्रविजयछन्द

नहीं है मिथ्यात्व अज्ञान ह्रस्वोपे, माने नापे लोभ है ति अरति
 नाना शोके अलि के देन ही चोरी मैं स्मरे भये नहीं विपति
 परे नहीं हिंस्र प्रेमा जगन ही की डोहीं सान ही करते सोयति
 दोष अष्टादश जिनमें न पावत नही अमोलन मे जगति ॥
 दांहा—यह गुण कथे जिन राजके किंचित संक्षेप मझार

आगे सधु मर्तियों ने । कुछ गुण करे उचार
 धार जिनन्दकी आणमें । नाधु चउदह हजार
 छन स सहस्र है नाधवा । उत्तमोत्तम गुण धारा ॥

॥ नाधुगुण—इन्द्रविजयछन्द ॥

उम भोग गार नायक गवक्षर्मा भट जोया सेना पति ॥
 पनथ गगदे इम जोर बहुत ही छे डी भाग हृवे जन जति ॥
 जति कुल चन्द रूप विनय विज्ञान लाव्यदि धरे मन्त्री ॥

अनित्यशुद्धी किं पाकजो भोग, धिन अधुव जाणी तर्जारनी
 केइव साधु भये अध मासके, मांस वर्ष केई बहृत हे जुना
 मानेश्रुते अवधामनपर्यः, केवली त्रियोग बली न्हो नुन
 अनुग्रहभियाने होलकर केइ, लब्धी धारी प्रगटे जव पुन
 तन अंग स्वेद के मेलखेकारके स्पर्शसे होवे रोगसबलुना
 केइ मुनिकोठग बुद्धिधारक । यांज बुद्धिपड बुद्धिधारी ॥
 पदानुसारणी सी भिन्नश्रुतिकाखी, रम्यधृतवयण उचारी ॥
 अक्षिण माणसी उज्जुमाति वरार्व पुलमति विक्रय रचारी ॥
 जघाचारण विद्याचारण । आकाश मार्गे होवे डच्छाचारी ॥
 ज्ञानदर्शक चार् । रत्रातिहु निर्मल । महावृत्तमुमिती गुप्ति धरंता
 लज्जावंत हलुद्रव्य भावसे । धैर्य, तेज, शोभा, यशवंत ॥
 क्रोधमनमाय । लोभ इन्द्रिय निद्रानेन्दापरि सिंहजपिना
 जीवंत आसमरण भयस्यागी, ते मुनेपाद अमोलनमंता ॥
 वृत्तगुनचरन करन निग्रहरु, निश्चय आर्यवमार्दवं प्रधाना ॥
 लार्धवक्षमानिर्लोभ विद्यामंल, वेदब्रह्मचर्य श्रेयजाना ॥
 णंयनियमसत्यशोचउत्तमैहमने । हरमूर्तीतपनिधाना ।

१ जैसे कोठार में रखा हुआ वस्तु का विनाश नहीं होता है. त्यों पढ़े हुये ज्ञान का नाश नहीं होवे. व राजा का भंडारी जैसे इच्छित वस्तु देता हूँ त्यों इच्छित ज्ञान देवे
 २ जैसे शुद्ध तिन में डाला हुआ बीज पाग्य वृष्टो से बढ़ा पावे
 त्यों ज्ञान प्राप्ति पावे. ३ जैसे वस्त्र के पडल गोलने से बिस्तर पावे

अदीनअल्प-उत्सूकसूभावीविचरतेआगेकराजिनआन ॥
 द्वादशांगगणीप्रतिमाधारकसर्वअक्षरकीउत्पातिजाने
 भाषासर्वकेपारगामीकेइ,प्रश्नोत्तरनहटेकोइटाने ॥
 आत्मवादजानकरेस्थापन,तजेप्रवादजोमतपैछाने ॥
 गुणरत्नागरधर्मवृद्धीकर,जिननहीतोभीजिनसमाने

साधु को शुभोपमा-मनहर छन्द.

कुंतीयावण बाणिकसे । अखट गुणों के धर
 काँसा पाल निरलेप । संखसे निरंगणा ॥
 रुके नहीं जीव जैसे । कीट न लगे कंचन से
 स्वच्छ आरिस्ता के परे । कुरम इन्द्रि दमना
 अलोपि कमल समान । निरालस्य ज्यो असमान
 वायु ज्यों विहारी मुनी शशी शीतल काना
 सूर्य ज्यों प्रकाश करे । गंभीर समुद्र परे ।

न्यों ज्ञान ध्ये ४ एक पद के अनुसार से नयग्रंथ
 मनज जाये. १. मृदम गढ मुने. मया एक वक्त में अनेक
 गढ मुने. २. गौर के सेहन के और धृन के जैसे उनके प.
 पन प्रग में. ३ अल्प वस्तु उनके स्पर्शने अमृट होजाय
 ४ कलु मनी कुछ कनी और विरुद्धनी संतुणइ प्रदायीप
 के जायोंके मनकी दानजाने. ५. मगलपना. ६. निर्निमान
 पना. ७. हृत्कापना ८. नाननयके ज्ञाने

पक्षी से अनियत वासी। स्थिर नग शुंशना ॥१॥
 भारंड ज्यों अप्रति बंध । सत्य पक्षी गेंडा श्रृंग।
 निर्मल शरद ऋतुनीर । गंधहस्ताज्यो शूर है ॥
 भारी खमेंजेसे बेल । अचल सिंह सकल ।
 क्षमापृथ्वी समान । वन्ही ज्यों दिसनूर है ॥
 सीतल वावना चंदन । निर्मलत्व पडा सदन ।
 अखूट द्रव नीरज्यों लाख ज्यो कर्म चुरहे ॥
 उदधो द्वीप ज्यों अधरा । नाग कंचुज्यों संनार ॥
 ऐसी अनेक औपम्य शुभ मुनि गुण भरपूरहे ॥२॥

अप्रति बंध कथन-उपय छंद

श्री श्रमणभगेवतंके । प्रतिबंध किंचित नाहीं ॥
 तजेयह चार प्रकार । द्रव्य क्षल काल भावाही ॥
 द्रव्य-सचित्त अचित्त । मिश्रकी ममता त्यागी ॥
 क्षेत्र-ग्राम नगरका । पक्ष तजन है सोभागी ॥
 काल सेसमय मात्रका । प्रमाद कदापि करे नहीं ॥
 भावे पतली कपाय जस । उनमुनीको वंदन सही ॥१॥
 वर्षाऋतूके चउ मास मे रहे एकही जे स्थाने ॥
 बाकी आठही मांस में । एक एक मांस प्रमाणे ॥
 अधिक काल नहीं रहे । फिरे जन-पद में सदाइ ॥
 बागे वार एक रात्री । मांस की पंच गिनाइ ॥

रक्षा करने संयमकी । और तारन भव्य जनतांच ॥
 यों विचरे मुनिवर सदा । सम भाव परिसह सहाय ॥
 सम निंदक वंदक । कचन पापान को जाने ॥
 सुख दुःख में सम भाव । राग द्वेष तजे गुमाने ॥
 दोनो लोक सुख आत । फास यह मोटी तोड़ी ॥
 कर्म निकंदन खप । प्रीति शिव रमणी से जोड़ी ॥
 पाले संयम सतरह विधे । बारह प्रकार के तप मांय ॥
 निज आत्म को भावे सदा । सो ही मुनी मुक्ती पाये ॥

बारह प्रकारे तप-दोहा छन्द.

सर्व तप बारह तरेह । बाह्य पट प्रकार ॥
 अभ्यान्तर भी छेही है । करत सदा अणगार ॥ १ ॥
 अणत्तण-त्यागे आहारको । उणोदरी कैम खाय ॥
 वृत्ती संक्षेप-भिक्षाचरि । रस परि त्याग कराय ॥ २ ॥
 काया क्लेश धर्मार्थ दे । संलेहना-निर्ग्रह योग ॥
 बाह्य तप यह छेःकहे । किये जाने दृष्ट लोग ॥ ३ ॥

दीनवार से दीनवार तक (७ दिन) रहे उसे एकरात्री कहने हैं. ऐसी एक गृहीने की पांचरात्री होनी है
 एक महीनेमें एक वाग्यांच वक्त आना है.

विनय-सदा नम्र हो रहे । वेया वच सुख उपजाय ॥
 सज्जाय करे मूल सूत्रकी । ध्यान तैत्तिर्य ध्याय ॥ ४ ॥
 अलोचना करे पापकी । कायोत्सर्ग ममत्व त्याग ॥
 अभ्यन्तर गुप्त तप यह । करत मुनि बड भाग ॥ ५ ॥

संसार प्रकारे संयम-अडील छंद.

संयम सत्तरह प्रकारे पाले मुनिवरा ।
 पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पति स्थावरा ॥
 द्वेन्द्री तेन्द्री चोरिन्द्री पंचन्द्रिसहे ।
 अजीर्ण वस्तु यहदश सदा रक्षक हे ॥ १ ॥
 मने धैर्य कौंय प्रयोग पापसे गोपये
 प्रीति सैव पर धरे । उपेयोग न लोपवे ॥
 अयोग वस्तु परिटाय पूंजी प्रेक्षी चले ।
 आत्मार्थी मुनिराज से यह क्रिया पले ॥ २ ॥

संसार 'समुद्र' वरण-इन्द्रविजय छंद

संसार सागर महा-भयंकर । जन्म मरण रूप नीर भरा है ॥
 प्रयोग वियोग की तरंगउठे चिंताविस्तार तहां विस्तार है ॥
 जन्म मरण कलाल उठे तहां अपमान रूप फेण उवरा है ॥
 न के डोंगर ओड़ जा आते हैं । कपायपाताल कलश उचरा है ॥
 की बेल चढे अति ऊंची । मोहभनर पडे गोते बिलाइ ॥

प्रमाद अजगर प्राप्त बहूते । कुंगुरु मच्छ रह भरमाइ ॥
मगर इन्द्री रूप प्राप्त में डालतापाखंड हे शंख शीपके साइ
केश कीचड सद्गुण रत्न मोती । ऐसा जगोदधी हेदुःख दाइ

धर्म 'जहाज' वरणन्-इन्द्रविजय छंदः

जग सिन्धुसे तारण कारण। सतरह संयम के पटिये बनाये ॥
बागह तप रूप कीलेसे जोडे। धैर्यता कूवा स्थंभ लगाये ॥
वैराग्य वायू से ध्यान ब्रजा उडे। उपदेश रुपिय चाट्ट हलाये
सन्यक्त्व मुक्तान सुमार्ग दारत निर्यामिक भगवंत कहलाये॥
सार्थ बाहीं साधूजी बणे अराक्रिया क्रियाणा मांय भराया ॥
केवल ज्ञान दुर्वान लगाकर । आगम से मुक्तीपंथ बताया ॥
सत्पती शील उद्यम गोल से । कर्म व्याघाती पहाड गिराया।
ऐसे वाहन चड स्वर्गगये केड़। केड़क सीधे मोक्ष सिधायी॥१॥
दोहा-धर्म जहाज आरुढ हो । निर्यामिक जिन रांय ॥ ॥

जग जंतू उद्धार को । फिरे जग सिन्धु मांय ॥ १

पुत्रोक्तादि गुण भरे । संत सति परिवार ॥

अंग देश चंपा ढिगे । उप नगर रहे उत्तवार ॥ २

शुक्रेन्द्र लख ज्ञान से । धर्मोन्नती के काज ॥

समय सरण रचाना रचनानुर को हुकम कियाज ॥ ३

चंपादिग नुर आय कर । अद्भुत रचना रचाय ॥

सोहि ग्रन्थ अनुत्तार मे । किंचित्त यहां बरणाय ॥ ४

विनय-सदा-नम्र हो रहे । वेया वच्च सुख उपजाय ॥
 सज्जाय करे मूल सूखकी । ध्यान तैत्तार्थ ध्याय ॥ ४ ॥
 अलोचना कैरे पापकी । कायोत्सर्ग ममत्व त्याग ॥
 अभ्यन्तर गुप्त तप यह । करत मुनि बड भाग ॥ ५ ॥

संसारह प्रकारे संयम-अडील छंद.

संयम सतरह प्रकारे पाले मुनिवरा ।
 पृथ्वी पाणी अग्नि वायु वनस्पति स्थावरा ॥
 द्वेन्द्री तेन्द्री चोरिन्द्री पंचन्द्रिससहे ।
 अजीर्ण वस्तु यहदश सदा रक्षक हे ॥ १ ॥
 मर्न वधे कौधे श्रियोग पापसे गोपये ।
 प्रीति सधे पर धरे । उपेधोग न लोपये ॥
 अयोग वस्तु परिटाय पूंजी प्रेक्षी चले ।
 आत्मारथी मुनिराज से यह क्रिया पले ॥ २ ॥

संसार 'समुद्र' वरणन्-इन्द्रविजय छंद

संसार सागर महा-भयंकर । जन्म मरण रूप नीर भरा हे ॥
 संयोग वियोग की तरंगउठे । चिंताविस्तार तहां विस्तरा हे ॥
 यंत्र मारण कलाल उठे तहां अपमान रूप फेण उवरा हे ॥
 कर्मकंडो गरओडेजाआतेहे । कषायपाताल कळश उचराहे ॥
 की बेल चडे अति ऊंची । मोहभनरपडेगोते खिलाइ ॥

प्रमाद अजगर प्रांस बहूत । कुंगुरु मच्छ रह भरमाइ ॥
मगर इन्ड्री रूप फास में डालता पाखंड है शंख शीपके साइ
केश कीचड सहुण रत्न मोती । ऐसा जगोदधी हेंदुःख दाइ
धर्म 'जहाज' वरणन्-इन्द्रविजय छंदः

जग सिन्धुसे तारण कारण। सतरह संयम के पट्टिये बनाये ॥
बागह तप रूप कीलेसे जोडे धैर्यता कूवा स्थंभ लगाये ॥
वैराग्य वायू से ध्यान ब्रज। उडा उपदेश रुपिय चाट्ट हलाये
सन्यक्त्व सुकान सुनार्ग दोरत निर्यामिक भगवंत कहलाये ॥
सार्थ बाही सायूजी वणे अलाक्रिया क्रियाणा मांय भराया ॥
केवल ज्ञान दुर्वान लगाकर । आगम से मुक्तीपंथ बताया ॥
सत्यनी शील उद्यम गोळ से । कर्म व्याघात्ती पहाड गिराया ।
ऐसे वाहन चड स्वर्गगये केड़ा केड़क सीधे मोक्ष सिधायी ॥ १ ॥
दोहा-धर्म जहाज आरुढ हो । निर्यामिक जिन रांय ॥ ॥

जग जंतू उद्धार को । फिरे जग सिन्धु मांय ॥ १

पुर्वोक्तादि गुण भरे । संत सति परिवार ॥

अंग देश चंपा डिगे । उप नगर रहे उत्तवार ॥ २

शक्रेन्द्र लख ज्ञान से । धर्मोन्नति के काज ॥

समव सरण रचाना रचना सुर को हुकम कियाज ॥ ३

चंपाडिग सुर आय कर । अद्भूत रचना रचाय ॥

सोहि ग्रन्थ अनुत्तार से । किंचित्त यहां वरणाय ॥ ४ ॥

समवसरण वरण-अरल छन्द.

प्रकोटे तीन वनाय । पहिला रूपा तणा ॥
 सुवर्ण कंगुरे सुचंग । दूसरा हेमज मंगा ॥
 रत्न कंगुरे भलकाय । तीसरा रत्नो महो ॥
 कोशीसे मणी रत्न । रवी सम प्रभा कही ॥ १ ॥
 एकेक कोटके अन्तर । तेरेसो धनुष्य रहा ॥

प्रथम के पक्तिये हजार । दो सहेथर दोनों के कहा ॥
 पांच हजार सब सेडी । हाथ २ के अंतर ।
 अढाइ कोशका ऊंचा । समवसरण इस तरे ॥ २ ॥
 समव सरण मध्य भाग । सिंहासरण मणिका किया ।
 पाद पीठीका युक्त । सिंह सम शोभा रिया ॥
 अशोक वृक्ष तस लार । सर्वगुण शोभिता ॥
 अचिन्त कुसुम के ढग सुगन्ध मन लोभिता ॥ ३ ॥
 उपर लटकें हैं छस । एकेक पर तीन है ॥
 चौसठ जोड़े घमर । दुलत समचीन है ॥
 पृष्ठे प्रभा मंडल । प्रकाश अतिही करे ॥
 यह विध रचना रची । सुर आनंद धरे ॥ ४ ॥

श्रीजिनागम-मनहर छंद.

रत्ननीको भयो है नाश । रवी को भयो प्रकाश ।

आवश्यक क्रियः सं । निवृत्ति मुनि पाये हैं ॥

आगेजिनगज । पीछे सर्वही समाज ।

कोटी सुर नर केड़ चंरा बार आये हैं ॥

समय तरण मांय । सिंहासन बैठे जिनराय ।

अष्ट प्रतिहारकर । अधिक सोभाये हैं ॥

चारह प्रकार भरी परिपद मंडल मझार ।

चतुर्मुखी जिन तन्मुख नर्मा रहाये हैं ॥ ५ ॥

साधु साध्वी परिवार । विमानिक सुरिलार ।

नर्मा बैठे अग्नि कूण । अति हर्षाये हैं ॥

ध्राविका ध्रावक विमानिक तीनों इशान में ।

भवनी व्यन्तर जोतिपी यह वायू कूण रहाये हैं ॥

इन तीनों की देवीयों तो बैठी है नैरुत्य कूण ॥

तिर्यच तिर्यचणी और बहुत ही समाये हैं ॥

भरा परिपदा ठाट हर्षानन्द गह गाट ।

अमोल बाणी सुणन अति उमगायेहैं ॥ ६ ॥

बधाई की- चौपाई

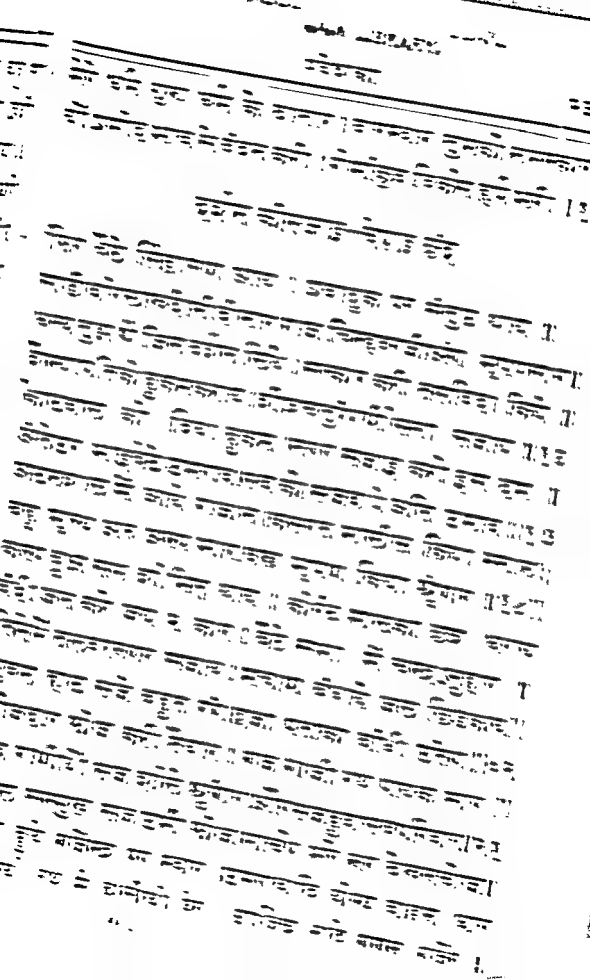
कथा प्रवा दुकनो उत्त अवतरो। यह रचना देवी हर्ष अति धरे
यथा उचित धृंगार नजाय। ग्या नड हो समा में आय ॥ १ ॥

उत्त वक्त कोणिक महाराज । उर समा में बैठे नयनाजा ।

गण नायक दंड नायक पान । नामान्य रायनलार उद्दाम

नांडर्या कोदंडी अरु संमीनागनक डार पाल आमंच इन ॥

शेट शैल्यापति सार्थ वाह । सन्धीपाल दूत आदि बहु ता
 गृह नक्षत्र तारा गण में शशी । नरेश्वर की शोभा इशी ।
 वहा प्रवादुरु नमी वधायाजीते पालो जीता अन्य के तांय ॥१॥
 जिन के दर्श की अति इच्छा करो । नाम सुनकर हर्ष उर धरो ।
 सोही श्रमण भगवंत महावीरा पूर्ण भद्र वाग में विराजे धीरा ।
 सुण वयण नृप अतिही उमंगाय । हृदय नयन प्रफूलित थाय ।
 अंगकी अंगीया तंग अति भई । कुंडल मुकट विद्युत चमकी ।
 हर्षानन्दे उठे तत्काल । सुवर्ण पनहो पग सेती निकाल ।
 एकसाड़ी उत्तरासण मुख पे किया । जिनेन्द्र सन्मुख शोभा में गिया ।
 सत अष्टपग जा विराजिये । बाया ढीचण तल डायो ऊभा किये ।
 कर जोड शिर पे आवर्त किये । तीन यक्त धरणो लगा दिये ॥८॥
 नम्र रहेयो करे हैं उचार । अरिहंत भगवंत को नमस्कार ॥
 धर्म आदि तीर्थ के करतार । स्वयं बुद्ध पुरुषोत्तम सिंहसार ॥
 पुंडरीक गंधहस्ता सिंघधान । लोकोत्तम नाथ हितकर दीपमान ।
 अभय वक्षु मार्ग दातार । सरण जीवित्व बोध देनार ॥ १० ॥
 धर्मोप देशक नायक सार्थ वाह । धर्मचक्री जगदीप अराह ॥
 अप्रतिहतज्ञान दर्शनधारा । निवृत्ते छद्मस्त जिन जितावनार ॥ ११ ॥
 तिरि तारो बुद्ध बोधो हो जग । मुक्ता मुक्त कर्ता सर्वज्ञ ॥
 शिव अचल आरोग्य अवाधा । पुनरावर्तिन ही ते सिद्ध साध ॥ १२ ॥
 ऐसा पद पाये उन्हे नमस्कार । पावेंगे उनको नमो बार बार ॥
 नमूं नमूं भगवंत महावीर । विराजे आन मेरे पुर नीर ॥ १३ ॥



अष्ट भंगल आंग कोतल चैला और अनुक्रमें शोभित खिले ॥
 दोनों तरफ देखत नर नाथ । सब प्रजा नमें जोड़े हात ॥
 नयन हृदय कर माल सेवने । नृप सत्कार सैं हर्षे घने ॥ २४ ॥
 दोहा—यह वरणन हुवा रायका जिन वंदन विध सार ॥
 अब उत्साह पुरजन को । कहूं सूत्र अनुसार ॥

पुरजन को दर्शन का उत्सव—इन्ध्री विजय छन्द

भट्ट्य जनों जनी जिन आगम । घर बजार में गम जम जाये
 हर्षी बधाइ दे आपसमें । सीघ्र चलो वक्त दुर्लभ पावे ॥
 अहो भाग्य आये भगवंत जी । श्रीमहावीर वर नाम शोभावे ॥
 पूर्ण भद्र बने सब संगमे । तब संयम से आत्म भावे ॥ १ ॥
 जिन नाम गोत्र सुने श्रवनसे । कोटी भवों के पाप विलावे
 तो वंदन प्रश्न पूछन का । फल का वर्णन कैसे कहा वे ॥
 महा पुण्योदय भक्ति मिले यहां । अपूर्व ज्ञान की कथा सुनावे
 फोलाहल मचा यों शहर में । चलो २ शीघ्र वारम लावे ॥ २ ॥
 जिन वंदन सत्कार नमन सम्मान सदा सत्याण करंता ॥
 साक्षात् देव यह ज्ञान गुणागरा । विनय किये सब पाप हरंता
 पर्युपासना इहमय पर भवों में हितकर सुखकर श्रेम करंता ॥
 निश्चय अनुक्रमें दे मोक्ष ही । यों कीर्ति सब जन उचरंता
 उग्रकुली केड़ भोग कुली अरुगजक्षत्री कुल विप्र सुजानो
 भांडवोधा सार्थ वह शेटजी । इश्वर तलवार मंडली करानो

इत्यादि सब सज्जन परजन । संग लिये किये बड़ा मडानो
निज २ सक्तो सा साजसजाई पदचर केइ स्वारी सजानों
केइ वदन पूंजेन के कारण। दर्शन सत्कार सन्मान तांइ ॥
प्रभ पूछन पेखन रचना । सुणन व्याख्यान अपूर्व तांइ ॥
केइक श्रावक के वृत धारन । अणगार होवन केइ उमाइ
केइ आचार व्यवहार श्रम धरायों नाना विधी जन इच्छाइ।

वंदनविधि-छपय छंद.

यह विधि राज परजा । जिनेश्वर वदनं आये ॥
आयादिग जब वाग । अतिशय जिन देखाये ॥
चाहन स्थंभ किये । उत्तर धरणी पर ठाडे ॥
अन जान को विधी । जान नर तहां देखाडे ॥
पंच अभिगम संच के । करिये जितवर धोक
सूत्रानुसारसे तो कहूं । जो किये सगही लोक ॥ १ ॥
ग्यङ्ग छत्र और चामर । मृदट पन्हो कं ताइ ॥
नृपती तजे यह पंच । अन्य जो जा दिग थाइ ॥
आये दगीचे मांय । पंचपति अभिगम धारे ॥
सचिव द्रव्य देग रंग । अचिन धाणन जोग धार ॥
उत्तरामण यन्ना मृन्वर्ककर्ग। देवत होथ दो जोईया ॥
एकाम भन जिन नरन नारन अभिगमनान मोडिया ॥ १ ॥
आये भगवन्त पान । नर नव ननुच नहाई ।

तीखूँत्ता के पाठसे । विधी वन्दे जिन राई ॥
 लियोग से भक्ति करत । काया से नामि बेटाई ॥
 वचन से भगवन्त वचन । तेहत प्रमाण वधाई ॥
 अत्यन्त संवेग मनमें धरता तीव्र धर्म अनुराग को ॥
 यह अवसर जग मांही मिलता हे नहा भाग्य को ॥३॥
 सुभद्रा राणी आदि । सब वाइयों तहां आई ॥
 धर्मानु रागे हुल्लसाय । अनिमेष पेखे प्रभु तांई ॥
 लुळी २ वंदन करे । देखने प्रसी नहीं पावे ॥
 सबही ऊभी रहे । सुनन जिन वचन उमावे ॥
 ओर भी परिपद भरी है अतिमर्याद धर रहे हर्ष भर ॥
 उमंग जिन वाणी सुनन की । यथा मेग मयूर पर ॥४॥

दशना वणन् खडका छन्द

परिपदगङ्गभरा । आधक्यतिष्ठापिवरा । देवनरकिन्नरा सहश्रगमो
 महावीरमहार्थीरगंभीरवाणीवन्दाशरदक्रतुमेघगाजेसुरमो ॥१॥
 उषोदुग्धवीनादकोरंचम्रगसाद हृदय आह्लादउत्सहाखमो ॥
 ऊटहृदयथकीकंठमेंफिरछकी । मस्तकेघोरजिभ्यासुजमो ॥ २ ॥
 सर्वअक्षरजोडअखोडअमोड । अनेाडशेकछोडप्रोडजवाणी ॥
 अनमणमनगमणरमणभद्र्यगणचितेहितमितपूरजोसुखदाणी
 सर्वदेशभाषाभगितर्वसमजेसरी ! वैमसंशयहरा गुण खानी
 सरसमृगसअमरसनविरमहे । हिरसअभीरससवरमेप्राणी ॥ ४ ॥

योजनप्रमानव्याख्यानवयानासुनातेसुजानसोव/नप्यारा ॥
 आर्थअनार्यथार्यहितकार्यसौ/निज २ भाषामेंसमजेसारा ॥५॥
 देशमागधतणीअर्धवाणीभणी/अर्धसवदेशनीमिश्रधारा ॥
 नीरज्योहीरहृदयबीजपरगमें/त्योंतवमनरमेंसोउचारा ॥ ६॥
 अहोभज्जसांभलोमेटमनआमलो/लोक अलोककीअस्तिमानो
 जीवअजीव कर लोक पूर्ण भरा/बंधरू मोक्ष यह सत्य जानो
 पुण्य रू पाप के फल पावे सची/आश्रव आय संवर रुकानो
 वेदते निर्जराहोतहैक्षिणक्षिणायो/जान प्राणी बंध मत ठानो

॥ अठारह पाप वरणन्—चोपाई छन्द ॥

पहिला पाप घणाती पात । स्व पर आत्म की करे घात ॥
 दूसरा पाप है मृषा वाद । झूठ बोले उपजावे असमाद ॥१॥
 तसिरा पाप अदत्तादान । चोरी करे लेवे वस्तु विन आन ॥
 चौथा पाप कहा मैथुन । कुशील सेवे नर नारी निगुन ॥२॥
 पंचम पाप परिग्रह कहा । पर वस्तु की ममत्व जो करी रहा ॥
 छटा पाप तो जानो क्रोध । आत्म परात्म उपजे विरोध ॥
 सातवां पाप तो है जी मान । अहंता भाव धरे अज्ञान ॥
 आठवां पाप माया गुह रही । दगा छलनकी क्रिया नहीं ॥
 नववां पाप तो जानिये लोभादेहे तृष्णा नहीं आना थोभा ॥
 दशवां पाप धरे जो राग । मनोज बन्तु ने करे लाग ॥५॥
 ग्यारवां पाप तो होना द्वेष । अन गनती बन्तु ने रेष ॥

तीखूत्ता के पाठसे । विधी वन्दे जिन राई ॥
 लियोग से भक्ति करत । काया से नामि बैठाई ॥
 वचन से भगवन्त वचन । तेहत प्रमाण वधाई ॥
 अत्यन्त संवेग मनमें धरता तीव्र धर्म अनुराग को ॥
 यह अवसर जग मांही मिलता है महा भाग्य को ॥३॥
 सुभद्रा राणी आदि । सब दाइयों तहां आई ॥
 धर्मानु रागे हुल्लसाय । अनिमेष पेखे प्रभु तांई ॥
 लुट्ठी २ बंदन करे । देखने प्रसी नहीं पावे ॥
 सबही ऊर्भी रहे । सुनन जिन वचन उमावे ॥
 और भी परिपद भरी है अति मर्याद धर रहे हर्ष भर ॥
 उमंग जिन बाणी सुनन की । यथा मेग मयूर पर ॥४॥

देखना वणन् खडका छन्द

परिपदगडभरा । आवकयति कृपिवरा । देवनरकिन्नरा सहश्रगमो
 महावीरमहार्थारंगभीरवाणीवदा । शरदकृतुमेघगाजसुरमो ॥१॥
 उथेंदुंधवीनादकोरं वस्त्रगसाद हृदय आह्लाद उत्सहाखमो ॥
 ऊटहृदयकीकंटमें फिरछकी । मस्तकेघोरजिभ्यासुजमो ॥ २ ॥
 सर्वअश्रमो । उअवो । उअमोडा । अना । उशंकलो । उप्रो । उजवाणी ॥
 अन्नमणमनगमणमणभव्यगणचितेहितमितपूरजो सुखदाणी
 सर्वदेवमायाभगीसर्वसमजेगरी । वेमसंशयहरी गुण खानी
 सरसमुखसजमरसनविरमहे । हिरसअभीरससवरमेप्राणी ॥ ४ ॥

योजनप्रमानव्याख्यानवयानालुनातेलुजानलोवानप्यारा ॥
 आर्यजनायेधार्यहितकार्यसौमिज २ भाषामेंतनजेतारा ॥५॥
 देशनागधत्तणीअर्थनाणीमणीअर्थसवदेशनीमिश्रधारा ॥
 नीरज्योहीरहदयवीजररगमैल्यौतवननरमैल्लोडचारा ॥ ६॥
 अहोनग्नतांनलोमेटननआनलो।लोक अलोककीअस्तिमानो
 जीवअजीव कर लोक पूर्ण भरा।बंधरु मोक्ष यह सत्य जानो
 पुण्य रू पाप के कृच्छ्र पावे लवी।आश्रय आय संवर रुकानो
 वेदते निर्जराहोतहैक्षिगक्षिणायों जान प्राणी बंध नत ठानो

॥ अठारह पाप वरणन्-चोपाई छन्द ॥

पहिला पाप प्रजाती पात । स्व पर आत्म की करे धात ॥
 दूसरा पाप है मृषा वाद । झूठ बोले उपजावे अस्तमाद ॥१॥
 तिसरा पाप अदत्तादान । चोरी करे लेवे वस्तु बिन जान ॥
 चौथा पाप कहा मथुन । कुशील सेवे नर नारी निधुन ॥२॥
 पंचम पाप परिग्रह कहा।पर वस्तु की ममत्व जो करी रहा ॥
 छठा पाप तो जानो क्रोध । आत्म परात्म उपजे विरोध ॥
 सातवां पाप तो है जी मान । अहंता भाव धरे अज्ञान ॥
 आठवां पाप माया गुत रही । दगा चलनकी क्रिया लही ॥
 नववां पाप तो जानिये लोभादडे तृष्णा नहीं आता थोभा ॥
 दशवां पाप धरे जो राग । मनोह वस्तु से करे लोभा ॥५॥
 ग्यारवां पाप तो होना द्वेष । अन गनती वस्तु से रेष ॥

चार बां पाप सचावे क्लेश । कूसम्भ झगडे करे विशेष ॥६॥
 तेरवा पाप है अभ्याख्यान । खोटा वजा (आल) देव अजान
 चउववा पाप होता पैशून्य । चुगली कर पर गुन करे नून्य
 पन्नरवापापपरपरिवाद । निन्दा करे उपजावे विषवाद ॥

सोलवापापरतिअरती । हर्षशोक जो परतो चिती ॥ ८ ॥

सतरवापाप है भायामोपा । कपट युक्त झूठका दोषा ॥

अठारवामिथ्यादंशणशल्याकुमतश्रद्धारखेप्रयल ॥ ९ ॥

कर्मबंधकरता है अठारेपाप । अनंतकाल से दे संताप ॥

जहां लगन छूटे इनका संग । तहां लगन ही सुखकारंग ॥ १॥

दोहा—दुःख भुक्तते जीव यह । घबरावत है अपार ॥

परंतु दुःख दायक यह । पाप न छोडे को वार ॥१॥

अहो सुखेच्छु प्राणियों । सुणो यह सद्बोध ॥

शीघ्र तजे।सव पाप को । धर्म बरो लोसोध ॥२॥

अठारह धर्म वरणन्—चोपाइछन्द

पहिला है अहिंसावृत्त । निजपर आत्मदया जो करत ॥

दूसरा अमृषावृत्तविचार । हितमितनिर्वय वयण उचार ॥१॥

तीसरा दत्तवृत्त जो नरगृहे । आज्ञाविनकुछनासंग्रहे ॥

चोथा वृत्त ब्रह्मचर्य धार । कुशीलइच्छासर्वनिवार ॥ २ ॥

पंचमवृत्त निर्मत्वधरो । सचितअचितपरिहपरहरे ॥

छट्ठा वृत्त है क्षांति प्रधान । खमो परिसह न बढो जवान ॥३॥

सांतवां वृत्त मार्दवत्तज मान । विनय कर होवो गुनवान ॥

आठवां वृत्त आर्थवन्तरल । वाद्या भ्यान्तर रहे निर्मल ॥४॥
 नववां मुक्ति वृत्त तृष्णा । त्यागाप्र स ते तोषे बढ भाग ॥
 दशवां वृत्त वने दीत राग । न करे कर्म बंध अनु राग ॥५॥
 एकदश वृत्त प्रेमी वने । द्रोह तजे छेद बुद्धि हने ॥
 बागवां वृत्त सदासे सन्ध को । कदाग्रह का मूलपर हरे ॥६॥
 तेहरवां वृत्त करे गुणक्रियापान दे आल अन्य का सहै आप ॥
 बउदवां वृत्त गंभीरता धरो गुणाव गुण जाण हिये संगरे ॥७॥
 पन्दरवां वृत्त को गुणानु वाद । कदापि न बदे को अपवाद ॥
 सोलवां वृत्त वेगव्य चित धरे । रति आति सदा पर हरे ॥८॥
 सत्तरवां वृत्त सगल सत्य वेदाग्रह भ्यान्तर निर्मल सदे रे
 अठारवां वृत्त सन्धस्त्व समा चोहृदंशन इष्टा कदाका का
 यह अठारह वृत्त निक्षण नडग । कर्म काटे जो धारे अडग
 स्वल्प कालमें मुक्ति पहुँचाय । जस्य परमा नन्दी बनाय ॥

दोहा—मंथेर सवि दन्त जो भरी । तनजे पोडे नांय ॥

स्वल्प मनी के सनजाय काविन्तारी जिन दर्शाये ॥ १ ॥

इन अठारह पदक । जिन २ सेवन कीन ॥

तो इन भर पर भव विनि । जना विनि लीन ॥ २ ॥

इन अठारह वृत्त का । जिन २ पालन कीन ॥

तो इन भर पर भव विनि । जिन २ सेवन कीन ॥ ३ ॥

इन दोनों बन्त का । प्रपक मंथिल नांय ॥

महोद विविधता कर्पादनाजने बनाय ॥ ४ ॥

किति सृत्वानु सार सोकितनी ग्रन्थ अनुतार ॥
 पढी सुणी युक्ति सजी । कथुं ग्रंथ विस्तार ॥ ५ ॥
 पाठक श्रोता दत्त चित्त पठण करो आद्यन्त ॥
 मुगेल मति गृहो सारको । आशय लक्ष ठवन्त ॥ ६ ॥
 पनो गुन वन्त दुर्गण तजो । ज्ञाण सत्य दृष्टान्त ॥
 कथक प्रकाशक श्रम को । सफल करो श्रेष्ठान्त ॥ ७ ॥
 अघोद्वार कथागार की । भूमी का वरणी येह ॥
 अगल भुवन रचना रचुं । ऋषि अमोलख केह ॥ ८ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय
 के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषीजी
 महाराज रचित अघोद्वार कथागार ग्रंथ की भूमिका .



समाप्तम्



॥ संजिल पहिला प्रणातिपात पापोद्वार ॥

पूर्व विभाग—“हिंसा”

प्राणा पात (हिंसा) का अर्थ—दोहा छन्द

‘प्राण’ जिनश्वर दश कहें । अनि पात करे यात ॥
 प्राणाति पात तो पाप है । सर्व पाप दर कहात ॥ १ ॥
 पंचेन्द्री के प्राण पंच । तीन जोग के तीन ॥
 आसेष्टवास न आयुष्य । दश प्राण तो चीन ॥ २ ॥
 चार प्राण एकन्द्री के । स्पर्श कार्य आयु श्वाश ॥
 छः प्राण हैं वेन्द्री के । रसना वचन प्रकाश ॥ ३ ॥
 सात तेन्द्री के प्राणा धिक । चोद्री के धनु अष्ट ॥ ४ ॥
 अस्तरी पंचेन्द्री के धान हैं । लरी के भेन दष्ट ॥ ५ ॥

प्रश्न व्याकरण मुद्रानुसार प्रणातिपात पापका वर्णन

दोहा—प्रश्न व्याकरण मुद्र के । प्रयत्न अ-वाच्य सङ्ग्रह ॥

प्राणतो पात जिन वरणवा॥ सो यहां करूं उचार ॥५॥
 पापकेसा? रू नाम तस?। क्या कारन से होय? ॥
 तस फैल जो जगेमें करे । पंच प्रश्नोत्तर जोय ॥ ६ ॥

प्राणातिपात के दुर्गुण-चोपाइ छन्द

पात्रा-यहै प्रथमहीपापा 'चंडा'-कपायकरदेसंताप ॥
 'रुदो'-बुरा, 'खुदो'-अधर्म। 'सहैस्तिंओ'-अविचारका कर्म ॥७॥
 'अणारिओ'-येही अनाचार। 'णिग्घिणों'-नहीं सुझालगार ॥
 'णिस्संतो'-अविश्वासस्थान। 'महाभय' अतिभय' येही मान। ८ ॥
 'पइभओ'-येहै अनंतही डर। 'वहंणओ'-सुणतहीं चमकेनर ॥
 'तासंणओ'-अतिघ्रास उपजाय। 'अणज्जो'-अनार्यकृत्यकहाय ९
 'उववणओ'-इससे उद्वेग उपजंत। 'णिरवयंको'-नभली अपेक्ष तं ।
 'अधमसंयान' गतसुखपिर्व। म॥ निक्खलुणो-निर्दयदेनं कंवास १०
 'महाअज्ञान' कायहदातार। 'वद्धतमरणं' दीनताकरतार ॥
 'यहवावीसगु' गहिंसाकेकहे। सूत्रार्थयुक्तलिखदहे ॥ ११ ॥

प्राणातिपात पापकेनामार्थ-चोपाइ छन्द

प्राणवेध, मूलशरीरनाश। अविश्वासस्थानहिंसाहैखास ॥
 अकार्यघातमरणरुर्वधाउपद्रवअतिपापयहसध ॥ १२ ॥
 आरंभसंभारंभसारंभकहाय। आयु-उपद्रव-भेदनिवार-गलाय ।
 चलायेंतकोचर्यः छः एकर्यामृत्युअसंयमकरणांमर्द ॥ १३ ॥

धौंहरण, परभ्रमगमनादुर्गतिपडन, पापविस्तरन् ॥
 ॥ पैला भंडारी रविच्छेदाजीवित्तंतकरदेत है खेद ॥ १४ ॥
 मृत्तंतव्यदजै परभारापरितोपकर, इन्द्रिवनाशिनार ॥
 गीवनिर्कालनगोपेनगुणखंडनायेतीतनामहिताकंगिन ॥

प्राणातीपातपाप मे भेद—अरल छन्द

दोय प्रकार के जीव । तस स्थावर कहे ॥
 स्थावर पंच प्रकार । तस चार तरह रहे ॥
 पृथ्वी पापी वन्ही वायु । वनस्पती स्थावरा ॥
 वेन्द्री तेन्द्री चोरिन्द्री । पंचेन्द्री तस खरा ॥ १६ ॥
 अन्तान्त पुण्य योग्य । पंचेन्द्री पद लये ॥
 इस से हीन पुण्य होय । ओचो ती वे एक रहे ॥
 इस लिये महापाप । पंचेन्द्री वध का कहा ॥
 उस से ओछा पाप । ओछी इन्द्री का रहा ॥ १७ ॥
 येही सूतका मग्ग । अनुक्रमे लीजीये ॥
 प्रथम पंचेन्द्री घात । का पाप सुणीजीये ॥
 नंतर चोरिन्द्री तेन्द्री । वेन्द्री एकेन्द्री का कहा ॥
 प्रश्नव्याकरण प्रथम । अध्याय के अनुसार यहाँ ॥ १८ ॥
 पंचेन्द्रीके चार प्रकार । नरक देवे पशु नरा ॥
 नोप कर्म हे आयुष्य । नरक और मुरवरा ॥
 मुख्यत्व मनुष्य करघात । तीनों का न करा ॥

इसलिये तिर्यंच घात का । वरणन् यहां ऊचरा ॥ १९ ॥

तिर्यंच पचन्त्री के भेदानु भेद—इन्द्रविजय.

जलचरस्थलचरखेचरउरचराभूजचरमूलभेदपंचजानो ॥
जलचररहेसदापानीकेआश्रय।मच्छुकच्छमगरादीमानो ॥
स्थलचरआश्रयरहेपृथ्वीके।ग्रामवासीवनवासीवृक्षानो ॥
गोमहिषछगअश्वगजखराऊंटघोडाधानरखेलश्वानो ॥ २० ॥
मृगशामरचमरीगायर्मांडा।रोझखरगोपसिंह सियाला ॥
पयरी रोहीवाघ चीताअरु,।तरखरगुबरआदि है थिडाला ॥
खेचर गमन कर आकाश मेंतोता सारस मयूर मराला ॥
यक कउये चांडीयों केद तरहासुर्चा मुखी चकवे कोंचाला २॥
परेये काधर बडकरू तीनराहोल ठेक चील आदी बहुतई
उर पर चलने पेट रगडकर अजगर तरप अलसिये साइ ॥
भुज बलये मूज पर चलने हैं।नोल घुल ऊंदर बिस्मराइ ॥
दुर्यादि भेद तिर्यंचपचन्त्री।कंसघ्नीअंमघ्नीदोभंदरहाइ ॥ २२ ॥

॥ पचन्त्री की हिमाका कारण-मनहर छन्द ॥

चरम चरवी धातु मार्य । रंज जगन फिकास ।
भंजी हीया अंतो पिन । अर्थे यत्र कारणे ॥
दीने होंदेंहोंदोंमीजी नय आये काने गिजी ।
नगो नौक नौटी श्रंग । दौड पौय सारने ॥
विषय विन्या केरी । अथन व्याकरण ऐम ।
कारण कहे जिनेश । पचन्त्री को माग्ने ॥

तुच्छ मतलब काज । करत बडा अकाज ।
जैसेनापने को डारोगोशिर्ष चंदन जारने ॥ २३ ॥

चमडे केलियेहिमा—मनोहरछन्द

कारण लुब्धीस कहे । हिंसाके जिनेशयह ।
प्रथम चरम काज । हिंसा जग होवे है ॥
धर्मात्म बजे अकृत्य कृत नहीं लज ।
बडे स्थल चर के सो कट्टे शत्रु जोवे हैं ॥
नगारा नोबत ढोल । तबले तासे आदि और ॥
चरम के वाजिन्त । बनानेका कहे सो वे हैं ॥
बुलंद आवाजी ताजी जमडी के लावो बनाय ।
ताही हम लेंगे ऐसे जन्म को बिगोवे हैं ॥ १४ ॥
जीवते पशु के ताड़ । चुनादि जेहर पिलाइ ।
मरते तुरत चरम उदेडे अज्ञानिया ॥
ताका वाजिन्त्र बनाय । देते धर्मीका लाय ।
परिक्षा करत अच्छा मुखे से बखानिया ॥
देवालय चडाय ते बजाइ के धर्म मनाय ।
लगादि प्रसङ्गे तस ध्वनी संगल मानीया ॥
एसी नीच ताड़ भाड़ कलीमें उत्तम गिनाइ ।
बहुते शर्म आइ केने कथे जानीयां ॥ २५ ॥
धर्म के ग्रन्थोंपर बहीयोंपुस्तकों वर ।

इसलिये तिर्यच घात का । वरणन् यहां ऊचरा ॥ १९ ॥

तिर्यच पंचन्दी के भेदानु भेद—इन्द्रविजय.

जलचरस्थलचरखेचरउरचराभूजचरमूलभेदपंचजानो ॥
जलचररहेसदापानीकेआश्रय।मच्छकच्छमगरादीमानो ॥
स्थलचरआश्रयरहेपृथ्वीकोग्रामवासीवनवासीयज्ञानो ॥
गोमहिषछगअश्वगजध्वराऊंटघोडाधानरखेलश्वानो ॥ २० ॥
मृगशामरचमरीगायर्मांडा।रोझध्वरगोर्पासिंह सियाला ॥
धर्मा गंहीवाघ चींताअरू,।तरखमुवरआदि हे थिडाला ॥
गेचर गमन कर आकाश मेंनोता सारस मयूर मराला ॥
एक कउंय चींटीयो केट तरहासुची मुखी चकये फोंचाला ॥
परेवे कायर बढकर तीनगहोल हँक चील आदी घट्टताई
उर पर चलने पेट गगडकर अजगर सरप अलसिये साड ॥
भुज धलमे भुज पर चलने होनोल घुन ऊंदर बिस्मराइ ॥
हस्यादि भेद तिर्यचपंचन्दी।कामेशांअमशांदिभंदरहाइ ॥ २१ ॥

॥ पंचन्दी को हिमाका काम्प-मनह छन्द ॥

चंगम चर्या धानु मार्य । रक्त जगत् रिफाम ।
भंजी हीया अंता पिन । अर्थं यव कारणे ॥
दीन दौंटेदौंटेमोजी नम आंधे काने गिजी ।
नरो नैक नौडी श्रंग । दीट पाम्य मार्गे ॥
विंय विन्वी केशे । श्रम व्याकरण ऐम ।
क्षम कह जिनेश । पंचन्दी को मार्गे ॥

तुच्छ मतलब काज । करत बडा अकाज ।
जैसेनापने को डारोगोशिर्षे चंदन जारने ॥ २३ ॥

चमडे केलियेहिंसा—मनोहरछन्द

कारण छुट्ठीस कह्ये । हिंसाके जिनेशयह ।
प्रथम चरम काज । हिंसा जग होवे है ॥
धर्मात्म बजे अकृत्य कृत नहीं लजे ।
बडे स्थल चर के सो कट्टे शत्रु जोवे हैं ॥
नगारा नोवत ढोल । तबले तात्ते आदि और ॥
चरम के वाजिन्त । बनानेका कह्ये सो वे हैं ॥
बुलंद आवाजी ताजी जमडी के लावो बनाय ।
तोही हम लेंगे ऐसे जन्म को विगोवे हैं ॥ १४ ॥
जीवते पशु के ताड़ । चुनादि जेहर पिलाइ ।
मरते तुरत चरम उदेडे अज्ञानिया ॥
ताका वाजिन्त्र बनाय । दैते धर्मीको लाय ।
परिक्षा करत अच्छा मुखे ते बखानिया ॥
देवालय चढाय ते बजाइ के धर्म मनाय ।
लग्नादि प्रसङ्गे तस ध्वनी संगल मानीया ॥
एसी नीच ताड़ भाड़ कलामें उत्तम गिताइ ।
वहने शरम आइ कैसे कथे जानीयां ॥ २५ ॥
धर्म के ग्रन्थोंपर बहियां पुस्तकों वर ।

चमड़े के पुटे केड़ पवित्र चडाव ते ॥
 हाथ पाय मोजे अरु सोवन के सेजे ।
 आदि वस्त्र के स्थान केड़ चरन को लगावते ॥
 ऐसे केड़ काम मांइ चमड़ा अधिक आइ ।
 महंगा भाव भरा तब लोभी लल चावते ॥
 आगिनत पशू बिन मोत मार चरम कहाडे ।
 खरीदे काम मे लेवे ते पाप हिस्सा पावते ॥ २६ ॥

चरवी के लिये हिंसा—मनोहरछन्द

इस कली मांही धिनताइ तो फेलाइ भाइ ।
 घृतादि उत्तम मांही चरवी को मिलाइ है ॥
 कितनेक तेल ठाड़ संचे मील गिरनी मांही ।
 चरवी ही लगाइ ऐसे खरच बधाइ है ॥
 लोभी दमड़े बचाइ चरवी की भइ महगाइ ।
 अज्ञानी अनेक पशू मारे चरवी त्तांइ है
 धूप दीप भोजन मे । अभ्यंग अरु अंजन मे ।
 चरवीही भराइ ऐसी भ्रष्टता मचाइ है ॥ २७ ॥

मांमकेलिये हिंसा—मनोहर छन्द

कहा ग्रन्थ पावा नु । वालंनही अनित्यद मानु ।
 रन्ना लोभानु बने भ्रष्ट विद्वानो है ॥

बजे वेदक कुर्गन ताये धर्म शास्त्र मान ।
 ताने हिंसा को बयान ठाने अर्थ पलटाना है ॥
 विष्णुतुल्य भृष्ट मांस द्रष्ट भक्षण की आत्मा
 यज्ञ नांही भेदादिसे शुद्ध कीयो माने हे ॥
 खायत खिलाय अपहूये अन्य को डुवाय ।
 ऐसे भिक्षा धर्मीयोंको कर्लीको जमाना है ॥ २ ॥
 बज्रत है देवी नानादेव वाप जी कहलाता ।
 केड स्थापना स्थापना । निज मतलब पुराता है ॥
 काटे गरीबोंके गले । नक्त के वहां नाले चले ।
 कैसे नात वाप भले । पुत्र को जो खाता है ॥
 पूरे पेटही की खाड । हित्या देव तिर चाड ।
 देखा मतलबी भोले मतलबी ठगाता है ॥
 खोटे तैहवार स्थापये । कौड़ों पचेंद्री मराये ॥
 कदा अन्य को सतायेनहीं मिले स्वप्न साता है ॥ ३ ॥
 देखीये पवित्राचारी। रखे अशुचिही न्यारी ।
 न्हाय धोय तिलक धारी तेही नांस ही के अहारी है ॥
 स्वजन जो नरे तो स्मत्ताण जाय अग्नि धरे ।
 ताही के तो घर पर रहे सूतक धारी है ॥
 पशू मार घर वार करे चूले पर तैयार ।
 ताको करे मुख अहार । का सूतक विचारी है ॥
 अहो ' सुनो हो प्रवीन । मतवनो नहीं हीन

यने चाबो सचे लीन । तां दो अभक्ष टारी हे ॥ ३० ॥
 अपवित्र मांस अहार । महा रोग का भंडार ।
 महा अशय करतार । दम्बत धिन कार हे ॥
 आभी पेशाबी उत्पत्त । ना पाक पेशाबी सत ।
 करने बज्जही तुरत । कैसे कर सं स्वीकार हे ॥
 वागी युगोप अमेरीकान । यने बहूत विद्वान ॥
 जान मांस से नुकसान । बहू किया परिहार हे ॥
 नहीं हिंदका आचार । कर शास्त्रही पुरार ।
 देखो दृष्टान विचार । यनो आत्म हिनकार हे ॥ ३१ ॥

गुक्त के लिये हिंसा—मनोहर छन्द.

ब्रह्म रक्त मे रंगाय । रक्त औषधी कराय ।
 मङ्ग दुःखही घनाय । जान आश्रय आप हे ॥
 अविविध मे पवित्र । कर गति यह विचित्र ।
 केमे मन माने मित्र । क्या बुद्धि विकल्पाय हे ॥
 भिग मोज मुम्य काज । कर थडा यों अकाज ॥
 केमा मिया ये ममाज । बुद्धिवंत कहलाय हे ॥
 रुद्रनिमित्त पशुघात । जग में होवे अमात ।
 नाकी अधिकारी मगूही भोगवीही थाय हे ॥ ३२ ॥

दार्शनिक लिये हिंसा—मनोहर छन्द

मंजिल पहिला—व्रगातेपान पापोद्धार.

३९

अहो? अनर्थ आति करत है मुढ भाति ॥
तित्तर हजार हाथी । वषोंवर्ष मारे है ॥
औरभी अनेक जीव । मागत करत रीव ।
हडियों निकाल करे खिलौने तैयार है ॥
हाथी दाँत के कहाय । मन मूर्ख लोभाय ।
न देखे गजब तांय । तात्तेभूवन ध्रुंगारे हैं ॥
धरे देख के आनंद । करे कटिण कर्म बंध ।
घनी पाप भारी मंद डूबे काली धारे हैं ॥ ३३ ॥
उत्तम जाती भी कहाइ । दया धर्मी ही वजाइ ॥
खोटी रुढीयों स्थापाइ । यह देख शर्म आइ है ॥
धातु के भूषण तजी । चुडे दाँतो केई तजी
केइ प्रतिमा घडाइ धर्म उपकरण बनाइ है ॥
गिने जाकी अत्तजाइ । अशुद्धताही ही ननाइ ।
तेही हडी खंड लाइ । धर्मभोजन निपाइ है ॥
हीये कपाल आग्याइ । चारों फुट गइ भाइ ॥
कैसे रुटी यह निटाइ थाकी सय पंडिताइ है ॥ ३४ ॥
दवाइयों के लिये हिंसा—मनोहर छंद

तेत्य दया होत नाइ । हिंसाका बधे प्रकाश।
न 'तिन पेवनही । हृदय धग्गन है ॥
मरि की दवाइ । देवा काल गुण

जो पंचेन्द्री हणाय । सो तो तिश्चय नरक जाय
 कृत्य कर्म फल पाय । जेते वहां ठाणिये ॥
 एसी दोनो भव सांय । हिंसा हेजी दुःख दाय ॥
 छोडो सुख कीजो चहायायह असोल वन जानीये ॥

विहेन्द्री का वरणनू—चोपाईछन्द.

रिन्द्री के चार इन्द्री होयाकाया मुख नाक आँख जोय
 मूर्ख मच्छर तीड पतंगाविच्छ खकडे आदि भुंगा ॥ ३७ ॥
 द्री के इन्द्री तीन कही।काया मुख नाक ही लही ॥
 लीख चीटी कुंथवे जानाउदड़ पिस्तु खटमल दी मान
 द्री के काया मुख ये दोयासख सीप लट गिंडोला होय ॥
 तीन विहेन्द्री विकल स्वभाव।कर्म बरा रहेदुःख पाव ॥

विहेन्द्रीकी हिंसाकावरणनू—इन्द्रविजयछन्द.

जेज सुख मानी जन अज्ञानी । अर्थ अनर्थ विहेन्द्री मारे
 तेहत के काज मारे भैवरी । अरु धूवा कर मच्छर संहारे ॥
 दीपक माहे पडे आ पतंगी ये प्रवाही वस्तु मस्त्री विदारें ॥
 मारे खटमल ज्यूलीख फोडे।चीटी कुंयु को कौन निहारे ॥ ४१ ॥
 तडी वस्तु केति भाजी भुदुअरु ॥ विहेन्द्री रहते ता मांही ॥
 ताहे पचावत खावत के तेहा।प्रत्यक्ष को सो खाइ ॥
 मोरी नाली पर उल्ल पाणी ॥ मारे कीडे तांड़ ॥
 रेशम के उर्ग रचे ॥ विहेन्द्री मराइ ॥

उपकरणों धराविखरेके निमकै क्षारभोजनमें खावे ॥
 और अने कसं हारणकारणा पृथ्वीके के गिनती लगावे ॥
 ह्मी भी अर्धहने पृथ्वीसे संस्पर्शजिनें फरमये ॥ ४७ ॥
 नीकी पात करे करस्तानके पीवनभोजनवे अथेवे ॥
 चादि अर्धअः अर्थही पानीकी हिमावहनही हावे ॥
 चनराचनजालनदीपकआदि अर्धअर्थवन्ही खावे ।
 खायाजिन्तवन्तु रावनरीछीनु ववायुहनेनावे ॥ ४८ ॥
 यवकहुवनस्त्रनीघानकारनधेरहथीयागपकाननि रावे ॥
 नोजनसे जाशटपाटलानृशालज्वलदीनीपडेंहवनावे ॥
 जाजिन्त्रनीवावेहनमें डरमेंवनतोंगेविभेविशूठावे ॥
 देवस्थानजादीरकिंयेहें शीलपडेंशालेविकीकरावे ॥ ४९ ॥
 नीसंरणीनाकाचंगिखुंटियोमिडीशेभेपेवआश्रमस्थाना ।
 गंधर्वालेवेदनवन्तमृगहलनेमरकुंलेपारेयेताना ॥
 शविकेपोलखोगोदाहनेजेगंगुडकोठागैंगपोलैताना ॥
 द्वांकेपाटअर्हटमेंलीछेडीहथीपारहायाधनएतजाना ५० ॥
 गोडांधराविखराभीखहुतहीवनसगतिवडनककाजहोइ ।

चित्तके धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप नहीं माने हैं उनका यह बात ध्यान में लेना चाहिये, दात, पराक्रम, मृग के दधन आश्रय द्वार के दधन अज्येयन में पक्षी काय को हिंसा के कारण में (२३) दांपत्य प्रतिमा, [२०] देव- [२१] देवस्थान, और [२२] राजाज्य दात [२३] धर्मस्थान हैं, इन के बनाने दांपत्य हिंसक मंद बुद्धि और अज्ञान करने वाले रहे हैं.

कितने मुठ धुड़ी विह्वली मारन के मांह धर्म प
 कैसे हें धुड़ीयों पूछीये ताहो स सो कहे नाहक हमको
 तासे कहो जो सतावे सो धुड़ी मारं सो महा धुड़ी क्योंनी
 पेट के काज अकाज करो तुम। तैसेही ते करे क्या कर पावे।

स्थायर जीवों के प्रकार-इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी पाणी अग्नि द्वाय वनस्पती पांचो स्थावर जीव
 सुश्रम सो भीये गव लांकमे ताकी घाग को करन न पा
 घादार सो दाम्य चरम रक्षु न लाक केदश तिरछे विरा
 सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ को सो महा परनाश ॥ १ ॥
 एकुकण एक चुन्ड निगम्य एक क्षयट में जीव अमंय
 पाया भ्रमर जवार मयव सम नन को जे बुझाए न पंगे
 वनस्पती में मंय्य अनर्थ अनर्थ जीव एकी मन लेये
 अनर्थ दारक न्य पर का यव जांग गुताग सो मनमें मंगे ॥ ४ ॥

स्थायर की हिंसा वर्णन- इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी हने कृषी गेने वन वना पुष्पादी नीचे क्यारों कृषा ॥
 ना नराव क्यार ह वनस्पती ताड आगम विदोह केद
 दार कोटि गेने पंजय केव प्रमत्त मंय्य जेवन
 जेन देहव र प्रविने वन को दार मार ॥ ना भी
 ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

डउपकरण^{३०}धरविखरेकोनिम^{३३}क्षारभोजनमें खावे ॥
 औरअनेकसंहारणकारगापृथ्वीकेकोगिनतीलगावे ॥
 हसीभीअर्थहनेपृथ्वीसेसंमुखजिनेद्रफरमाये ॥ ४७ ॥
 पानीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवल्लधोवे ॥
 गोचादिअर्थअनर्थहीपानीकीहिंसावहतहीहांवे ॥
 चनराचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवनहीखावे ।
 खावाजिन्तवस्त्ररात्रंतीछिमुत्रवायुहनेसांवे ॥ ४८ ॥
 अथकहूवनस्त्रतीघातकारनधरहथीयारपकाननिशवे॥
 मोर्जनसेजोपाटपाटलामूशलउखलवानोपडैहवनावे ॥
 जोजिन्तनोवावाहनमेंडंगभवनतोरंगपिंजरपेशू ठावे॥
 देवस्थानजोलीपक्तियेद्वैरशालपडंशालवेदिकोंकरावे ॥ ४९ ॥
 नीसरणीनोकोचांगिखूंटियोमेडीशोभोपर्वआश्रमस्थानां ।
 गंधमालचंदनवल्लभूसराहलभमारकुलेयारथसानो ॥
 शैविकीपीलखीगाढावाहनजोगुढकोठारमार्गपोलठानो ॥
 द्वारकपाटअरहटसुलीछडीहथीयारहाथार्धनैरनजानो ५०॥
 खोर्डोधरविखेराओखहुतहीवनस्पतिवधइनकेकाजहोइ ।

कितनेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप) नहीं मा-
 नते हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. प्रश्न, व्याकरण-
 सूत्र के प्रथम आश्रय द्वार के प्रथम अध्वेयन में पृथ्वी काय
 की हिंसा के कारण में (२६) बाघाल प्रतिमा, [२७] देरा-
 लय, और [३०] पोशाल यह [४] धर्मस्थान
 इन के बनाने वालेको हिंसक मंद बुद्धिये और
 नै चाले कहें हैं.

कितने मुड धुड़ी विह्वली मारन के मांह धर्म बगै
 कैसे हैं धुड़ीयों पूछीय ताही स सो कहे नाहुक हमको
 नामे कहे जो मतावे सो धुड़ी मारे सो महा धुड़ी क्योंनी
 पेट के काज अकाज करो तुमा तैसेही ते कर क्या फेर पावै

स्थावर जीवों के प्रकार-इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावै
 सुश्रम सो भीयै सब लांकने ताही घाग को करन न
 यादर सो दाम्य चरम वधु नलाक केदश तिरछे दिशैं
 माथे अनथे दो प्रकारहिंमा अनथे कर सो महा पम्तावे॥ १॥
 एकुंकाण एक वृन्द विणम्य एक झरठ में जीव अग्यै
 पाया भ्रमर जवार मरमव मम नन कर जेवुड़ीय न पंगे
 वनस्पती सं संम्य अनन्य अनन्य तीव एकौ नन लंगे
 अनर्थ दोरक न्य पर का यय जागे गुनागना मनमें गंगे॥ ४॥

स्थावर की हिंसा वर्णन- इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी होने कही सोन अन वनाहुंकरणी दोरी कपारी कृपा
 ला नराव क्या न देदीया नाट अंगन विद्विज भेद
 दूर दोरु लेने वीजय केव. प्रेमसद मंगल भवन
 लेन देहव न प्रेमजयन केदश मरि
 २. १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०.

॥ उपकरणैष्वरविखरेकोनिमकक्षारभोजनमें खावे ॥
 ॥ रअनेकसंहारणकारगापृथवीकेकेगिनतीलगावे ॥
 ॥ कतीभीअर्थहनेपृथवीसेमंदमूर्खजिनेंद्रफरमये ॥ ४७ ॥
 ॥ नीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवैश्रधेवे ॥
 ॥ गोचादिअर्थअनर्थहीपानीकीहिंसावहतहीहोवे ॥
 ॥ चनराचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवनहीखावे ।
 ॥ खायाजिन्मरुवन्मरात्रनरीछामुबचायुहनेगोवे ॥ ४८ ॥
 ॥ प्रयकहुंवनसरतीघातकारनधरहरीयागपकाननिशवे ॥
 ॥ भोजनसेजोशटपाटैलामृशलऊर्ग्वलदीनोपडैहयनावे ॥
 ॥ धाजिन्मरनोवावेहिनमेंडेरमेंवनतरेणविशेषशूटावे ॥
 ॥ देवस्थानजोश्रीपक्तिपट्टेगोलपडैशालवेदिकोंकरावे ॥ ४९ ॥
 ॥ नीसरणीनोकोचांगिबुंदियोमेडीगोभेपेवैअथनस्थानो ।
 ॥ गंधर्वालयेदेनवैखडैमराहलनेमारकुंलेयारेथेनानो ॥
 ॥ शिविकोपोलविगोटावाहनजोगुडकोटोमंगपोलदानो ॥
 ॥ दोग्गोपाटअरहटमेंश्रीलंटीहोधीयारहापार्थनऐगनजानो ५० ॥
 ॥ गोटीपरविखराओखहुतहीवनत्यन्त्रियइनककाजहोइ ।

हिमरु धर्मस्थान बनाने में हिमा (पाप नहीं) मानने हैं उनकेपह पाप प्यान में सेना पारिये. यश, यशस्वरूप, सुप्र के नयन आश्रय टाग के नयन अछेयन में पृथवी बायरी हिमा के कारण में (२३) पाषाण प्रतिमा, [२०] देना-
 ॥ २० ॥ देनालय, और [३०] नोजाल यह [४] धर्मस्थान
 . इन के बनाने वाले ही हिमरु में दृष्टिमें और
 जने वाले हैं हैं.

कितने मुड धुद्री विह्वन्त्री मारन के मांह धर्म बतावे ॥
 कैसे हैं धुद्रीयों पूछीये ताहा स सो कहे नाहक हमको सतावे
 तासे कहो जो सतावे सो धुद्री मारे सो महा धुद्री क्योंनी थावे
 पेट के काज अकाज करा तुमा तैसेही ते करे क्या फेर पावे? ॥

स्थावर जीवों के प्रकार—इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे ॥
 सुक्ष्म सां भीये सब लोकमे ताकी घान को करन न पावे
 घादर सो दाखे चरम रक्षुते लोक के दश तिरछे विशेषार्थ
 सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ को सो महा पस्तावे ॥ ४४
 एककण एक चुन्द तिणग्य. एक झपठ में जीव असंखे ॥
 पारवा भ्रमर जवार सरसव सम तन करे जंबूद्वीप न पंगे ॥
 वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लंगे ॥
 अनर्थ दायक स्थावर का ग्रथ जाणे मुजाण सो मनमें लं

स्थावर की हिंसा वरणन्— इन्द्र :

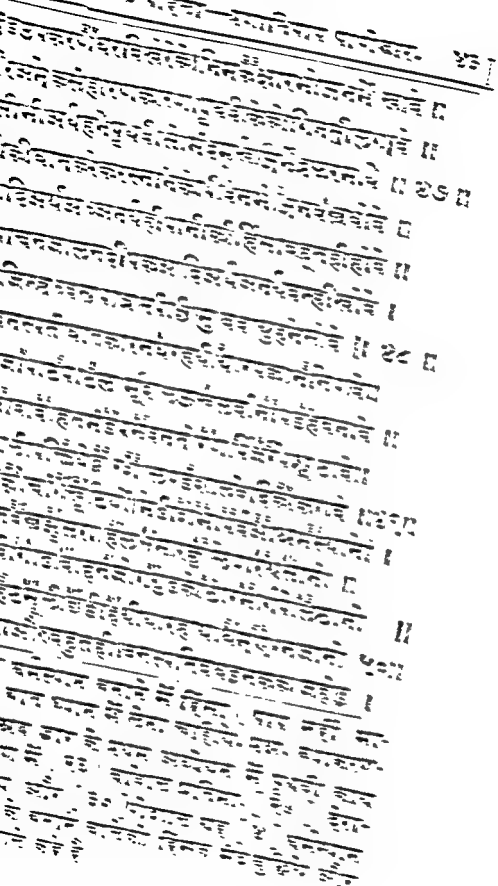
ने कृपी खेत वनावन पुष्कर

व क्यर न वेदीका खोद

ते रस्ते पौज पौकियो प्रोसाद

वना

नारा



कितने मुड धुद्री विहेंद्री मारन के मांह धर्म बतावे ॥
 कैसे हैं धुद्रीयों पूछीये ताही से सो कहे नाहक हमको सतावे
 तासे कहोजो सतावे सो धुद्री मारे सो महा धुद्री क्योंनी थावे
 पेट के काज अकाज करा तुम तैसेही ते करे क्या फेर पावे? ॥

स्थावर जीवों के प्रकार-इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे ॥
 सुक्ष्म सां भीये सब लोकमे ताकी घास को करन न पावे
 घादर सो दाखे चरम रक्षुते लोक केंदश तिरछे विशेषार्थ
 सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ करे सो महा परतावे ॥ ४४
 एक कण एक बुन्द तिणग्य. एक क्षपठ में जीव असंखे ॥
 पारवा भ्रमर जवार सरसव सम तन करे जंबूद्वीप न पंखे ॥
 वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लंखे ॥
 अनर्थ दावक स्थावर का बध जाणे सुजाण सो मनमें संखे ॥ ४५

स्थावर की हिंसा वरणनू- इन्द्र विजय छंद

पृथ्वी हने कृपी खेत वनावन। पुष्करणी धारां क्यारों कूवा ॥
 सर नलाव कवर रु बेदीका। बौड़ औराम विहार गेट थूमा ॥
 द्वार फोटे रस्ते पांज पांकेयो। प्रोताद सौल भवन घर सूवा ॥
 लैन दुकान रु प्रतिमा वनावे। देर सर चिससभा भो हुवा ॥ ४६
 देना न पामे न भुवांग माल डंग भोजन धूनु वनावे ॥

भंडउपकरणीधरविखरेकेनिमकक्षारभोजनमें खावे ॥
 औरअनेकसंहारणकारगापृथ्वीकेकोगिनतीलगावे ॥
 किसीभीअर्थहनेपृथ्वीसेसंदर्भजिनेंद्रफरमावे ॥ ४७ ॥
 पानीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवस्त्रधोवे ॥
 सोचादिअर्थअनर्थहीपानीकीहिंसाबहुतहीहांवे ॥
 पचनराचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखावे ।
 पंखावाजिन्वत्तवस्त्ररात्रसरीछिमुत्रवायुहनेसांवे ॥ ४८ ॥
 अन्नकहूंवनस्पतीघातकारनधरहथीयारपकानैनिषावे ॥
 भोजनसेजांपाटपाटलामूशलउखलवीनोपडैहवनावे ॥
 धाजिन्वन्नोवावाहनमंडैरभवनतोरैणपिंजरपेशू ठावे ॥
 देवस्थानजालीपक्तिपेढैरशालपडैशालवेदिकीकरावे ॥ ४९ ॥
 नीसरणीनोकीचांगैखूंटियोमेठीशोभापर्वआश्रमस्थानां ।
 गंधमालचंदनवस्त्रझूसराहलसमारकुलिपारश्रसानो ॥
 शैविकीपोलखीगाढावाहनजोगैगुढकोठारसंगैपोलैठानो ॥
 द्वारकेपाटअरहटसुलीछिडोहथीयारहाथार्धनैरनजानो ५० ॥
 खोर्डोधिखरेआखहुतहीवनस्पतिवधइनकेकाजहोइ ।

कितनेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप) नहीं मानते हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. प्रश्न, व्याकरण-सूत्र के प्रथम आश्रय द्वार के प्रथम अध्येयन में पृथ्वी काय की हिंसा के कारण में (२६) वाघाल प्रतिमा, [२७] देरासर, (२८) देवालय, और [२९] पोशाल यह [४] धर्मस्थान के ही नाम हैं. इन के बनाने वालेको हिंसक मंद बुद्धिये और दुर्गति में उपजने वाले कहें हैं.

यरोक्त स्थावर हिंसांरु कारण सुत्रानुसार कथे इहां सोइ॥
महा मूर्ख रुद्र मति कपाया शक्त निजात्म दुर्गत विगोइ ॥
यमार्थ काम हगे अज्ञानाही मनर्थ हनंअति दुःखलेहसोइ॥५१॥

हिंमरों का मद्वाध-मनहर छन्द

सर्व पाप में अञ्चल । सर्व पाप में सञ्चल ।
सर्व दुःख काही मूल । हिंसा ही का जानी है ॥
नर्क का है येही दाराजगमें भ्रमावन हार ।
विष्टे यह प्रकार । हिंसा दुःख म्यानी है ॥
मर्म का अहित कार । धर्मीयों करे तिसकार ।
धर्म संयम की कुडार । हिंसा ही बग्याना है॥
जो इसका करे स्वीकार । याही यजने गीधार ।
देव जानी जग मशाराआमोल संच आनीये॥५२॥
अहो ? आश्चर्य आय । अहिंसा सखी सरसाय ।
निज पर भेद कीया मोह मुद अज्ञानीयां ॥
देवता का नाम लेषा पुजादि विधी कोय ।
निज पेट पुग्ग अनर्थ यह टानीयां ॥
अने मंगल काज । अन्यका करे अकाज ।
यहां से मंगल आवे । अहां भोले प्रार्थीयां ॥
हृद में विचन होयामुमंगल दाय यह मोय ।
हिंसा के २ ॥ ५३ ॥ जानीयां ॥५३॥

काल नही वृष्टी होवे । अचिन्त जग डूबोवे ।
 इच्छित फले न शाखा हिंसाते के प्रसाद ते ॥
 कमाइ भी नष्ट थाय । भयंकर रोग आय ।
 बाल विद्रा भइ केइ । करे अप वाद ते ॥
 खाने नहीं नहीं मिले अन्न । पानो विन मरे जन ।
 भूकम्प अग्नि रु हवा । हांत असमाद ते ॥
 इस थोडे काल मांय । जैसे हिंसा वृद्धि पाय ।
 तेसे दुःख अधिकाय । अमोल हिंसा जाद ते ॥५५॥
 नहीं है धर्म जहां हिंसा लव लेश होय ।
 नहीं है शास्त्र जामें हिंसा का उपदेश है ॥
 नहीं है वृत्त जामें कोई तरह हिंसा करे ।
 नहीं हैं गुरु जी जो तो हिंसा के थपेश है ॥
 नहीं है सुगुन जहा हिंसा का रसीला पन ।
 नहीं है देवता जो हिंसा में माने एत है ॥
 आत्म के हित काज हिंसा करे सो अज्ञानी ।
 अमोलकहे दोनो भव ताहे दुःख विशेष है ॥५६॥
 निर अपरार्थी जीव ताही को उपजावे रीय ।
 स्वार्थ साधन मारे अनर्थ करत है ॥
 रत्न मांहे रहाय । ते तो निर्माल्य घांस खाय ।
 पापी ताही केइ जाय प्राण को हरत है ॥
 झाड पे किलोल करे मिले जहांसे पेट भरे

ते काले ते समय मझार । 'मिया ग्राम' याजा सुख कार ॥
 'विजय क्षत्री राज तहां करोन्याय नीति से प्रजा अनुसरे ॥
 मृगावती गृणी गुन खानाशीलवती रूप इद्राणी मान ॥
 ग्राम बाहिर इशान कोन मायाचंदन पादप बाग सुखदाय
 दोहा—उरी काल उत्ती अवसरे महावीर जिन राय ॥

साधू सध्दी परिवारे । विराजे बाग में आय ॥ ५ ॥

राजा प्रजा सुन हर्षीये । तज हो बंदे जाय ॥

भव्यो द्वारन जिनेश्वरा । धर्मोपदेश सुनाय ॥ ६ ॥

चोपाइ

तहां एक अंध पुरुष भी आया एक नर जेष्टीका सहाही लाय
 दारिद्री अंगहीन पुण्यहीन बालविखरेमक्षी घेरादीन ॥ ७ ॥
 कोलाहल बहुत नरका सुनाई रागम जाणी हर्ष थुन ॥
 विधीसे प्रभूको वंदना करी । धर्मोपदेश सुनो हर्ष भरी ॥ ८ ॥
 गौतमस्वामी जेष्टाशप्य प्रभूजीको ज्ञानचरित्तसअतिहीनीवे ।
 दयालु उत्त अंध नरको देख। संशयो विस्मित हुये विशेष ॥
 देशना सुन तब परिपद जाय। गौतम स्वामी प्रभूजी ढिग आय
 पंच अंग नमन कर वंदन करी। करांजली जोडो पूछे मन चरी
 अहो प्रभू। ऐसी जगमें कोई नाराजन्मान्ध बालक जणनार ॥
 प्रभुकहे गौतम दत्तचित्त सुनो। इतनगरमें इतसे दुःखी बनो ॥ ११ ॥
 विजय राजकी रानी मृगावती । मगा लोढा पुत्र प्रसवती ॥

जन्मान्ध बहीरा मुंगा तेहान हस्त पाद मांस पिंड देह॥१२॥
 बहूत रोग अंगमें प्रगट भये। अवश्य फक्त अंकुर रूप रहे॥
 भोवरा में गुत रख पाले तस। भेदन कोई जाने यस॥१३॥
 प्रभू बाणी सुन गौतम उमगाया पुनर्पि पूछे शीश नमाग॥ ॥
 आज्ञा होय तो देखूं मैं जायायथा सुखकरो प्रभू फरमाय॥१४॥
 'गौतजी मृगा राणी घर आया वंदना करी राणी अति हर्षाय॥
 'नमी कहे भली कृपा करी। भेरे लायक फरमायो चाकरी॥१५॥
 'गौतम' कहे देवानु प्रिय सुन। तुज पुत्र प्रेक्षण है मुज मन॥
 रागी तत् क्षिण घरमें जाया। छोटे चारों पुत्र लाइ सजाय॥१६॥
 नमस्कार करा कहे देखो श्रामा 'गौतमजी' कहे इनसे नहीं। काम
 जेष्ठ पुत्र अंगोपांग हीन। मृगा लोढा नाम गुस्तरखा जिन॥१७॥
 सुन राणी अति आश्चर्य भइ। कोन ज्ञानी ऐसी गुत यात कही
 'गौतम' कहे मुझ गुरुजी सर्वज्ञ। उनने कही उनसे नहीं कुछ भज्ञ
 'राणी' कहे पूज्य ऊभे रहो। सोही यतावू आय जो कहे॥
 शीघ्र राणी भोजन घर आया। बल बदल काष्ट गाडी लाय॥१८॥
 उसके खपत अहार उसमें धरा। डोरी खेंच चली शिशु परा॥
 कहे गौतम से पीछे रपधारियो। गौतम राणी संग भौये रे भे गधे
 सविनय राणी करे कयन। श्रामाजी मुख नाक कीजे बंधन॥
 दुर्गंध यहां आवेगा अतराला। दोनो ही नाक दूके तरकाल॥१९॥
 कोट्टी द्वार तब खुला किया। उलटा कर गाडा गुडा दिया॥
 गुडना कुँवर आया अहार पासा। सब अंग लोटा अहारमें खात

तन झरित रक्तपिरु अहारमेंमिला।अन्नस उत्तनेवैसाही गिला
 प्रत्यक्ष गौतम देखी यह हवाला।आत्म हुई वैराग्यमें लाल॥२३॥
 अहो २ दुःख यह नर्क समान।सुने सो प्रत्यक्षदेखूं यहस्थान
 कैसे कर्म इस जीवने किये।ताके कटुक फल यह लिये॥२४॥
 फिर आये भगवंत के पास।वन्दन कर दिया देखा प्रकाश ॥
 श्रामी पूर्व भव इसका सुनाइये।क्या कठिण कर्म ये उपाइये॥
 दी अन्तराय कियाअभक्ष अहार।हिंसादि पाप सेवे अठार॥
 आलोचना निंदना विन मरी।नर्क जैसी यह विसि बरी॥२६॥
 दोहा—भगवंत कहे गौतम सुनो।हिंसा अति दुःख कार ॥
 बाया सो फल पाइया।कलुभवंत उच्चार ॥ २७ ॥

चोपाई

जंबुद्विप के भरत नझारानगर बसता नामें‘शत द्वार’ ॥
 ‘धनपति’राजाराज वहांकरे।उत्त नगरदिगअग्निकोणपरे॥२८॥
 “विजयवर्द्धन’नाम खेडावसे।एकाइ राटोड मालक तसे ॥
 बोया अधर्मी पापीष्ट अति।कु कृत्य कर धरताअति रति॥२९॥
 निर्दय कठिण हृदय वे विचार।दूतरे के दुःख की नहीं दरकार॥
 प्रजा को अति देता संतापालांचगृहीदंडकरताअमाप॥३०॥
 एकही गुन्हा बहुते शिर धरी।लुंटे धन लिया कोश भरी ॥
 व्योहायताहकरेबहुतलोका।खुशीहेवेउनकोसोविलोक ॥३१॥
 मतलब विन नहीं सुने पुकागलुंटे के प्रजा की निराधार ॥

मुनी अनसुनी वनादे वातानहीं माने तो जवरा से थपाता ॥३२॥
 देखी अदेखी अदेखी देखी कहेली अनली यों वदलता रहे ॥
 हिंसा सदा करता सो अपारामृगया उपर बहुत ही प्यार ॥३३॥
 ऐसी तरह संचे बहुत कर्मास्त्रम में नहीं किया जरा धर्म ॥
 ऐसे बहुत काल बीता तबीपाप बांदगी बसाइ जयी ॥३४॥
 एक दम प्रगट भये सोलेही रोग ॥ महा विकाल दुःख का भोग
 नीर विन मीन परे तड फड़े ॥ क्षिण भरता सचेन नहीं पड़े ॥३५॥

सोलह गंगके नाम—शार्दूल विक्रीडित छंद.

श्वाश खांस ज्वर दहा ज्वर अरु कुक्षी शूल भगंदर ।
 दृष्ट शूल अजीर्ण हर्ष, मस्तक शूल अरुची धर ॥
 कर्ण चक्षु वेदना महा खुजली कुष्ठ जलोधर ।
 पौडश राज रोग यह कहे, पापों दये प्रगटे भयंकर ॥३६॥

चोपाइ

नोकर को तब कहे पुकार । उदघोषणा करो ग्राम मझार ॥
 एकाइ ठ. कुर के तनमांय । राजगंग सोलह प्रगटाय ॥३७॥
 एकही रोग जो करे आराम । मुह भंगा तस देंगे इनाम ॥
 नफर तब तैसाही करा । ग्राम में सर्वस्थान विस्तार ॥ ३८॥
 बहुत लालची आये धैर्याजाने शास्त्र मिटाये खेय ॥
 नाटी प्रेक्षी निर्णय करो ॥ जीभ नेत्र मूत्र मल द्रष्टी धरे ॥३९॥

कर निरधार करे उप चारानर्दन विलेपन वमन निहार ॥
 स्नान करावे ओपधी पायाछेद भेद दहनतीदि उपाय ॥४०॥
 कंद मूल छाल पान विनाश। कडु कटु उपाव किये बहु तास
 परन्तु रोग एकही नहीं गथा। उलटा दुःख अधिक ही भया ॥
 दोहा—रोगो पचार बहु जगन् मौकनो पचार न काय ॥ ८
 हंस २ चान्धे प्रणीयां । भुक्ते न दृष्टे रोय ॥ ४२ ॥

चौपाइ

कर उपचार धके सब बैद्य । मनमें पाये अतिही खेद्य ॥
 एसा देख टाकुर उत्तवार। मरण निश्चय हुआ मन मझार ।
 बहुत हिंसा कर संविधे भोग। भोगव न सका द्रवणा योग ॥
 मरती दत्त प्रत्यक्ष सोपेवा। मुर्छा जागी मनमें विशंग ॥४१॥
 आर्त रौद्र धरता चित्त ध्यान । अँढाँइ सो वर्ष आयु प्रमान ॥
 मरकर रत्न प्रभा नर्दन गया । एक सागरोपन स्थिती वहाँ रया ॥
 वहाँसे जब वहाँ लिया अवतार । नृगाराणी कुंड्रीन झार ॥
 राणी के उत्त गर्भ संयोग । नहा उज्ज्वल प्रगटे तन रोग ॥४६॥
 पत्नी का भी अनुराग दम भया । अती शोक राणी मन गमरया
 खोटा गर्भ राणी जानलाया । उत्त पाडनेका निश्चय किया ॥

५ "कहाण कम्मा न मोक्ष अर्थी" इति पद्येन सूत्र.
 अथात् कृत कर्म के फल भागदें दिन छुटका नहीं.

क्षारे कडवे ओपद लिये । वमन विरेचन बहुतहरि किये ।
 मंत्रादि किये उपाय अनेक । तोभी गर्भनहीं पाडाया छेक
 दुःखे २ गर्भवृद्धिपाय । गर्भमे उसका तन सडजाय ॥
 कान आँख नाक अपानद्वार । दो दो नाडीके वहे सदाद्वार
 रक्त पीरु पडे सदा बहार । भस्माग्नि रोग लगा दूःखकार
 जो अहार आहारे वो जीव । भस्मभूत हो देवेतसरीव ॥५०॥
 राध रुधीर पीरु रूप थाय । उसीको पीछा ले सो खाय ॥
 यों मास नव पुर्णही भये । तब शिशुने जन्मज लिये ॥५१॥
 जन्मान्ध बहीरा अंगोपांगहीन । देखके राणी डरी हुइ खीन
 दासी हाथ दिया उकरडे डलाय । दासी राजाको खबर दीज
 कहे राजा राणी पास आया प्रथम पुत्र यों कीजे नाय ॥
 आगे न जीवेगा तुम संतान । इसे पालिये गुप्त घर म्यान
 राणी मानी राजाकी कही । तुम देखा तेसे पाले सो सह
 निर्दय बंधे चीकणे कर्म । महाबिस भोगवे हिंसा के वर्म ॥५२॥
 परन्तु इतने से छूटेगा नहीं । पेखो आगे भवान्तर सही
 धीतवर्ष आयुष्य भोग करी । धेताड गिरे सिंह होवेगा मरी ॥५३॥
 वहां से प्रथम नर्कसागर स्थिती । वहां से नवल होवेगा दुर्मति
 वहां से दूसरी नर्कसागर तीना । वहसिपक्षा होवेगा मलीन ॥५४॥
 तीसरी नर्कसातसागर दुःखरोग । सिंह होकरेगा दुष्ट भोग ॥
 चोथी नर्क, सर्प, नर्कपंचमी । दुष्टनारी, छटी नर्करमी ॥५५॥

मंजिल पहिला—प्रणातिपात +

उत्तर विभाग—“दया”

दोहा—प्रथम मंजिल के विपोजो कहे प्राणी भेद ॥
 उन सबकी रक्षा करो जरा न देवे खेद ॥ १ ॥
 बाह्य स्वरूप दया तना । येहीज हे पुण्य वन्त ।
 अंतर भेद अनेक हैं। सो बरणू धरी खन्त ॥ २ ॥
 प्रश्न व्याकरण सूत्र के । पहिले संघर द्वार ॥
 दया भगवति के कहे । साठ नाम जगा धार ॥ ४ ॥
 ता अनुसारे यहां लिखूं । सुश्रार्थ उभय युक्त ॥
 आराधी जीव अनंतहीं। गये और जावेंगे मुक्त ॥ ४ ॥

दयाके ६० नाम—चांपाइ

निठेवाण'-मोक्षकीयेहीदातार। 'निवुंहुही'-निवृत्तीभवाकरता
 ,सांति'शांति, 'किंति'कीर्तिकरे। 'कैंांति'-कान्ती, 'रईय'रतीबरे
 , विरईय'-विरती, 'सुपंग'-सूखअंग। 'तिंति'तुसकरे, 'देया'-अभ
 , 'विमुंति'कर्मबंधसेयहछोडाय। 'खंति'-क्षमाआराध कराय॥६॥
 ,समत्तराहण'सम्यक्त्वआराधना। 'मैंहांति'-सबसेबड़ीगुणघन
 'बोहो'-बोधबुद्धिदातार। 'धिई'-धैर्य, 'संभिद्धि'समर्थकरतार
 रि। 'द्वं'-ऋद्धि, 'वि'द्वी'बृद्धीकरे। 'ठिई'-दीर्घायु, 'पुंठि'-पुष्टीबरे

नंदि^३ आनन्द, भेदा^४ भद्रकरतारा^५ विसृष्टि^६ निर्मलदयाहोधार
 लंछि^७ लब्धी^८ अनेक उपजाया^९ विसिठं^{१०} विभेष्टकीर्ती^{११} फिलाय ॥
 दिठां^{१२} सम्यक्त्वद्रष्टे^{१३} मूलगुणा^{१४} कलां^{१५} भंगैल^{१६} प्रनोद^{१७} भूषण^{१८}
 क्षा^{१९} सिद्धवात^{२०} अथ चरोकंत^{२१} केवलज्ञानस्थान^{२२} शिवसुखकरंत
 तमिथा^{२३} अच्छरीरीती^{२४} प्रवृत्ताया^{२५} सीलं^{२६} आचरतवदयामे^{२७} समाय ॥
 तयेम^{२८} सीलधर^{२९} संवरगुंते^{३०} लंभद्रापीर^{३१} येही उल्लुकि^{३२} ॥
 यैह^{३३} गुर्जायतन^{३४} जनिनहार^{३५} अप्रभो^{३६} दादिश्राम^{३७} विश्राम^{३८} सधार ॥१॥
 अमैव^{३९} अमरीचो^{४०} खीपविलाशुद्धं^{४१} पूजा^{४२} विमल^{४३} प्रभा^{४४} अंति^{४५} हित^{४६}
 निर्मल^{४७} साठ नाम^{४८} ये कहं^{४९} जितेश्वर^{५०} पद^{५१} दया^{५२} को^{५३} यह^{५४} दये ॥२॥

जीव दया पालने वाले—मनहर छन्द

साधु तो आत्म साथे । संपूर्ण दया अराधे ।
 छेही काय न विराधे । आत्म तम जानके ॥

यहां जो दयाके १० नाममें १० वा नाम पूजा आया है उसका अर्थ किनेक द्रव्य पूजा ठहरा कर हिनाही स्थापना करनेहैं सोजिनाहा विरुद्ध है. क्योंकि जो पूजाका अर्थ द्रव्य पूजा हो तो (१६) वा यह शब्द आया है वहां भी द्रव्य यज्ञका अर्थ कायम कर अन्यमति जो अन्य मंत्रादीयज्ञ करनेहैं सोभी दयाही माना जाय. पणु ऐसा कदापि नहीं होनेका. दयाके स्थान हितक अर्थ करना तो अनर्थ है. यहांतो दोनों शब्द का अर्थ भावपूजा और भाव यज्ञ कर्त्ता येही मन्त्रा अर्थ है की जिनने अरुनी और पराई दोनों आत्माकी व्यापन.

स्थावर के मांय । जीव असंख्यात रहाय ।
 वनस्पती में अनंत । जीव वशे आनके ॥
 संकोचित स्थान जिस्मे जीव वशे वे प्रमाना
 ताका दुःख काही भान । रखे जान ज्ञान के ॥
 संघटा न करे तो वो प्राण कहो कैसे हरे ।
 मुनिश्वर पालक सदा वाचन ही प्राण के ॥१३॥
 जीवदया पालन । सोदेख करेहलन चलन ।
 पूंजे अप्रकाशिक जाग । इर्या समिती धरते ॥ ॥
 सावध दुःख कर वाणी । कभी नहीं वदे जाणी
 हित मित पथ वाच्य । अवसरेउचरते ॥
 गृहस्थने निजकाम । अहार वखकिये धाम ॥
 मधुकरा वृत्ती करी । उचित आचरते ॥
 उपाधी अप्य पत्रे । यत्ना लेंते रखे
 मन संयम करी सदा मुनिजीविचारते ॥१४॥
 गृहवास रहनहार । जिनके केड़ परिवार ।
 उनसे मुनि आचार । पालना कठिन है

५२ प्राण-एकेंद्रिय ४, चेंद्रिय ३, मेंद्रिय ७, बाह्येंद्रिय ८, असत्री
 त्रिवेद्य पंचेंद्रिय ९, असत्री मनुष्य के ८ और मर्मा पंचेंद्रिय १० यो
 ५२ प्राण की रक्षा माधुजी करने हैं और आचरने एकेंद्रिय के ४
 और असत्री मनुष्य के ८ यो १२ प्राण की रक्षा होना मुश्किल
 है इसलिये आचर ४० प्राण की रक्षा सम्भव है।

तन स्वजन पालन । स्थावर के हने तन ।
 तेही डरते चाहीये सो । ज्यादा तज दीन है ॥
 नित्य मर्याद करी । पुढवी पानी अग्नि हरी ।
 पर्वादि दिवस सोही । तजत प्रवीन है ॥
 ब्रस घात के जो काम । अनर्थ का जान ठाम ।
 सदा पर हरे ऐसे श्रावक सु चीन है ॥१५॥
 जमीन न खने । स्नान अर्थ जादा जलमने ।
 चूले दीवे कम करे । पंग्वान लगाय है ॥
 अधिक पाप करी हरी । और ब्रस जीव भरी ।
 ताही का त्यागन करी । बश रखे काय है ॥
 तम्बाखू आदि कु व्यश्न । लगावे न ते रत्न ।
 नाल खीले जूते तज । मर्यादा ते राय है ॥
 प्रवही वस्तु दीवा । उघाडि नग्ने किया
 इत्यादिक दयाधर । श्रावक वृत्ताय है ॥१६॥
 राखीको भोजन न्हावग धोवण लीपण
 मोटे भाग चलन नहीं करत कदाइ है ॥
 आटा दाल शान्न । छाने लकड़ी गन्न ।
 घंटी उग्वल दन्न भाजन देव के बगइ है ॥
 लेवे न अन छाना पानी । यनना करे जीवानी ।
 दिशानही जायन कदा । पायन्वा ने माही है ॥
 और भी ब्रम जीवों के धान के कारन जन ।

दिवे की श्रावक जनावरजत सदाही है ॥१७॥

दया की महिमा—मनहर छंद

दया सर्व व्रत मूल । दया सब को अनुकूल ।
 दया को है नाम धारो । धारो दया प्राणीयां ॥
 देव दयालू ही होवे । गुरु दया वंत सोहे ।
 धर्म दया हेन करे । सोही जग जानीयां ॥
 दया का एक शब्द साग । ग्रंथ हिंसाका निसार ।
 नत्वार्थ सर्व मने । यथाणिया ज्ञानीदां
 जानी ध्यानी महात्मा धमात्मा क उपो तपी ।
 अवतार अमंल सर्व । दया ते यथानिशां ॥ १८॥
 अहिंसा धर्म उत्कृष्ट । जैनशास्त्र पंथ विषे
 अहिंसा लक्षणा धर्मापुगण में लेखीये ॥
 अहिंसा परमो धर्म । यदका है मुख्य वाक्य ।
 रहमान रहमा देव । कुशनी के पेखीये ॥
 दृशाट नो किल । आदृश्यल पुकारन ।
 जगधाम्नी रहमी को । मानन विशेषीये ॥
 यो सर्व मनान्नरा में । दया आगेवर्नीको ।
 अमंल धर्म शृ मय याको हीये रंथीये ॥ १९॥
 गंगा को औपध । अरु मुग्ध को भोजन धार ।
 य म का पापी हीनिल । हयन अरार है ॥
 दयावर्धन क दानन क दाननार्थ मर्थः जन ।

चोपद को स्थान । भय भीत रक्षाकार हैं ॥
 समुद्रमें जलाल । खर रुडग मध्य पाज ।
 अंध नेन अपून पूत । दालिद्री दीनार हैं ॥
 वियोग सुयोग मिलेअमोल आनंद पाय ।
 तेसेजगजंतू हीको । दया का आधार है ॥२१॥
 अहिंसा समान दान पुण्य धर्म व्रत नहीं ।
 जप तप ज्ञान ध्यान अहिंसा ते सिद्ध हैं ॥
 सुख संपत्ति निरोग । संतती रु सुमंयोग ।
 इच्छित मनंग्य भोग । अहिंसा ए ऋद्ध है ॥
 साधु श्रावक मुनी । शाय राय वाय गुनी ।
 महात्मा अदिक पूज्य । दया ने प्रसिद्ध है ॥
 आनंद की दाता जग मान तन भ्राता ।
 अमोल अहिंसा ही को जाणीये सुनिद्ध है ॥२१॥

दयाका महात्म-इन्द्र विजय छन्द.

पूर्ण पृथ्वी रत्नों से भर करादान में देवे कभी नर कोई ॥
 गो आदि पशु देवे सब दान मोवद्धा भूषण जेता हैं लोई ॥
 अन्न पान सन्मान दे सर्व को।तोपे खासी रखे नहीं जोई ॥
 और तो दानसवीके व्याख्यान होदया समानदान नहीं होई ॥
 महा पुण्यात्म महा ऋद्धिधर।महाबली महासुखी महाराय
 तीर्थवर चक्रवर्ती हल धर । सांसारिक तेना पति कहाया ॥

विषे की श्रावक जनावरजत सदाही हैं ॥१७॥

दया की महिमा-मनहर छंद

दया सर्व व्रत मूल । दया सब को अनुकूल ।
 दया को है नाम धारो । धारो दया प्राणीयां ॥
 देव दयालु ही होये । गुरु दया वंत सोहे ।
 धर्म दया हेन करे । सोही जग जानीयां ॥
 दया का एक शब्द साग । ग्रंथ हिंसाका निसार ॥
 नम्रार्थ गर्व मन । यम्याणिया ज्ञानीदां
 जाना । ध्याना महारमा धमात्मा क जपो तपो ।
 अवनार अमं न सर्व । दया में यम्याणियां ॥ १८ ॥
 अहिंसा धर्म उन्कृष्ट । अिनशास्त्र पंथ विदे
 अहिंसा लक्षणो धर्मापुगण में लेखीये ॥
 अहिंसा परमा धर्म । ब्रह्मा है मुख्य वाक्य ।
 रहमान रहमा देव । कृपानी के पेखीये ॥
 दृशाह नां किन्त । शत्रुबल पुकारन ।
 जगधर्मा रहमी को । मानन विजेखीये ॥
 यो सर्व जनान्तम में । दया आगेवानीको ।
 अनंल धर्म शत्रु सब याको हीये पेखीये ॥ १९ ॥
 गर्मा को अन्ध । अरु भुखे को भोजन धार ।
 दम को बली हीनकरे । हर्षन अवार है ॥
 दया दं क दानन क दननाये मर्थे जन ।

मेघरथ राय दया करी।हुवे श्री शान्ति जिनन्द ।

गर्भ से जग के दुःख हरे। पाये परमानन्द ॥ २ ॥

चौपाइ

जंबुद्वीप के मध्य में जान।क्षित महाविदेह है शुभस्थान ॥

ताकी पुढरिक विजय मझारानगरीअक्षय भूमीहैं सारा॥३॥

मेघरथ राजा राजा वहां करे। जैन धर्म त्रियोग अनुसरे ॥

तत्त्वार्थ धर्म गृहा पहिचान।जल कमल बत् रहे जग म्यान॥४॥

श्रावक की करणी करे पवित।सब जीवों का सच्चा मित्र॥

स्ववश किसीको जरान सनाय।जोकभीप्राणआपकेजाय ॥

उसही वक्त उस समय मझार। प्रथम स्वर्ग सो धर्म मझार ॥

साधर्मि।शभासकसिंहासने।शकेंन्द्रबैठेहोतयने ॥ ५ ॥

चौरासीसहस्रसमानिकदेवा।चोगुनेआत्मरक्ष करे सेव ॥

तीनोंपरिपद देवोंसेहीभरी।बारहचउदहसो।हसहस्रकरी ॥

अष्टइन्द्राराणीयोंसदानुबकार।सातमेनाओखहुतपरिवार ॥

षजायुधकरअतिशोभाया।अवर्धाज्ञानेदेवे जगमांय ॥ ८ ॥

अती दयालुमेघरथनृपदेख।दिलमेंहोपिनहुवे विशाख ॥

हुललितकहेसुनियो।तुरबृन्द ।धन्यरपृथ्वीसेनगन्द्र ॥ ९ ॥

मेघरथराजो।जसादयाळा।ओरकोई नहींदेखताहाल ॥

सबदेवगुणानुवादि।किशाननाना।देवकोआयाअभिमान॥१०॥

इंद्र भूले रुद्धी सुखमांय । देव छोड़नरके गुनगाय ॥

सोभी एकदयाहीकेखातराशुद्धी सुख क्षिणमेंछिटकाया ॥
 भिक्षुक हो कियायत्न छेकायका।दयाका यह ...
 श्री नेमीनाथ पशु दया करणातोरण जा तजी राजुल नार
 श्री पार्श्वनाथ तापस धूणीसे।नाग युगलकिये सुर अश्वार
 श्री महावीरकु शिष्य गोशाले को।बलता तेजू लेशासे
 जो जिनवर जीवदया करी तो।करो सची जिनाज्ञा धारी
 धर्म रुची मुनि कटु तुम्ह भोगी।पिपीलिका मरती को
 मेतारज मुनि सोनी मार सही।कुर्कट का नाम नहीं
 मेघ मुनी पूर्वे गज केभवमें।शुश्रूषा दयया देह गमाई
 मेघरथराज पारेवा के काज मांसीदियो निज तनबधाई॥२४
 अनेक दाखले स्वमत अनमता।सर्वही भेष्ट दया को माने
 जो नही माने तोपूछीयेवाने।तूंस्या तेरा चहावे कहेम्हाने
 जो तू चावे सो सब चावे। निज से परको शानी पहचाने
 अमोल दया भगवती सुखदाता भारले २ अहोबुद्धवाने॥२५

कथा-दूसरी

दयाके फल बताने वाली-मेघरथ राजा की

बोहा-दृष्टान्त बहुत दया के हैं। सूत्र ग्रन्थ मझार ॥

एक कथा यहां पे कयूं। जानि दया भन्डार॥ २ ॥

मेघरथ राय दया करी।हुवे श्री शांति जिनन्द ।
गर्भ से जग के दुःख हरे। पाये परमानन्द ॥ २ ॥

चौपाइ

जंबुद्वीप के मध्य में जान।क्षेत्र महाविदेह है शुभस्थान ॥
ताकी पुद्गरिक विजय मझारानगरी।अक्षय भूमी है तारा॥३॥
मेघरथ राजा राजा वहां करे। जैन धर्म त्रियोग अनुसरे ॥
तत्त्वार्थ धर्म गृहा पहिचान।जल कमल बत् रहे जग म्यान॥४॥
श्रावक की करणी करे पवित।सब जीवों का सच्चा मित्र॥
स्ववश किसीको जरान सताय।जोकभीप्राणआपकेजाय ॥
उसही वक्त उस समय मझार। प्रथम स्वर्ग सो धर्म मझार ॥
साधर्मि।शभासकसिंहासने।शक्रेंद्रबैठेहर्षितधने ॥ १ ॥
चौरासीसहश्रसमानिकदेवा।चौगुनेआत्मरक्ष करे सेव ॥
तीनोंपरिपद देवोंसेहीभरी।वारहचउदहसोलहसहश्रकरी ॥
अष्टइन्द्रारानीयोंसदासुखकार।सातसेनाऔरबहुतपरिवार ॥
बजायुधकरअतिशोभाया।अवर्धाज्ञानेदेखे जगमांय ॥ ८ ॥
अती दयालुमेघरथनृपदेखा।दिलमेंहर्षितहुवे विशेष ॥
हुलतितकहेसुनियोंसुरबृन्द।धन्य२पृथ्वीऐसेनरेन्द्र ॥ ९ ॥
मेघरथराजाजैसादयाळा।औरकोइ नहींदेखताहाल ॥
सबदेवगुणानुवादाकिशप्रनान।दोदेवकोआयाअभिमान॥१०॥
इंद्र भूले ऋद्धी सुखमांय।देव छोडनरके गुनगाय ॥

अभी कहूँ तो नहीं माने बात । करके बतलवूँ मेसक्षात ॥ ११ ॥
 आपे दोनों तल्लिख ग भूमंडा अतिही धरते मन मेधमंड ॥
 ए कने रूप कबुतर का किया ॥ ए कबार धी शिकरा ले लिया ॥ १२ ॥
 आगे कबूतर उड़ता आय । मेघारथ राय के गोदी बैठाय ॥
 धर २ कने कोमल तन । देखी भूपकण व्याधि मन ॥ १३ ॥
 हाथ फेर कर कहे बुचकारा डरे मत तुझे कोई नहीं मार नार ॥
 उस बत पारधी का वातुर आय । कहे नृप से छा डे पारवातांय ॥ १४ ॥
 मेरा शिखर भूकसे मरा शिषि दो पश्रः भक्ष यह करे ॥
 कहे राजा सुनो पारधीयाना यह कबुतर है जीवन प्रान ॥ १५ ॥
 यह तो मेरे से दिया नहीं जाय । मंगामिष्टान लेले जो चाहाय ॥
 निजात्मसम सय जानो प्राणावर वदला हे दुःख की खान ॥ १६ ॥
 निजा हेत बहा मत अन्य को संताय । तेरी आजीविका दुर्मं कराय ॥
 घटकी पारधी कहे ज्यादा मत थोला । मेरे पारे या हे अमृत तोल ॥ १७ ॥
 छोड २ शिषि इसके तांय । रखे प्यारा शिकरा मर जाय ॥
 नृप कहे शरण यह आयामोय । प्राणान्त नही देवूँ मे तोय ॥ १८ ॥
 और जांमांगे सो देवूँ देने गोम्या । अनेक वस्तु जगमें मनो ग्य ॥
 शिकारी कहे ऐसा प्यारा यदनुज्ञानां तेरा मांस शीघ्र दे मुझ ॥ १९ ॥
 नय कहे यह सुख सेली जीये । क्षण भंगुर देह को क्या की जीये ॥
 इन सेकुल उपकार ही होया तोले मे यह लगे तन मो ॥ २० ॥
 मे लुगि निकाली तस्काला थोले मंत्री हाथ तब ॥
 मनीय यह कृकार्य क्या करा । क्या पक्षी के लिये आपमो ॥

दो हुकुम देवें दुष्टको निफाला छोड़ो कबुनर उड़ जाता हाल।
 नृप कहे यहाँ न होय अन्याय। मेरा मांस देता इस्तताय ॥ २२ ॥
 राणा पुत्र उमगाव सुन आये सवाकर धरा कहे कंग्यागजव ॥
 दो पारवा यह इस्तका आपा हमारे शिर ले नय हपाप ॥ २३ ॥
 निज मांस देने का कांड न कहे। राय परमार्थ यह तब लहे ॥
 राय कहे सब तुम दूर ही रहो। नहीं मानूँ मे किन का कहे ॥ २४ ॥
 यों सुन चुपसब देख ही रहो। नृपतीन वपर धाँस कहे ॥
 किस स्थान का देव तुज मांस। अचंभी पारधी कर प्रकान ॥ २५ ॥
 हराम का माल जरा भेन ही लहे। कबुनर बरोबर मांस दो कहे ॥
 ब्राह्म राय मंगाइ उरु वक्ता एक पल वे मे कबुतर रख ॥ २६ ॥
 जंघा का मांस काट क्षीघ्र पर। बरोबर न हुवा फिर मारा लुग ॥
 काट के मांस ब्राह्म मँथरा। नो भी पंगे वे गायर न ही चडा ॥ २७ ॥
 देव शक्ति मे किया वजन अपार। किन्तु भी हरावूं नृप इस्वार ॥
 अवध ज्ञान से देव राय मन। न हो वेदना जरा न हुवा खिन ॥ २८ ॥
 चिन्ते राय सब मेरा तन जाय। नो मुझ को दुःख किं वितनाय ॥
 परन्तु मत जायो कबुतर प्राण। प्रभूपार पहे मे गजवान ॥ २९ ॥
 कपाकप मांस काट काट धरो। देव देव आधर्य अनिकर ॥
 अपूर्व दया नृप घट रही छाय। नहाँ तीर्थ कर गोमि उपाय ॥ ३० ॥
 सुरत वसन मे गय। नृप ह्राय। हाग जान अधि वज्र मांय ॥
 पागे वा राधी अदृश्य भया। नृप तन के दुःख नय गये ॥ ३१ ॥
 नृप न भया अभि मे प्रकश। देवता प्रकट नय आकाश ॥

अभी कहूं तो नहीं माने बात । करके बतवैमसक्षात ॥ ११ ॥
 आये दोनों तत्क्षिण भूमंडा । अतिही धरते मन में घमंड ॥
 एहने रूप कबुतर का किया । एकर धरती शिकारालेलिया ॥ १२ ॥
 आगे कबुतर उड़ना आय । मेघस्थराय के गोदी बैठाय ॥
 धर २ कन्ने कोमल तन । देखी भूपकण्ठ व्याधी मन ॥ १३ ॥
 हाथ फेर कर कहे बुचकारा डरे मन तुझे कोई नहीं मार नार
 उस वक्त पारधी कंठावा नुर आय । कहे नृपसे छा डो पारधातांय ॥ १४ ॥
 मेरा शिष्यरा भूकसे मरा शीघ्र दो पक्षी भक्ष यह करे ॥
 कहे राजा सुनो पारधीवाना यह कबुतर है जीवन प्राण ॥ १५ ॥
 यह तो मेरे से दिया नहीं जाय । मंत्रा मिष्टान लेले जो चहाय
 निज आत्मसम सध जानो प्राणाचेर बदला है दुःख का खान ॥ १६ ॥
 निज हित चहा मत अन्यको संताया । तेरी आजीविका वृंमं कराय
 घटकी पारधी कहे ज्यादा मत सोला । मेरे पारेवा है अमृत सोला ॥ १७ ॥
 छोड २ शीघ्र इसके तांय । रखे प्यारा शिकारामरजाय
 नृप कहे शरण यह आया मोया । प्राणान्त नहीं देवूं मैं तोय ॥ १८ ॥
 और जांमांगि सो देवूं देने योग्या । अनेक वस्तु जगमें मनोग्य ॥
 शिकारी कहे ऐसा प्यारा यह तुझानो । ने रामांस शीघ्र दे मुझ ॥ १९ ॥
 नृप कहे यह सुन्य सेली जाये । क्षण भंगुर देह को क्या की जीये
 जो इन से कुछ उपकार ही होया । तोले गये यह लगे तन मोय ॥ २० ॥
 कमर से लुगी निकाली नत्काला । चोले मंत्री हाथ तव झाल ॥
 मरिप यह कृकार्य क्या कंगे । कथापत्री के लिये आपमरो ॥ २१ ॥

दो हुकुम देवें दुष्टकोनिकालाछोड़ो कबुनर उड़ जाताहाला॥
 नृप कहे यहां न होय अन्यायामेमेरा मांसदेताइसतांय॥२२॥
 राणी पुत्रउमराव सुन आये सवाकरधरीकहेकरोक्यागजव॥
 दो पारवा यहइसकोआपाहमारेशिरलेनेयहपाप ॥ २३ ॥
 निजमांस देने का कोई नकहे। रायपरमार्थयह तत्र लहे॥
 रायकहे सब तुम दूरहो रहो। नहींमानूंमेकिसकोकहो॥२४॥
 यों सुन चुपसब देखही रहे॥ नृपतीतवपरधीसेकहे॥
 किसस्थानका देवुंतुझेमांसअचंभीपारधी करेप्रकास ॥२५॥
 हराम का मालजरा भेनहींलहूंकबुनर वरोवर मांसदोकहूं॥
 ब्राजु राय मंगाइ उत्तीवक्ताएकपलवेमें कबूतर रख ॥२६॥
 जंघाका मांस काटशीघ्रधरा।वरोवर न हुवाफिरमारा छुरा॥
 काट के मांसब्राजु मेंधरा।तोभीपरेवेवरोवरनहींचडा ॥ २७ ॥
 देवशक्ति सेकियावजनअपार।कैसेभीहरावूं नृप इसवार ॥
 अवधजानसेदेखेरायमना।महावेदनाजरानहुवा खिन ॥२८॥
 चिन्तेरायसबमेरातनजाया।तोमुझकोदुःखकिंचितनाय ॥
 परन्तुमत जावोकबुतरप्राण।प्रभूपारपडे।मेरीजवान ॥ २९ ॥
 कपाकपमांसकाटकाटधरोदेखदेवआश्चर्यअतिकरे ॥
 अपूर्वदया नृप घटरहीछाया।तहां तीर्थकरगौलउपाय ॥ ३० ॥
 सुरतवमनमेंगयासूरझाया।हाराजानअधिकशरसांय ॥
 पारेवाधारधीअदृश्यभयो।नृपतननकेदुःख सबगये ॥ ३१ ॥
 सुर्यसमभयाशभा।मेंप्रकाश।देवनाप्रकटानव आकाश ॥

मुकुट कुंडल वस्त्रशोभायामेघरथरायके सन्मुख आय ॥३२॥

कगजनी जोडकिया प्रणामानघरहा कसे सो गुनमाम ॥

शकेंद्र परशमा आपकी करी ॥ यो वचनमें मानानहीं जरी ॥३३॥

धरगुमान आया आपह जूग ॥ दुःख आपको दिया भरपूर ॥

दयाग किं गित नही चल मन ॥ बारम्बार आपको हे धन ॥ ३४ ॥

मेरे लापक कुछ सी जेहू कम ॥ सो ही मे यजावूइ तदम ॥

राय कहें मिश्रामनि दो छोडा पारो जे न धर्म होयो प्रोड ॥ ३५ ॥

हुन देवनाम मय स्वर्ग आधार ॥ बारम्बार किया नमस्कार ॥

द्विज प्रमद मय गेमें गया ॥ नृपयशः जगमें फैली रया ॥३६॥

दोहा—मेघाधनृपदेवीय ॥ मन लखी यह संसार ॥

यनाहाळ मुख में ॥ छाया वैराग्य अपार ॥ ३७ ॥

गजाकुटी नज कुटुम्बको ॥ नीना भयम भार ॥

कानी करी अनिनिर्मली ॥ बटुन पुर्व लगमार ॥ ३८ ॥

मलेदगा आयु पुर्ण कराय सर्वार्थ मिष्ट ॥

नेनीम सागर का अयुदा ॥ सर्व मे उच्छृष्ट रिद्ध ॥३९॥

नेनीम मदश्च वर्षान्तर ॥ शुभा वेदनी प्रगटाय ॥

अल्पन्त श्रेष्ठ पुद्गल का ॥ मनमा अहार प्रगमाय ॥ ४० ॥

नेनीम पक्ष रीति रिद्धि ॥ लेने श्वाशोभाश ॥

दोमो छयन मोतीका ॥ चन्द्रका शिर मार ॥ ४१ ॥

चोदद पुर्व के जानके ॥ ध्यान में रहने मग्न ॥

एकद्वारगी श्रुद्ध मय्यर्क ॥ लगी मोक्ष मे लग्न ॥४२॥

केइ भूँसाहेकेइ जल छिटकायाकेइन्हवायदर्पणदेखाय॥५१॥
 इन्द्र जिनको भेरु शिखरलेजायाजन्मोत्सवअति हर्षे कराय॥
 फिरलाकर धरेमाताजीपास । रत्नसूवर्णकीकरी वर्षास ॥
 प्रातेवधाइ नरेश्वरपाय । पुरदेशमेंजन्ममोत्सवकराय ॥
 अमागिपहहयजायसवस्यानाछोडिदेसवधंधीयान ।
 दानशाला में दे इच्छित दान।सवकोकराया भोजनपान ॥
 गुणनिस्पृहनाम स्थापउसवाराशान्तीकरीसो शान्तीकुमार ॥
 तीनोंज्ञानमहिम भगवन्तासर्वपारंगक्याविद्याभनंत ॥
 श्रीराम धनुष तनकंचन वर्ण।एकेलक्षें वर्षआयु शुभकर्ण ॥
 दशममेंदेधे वर्ष कुमारपणेरहे।मांडिलिंकेगीजयपइतने मये ॥
 फिर चक्र रत्नप्रगट भया।पटूखन्हका राजजय लया॥
 अश्वगजाय चौरों सी लाय । छिन्मूँकोड पाँथके सुप्रसाय ॥
 छिन्मूँमेंदेधे राणीयोमिनोहारायनीसंमेंदेधेनरेश्वरआज्ञाधार॥
 चउदहें रत्न वर भय निधानाआत्मगश्कक सुखे।संदेधे जानें॥
 कोटों देवता आज्ञा माँदी॥ओर दहन कदि सुख बनाइ ॥५८॥
 दैवीमेंमहेश्वर वर्ष भांगदा राजाअनित्य जाने संसारके काजा॥
 मेंदेधे पुण्य संगनयनलिया॥नामान्तगेयज्ज्ञानीभया॥५९॥
 दश धर्म फेलाय जगत् मज्जागदर्शन संदेधे वर्ष कियाउपकार
 कर्मक्षय का पशोने दिव पुनःअजगाम अक्षय अननमुख वरा॥
 दोहा-अज्ञे नय्य अन्न दृष्टा मे । देमो दया के फल ॥
 एक रत्नक म्हा मेहदि मुन जये विमल॥६१॥

सर्म दृष्टी मंडैलिक चक्रै वर्त । तार्धु कैवली जिर्न ॥
 यह छः पद्वी अति श्रेष्टाएकही भव में लिन ॥६२॥
 एता जान हितर्थि यों । पालो दया सदाय ॥
 तो ऐसेही सुख पावोगे । संशय इत्तमें नाय ॥६॥
 स्वपरात्म सुख वरन । प्रणातिपात पापोद्वार ॥
 ऋषि अमोलख रचा । यह प्रथम अधिकारं ॥ ६४ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज
 के रसप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि
 श्री अमोलक ऋषिजी महाराजरचित
 प्राणातिपात पापोद्वार नामक
 प्रथम मंजिल समाप्तम्

॥ १ ॥





मंजिल दुसरा—“मृपावाद पापोद्धार”

पूर्व विभाग—“ झूठ ”

मृपावाद का अर्थ

तोहा—मृपा कुछ रक्का नहीं । पाप कार्य जग मांय ॥
मृपा वदि के आरम को । सर्व पाप लग जाय ॥१॥

ग्रन्थ व्याकरण सुत्रानुसार मृपावाद पापका वरणन्

तोहा—ग्रन्थ व्याकरण सुत्र के । द्वितीय आश्रय द्वार ॥
मृपावाद के गुण कथे । सो यहाँ करुं उचार ॥२॥
पाप कैसा ? रु नाम तस । कोन करे जग मांय ॥
तस पल अरु सद्बोध कुलाइम मंजिलमें कयाय ॥३॥

मृपावाद के दुर्गुण—चोपाइ छन्द

भेलग-मत्रसे लघु यह । लट्ट चंचल-गुण लघु करेइ ॥

भयकरदुःखकरअपयशकर। वरैअरतरांगद्वयघर ॥ ४ ॥
 क्लेशमोयाअविस्वासस्थान। नीचनरेकयहलक्षणजान ॥
 सुज्ञोअहितअप्रतिपत्तिकरतार। सार्धुनिंदकृष्णलेशाधार ॥ ५ ॥
 दुर्गतिदार्ता भेमावे संसार। ज्घुनानेस्नेहीअनुगतआवलार ॥
 कीर्तिअरुधन नशाय। झुठबोलयहगुण प्रगटाय ॥ ६ ॥

मृषावाद के नाम अर्थयुक्त—चोपाइ छंद

अलियअलिक, अरुसंदेधुतारा। अणुअनार्यमायामोसाठगरा
 'असंतक'-अच्छत्रावातयनावे। 'कंडकवड'विप्रितवदावे ॥ १ ॥
 निरर्थयैनिर्थकमेवस्तुदुर्गुण। विदसगेरणिजानिंदकथुण ॥
 अणुजवक्रककर्णसयपापस्थान। वंचणायैवंचकमिथ्यकर्तजान
 सोइपैछाहलकासवसेयह उज्जतउकल न्यायसेउलट छेह ॥
 अईआर्तध्यानअभ्यारव्यानै। किब्बिसमलीनवलैयलपटान ॥ २ ॥
 गहणउडोमम्मणुत्तरखे। तूमैगुदणियैइनितिपखे ॥ ॥
 अंछपओनकहेनिजाविचार। अमसैमजओअतिखोटाआचार ॥
 असत्रसंधतणझुठहीसंधे। विविखासतुसत्रू अर्वहीयनंदे ॥
 उपाधीअेशुद्धवस्तुगुणठकोयहतीसनामझुठकेवके ॥ ५ ॥

झुठबोलने वाले के नाम—मनहर छंद

क्रोधी मानी मायी लोभी। रागी द्वेषीभैयी हौसी।
 लज्जाक्रीड़ा हँपी शौकी। चतुरबहुत बोलीया ॥

पापी असंयती । अहीति दुर्मतिअति ।
 घेपलखुशामंदीया । खोटेमार्पेतोलीया ॥
 जूंगरी दैयाज व्यापारी । कैपट के भेष धारी ।
 चुगेल कैणी यलौत्कारी । जौर धीरे धन लिया ।
 खोटे भेंट स्थापी । और्थिक गैर्थिक व्यापी ।
 एते जन झूठ धोले । सूत्र ग्रंथ खोलीया ॥६॥
 नास्तिक मति नहीं मानत हैं पुण्यपाप ।
 जीव स्वर्ग नर्क करणीफल न बतावे हैं ॥
 कितनेक अछत्ति रु अनमिलती वाणी वदे ।
 जगत् और वस्तु सर्व इश्वरहीं बनावे हैं ॥
 जगत् व्यापी इश्वर कहते हैं केइ जन ।
 अक्रियक आत्मा को केइक ठेरावे हैं ॥
 इत्यदिक मनन्तर के जो स्थापी जन ।
 मृया वार्दा अज्ञानी हे जिनजी फरमावे हैं ॥७॥

सत्य बचन भी असत्य जैमे-महर छंद.

भोक्तादिक इन्द्रि कर । विषय जो लियेवर ।
 प्रणमै मन माही तामु । उलट उचार हे ॥
 अंध कागा कृटीजार । धोर लुछा गुन्हंगार ।
 मशे तोमी झूटे वेण । पर को दुःख कार हे ॥
 जामेक भग होय । कृपय मे लगे कोय ।

दुर्गुण उत्पन्न करे । ऐस बोलन हार है ॥
सर्व ये हैं मिथ्यावादी । सत्यही असत्या सादी ।
जानी के अनोल वदो । वचन संभार है ॥८॥

स्थूल झूठ—मनहर छंद

स्थूल मृपावादी के प्रकार पांच कहे जिन ।
कन्या गो भैंसी थापण शाक्षी के काज है ॥
कन्या शब्द माहें जीव दोषद ही लीजे सब ।
गो में चउपद भू में अपद समाज है ॥
थापण दवाय खोटी साक्षी जो भरे जाय ।
इन पांच काम करे झूठ जो अवाज है ॥
स्थूल मृपा बोल आगे भेद बाके देवू खोल ।
देखीये जग में कत्ता निपजन यहां ज है ॥९॥

दोषद अलिक—मनहर छंद

पंचम और बली मां । नान नान हो कपाड़ ।
पुत पुत्री पंचने का । धंघाट बनाया है ॥
अंगो पांग चुद्धे हीन । झुठछेनी मुनछिन ।
तही की परांजा पर । देन नो फनाया है ॥
मुनी जान ले नो जाय । दुर्गुनी देय पन्नाय ।
जन्म जाय जेग मां । कुल धन नाना है ॥

निरयही देवे सराप । पावत बहुत संताप ।
 झुठा-यश धन गमा के । कू गति सिधाया हे ॥ १०
 होय के विचमें दलालाकरे है कर्म चंडाल ।
 दृगम का चाहे माल । शाने बन आवें हैं ॥
 दृगारों का करे दृग। लुखे परपंची ठग ।
 दुष्ट मात तात धन देख लल चाये हैं ॥
 भेन येन श्रयन हीन । अशक्त शिरयालगिन ।
 मशाणिया बुद्धकों यो योवनियां बनाये हे ॥
 रूप बल बुद्धिबन्त । जोड़ी का जो चाये कन्त
 बलारकांर पापी पंच । बुद्धे कों परणाये हे ॥ ११
 कल्ले वाल काले करे। परथर की यसीसी घेर ।
 अकदाय कमर बान्ध । अस्में अशु ठांके हे ।
 जामा पड़े जाहा बने । गरदन तो नाना मने
 निर्लेख गंधेही बडे । दो नर पकड राखे हे ॥
 बजांग धाड़ेनी जाय । निर्दयी सज्जन हराय ।
 विचागी अचला बाल । लावे अशू आँखे हे ॥
 धर्म बुद्धि जानि पर । धन नन जन घर ।
 बोटि धाटे देखलो घोला में धूल न्हाय हे ॥ १२
 नाम चलायेकी मरी । अजब मरी जग मांहीं ।
 म्वालें पुत्र लाड मोली । नाम न म्हाही हे ॥
 दूर मुखमें लल बाट । दुष्टन म्दुन देगाट ।

लेजाय गुण नहीं पाय । अति मन में पस्ताय ।
थोड़े नफे काज आझानी । कर्म यों धावे है ॥१॥

अपद-या भोमालिक मनहर छंद

अपद खेत अह घर । बाग कूवा सरोवर ।
यत्र अनाज भूषण।अदि बहुत प्रकार है ॥
गिलट चडावे । सद्यं सादश बनावे ।
भाले लांको कों यह कावे कहे येही जग सार ।
देखी भभक लेजावे।सस्ता जान हर्षावे ।
पाँछे बहुत पस्तावे । जत्र निकले निसार है ॥
ऐसी कही कर्ला।मांही।स्थानो स्थान ही देखाइ
हाथे पगतीत गमाइ।चोर बने साहुकार है ॥ १॥

थापणभोमा—मनहर छंद

विश्राम में मिय आया।म्वजनो मे धन छिपाय
साहुजान थापन धगे। मेरे आगे काम आवेगा ॥
विश्राम धार्ता महा पापी।दुष्ट लालच में व्यापी
पाँछे आके मांगि जयाना कही नापवेगा ॥
मुन मो निगम हांयाकेट धम्की प्राण म्योय ।
इजन गमावे कंठ । पाँछे पस्तावेगा ॥
ऐसे अनर्था जन । जिंदगी पाय मरण ॥

धन छोड़ पाप बान्धानरक सिधावेगा ॥ १७ ॥

कूड़ीसाक्षी—मनहर छंद

बकौली रु बालिष्टरी । पुण्य जोग पढ़ी बरी ।
 झूठे प्रपंच राचि करी । दाम को कमावे है ॥
 केड़ बीच लांच खाय । जेही शरम में आय ।
 खोटी साक्षी भरने को राज शभा मांहे जावे है ॥
 झूठे को सच्चा बनाय । सच्चे शिर कलङ्क डाय ।
 सत्य वन्त शरमाय । अति पस्तावे है ॥
 कर्ता ने कराने हार । दोनों ही हैं गुन्हेगार ।
 आखिर सत्य होवे जहार । पापी दुःख पावे है ॥१८॥

सहसा भाषण—मनहर छंद

केड़क मत्तरी जन । मेल्य रखे सदा मन ।
 गुणी गुण त्याग कर । दुगुर्ण ही लेवे है ॥
 ज्ञानी ध्यानी जपी तपी । आचारी शीतल खपी ।
 इत्यादि की कीर्ती सुन । मन दुःख सेवे है ॥
 करने को यशः हान । रखने अपना मान ।
 छत्ते रु अच्छते कलंक । तास तिर देवे है ॥
 संत सती को सताय । महा पातक उपाय ।
 निंदक छिदरी दोनो भव दुःख लेवे है ॥१९॥

रहस्य भाषण-मनोहर छंद

सद्गुण दुर्गुण भाड़ । सर्व वस्तु मांहे पाड़ ।
 गुनी गुन यह दुष्ट । दुर्गनही लेवे है ॥
 विरोद्ध का यक्त पड़ । रहस्य प्रकाश करे ।
 पीढ़ियों की धीनी केड़ खोटी बात केवे है ॥
 गगिय रहे शरमाय । जयर क्रेश घडाय ।
 कितनेक मृत्यु पाय । प्रत्यक्ष दिखेवे है है ॥
 अपने न अवगुन देखे । अन्यका कले जा सेखे ।
 गमावे जन्म अलंखे । निगोदे में रेवे है ॥ २० ॥

मिथ्या उपदेश-मनहर छंद

केड़ जग मिथ्या मनि । नाम रखे साधु यती ।
 मर्या मर्य जाने नाहीं । झूठी टेक पकड़ी ॥
 दया धर्म को उर्याये । हिंसा माहे धर्म स्थाये ।
 मर्य के झूठ बनावे । ऐसीलिये छकटी ॥
 पेट भंगे के काज । जग का कर अकाज ।
 मर्या के झूठ मनाज । पक्षे मारे जकटी ॥
 ऐन निर्यार दी विपरीत गुन अर्यादी ।
 मंगनी का मर्य ले । जाय नरक नकटी ॥ २१ ॥

खोटा लैख-मनहर छेद

व्यापारी आपार तृष्णा वश करे व्यभिचार ।
 रुके वही माँहे सही वे सही बनावे है ॥
 पीछे दे अंक चडाय । आगे को दे बिन्दु ठाय । ॥
 जन्वर हो फरियाद करे । ताहे लूट खावे है ॥
 स्टांप नकली बनाय । देते अक्षर ही मिलाय ।
 लांच दे सावदी करे । कोर्ट चठावे है ॥
 जान के धस्के लाचारादिन मोत डाले मार ।
 ऐसे जाय यमद्वार खुब मार खावे है ॥ २२ ॥

सत्य वचनभीझूठैसे—इन्द्र विजय.

जोवचन श्रवण कर धर्मी।धर्म तर्जा कू मार्ग जावे ॥
 जोवचने भांगे लिये वृत्त को।जो वचने कोइ घात जो थावे ॥
 जितवचनेगुणी गुणटके । अरुजो जिनाज्ञा विरुद्धक हावे ।
 सो सवजानोअसत्यवचन है।सत्य सोजानभोलेभरमावे॥३३॥
 निर्दयी पुरुषोंने शास्त्ररचे जोकोकादिआसन भेदवतावे ॥
 मूठ औचाटन आदिमंतह । तंत्र औपधी जेह दर्शावे ॥
 होम यज्ञ शीकारविधी रु अज्ञतरेकर पर प्राण सतावे ॥
 सोसुदजानोअसत्य वचननोसत्य सोजाने भोलेभरमावे॥३४॥

झूठ के दुर्गुण—इन्द्र विजय

अप्रतीत लहेजन असत्य से जर्माहुइ पंठ कंतुर्न गमावे ॥
 अपकर्त्ति अपयश होवे अरु । सत्य कहे सो भी झुठे गिनावे
 लबाड लुचा ठग धूतारा । गापोडी शंखधों नाम स्थापवि
 असत्य कोपाप अमाप संताप दे । ऐसे भाव प्रत्यक्ष देखावे ॥२५॥
 झूठेकी विद्या मेल जंल रु घहुत कष्ट रुहे सिद्धी न थावे ।
 देवदानव नरेश्वर रुठन । शभापंचों में बोल न पावे ॥
 बंदनीय कई निन्दनीय हुवे । जग बोल गमाइ पीछे पस्तावे
 असत्य कोपाप अमाप संताप दे । ऐसे भाव प्रत्यक्ष देखावे ॥२६॥
 झूठा कहे जग पेंठ बाडेको । भला जनता की सुगलावे ।
 भगी कृकर काग भखे तस । धूल पडे ऊकांड पठावे ॥
 तैसेही झूठा अपमान लहे सब नीच कहे मर दुर्गति जावे ॥
 असत्य का पाप अमाप संताप दे । ऐसे भाव प्रत्यक्ष देखावे ॥२७॥
 तोतला घोबडा लेत बागासी । मूंगे गुंगे जह दिखावे ॥
 मुख पाक हीन दाँत दाढ मुख थक उडे दुर्गंध महकावे ॥
 ऐकेंद्री येन्द्री तेन्द्री चौरेंद्री सखी असखी तिर्थ च जोथावे ।
 यह सब प्रताप असत्य के पाप के फल भोगे आख आँशुवावे ।
 बहुत असत्य से जाय नरक में । यम देव ताये अन दवावे ।
 हुरी कटारी काँटे त्रिशूलादी । शाख से तस मुख भरावे ॥
 प्रहार दशन विदारता पाप अमाप ही मुह पे लगावे ॥
 असत्य का पाप अमाप संताप दे । दोनोही भव में देख यह भावे ॥

अन्य को आपदेतेहोज्ञान।अपनेपुत्र को रखेअज्ञान ॥ ८ ॥
 यह युक्तो नहीं आपको नाथ।आचर्य कहे सुन मुज्ञवात ।
 अपने पुत्र है मूर्ख शिरदार । सीधी शिखाये उलटी लेधार ।
 याको हृदय बडो कठोर । और भी है पुण्य का काम जोर ॥
 तीनोंकीपरिक्षा वतानेकाज । दमड़ी २ कीकोडीदी त्याज ।
 कहेतीनों से बजार में जाया।पेटभरभोजन कर आयो ।
 खुशहो तीनोंबाजारमें आय ।पर्वत 'फुटाणे लेकेलाय॥११॥
 वसु नारदभेले कर दामावस्तु।खरीदी कोइ निकाम ॥
 बैचीगरज वन्त धरजाया।शम बहुत मिले हर्पाय ॥ १२ ॥
 इच्छित भोजन किया पेट भरा।मूल पुंजी ले आयेघर ॥
 तीनों आये गुरुजी के पास । दोनों खुसी 'पर्वत' उदास॥१३॥
 पूछा तीनों से बीता कहा ।दम्पति पुण्य का परिचयलहा ॥
 तो भी पूत्र के मोह बशहोया।कुछेक विद्या पडावे सोय ॥१४॥
 एकदा वसु भूले निज पाठा।गुरु रुष्ट हो मारन लगे कांठ ॥
 रक्षा करी विप्राणी आय । मार बचाइ वसु हर्पाय ॥१५॥
 कहे वसु मातुश्री मांगो वचन।विप्राणी कहेवक्ते दीजो धन॥
 वचन भंडारे रख सुखे रहाय । तीनोंही पढे चित्त लगाय॥
 दोहा—एकदा जाय आकाशमें । दो मुनि विद्या धार ॥
 पढाते देख आचार्य को।करें आपस में उचार॥ १७॥
 तीनों विद्यार्थि यों विषे । दोनों नरक में जाय ।
 एकही जावेगा स्वर्गमें।नुनआचार्य विस्माय ॥ १८ ॥

चोपाइ

एयदा गुरु धात मिलने कामाफिरत नारद आये पर्यंत धाम ॥
 तय पर्यंत वेद छवपडाया "अर्जेयष्टव्य मिति" श्रुति आय ॥२९॥
 बरग होमने को पर्यंत कियो अर्थ । नारद कहै मत करो अनर्थ ॥
 निर्जाय शाल गुरुजी अर्थ कहा । विवाद तय दोनों के रहा ॥३०॥
 अज्ञानी पर्यंत नहीं छोड़े हट । यचन पक्क किये दोनों ही झूठ ॥
 मन्य वादी हे वसु भृपाल । न्याय कराये ना दिग बाल ॥३१॥
 जिनका झूठा निकल सयाला उमकी जिहवा छेदना तरकाल ॥
 पर्यंत की माना जाना भंड । मन मांहि अति पाइ खेद ॥३२॥
 मागुन आठ वसु नृप पाम । यचन गांगा करी अरदास ॥
 मेरे पुत्र के वक्षीय प्राणार्तिहाल सय किये यथान ॥ ३३ ॥
 पर्यंत झूठा नारद मन्य कहै । यह किये मुझ घर प्रलय ॥
 न्याय लेने आवे । नृमशमा यचावे शीशु कंडक प्रयास ॥३४॥
 वसु यचन कम मानी शान । ना समय दोनों लड़ने आन ॥
 ओर लोक यदुन ही भगाया वसु नृप पर भगमा लाया ॥३५॥
 नृप न्याय सिंह मग हो । मरगामिश्च यचन यों कर उचार ॥
 अज्ञा शाली दोनों अर्थ हे यादुमश्रुनिका गुरु कहामोय ॥३६॥
 यों बोलन धरगा ढे नृकाल । नरक में पडाये करके काल ॥
 देस झूठका कर प्रत्यक्षामरु लाक कंड नारद को दक्ष ॥३७॥
 नारद का दूता नह मरहा । रैन को किया देस के चार ॥

पर्वत अति अभिमान भराया हिंसक यज्ञ स्थापन अन्य जाय ॥
 ललट अर्थ वेदों के कर । बोभी गया नरक में मर
 नारद हिंसा यज्ञ किने वंधा । जिसका आगे बहुत सन्वन्ध ॥ १३ ॥
 दोहा—इस दृष्टांत से देखीये । हिंसक झूठ उच्चार ॥
 वसु पर्वत गये नरक में । अपयश जग मझार ॥ ४१ ॥
 जो असत्य सदा उचरोता की कोन गति होय ॥
 आत्म हितेच्छु सुज्ञ हो । झूठ म बोलो बेया ॥ ४२ ॥





मंजिल दूसरा—“मृपवाद पापोद्धार.”

उत्तर विभाग—“सत्य”

दोहा—सर्व व्रतों में मुख्यव्रत। सत्य एकही जान ॥
 इसे आराधे विशुद्धजो। उस के सुख निधान ॥१॥
 धर्मोत्पत्ती सत्य से। करे आत्म कल्याण ॥
 विघन हरे मङ्गल करे। गृहो सत्य मतिमान ॥२॥
 प्रश्न व्याकरण सुत्र के। द्वितीये संवर द्वार ॥
 महिमां सत्य वचन की। करी जानेश्वर उचार ॥३॥
 गुण निष्पन्न नाम अर्थयुक्ता। सत्य उचार न विध ॥
 महिमा सत्य वचन की। सहोष वरणु रिध ॥ ४ ॥

सत्य वचन के नाम—चोपाइ छन्द

‘सुद्धे’-निर्दोष, सुईयं’-पवित्राभिधे’-कल्याण, सुजार्थ’-सुजतिव।
 सुभापियं’-यह अच्छा वचना ‘सुदिठ’-सुद्रष्ट, ‘सुपंडिट’-सूथपन।
 ,सुपंडितयसं’-सुयशः जगकरो। ‘सुसंयमीबुइ’-सुनीवर ऊचरे ॥

सुततरपैतवैलीसुविधैजानासत्यकोसवहीदेनहैमान ॥२॥
 गमैसाधु धर्मआचरणकरोतैपनियमनत्यवन्तसमाचरे ॥
 मृगतीपैर्यसत्यहीवनाय । लोकोमेंउत्तमसत्यगिनाय ॥ ३ ॥
 गान गमिनीविद्यासिधसत्यकरोस्वर्गमार्गनाक्षमार्गसंचरे॥
 अविह-यथातध्यहैसत्याउज्जुय-शरल-अकुटिलपध्य ॥४॥
 भुयैर्य सत्यअर्थदर्शियाअत्यनो-परमार्थविशुद्धकराय ॥
 उज्जैर्यकरं-उज्ज्वलसत्यकरोप्रकाशहोयत्रि-लोकसोभरे॥५॥
 अविस्वर्वादी-सत्यवन्तहोयायैर्यकहेसत्यवन्तनोय॥
 मधुर-तैर्यप्रत्यक्षदेवजितायहनीसन मसत्यकेगुणऐसा॥६॥

सत्य भाषा के लिये संक्षेप में व्याकरण—इन्द्रविजयछंद
 'भोम'सोनाम, 'अख्यांत' 'क्रिय'पदनिपातअव्ययएकरूपरहोव

‘उपसर्ग’ शब्दके आद अक्षरधरे, मूलशब्दमें भेद पड़ावे ॥

‘तद्धित’ दो शब्द एक करे जो, ‘समास’ के भेद सात कहावे ।

‘सन्धि’ मिलाप करे दो शब्दके, पदसो पूर्ण शब्द करावे ॥ ७ ॥

जैसे—निरा + मल, सु + मोघ, इत्यादि को, उपसर्ग, कहते हैं.

(१) दो, या, बहुत शब्द मिलने से एक शब्द पने जैसे—राज महल, मायाप, इत्यादिको—तद्धित कहते हैं.

१ समास के ७ भेदः—(१) अव्यय भावसो—अर्थ प्रकाश में काम आवे जैसे—मति—वर्ष, ये-शक इत्यादि. [२] तत्पुरुष सो समास के अंत के शब्द पेही लग्न रख्या जाये जैसे—राजाजी, का, हाथी पागल होगया. इस शब्द, का, हाथी, पे, आधार है परन्तु राजाजी पर नहीं. इस तत्पुरुष समास का विग्रह करती वक्त-विभक्ती लगाई जानी है,

(३) द्वंद्व समास सो दो तथा ज्यादा शब्दको एक ही विभक्तिलगे जैसे अम्य के फळ (४) बहुवर्ही एक दो आदि शब्द में मुख्य वस्तु का नाम नहीं लेने फक्त विशेषण ही होये जैसे मृगानेणी इस में मृगपशु का बोध नहीं होने स्त्री के आँखों का बोध होता है इत्यादि (५) कमधर पहिला शब्द यिसेमनका बोध करे जैसे देयरूप इत्यादि.

(६) द्विगुण सो जिस के दो अर्थ होते हैं जैसे दृ पद्मा त्रिभुवन इत्यादि [७] एक शेष एक ही शब्द में मय, मतलब समावेश हो जाय जैसे हिंसक, निन्हव, इत्यादि यह समास के सात भेद जानना.

- दो शब्दों के मिलाप से तीसरा रूप होये जैसे शपदार्थ भावार्थ इत्यादिको संधि कहते हैं.

(८) जो शब्द के अंत में होये जैसे घर में, मनुष्य का.

‘यन्नेले’ द्यंजनेन यतीसंभाषा, यारह ‘यैनन’ सेलिहजत वि ॥८॥

आ, अ, आः यह १९ स्वर हैं, इन के सहाय में व्यंजन का उच्चार होना है.

१९ क, ख, ग, घ, ङ, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, ण, न, प, द, ध, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, ञ, यद्. २०. व्यंजन हैं.

१७ १ मन्त्र्युक्त. २ मातृक. ३ सुरमेनी. ४ मागधी. ५ पैशाची और अथर्वनी इन १ के गण और ३ के पण गों १२ भाषा.

१८ पट पट मनुष्य इत्यादि एक वचन. २ घटा पटा मनुष्या यद्वा वचन ३ घटी पटी मनुष्या यह बहुवचन ४ देव नर म मनुष्य यह पुल्लिङ्गा. ५ नदी नगी यह स्त्रीलिङ्गी ६ कमादमुष्य यह नपुंसकलिङ्गी

७ बटं मनुष्य कर्म आये हैं. यह भूत (गया) काल. ८ कल यह कर्म. यह भविष्यकाल. ९. यह कालाहं. यह युगमान काल. १०. ब्रह्म देवजी से धर्म प्रशस्ति किया. यह पौतावचन

११ अर्धमिश्रण्य वचन बटवा है. यह प्रत्यय वचन. १२ वहिने गण बना किं दुर्गण बनाय जेमे मकर सीटी है परन्तु गी दी कर्माई सो उपनीत अपनीत वचन. १३ वहिने दुर्गण कह किं मद्गुण कह जेमे आँख कहरी परन्तु गीत इतनाहं. सो अपनीत उपनीत वचन १४ वहिने और पाँते गुणही कह जेमे दुष्ट ग्याही है और पुष्टाई कर्माई सो उपनीत उपनीत वचन.

१५ वहिने और तिं दुर्गुणही कह जेमे यह चार जवा. धान की है. सो अपनीत अपनीत वचन और १६

मन में तिगके ग्याहु बान सो गहबह मंहरवाजाय जेमे गह के व्यापारा ने जने मांगने कह मांगे. यह १७ वचन. यह १८ बाण वधवाक्य मन्त्र मन्त्रादि के द्वारा प्रयोग में है.

योग्य वचन के ८ बोल-मनहर छन्द

पहिले बोले थोड़ा बोल। थोड़े बोले रहे तोला
थोड़ा बोल पार मीठा बोल। तज दुःख दाइरे ॥
मीठा बोल अवतरं देखा अवतरे शोभे विदेख।
अवतर रखी चबुराई। हित पर गमाइ रे ॥
चबुराइ निर्भिमानें। निज बडाइ से गुण हान।
निर्भिमान पर मर्म म प्रकाश कदाइ रे ॥
मर्म न प्रकाश पर शास्त्र की शास्त्री युत।
शास्त्री वचन सोभी जितसे सुख थाइ रे ॥ ९ ॥

वचन के यत्न-मनोहर छन्द.

जौहरी ज्यों रतन के। यत्न करत द्रष्ट।
तेते नर वचन के यत्न कर जानरे ॥
मुख है करंडाकार दंत बने पहरा दार।
होट के लगे कंवाड। तान जौद्धा टानरे ॥
चले जो मर्याद बर। तो काटे दशन धर।
पीछे पस्ताय नाने पहिले मोच जानरे ॥
योगा योग देख नरा प्रकाश व मोन कर।
अमोलक अवतर नर होत है दखाने ॥ १० ॥
दिन बोलाय न बोल बोलें पहिले दिने नोल।

द्रव्य क्षेप्त काल भाव । हीये स विचारि ये ॥
 अवसर जो होवे तोइ । बोलना अवसर जोई ।
 विन अवसर लखे तहां मोन धारीये ॥
 उपकार होता देखाया । तो बोलो विन बोलाय ।
 निर्धक परिश्रम कर । वयण मत्त हारिये ॥
 अहो मेरे मित्र अमोल । जोहरी आगे करंड खोल ॥
 तोइ इच्छित पावे मोल । कहूं वार म्वारीये ॥११॥

मत्स्य का प्रभवा-इन्द्र विजय छन्द

मनुष्य जन्म का रूप सोभाग्यही सत्यचवनकोसत्यपट्टिचाना
 सत्यसेआदर सब जग पावत । होवे सो पंचो कोही रानो ॥
 पिशुन्य भी मान्य को ता जावानहोवेहेरान जहां सत्या ठानी ॥
 सत्य सदा सुख दाइ हेभाइजी धारीयेसत्यअमोलकोमानो ॥१॥
 समुद्र होता है स्थल केजैसा रू महा असि पाणी परे थावे ॥
 विष धर होवन कृल की माल रू विष अमृत जैसा प्रगमावे ॥
 महा गिर में पड़े तोही नामरे । शस्त्र अंग न धाव लगावे ॥
 इत्यादि महासंकट क्षणमें सत्य प्रभावअमोलगिरलावे ॥११॥
 अमृत से अनि मिटही मत्स्य है सूर्य में अधिक प्रकाश नहारा ॥
 चन्द्र से शीतल मत्स्य अधिक है । सर्वार्थ सिद्ध से सुख कारा ॥
 निर्मल नम से मत्स्य विशेष है । गंध मागंध से सुगंध गारा ॥
 मत्स्य अनापम है सुखदायक । मृधेच्छू अनोलक सत्यबारा ॥

कथा—चौथी

सत्य का फल बताने वाली—“सुनंद की”

दोह—सत्य प्रभाव से विश्वमें । अनन्त तिरे संसार ॥
 मैतार्य कोशिक मुनि । हरिश्चन्द्रादि अपार ॥ १ ॥
 तोभी सहोद करन को । कथा बोध अनुसार ॥
 सुनन्द शैठ के पुत्र की । करू कथा में उच्चार ॥ २ ॥

❀ चौपाइ ❀

कौशल्या पुर नगर अभिराम । अरिजय राजा गुण धाम ॥
 वैश्य भ्रात दोरहे ता ठाम । नन्द भद्र सु शोभित नाम ॥ ३ ॥
 नन्दा भद्रा दोनों की नारापतिवृता रूप गुण आगार ॥
 कोडी द्वज जगमें विख्याता । दान भोग करते सुखे रहाता ॥ ४ ॥
 जाने जैन धर्म की रहस्य । यथा शक्ति धर्म करे हमेश ॥
 एक बड़ा दुःख उनके मन । पुत्र के नहीं होवे दर्शन ॥ ५ ॥
 शुन्य लगैतिपाइ संपदा । भोगोप भोग में धरे आपदा ॥
 ज्ञान से समजावे निज मन । अंतराय तूटेगा को दिन ॥ ६ ॥
 उत्साहे दान धर्म वृद्धि करे । पुण्य प्रगट भये उस अवसरे ॥
 नन्द पति नन्दा उत्सवार । सगर्भा हुइ हुवा हर्ष अपार ॥ ७ ॥

डोहला ऊपने पुण्य संयोग । वृद्धि करो दान धर्म सुजोग ॥
 नव महिने पुत्र का जन्म भया।सुनन्दगुण निष्पन्ननामठया ॥
 प्राणसे प्यारा अधिक कुँवार । शुक्लेन्दू बढे तन गुन सार ॥
 उस वक्त आयु अंत योगानन्द शेठ तन प्रगटा रोग ॥ ९ ॥
 असाध्य जान के चिन्ता करे । घर स्वजन की आर्त धरे ॥
 लघु भ्रात कहे समाधी धरो।ममत्व तज धर्म ध्यानजकरो॥१०
 नन्द कहे सुनो भद्र आतातनुजकी आर्त अति मुझ आत ॥
 सुनन्द की वय अभी नादान।कोन संभाले देवे को ज्ञान॥११
 नरमी भद्र कहे फिकर पर हरो।निज पुत्र सम सो मुझ खरो॥
 अन्तर नहीं धरूंगा लगा।आपके जैसा देवूंगा सुधार॥ १२ ॥
 यों वचन सुन शेठ पाये पत । समाधी मरण पहुँचे सुगत ॥
 ग्रहस्थाचार साधा सब मिली।अपने २ घर करे रंगरली॥१३॥
 दोहा—भद्र शेठ भूली गये । जे दीया भ्रात वचन ॥
 फ.से प्रपंच तृष्णा विषय । संचय करते घन॥ १४ ॥

चांपाइ

माता पाले पुत्र धर प्रेमालाड कोड करे दे क्षेम ॥
 न रखे काणनदे हितशीखा।सुनन्दनिजेच्छा वरते अताख॥१५
 कर्म जोग कुसंगत पडा।सतों व्यश्न सेवन चित्त चडा ॥
 जैवा सब व्यश्नो का सिरदार।हारे धन करे मांस का अहार॥१६
 मदिगे पीवे वैठ्या मंग करे।शोकार चोरी जारो अनुसरे ॥

गमाया धनहुवा कंगाल । मात दुःखधरेअतराल ॥ १७ ॥
 धन विन व्यक्त पूरा नहीं होया चोरी अधिक करन लगा सोया ।
 प्रत्यक्ष में सेवेअनाचार । शरम न किसकी धरेल गार ॥ १८ ॥
 एकदा कोइ उपना काम । भद्र शैठ आये सुनन्द धाम ॥
 भंदादेवर को देख उसवार । कहनेलगी रुदन कर अपार ॥ १९ ॥
 उपालंभ अति दिये हैं तव । भूले वचन तुम हुवा गजब ॥
 हमारी न पूछी आज लग थिता सुनन्द गमादिया सव वित ॥
 दुर्व्यसन निर्लज्ज बना येहामेरा नहीं माने न रहे गेह ॥
 धन आश्रय विन मुझ दुःख पूर । रग्वहम होवें परकेमजूर २१
 दोनों घर में एक यह वाला नाम हूयाने की चले चाल ॥
 तुम अतिपडे लालच के मांया । पुत्रविना धन क्या काम आय
 भाभी के सुन भद्र वचन । शरमाया मन हुवा अतिखिन ॥
 सुनन्द को तव पास बोलाय । मिष्ट वचन बहुविध समजाय
 भाइ अपना है कुल पवित्र । तुं करताहै कर्म विचित्र ॥
 छोडे कु-कर्म चलो अपनी दुकान । करो व्यापार बढावोवान ॥
 सुनन्द कह मुझ संयहनहीं होयामें एकवक्त द्रव्य लावूं वहुतोय
 बहुत दिन खावूं ननावूं चैन । नहीं छूटे व्यक्त कहूं एक वैन ॥
 और कहा तो इतं अंगीकार वचन मेरा नहीं पलट लगार ॥
 सुन वचन भद्र अर्थाहं मुझाय । अरर अनर्थ क्या करूं उपाय ॥
 मूल से मैंने नहीं करी संभाग पकें हंडू लगे कैसे गार ॥
 सोचत बुद्धि उपजी नत्काल । पकड़ा सुनन्द का बोला सवालद

आधीरात उठा वे हालाव्यश्च पोपन की ऊठी झाल॥ ४८ ॥
 चोरी कर के लावू धन । फिर सब इच्छा करू पूरन ॥
 शस्त्र ले घर से चला तत्कालाआगे होवे सो सुनो हाल॥ ४९ ॥
 दोहा=देत जागरना जागता । पुंरुपति करे विचार ॥
 गुप्त जाय चौकस करूं । क्या पुरमे आचार॥ ५० ॥
 भट्ट भेष धारन करी । फिरतो पुर के मांय ॥
 सुनतो गुप्त जे धारता । द्वारे कान लगाय ॥ ५१ ॥

❀ चौपाइ ❀

सुनन्द सामे मिला तब आय । कौन तुम हो राजा बतलाय॥
 बोलंता सुनन्द अचकाय । पुन राय ललकारी बोलाय ॥ ५२ ॥
 निर्भय हो सो सत्य बोलंत । चोर हूं चोरी करन जावंत ॥
 सुन नेरन्द्रआश्चर्य अनिपाय । मस्करा भट सेंदा जणाय ॥
 नृप पुछे चोरी कहां करोजाय।सुन्दकहेराजभांन्डारके मांय ॥
 हंसके रायचुप चलते भये।सुनन्दनृप भन्डार ढिगगये॥ ५४ ॥
 पेहरेदार पूछेललकार । कौनहेरे यह आवन हार ॥
 सुन्द कहेमें तो हूं चोराचोरी करन आयो इस ठार ॥ ५५ ॥
 मस्करा जान बोभी चुप रहे।सुन्दप्रवेशभन्डार में भंये ॥
 तोडताला देखे द्रष्टिपसार । वहां पर द्रव्य पड़ा हैअपार ॥
 रत्न अमोलक पांच देखाय।दीवेकी जोती ज्यों दीपाय ॥
 सो उठाय बांधे निज रुमालाखीसे में धर चले तत्काल॥ ५६ ॥

निकलन पुछे बोक्हेचोर । रोकायानही कोइभी ठोर ॥
 पुनः मिले नृपलामेआवापुछत नाम तो चोर बताय ॥५८॥
 पहिले गया सोही तूं होयाते हां कहं नृप पूछत सोया॥
 चोरी कर लाया क्याभ्रात । सुनन्द रत्न पांचोही बतात ॥
 अरते भन्डारके रत्न कों देख । आश्रय चकित हुवेविशेख ॥
 सुनन्द आगे चलता भया।नृप द्वार लग पीछे गया ॥६०॥
 सुनन्द पेठा निजगेह मझारागय पान पीक डालातसद्वार ॥
 आके सूते मंहल केमांयादिन चडा पन जागे नाय ॥६१॥
 दोहा—प्राते भन्डारी आयके । संभाले भंडार ॥
 रत्न पांच देखे नहीं । देखेखुछे द्वार ॥ ६२ ॥
 गुप्तद्रव्य बहुता लही।रखानिजघरमांय ॥
 फिर पुकार आकर की।लोक दांड कर आय॥६३॥
 प्रधान तालारादिकतवाजी जो लागाहाय ॥
 तो तो ले धर्म धराकोश खाली यों थात ॥६४॥

चोपाइ

हछा नृप कान पर गया । जाग्रनहोवो पूछत भया ॥
 क्या वस्तु भन्डारसे गइ । भन्डारी कहे कलु नहींरही॥६५॥
 कोश खाली देख आश्चर्यायाभेद समझे सब मनकेमांय ॥
 पहरे शरको पूछे बेलाय । वो सत्करा का नाम बनाय ॥
 और कोइ नहीं आया जा । वीना कुड नहीं लगयाभाल ॥

१ गुप्त एक भट्ट बोलाया। पानवाक सेनाणवताय ॥ ६७ ॥
 न्मानी, तस लावो बोलाया। सुभट्ट सुनन्द के घरतवजाय ॥
 दृ देख नन्दा रोने लगी। पापदिशा आज यह जगो ६८ ॥
 व भट्ट सुनन्द समजे भेदारत्न ले संग हुवा नकरीखदा,
 ये दरबार नमे नृपालानृप पूछे कौन तुम? कहो सच्चहाल
 शंक सत्य सो करे उचार। रातकाचोरदिनकासाहुकार ॥
 तर पूछे नृप चोरीकरी कहां? सो कहे आपके भंडार में, यांह ॥
 या माल तुम लेगयेनिकाल?। पांचरत्नवतायेतत्काल ॥
 वोर होकर कैसे घोले सत्य। उसने कही अपनी हकीगत ॥
 काकाजी दिलाये हैं सोगन। कभी नहींबोलू झूठ वचन ॥
 प्रत्यक्ष परिचय देख भूपालाजाने उसकेसच्चेसवाल ॥ ७२ ॥
 ऐसा सत्य वादीप्रधान। मुझे न मिले ढूंढे कोई स्थान ॥
 सचीव पद की करीवकृशीश। मोर ले सुनन्द नमायोशीश ॥
 नृप कहे बुद्धि से भरोभन्डार। तुमनिमित्त से गया सहस्रार।
 सत्य प्रभाव सुबुद्धि तस आयाभंडारी रु सचीव केतांया ॥
 कहने लगा आँखों कर लाल। तुमनेहीलियासबही माल ॥
 जेरे बंद दस पांच लगायासब धूजे रखे इज्जत जाय ॥ ७५ ॥
 प्रधान की परवा इन्ने नहींकरी। रखे अपनी जावे चाकरी ॥
 चुप चाप गुप्त घरा ला माल। भन्डार भरा गया तत्काल ।
 सुनन्द भी समजासो बात। नृप संगले भन्डार में आत ॥
 खाली भन्डार भरा नृप देखा। आश्चर्य पाया बुद्धिलखीविशख

लक्खी पोशाख बोरत्तवक्सायागजहोदे तस घरपहोचाय ॥
 जनवृन्दे वाजिन्त्र झणकारासुनन्द चाले मध्य बजार ॥
 अइ जव काकाकी दूकानासुनन्द उतरे विनय मनआन ॥
 भद्रजी को लुल किया नमस्काराभद्र देखआश्चर्यपायेअपार
 जरी पट देख जानेप्रधानापूछे वच्छे कैसे वनेधीवान ॥
 अहो एकहीरालीमसाराकैसे निपजा यह विचित्र प्रकारा॥
 सुनन्द कहे सब आप प्रसादावीता सत्य कहा सबसंवाद॥
 एकही सत्य से टलीमुझघाताप्रधानपदसत्यहीसेपात ॥८१॥
 काकाजीसंगले निज घरआयानन्दा रुदन करतीदेखाय ॥
 भद्र कहेदेखोद्वेष्टापिसारासुनन्द क्राद्धि पाये अपार ॥ ८२ ॥
 माता देख अतिआश्चर्य पायानमी सुनन्द मतांत सुनाय ॥
 एकही सत्य से गया सबदुःखाक्षण मैपायेअत्यन्त सुख॥

दोहा—एकदा सुनन्द चितवोएकसत्य प्रसाद ॥

प्रधान वन सुख भोगवूंकाकाजी के संवाद ॥ ६४॥

ऐसा मंत्र काका कनेऔर भी कितनेक होय ॥

सो भी लेइ साधन करूंदुःख रहे नहींकोय॥८५॥

चोपाइ

शुभ दिन काकाढिग आयालुली २ प्रणामी कहे नगमांय ॥

एक सत्य मन्त्रमुझदिया। और भी दीजीये तुम कने राया॥

भद्र शैठ बहे गुरु उपकार। देही मूर्ति हैं मंत्र आगार ॥

मुझेही उनोने बताया मंत्रातुझेही बोही करेस्वतंत्र॥ ८७॥
 दोनों आये मुनिवर पासानमन कर वातक कियाप्रकास ॥
 मुमुक्षु जान सुनाया धर्म बांधाद्विविध धर्म हृदय सोध॥ ८८॥
 साधु होवन अशक्त जो होयावारह वृत्त धरि सुनन्द सोया
 ज्ञानाभ्यास कर करणी करोदान दया दम प्रीति धरे ॥
 सत्य कार्य धर्मोन्नति करी। आयुअंत स्वर्गे अवतरी ॥
 थोड़े भव कर पावेंगे निर्वाण। देखो सत्य कैसा गुनखान॥ ९०

दोहा—ऐसा जान श्रोत सभी। तजाने दूसरा पाप ॥

सुनन्द परे आदरो। पालो विन विखवाद ॥ ९१ ॥

तो सुखीये निश्चय होवो। दोनोभव मझार॥

श्रवन पठन का सारयह। सुखेच्छू लो धार ॥ ९२ ॥

स्वपरात्म सुख वरन । मृषावाद पापोद्धार ॥

अपि अमोलक ने रचा । यह द्वांतीया अधिकार ॥ ९३ ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीनी महाराज के

सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री

अमोलक ऋषीजी महाराज रचित

मृषावाद पापोद्धार नामक

द्वीतीय मंजल समाप्तम्





मंजिल तीसरा-‘अदत्तादान’ पापोद्धार

पूर्व विभाग-“चोरी”



“अदत्ता दानका अर्थ”

दोहा-अदत्त वस्तु दिन दड़ । अदान जो कोइ लेय ॥
सोही पाप है तीसरा । चोरी जगमे केय ॥ १ ॥

“प्रश्न व्याकरण सूत्रानुसार-अदत्ता दान पापका वर्णन”

दोहा-प्रश्न व्याकरण सूत्रके । तृतीय आश्रव द्वार ॥
अदत्ता दान पाप को । भारव्या धृत विस्तार ॥ २ ॥

अदत्ता दान के दुर्गुण-चोपाइ

चोरीका नामही द्रैहा उपजाय। कितनेक तो मरण ही पांय ॥
मलीन महा त्रास दानागच्छतों लोभ का यह आगार ॥ ३ ॥

अकाल कृत्य दे विसम स्थानांका स्थान अधो गति पठान
 तृष्णीं बडे पश्चाताप होय । अँकीर्ती करे अँना चीर्ण सोय ॥४॥
 छिद्रें गवेधी आतुरतीं करे : रौंज दंडे मूर्छित कोभी हरे ॥
 विम्रँह करे मारत नहीं डरे । मौंन हरे, दँया परही करे ॥५॥
 राज पुँरुष गृह निन्दे संतै।प्रिय मिल से विरोधैं करंत ॥
 विँर्षि डाले राग द्वेपें बढायामहा संग्रामकुँपें भी थाय ॥६॥
 दुर्गति दीता जन्म भैरण विस्तरे । फिरि रँगैर्म में अवतरे ॥
 मरे पर भी पाप साथ ही आय । चोरी इतने दुर्गुण उपाय ॥७॥

अदत्ता दान के नाम—चोपाइ

चोरीकँ-चोरी, परहँड'-धन हरे । अंदत्त'-विन दिया सो वरे ॥
 कुरिकँड'-करूर चित्त रहे । परँके लाभ को आप चहे ॥ ८ ॥
 असँधमो'-असंजम का काम । परँ धनंमि गेही'-वाँछे हराम ॥
 लोलका'-लोलुता, तकर'-तस्कर । अवहाँरो'-परका आपहर ॥९॥
 हरथलहुताणै'-हाथलघु होया । पाव कम्मै करण'-पाप करे सोय ॥
 तेणिँक'-कर्ता को यह तणाया । हरणैं विप्पणासी'-नाश कराय ॥१०॥
 'आदि यैण'-नहीं आदर ने योग । लुप्पणाधणा'-छिपावे धन भोग
 'अप्पँच ओ'-अविश्वास थान । उँवलो'-पर पीडक जान ॥११॥
 अंखेवौ'-अक्षेप दुर्गुणा करे । खँवँओ'-कुक्रमे हिम्मत धरे ॥
 'विसँखावा'-विखवाद बढाया । कुँडया'-कूड कपट से थाय ॥१२॥
 कुल्लमसीयं-कुल काला करे । कंखौ'-छोटी वाँछा धरे ॥

‘लालापणों’ दीनकर्ता को बनाया ‘पै’ थाणाय’ प्रार्थना कराया ॥ १३ ॥
 ‘आतासै’ णाय’ करे आता नासा इच्छा मूर्छा का स्थान खाता ॥
 ‘नियणों’ डिकम्म’-निकाचित अरथा। अवरत्थ-अप्रार्थ प्रार्थ ॥ १४ ॥
 दोहो—गुण निष्पन्न तीस नाम ए। श्री जिनेन्द्र फरमाय ॥
 अर्थ विस्तारत इतका । अन्य सबही समाय ॥ १५ ॥

सूक्ष्म चोरी अरल छंद

शब्द रूप रु गंध रस रु स्पर्श से
 बिनाज्ञा गुप्त रही मनसे आकर्ष से
 सूक्ष्म चोरी तोही प्रभू फरमा वही
 इसको त्यागे तोही शीघ्र शिव पावकही ॥ १६ ॥

बड़ी चोरी—मनहर छंद

खात देकर भीत फोड़े । कमाड छुत्त ताले तोड़े ।
 ऊपड़वाड़ा डाक के । उठाड़ माल लावे है ॥
 गांठ नोली डब्बा छेड़े । तंदूक पिटारा झोड़े ।
 अच्छी बन्तु निकाल के । चांटी तामे ठावे है ॥
 जथा नय्यत्यो बनाड़ । देने मालक को संभलाड़ ।
 माहु कारी यों जम ड । विश्वासा को मनावे है ॥
 रस्ते जाने केड लुंटे । उजाड में केड कूटे ॥
 ऐसे चोरी के करतार । दोनों भव दुःख पावे है ॥ १७ ॥

अकाल कृत्य दे विसम स्थानाशंका स्थान अधो गति पठान
 तृष्णी बडे पश्चाताप होय । अँकीर्ती करे अँना चीर्ण सोय ॥४॥
 छिद्र गवेपी आतुरती करे । रीज दंडे मूर्छित कोभी हरे ॥
 विम्रह करे मारत नहीं डरे । मँन हरे, दँया परही करे ॥५॥
 राज पुँक्षप यह निन्दे संतै।प्रिय मिल से विरोध करंत ॥
 बिँर्त्ति डाले राग द्वेपं बढाय।महा संभ्रामकृपे भी थाय ॥६॥
 दुर्गति दौता जन्म भँरण विस्तरे । फिरि रँगैर्म में अवतरे ॥
 मरे पर भी पाप साथ ही आय । चोरी इतने दुर्गुण उपाय ॥७॥

अदत्त दान के नाम—चोपाइ

धोरीकँ-चोरी, परहँड'-धन हरे । अंदत्त'-विन दिया सो वरे ॥
 कुरिकँड'-करूर चित्त रहे । परँके लाभ को आपं चहे ॥ ८ ॥
 असंयमो'-असंजम का काम । परँ धनंमि गोही'-वाँछे हराम ॥
 लोलका'-लोलुता, तकर'-तस्कर । अवहौरो'-परका आपहर ॥९॥
 हस्थलहुतार्ण'-हाथलघु होया । पाव कर्म करण'-पाप करे सोय ॥
 तेणिकै'-कर्ता को यह तणाया । हरणं विप्पणासी'-नाश कराया ॥१०॥
 'आदि येंण'-नहीं आदर ने योग । लुप्पणाधणा'-छिपावे धन भोग
 'अप्पँच ओ'-अविश्वास थान । उँवलो'-पर पीडक जान ॥११॥
 अंखेवों'-अक्षेप दुर्गुणा करे । खँवँओ'-कु कर्म हिंमत धरे ॥
 'विस्खावा'-विखवाद् बढाया । कुँडया'-कूड कपट से थाय ॥१२॥
 कुलैमसीयं-कुल काला करे । कंखों'-खोटी वाँछा धरे ॥

'लालापणी' दीनकर्ता को बनाया। 'पृथ्वाणाय' प्रार्थना कराया ॥१३॥
 'आत्तासैणाय' करे आत्ता नासाइच्छै मूर्छा का स्थान खास ॥
 'नियण्डिकम्मं'-निकाचित अरथ। अवरत्थ-अप्रार्थ प्रारथ ॥१४॥
 दोहो-गुण निष्पन्न तीस नाम ए। श्री जिनेन्द्र फरमाय ॥
 अर्थ विस्तारत इनका। अन्य सबही सनाय ॥१५॥

सूक्ष्म चोरी अरल छंद

शब्द रूप रु गंध रस रु स्पर्श से
 बिनाज्ञा गुप्त रही मनसैं आकर्ष से
 सूक्ष्म चोरी सोही प्रभू फरमा वही
 इतको त्यागे सोही शीघ्र शिव पावकही ॥१६॥

बड़ी चोरी-मनहर छंद

खात देकर भीत फोडे। कमाड छुत्त ताले तोडे।
 ऊपडवाडा ढाक के। उठाइ माल लोवे है ॥
 गांठ नोली डब्बा छेडे। तंदूरक पिटारा झोडे।
 अच्छी वस्तु निकाल के। खोटी तामे ठावें है ॥
 जथा तथ्यत्यो बनाइ। देते मालक को संभलाइ।
 साहु कारी यों जमइ। विश्वासी को सतावे है ॥
 रस्ते जाते केइ छूटे। उजाड में केइ कूटे ॥
 ऐसे चोरी के करतार। दोनों भव दुःख पावे है ॥१७॥

धाडा पांडे लूटें गांम । खेत वाग बलें धाम ।
 ताले परकुंजी लगा । निघा भी चोगावे है ॥
 नारी पुत्र शिष्य भरमाय । लेके जावे है उडाय ॥
 मंदादिसे मुरछाय । केफी वस्तु भी खवावे है ॥
 माल उमदाही बताय । देते खोटाही मिलाय ।
 तोले मापे खोटे राखे । केइ धडीयों उडावे है ॥
 केइ गिनते हीउडाय । व्याज तिथी भी बढाय ॥
 ऐसी चालाकी चलाय । तामें मोले भरमावे है ॥
 केइ कसब की चोरी । यहां तो कही में थोड़ी ॥
 एसी चोरी के करता । दोनो भव दुःख पावे है ॥ १७

चोरकी अठारहप्रसुती —इन्द्रविजयछंद

अभये बचन देवे को चोरको डरोमति मैं सहायक तेरा ॥
 पूछे सुखें शान्तिरुस्थान बतावत पहिलें आप जाके लगावेहेरा
 छिपने को जागा बतायन चोरको पृच्छक को स्थान बतायअनेरा
 निज घर आये को आसन देवतावाहणे बैठाय पहोंचावत घेरा
 गुप्त रखे अपने घरमें माल लेकर भाग जा बाँट के लेवे ॥
 ऊंच बैठायें जो हेरु आय तो यहां नहीं हैं यों मिथ्या केवे ॥
 खान पान का सहाय देवे सर्व स्थान मर्दन करे औषधी देवे ॥
 साहित्य दे चित्त शांत करे आप माल रखे प्रसुति अष्ट दशवे ॥

सात चोर—इन्द्र विजय.

चोरी करे रहे चोर के पास जो वार्ता लैय करे चोर साथे ॥
चोर का भेद लहे जो जायके । करे विक्रय करे चोर हाथे ॥
स्वार्न पान आदि दे चोर कोमकाने देवे संभाले जो हाथे ॥
सात ही चोर वजे चोर संगसाभंडे लोक डंडे नर नाथे ॥ २१

चोरी से दुःख-मनहर छंद

रख के सुख की हाम । करत कर्म निकाम ।
चोर चोरी कर पर धन हर लावे है ॥
खावे न खिलावे, प्रगटही नहीं थावे ।
जंडे खड़े मांहे जा के रण में छियावै ॥
गुप्त सदा रहे भेद कोइ को न दहे ॥
निशी दिन हीयोडरे रखे जान जावे है ॥
भेला किया धन नहीं सुखी मन जन ।
चोरी के करने वाले सदा दुःख पावे है ॥ २२ ॥
वक्त रुकुवक्त मांहे । शीत तप गिने नाय ।
वन झाडी ही माहीं फिर तन को तपावे है ॥
भूत्र प्यान तमें भार उठा नन देने ।
पर्वतों खाइ से कैंटे कंकर संगे पावे है ॥

मन्त्रिभ्याम् यद्वा कोऽपि कमेनही॥शिखर कलकंनोररिहाआय ॥
 तमे मंगल लोभोभयोभगजानममोल चोरी छिट्कागे ३०

कथा—पांचवीं.

चौगिकं कटुवनानवाली-अमग्न सेन चोरकी
 चौदा-अनेन प्रार्थी चौगि कगपायेदुम् अनंत ॥

मोः इत्यय दशायनोऽकट्टु अमग्न सेन विरनेन ॥१॥

मृग विनाक प्रथम मन्त्रेअप्रभेन तीमरे मांय ॥

अमग्नसेन चोरही अगे॥कही मो यही वरणाया॥२॥

चौपाठ.

पुनर्जन्मनाट्ट नमामुत्पन्नान् । अमग्न दशोनाम वयान् ॥

मन्त्रिभ्याम् यद्वा कोऽपि कमेनही॥शिखर कलकंनोररिहाआय ॥ ३ ॥

मृग विनाक प्रथम मन्त्रेअप्रभेन तीमरे मांय ॥

मोः इत्यय दशायनोऽकट्टु अमग्न सेन विरनेन ॥ ४ ॥

मृग विनाक प्रथम मन्त्रेअप्रभेन तीमरे मांय ॥

मंजिह दुलगा—अद्वैत पापों काग.

विजय नाम चोरा धीरकृग आलाने तत्करपांचलो
अह अचनी करे बहुत धानाद्रु संवयण नाम विल्य
दोष अत्र कलामे होशियाग अनेक विद्याके को जानका
चोरी कलामे अति प्रवृत्ता विद्या प्राकृत मे अर्गकिये दी
राजा को भाग देकर वरीकिया अन्य लोक नव लान हीन्य
संधक श्री नाम चोरपतिनाग कला कौशलता रूपमन्डार
प्रेत कृष्ण भोगवे तुलनाग पुण्य पनाय मिला सुयोगा
एकदा 'संधक श्री' हुंन सांसारो जीवकोइ उपनोआय ॥
होहला इच्छा तीसरे सांतनडा पुण्य भेष अनुप्यका प्रही ॥
नम लड़ स्तन्य पे धारा नाय हुंन करे दगकार ॥
न्यातकी सब नारीयो परिवाग लच्छा फिरे अटवी महार ॥
धन्य नारी जो करेइत प्रकार शरने सुरसे सो मन महार ॥
आर्त धरे कुमलायो तन विजय देख पूछे सधुर वचन ॥११॥
हर्ष तनय क्या उदासी कमा संधक श्री कहें करी प्रणाम ॥
तीसरे सांत इच्छा तुज रईनन मे आइ सो सब कहो ॥१२॥
सुण कर अति हर्षा तत्करादी आला तुज इच्छा सो कर ॥
वार अहार नय सांत निपाया तत्कर पहि सब सज आया ॥१॥
व प संधक श्री सज भइ नर्व संध नो अहार भोगवइ ॥
दोस्तन हो फिरे पही महारा डोहला पुग हर्ष अपाग ॥१४॥
व २ गर्भ सोटा भया नव नामे कुमर जन्म लिया ॥
सोत्तव कियान जन जिमाया अभग नेन ननान दिगय ।

पंच धाय पाले विज्ञानी भया। चोर कला सबसील हीगया॥
 योयने युक्ती आठ परणाय। पंच इन्द्राय के मुखविलमाय॥
 एकदा विजयअयुष्पअनलया॥ अभग्ग सेण मालक तय भया
 पिमा समान सो पापी अति। कला कोशल्यता निपुण मति॥
 को पाप नहीं डरे लगार । छूटे देश सतावे नर नार ॥
 उज्जह किये यहून ही गामाघराये देश लोक तमाम॥ १८॥
 महायल नृप से करे पुकार । शरणागत अहां रक्षन हार ॥
 अभग्ग मेन चोर अति पार्षाया। घर धन रहित हमको किया।
 नृपति सुन कंधातुर होय । दंड मेन्या पति से कहे सोय॥
 जावो सेना लेकर लारा। साला पछि का करो संहार॥ २०॥
 विजय चोरको लावो मुझ पास। दीप्ति करांयह काम तुम खास
 मेनापति करहुकमप्रमाण। लेमेनासंग दीप्ति किया प्रयाण॥ २१॥
 अभग्ग मेन के गुप्त रख बार । आवे दोड जानी समाचार ।
 धीनकमय तम्कर पति से किया । सुन पछिपति असुरतेभया ॥
 अभक्ष भर्त्ता मयहुंमनवाला। शस्त्रअग्रसज चलेनरकाल ॥
 मण्यममय मयविषमस्थान। छिपहुंभेकेशशूअवशान॥ २३॥
 नृप मेनापति निश्चिन तहांआया। तम्करहुट पडेएकदमजाय॥
 मार कूट कर दिये भगाव । तम्कर हथि निजस्थाने आय ॥
 दंड मेन्यापति हो निर्वल । 'महायल' नृप दिग आय। चल॥
 बीना घात सब करी प्रकामायल से चोरनहीं आवे नाम ॥
 वस कंगे तम दे विम्यामागजानी मानी अइन्त नाम ॥

बहुतो द्रव्य नृप न्वरच कराय।कुडागार एक शाल वनाय ॥
 संपूर्ण शीघ्र करी तैयार।दश दिन औछत्र मांडा उत्सवार ॥
 नगर के मांहे पडह वजाय।दाण हाँतल सब माफ कराय॥
 गुप्त बुद्धिवंत सामंत बोलाय।होंशयारि से काम करोजाय ॥
 भेटणा बहुत मोलका लइ।अभग्गसेणको देवो जइ २८॥
 चतुराइ से तससमजाय।इस उत्सव पर लावो बोलाय ॥
 सामंत किया वचन प्रमाण।सर्व साहित्य ले हुवे प्रयाण ॥
 धीरपे वास वसंता जाय।सर्व जनको विश्वास उपजाय ॥
 आया चोर पल्ली के मांय।चोरार्थीप को जय विजय वधाय
 बहु मुल्य भेटणा अर्पण करी।नृपती प्रेमके वचन ऊचरी॥
 मोहोत्सव पर आग्रह कर बुलाय।धरो सर्व सज्जन संगाय।
 भोले भाव चोर मानी बात।वचनलेकर सामंत फिर आत ॥
 'अभग्ग सेण भी हुवा तैयार।साथ लिया सबहीपरिवार ॥
 आये महाबल राजाजीपास।जयविजयवधाय नमनकियातास
 रायजी उनका किया सत्कार।कुडागार शाल में दिये उत्तार।
 मदिरा युक्त कराया अहार।सर्व तस्कर मुरछे उत्सवार ॥
 नृपति भट को आज्ञाकरी।कुडागार शाल द्वार सबजडी ॥
 'अभग्ग को लावो मेरे पास पकडा।सब चोरोकोवांधोजकडा॥
 भट तैसेही किया तत्काल।महीपती कोप्याजेसा काल ॥
 सब संहारण विधी बताया।कोटवाल तस पुर में ले जाय ॥
 लुभट वृन्द घेरे चौ फेरा।ढोल बजाय करेपापकी टेर ॥ ३६ ॥

पहिले चोहट चोरको वेठाय। आठ काकातत सामें लाय
 अरडाटकरते आठों ही कोमार। उनका मानका करावेउंसअ
 दूसरे चोहटे चोर वेठाय। आठ काकी को मार खवाय
 तीसरे चोहट आठबडे बापमार। चोथे चोहटे बडीकाकी
 पांच में चोहटे आठ पुत्रको हनेछटे चोहटे पुत्री बहु त
 सात में चोहटे आठ जमाइमारे। आठ में आठ पुलीयों
 नव में पुत्री पुत्र आठ हने। दशमें पुत्री पूत्री प्राण घने ॥
 इग्यारमें चकले दोहित्रीमारी। बारमें दोही त्रा नास तन
 तेर में भुवा चउदमें फूवाघात। पन्दरमें मासी सोलमें मास
 सतर में मांमा आठर में मामियां। मित्र सज्जन योंसत्र हत
 खंडोखण्ड कर सब ही की काया। बलात्कार कर तास खिल
 कुल में धीज रखा न लगार। जो आगे होवे दुःख कार ॥ ४२
 यह देखो प्रत्यक्ष चोरी फल। भोगवे कटु दुःख दे सबल
 धान के पीछे कीडा पीसाय। र्यों एक पीछे घने दुःख पाय

दोहा—ते काले ते अवसरे। स्वामी श्री वर्द्धमान ॥

पुर मिताल पुरवाहिरे। समासरे उद्यान ॥ ४३

गौतम स्वामी उस अवसरे। प्रभूकी आज्ञालेय ॥

गोचरी आये गाम में। देखा अनर्थ तेय ॥ ४४ ॥

करुणा व्यापी चित्त में। वार जिणंद दिग आय ॥

बंदी पूछे कीजीये। किस्त पापे यह सताय ॥ ४५

चोपाइ

गधंत कहे पूर्व भवकथा। गत काल इसही पूर में वह था ॥
 उदाइ' राजा तब करता राज। अंड बाणीया यह वस्तुताज ॥
 नेम्रव नामे पापी घना। व्योपार करता अन्डे तना ॥
 चेढी कमेडी पारेवे कग्ग। घूट्टीटाडी मयूर वन ॥४८॥
 लचर स्थलचर खेचर आद। मंगाता बहुत नोकर को साद
 लके भुंजके घेचता पुर भांया। ऐसे महापापसे द्रव्य कमाय ॥
 जार वर्ष का आयुष्य पूरा कर। तीसरी नरकमें सातसागगा
 हां से मर साल अटवी। मांय। अभग्गसेण यह उपना आय ॥
 हांभी कमायेवहुतहीपाप। सो प्रभू कहके घतायेसाप ॥
 राजतीसरेपहरशूली चडाया। तत्ता तीन वर्ष आयु पूर्णयाद
 तथमनरक में उपजेगा सही। नृगा लांटा ज्यों भोग्य दे
 फेरते २ घनारनावा। नुबर होगा सीकारी न्हाके न नर
 नारसी में ही डेटके घग। प्रलहोसंयम ले कर्मा कर ॥
 त्ति कृपा कर मृत्ति जांयगे। दोरी सर्वथा नरे नृपति
 दोहा—देखे भव्य द्रष्टान्तमें चोरीदुःख के नरक :
 छोडा पाप यह तीनगाज्यों मिले नृपति ॥४९॥

मंजिलतीसरा-अदत्तादानपापोद्वार

उत्तर विभाग-‘अचोरी,

दोहा—निज परात्म सुख करण॥अदत्तव्रत श्रेयकार ॥

जो आराधे विशुद्ध यसाताका खेवा पार ॥१॥

प्रश्न व्याकरण सुत्रकोतृतीय आश्रवद्वार ॥

महिमा अदत्त व्रतकी॥श्री जिन करी उचार ॥२॥

गुण निष्पन्न नाम अर्थयुताचोरी तजन की रीत ॥

सद्बोध कथा यहां वरणवृण्डो सुनो दत्त चित्त ॥

चोरीके नाम—चोपाइछन्द

सुवैद्यं-सुव्रत, ‘महावैद्यं’-महाव्रत। ‘गुणवैद्यं’-गुणकरहे कुमत

परद्रव्यहरणकीवर्ती कहै। ‘कर्मयुक्त’-युक्तकरे सो सही ॥ ४ ॥

अपरिमित्यं-करे परिमाण । अनंत तृप्ति का रुंधन स्थान ॥

मन वच काय की इच्छा गंके। पाप अने के कारण झोंक ॥ ५ ॥

सुसंयमी, कर्मगंनिश्चल होय करे। निर्ग्रन्थ-गांठरहित यह खरे।

‘निर्विक’-उत्कृष्ट यही है। निर्मत्तं-मत्र जन अच्छा कह ॥ ६ ॥

‘निर्गम्य’-यह गं कहै आश्रय। निर्भयं-भय रहित होवे सर्व ॥

‘विमुक्त’-लाभ का यह न जाय। उत्तम-कर्तव्य नर कहाय ॥ ७ ॥

नर्गम्य-नर्गम्यपमसमंतहा। पर्व-प्रधान, चलवैग-चललेह ॥

सुविहीय-सुविधि सेही कराजणें साम-जनकी माल की धरे
पद्म साहूँ-नो उत्कृष्ट साधु। धन्म वैष्ण-ले धर्म आराधु ॥
अदत्त व्रत के पचिस नाम कहे। प्रश्न व्याकरण सूत्र से लहे ॥ ९

चोरी तजे मो प्रकार—मनः छंद

वस्तु के हें छः प्रकारान्वित अचित धार ॥
छोटी धोड़ी थोड़ी बहुत इनकी चोरी छोड़िये ॥
दो वस्तु के भंग चार छः के होते हैं वार ।
। वद्वानां युक्ति सेती। अंग कहे मो जोड़ीये ॥
द्रव्य थोड़ी भावे बहुत । मो तो रत्न आदि होत ।
द्रव्य बहुत भावे थोड़ी । कंकर पत्थर कोटि ॥
द्रव्ये भावे अल्प सोय धूल राख तृण झाड़ ।
द्रव्ये भावे बहुत सांगलकंत्रल छोड़िये ॥
सर्वथा चोरी के त्यागकरते मुनि नर ।
तृण कंकरदि बिन आज्ञा नहीं छेड़ें ।
तो कहां कहें और बात । अन्त छः ॥
शिष्य के सज्जन रजा सेही छिड़ें ॥
जिसके स्थान माहे रहे । नर ॥
आहार वस्त्र निर्वय उत्कृष्ट ॥
अग्रिने वन्ध सो बिहारी ॥

वंदत अमोल जाको । जग मांहे जेतें हैं ॥ ११ ॥
 जो धर्मी वसने आगार । सर्व न करे परिहार ।
 तोभी लोक विरुद्ध जेह चोरी ही कों त्यागे हैं ॥
 न लेते चोरीका माल । खोटा तोला मापा टाल ॥
 प्रमाणिक पणा धर । द्रव्य को उपार्जें हैं ॥
 राजाने जो मना करी । उसे को न गेहमें धरी ।
 गुप्त ता चालाकी से तो दूरही सो भागे हैं ॥
 व्याज न अधिक लेय । वस्तु पलट नहीं देय ।
 संतोष कां निर्वाह । सोही श्रावक सागे हैं ॥ १२ ॥

चोरी त्याग के गुण-विजय छंद.

चोरी त्यागी सोहै बड भागी अनुरागी बहूनों के विश्वास जमावे
 राज भंडार रुशेठ कोठामें प्रवेश करे तस बेम न आवे ॥
 प्राण प्यारी प्रसस्त वस्तु जन संग्रह करी ताके ढिग ठावे ॥
 नीती से कमाइ लक्ष्मी सदाइ ता पास रही नहीं छेह दिखावे ॥
 सोही साहू कार सब्बो व्यवहार हींसाव में कोडी कसर न आवे
 एकही वेण करे लेन देन तोल माप छाप ठगे न ठगावे ॥
 जग नाम रमें ग्राहक जमें बहू नार्ही छोड न अन्य पे जावे ॥
 अल्प प्रयास मले धन राम जीनि आस फास सोही सुख पावे,

कथा—छट्टी.

चोरी त्याग के फल बताने वाली "चोखा शाह की".

दोहा—चोरी त्याग ले विश्वमें । बहूते पाये सुख ॥

तोभी जन मन बोधने । कथा कथु सुनी मुख॥१॥

ॐ चापाइ ॐ

बसंतपुर एक ग्राम महाराजित संचय शेट चोर सिरदार ॥

तृष्णा शेटाणी सुख कार । धनपाल नामे तास कुंदार॥ २॥

किरियाणा का वेशर सो करे । चोरी कर्म में कुशल ता धरे ॥

लेन देन में चालाकी अतिधूर्त न जानी सके तसे मति ॥३॥

कमती देवे अधिक लेय । पैडा धडी उढावे तेय ॥

घोल तोल में दशका उढाया खोटी वस्तु दे चोखी बताय॥४॥

भाव भी सस्ता बहुत बताय। छुक्ती ब्राजु माल दिगय ॥

खुशी हो बहुते जन लेजाय । घर में जाय सर्व परतय॥५॥

विस्तर्या तन दुर्गुणपरिणाम। 'खोटा शाहा' पडये तस नाम॥

लेन देन लेख घान के नांय । खोटा शाह नर्व बन लाय॥६॥

बोर्मी बोले बहुत हसांय । लदेनो नाम को अर्थ दर्शांय ॥

नाम प्रमाणे काम में कसोअय किन्ना के बाप में नहें डंका॥७॥

कमाइ तो उसको बहुत देखाय। पाप प्रभाव उंचा नहीं अ

दीपवाली दिन पस्तावो सो करो। उपाज्यों द्रव्य कहाँ जावे ॥
दोहा—जब पुण्य प्रगट हुवे । तब मिले मु संयोग ॥

अशुभ नाम भी शुभ हुवे। सो सुनयों सब लोग ॥

चोपाइ

वसंतपुर से थोड़ीसी दूर । क्षिती मंडण नगर धन पूग ॥
धर्मधवल तहां रहे साहूकार। यशोज्वला उमकी नार ॥ १७ ॥
सत्य प्रिया तम कन्या गुण वंतरूप विवेक कला साहज
तीनों सदा करे संत सति संग। धर्म ज्ञान गुण शीख मन रंग
सत्य प्रिया घनी दूर प्रवीन । मिजी भेदी परमार्थ चीन
यौवन वय जब प्राप्त भइ। पाणी ग्रहण की चिता थइ ॥ १८ ॥
युक्ति जोड़ी मिले गुण धार । नो मुझ पुत्री सुधरे जमार
गवेषणा वर की करे तात मातादेव प्रमाणे योग बन आत
दोहा—बंटा शाह के कुमारजी । खरीदन आये माल ॥

उपाश्रय में मुनि लखी। वंदे कुलकी चाल ॥ १९ ॥

ज्ञानी जन बहु देख करा। आप भी बैठे तहांय ॥

धर्म कथा सुने मुन्न चित्त। जास्युं यज्ञर मुख्याय

चोपाइ

धर्म धवल वहा थे साहूकार। उमने देखा धन पाल कुमार
व्याम्यान एकाम्र चित्त में मुने धर्मनिगामी जाणाइस गुने।

जिन काज घर लेजाय । उत्तम रसवती पुरताय ॥
 जनातुग तं शीघ्र नयेन्नायानिरागो इत्त गुनल खाया ॥ १८ ॥
 त्व प्रिया जे ग जाना वरा जान पूछे से मिली भलीपर ॥
 तगाइ करदी उन्हो वारा लज मूहूर्त हांकर करार ॥ १८ ॥
 शंटा शाह को लिये बोलाय । तत्त्व प्रिया को दी परणाय
 नी गुनी सगा मिला जोयातीनों ते अति हर्षित होय ॥ १९ ॥
 वहुको अरने घर आय । धर्म रहित सो घर देखाय ॥
 त्व प्रिया दुःख पाइ मन । कर्म गति लख रही सुस्त तन ॥ २० ॥
 रोहा-एकदा देठ कहे तनुज को । लेवू वेटा किस ठाय ॥
 देवूरी दिखती नहीं । सो कोटेमें बताय ॥ २१ ॥

ॐ चोपाइ ॐ

लेवू देवू यह नाम सुन करी । तत्त्व प्रिया आश्चर्य चित्त भरी
 कोठे में शीघ्र उठ देखे जाय । लेवू देवू नहीं नारी देखाय ॥
 पनि से पूछे कहाँ जा खच्च बात । लेवू देवू कोन घरमें रहात ॥
 भोले भाँव ना कर उचार । सो पच नेरी से कर व्यापार ॥ २३ ॥
 छःमेरीका देवू रत्न नामाचार मेरी देने में आवे काम ॥
 और कोई दिन वैस मथाराइन मेरी अपना होवे गुजार ॥ २४ ॥
 मुन वचन त्व प्रिया मुग्धाया अग्र इथी में पापमें आय ॥
 ऐ । ध मेरी अरन अशरा जहाँ तक इनका नहीं होवे सुधार
 आभ गृह कर वेठा मोन धारा काम काज नहीं कर लगार ॥

पूछे सासु सूमरा हित धरी। आज बहुजी रीस क्यों करी ॥
 ते तो उत्तर नहीं दें लगारा। सबही आश्चर्य पाये अपार ॥
 'धन पायसे पूछे सबही। पसेरी की हकीमत सो कही ॥ २७
 शैठ कहे सुणा शानी बहू। मैं गरीब गामड़े में रहूँ ॥
 जो त्यों कर चले गुजराना थोड़े बहुत करुं धर्म दान ॥ २८
 'सरयप्रिया' सो ये मन मांया समजा कर देवुं अधर्म छोड़ा
 कर जोड़ी कहे सुसरार्जी सुर्णार्जो। आपको हित शिक्षा क्या दी
 साहुकार को यह कर्म न छाजे दगा करे सो चोरही बाजे ॥
 नाम आपका सुन विस्मय पाइ। जिसका भेद आज जाना
 कमावो पन लाभ नहीं दे खावें। पापके फल प्रत्यक्ष जनावें
 बालक की विनंती अब धारो। चोरी तजी करो रोज गारो
 बारह मांस में जो लाभ उपावो। तो प्रतिज्ञा आगे निभावो
 मेरा यचन देखो अजमाइ। तोहूँ आहार लेवूँ तुम घर मांहीं
 खोटा कहे भोली तू वाई। सत्य से संसार निभेही नाहीं ॥
 बहुत वक्त में देखा अजमाइ। तबही एसी पेट जमाइ ॥ ३३
 पेट काज जो कीजे का। उस में पाप लागेही नहीं नाम ।
 जोकि दाही लागेगा पाप। तो नम फल भोगें हम आप ॥ ३४
 यह फिरक तू परह। निवार। उठ जल्दी करले अब अहार ॥
 इस्तर नन बहुत ममजाइ। 'मन्याप्रिय' माने ते नाइ ॥ ३५
 लोभी बनिया नहीं छोड़े हटा। तीन दिवस यों चले खटपट।
 तीनोंको हुड चिना अपार। मरेगी यह बिना किये अहार ॥

अपमान होवे बदले सज्जन । क्याकरेंयों समझाया मन ॥
 चौथे दन 'खोटाशाह' कहें नरमांया बहुतुं कहे सोमांनु मेवाय ॥
 वारेमांस करुं सत्रोट व्यापार । जो नफो मुझवचे लगार ॥
 तो प्रतिज्ञा निभावुं जाव जीवानहीं तो तूं मतभोगावेरीव ॥
 सुनवचन 'सत्यप्रिया' हर्पाया खोटाशाह को पञ्चवाण कराय ॥
 अष्टम भक्त पारणा किया । सबसज्जनका हर्पाहिया ॥
 रवोटाशाह हुवे द्रवृत्तमझारा खोटे तुला तोले दिये दूरडार ॥
 नवे तुला तोला वरोवरकरी । करे व्यापार एकसत्य ऊचरी ॥
 एकही भाव और एकही जवान । माने नही कोइ पहीलीवान ॥
 छः मास व्यापार बहु हीन भया । पोताकाद्रव्य खरच भगिया ॥
 फिकर बहुततीनों मन होया । पण प्रतिज्ञा नहीं भँगे सोय ॥
 अब जो जो लेजाते हैं माल । परखी तोली वरावर भाल ॥
 आश्चर्य करते लोक अपार । 'खोटाशाह' नाम भूले उसवार ॥
 तब जमने लगी पेट परतीत । सुधरी जाणी सब जननीत ॥
 जमने लगी गृहाको की भीडादोडके दुकाने आवे ज्यों तीड ॥
 'सत्यसेलक्ष्मी' आई आकर्षाय टोटापुराया अधिक जीधाय ॥
 बारह मांसमें हिंसाव सो करे । पांचसो मोर अधिक नीसरे ॥
 ताततनु जमन हर्पाधना । माना उपकार बहु जीतना ॥४५॥
 'सत्यप्रिया' को सोनफा वनाया । 'सत्यप्रिया' कहें मेमांनु नाय ॥
 पंचसरी इसकी लेबाघ डाय । डालो जंगलमें एकान्त जाय ।
 जो पीछी आपस आवे । इसघरें तो पञ्चवाण पाले भली परे ॥

शाह कहे पंचसेरीचल कै। आयाबहु कहे लेवांअजमाय
 परतीत तास वचनकी करी। पंचसेरी घना उसअवसरी
 बोरा झाडो जंगलमें जायातामेन्हाख शैठजीं घरआय।
 घर्पाद अर्चित्य तस ऊपर पडी।धूल कांजीगइ उपरचडी
 रघारी ऊंटचरतातहां आय। पंचसेरी पडीउसेपाय ॥
 चिलम तम्बाखु की इच्छायालापो खोटा शाह के तांय
 पंचसेरी देख शाहजी हर्पाय। तम्बाखु देतस पोंचाय ॥
 कहे बहुसे पंसेरी आइ चलाइबहुकहे देखोखरी कमाइ
 तलाव अपने गांमकेवार। अथउसमें इसेदेबोडार ॥
 खरी कमाइ कहां नहींजाय आयगा पीछीघरकोचलाय
 शैठकहे पाणीअंदरपडी। कौनलावेगा यहांयहधडी ॥
 बहुकहे यहभी देखो अजमायाडालीशैठ तलाव में जाय
 फेकत मछोदर में जा पडी।शैठ फिर आये घरउस घडी
 सोमच्छ फसा धीवरकीजाल निकालाउलटालियाखदेडाल
 पंसेरी पेटसेनिकलकर पडी। मच्छ पाणीमेंगया तडफडी
 पंसेरी देख धीवर संतोष लाया।'खोटा शाह'देंगे कुछसहा
 आकरदूकान पंसेरीदिनी। इच्छित स्वल्पवस्तु उनलिनी
 कहेबहुस पंसेरी आइचलाइ। बहुदेखो खरीकमाइ ॥...
 अथन्हाखो बजार में चौवाटे।खरी कमाइ कीआवेगाहटे
 शैठकहे देखसं लेजावे। बहुकहे खरी कमाइनजावे ॥
 श्याम को डाली चोहटे जायाऊपर दीनीधूलफेराय ॥

प्राते में हतर झाडन आया । पंसेरी देख आनन्दपाया ॥
 खोटाशाह हाटेदानी सा ढालालेगया थोडासामाल ॥
 कहे बहुते पंसेरी आइचलाइ।बहुकहे देखोखरी कमाइ ॥
 प्रत्यक्ष चमत्कार देखहर्पाया।अचोरीव्रत द्रढउन सहाये ॥
 साफ तजा छलरु दगावार्जी॥सबजनहोगये अतिही राजी ॥
 „चोखाशाह“ तस नमथपाणा॥थोडेदिन में धन बहुतकमाणा
 बहुविनंतकिर साधुसती लाइ।धर्मात्म सबको दियेवनाइ ॥
 एक व्रत ऐसाहुवासुखदाता ।यहां यशःसुख शुभ गतीदाता
 दोहा-भव्यो दीर्घ द्रष्टी करी । एहो द्रष्टांत का सार ॥
 खोटाफिट चोखा बनो । कलुका तोड करार ॥ ६१
 तो थोडे दिन में मिले । सुख संपति सुयोग ॥
 चोखाशाह तणी परे । सुधरे दोनू लोग ॥ ६२ ॥
 स्व परात्म सुख वरन । अदत्त पापोद्वार ॥
 ऋषी अमोलक नेरचा । यह तीसरा अधिकार ॥ ६४
 परम पुज्ज श्री कहानजी ऋषीजी महाराज
 कीसंप्रदाय के वाल ॥ ब्रम्हचारी मुनीश्री
 अमोलक ऋषीजी महाराज विरचित
 अघोद्वार कथागार ग्रंथ का
 अदत्तादान पापोद्वार
 नामकक तीसरा
 संज्ञक ममात्म



“मंजिल चौथा”-मैथुन पापोद्धार”

पूर्व विभाग-“कुशील”

मैथुन का अर्थ-दोहा छन्द

दोहा-मथन असंख्यपवेन्द्र का।महा-धमसाण जहांहोय
चोथा पाप मैथुन सो।जगमें व्याप्या सोय ॥ १ ॥
प्रश्न व्याकरण सूत्र के।चोथे आश्रव द्वार ॥
वरणन इसका जिन किया।सो यहां करूं उचार
दुर्गुण पाप से नाम तस।मैथुन के प्रकार ॥
सद्बोध कथा युत यहां कथुं।चाचीतजो तजो विका

मैथुन से दुर्गुण-चोपाइ छंद

मनुष्य असुर आदि करे चहायै।‘पंच’कादव सें आरम भराय
पणफूलण सारगटाओ पटको।पासैं जालैं ज्यो बोधे अटके
तीन वेद चिन्ह से गटतेक।तैंप संस्रम ब्रह्मचर्य भेदित ॥

बहुत प्रमाद का मूल यह स्थानाकायर माने प्याराजो प्रान ॥
 सूझ जाहै नके त्याग ने योगासेवक भमा ॥ सदा त्रि लोगै ॥
 जैरा मौरण रोगै सोग का धरादध बधन विधि धातये कर ॥
 दंशणै अनिष्ट मोहका साधक । बहुत काल से यह बाधकै ॥
 मेरे आगे पापै साथ ही आयाम्थून ऐसे दुर्गुण पाय ॥ ७ ॥

मैथुन के नाम-चौपाई छंद.

अवभे-अनाचीर्ण मेहूण-मयनाचरतै 'व्यपित' संसर्गि मिलन
 सवण ही करी-अकार्य करायासंकल्पेसंकल्प विकल्पउपजाय
 बंधुणा पयाण-बाधाका उपायादण्डो-डर भोहो अज्ञानबढाय।
 मण सेखो भी क्षोभमन करो।अणिगै हो आत्म नहींठरे ॥९॥
 विग्य हो-विघ्न-विग्य'ओ करेधाताविफागो-किया धर्म नाशपात
 । विभर्भो-कैफ ता भरम उपजाया।'अचम्भो'महा अधर्मकराय ।
 असारैया दुशील इसे जान।गाम धम्मतरती अतृप्तिमान ॥
 रक्तानक्त होवेमतवाल रौंय चिता-महा चिंता की माल ॥
 काम भोग करा मौरण हागवैरैवै वृद्धि करतार ॥
 'रहस्यै गुप्त' यह चोरी कानाम।गुंझ लिपावे न लेवे नाम ॥
 बहुमाणै-बहुनही माने डने । वंभैवेर विग्यो ब्रम्हचर्य खसे ॥
 वांवेत्ति धर्म का वमन कराया।'विगहणा' डन से इराधकथाय
 'प्रसंगो पसंग अनिवडाय । 'काम' गुणानि-कंदर्प उपजाय ॥
 ये हेन तिमधुनक नाम कहे । प्रश्न व्य'कण तृप्त से लहे ॥

मैथुन से पाप और दुःख-मनहर छन्द

मैथुन तीन प्रकार । देव नर तीर्यन्धर ॥
 नर नारीका संयोग । मोहोदय भावे हे ॥
 योनी उत्पत्ति का स्थान । असंख्य असत्री मान ॥
 सत्री लक्ष नव जीव । भोग से नसावे हे ॥
 तामे दीर्घ आयु योग । निवर्त्त होने भोग ॥
 एक दीय तीन जीव । बचकर रहावे हे ॥
 रुहुन धोर तांड । योनी सजीवन रहा ॥
 ज्ञानी महा पाप जान । ब्रह्मचारी रहावे हे ॥
 विषय की आसा; सदा प्यासा न, निरासा होय ।
 उयों उयों बढ़ावे तासा । स्यों स्यों वृद्धि पावे हैं
 अग्नि उयों इवन नाखे । भक्षनि सो नहीं थाके ।
 तैसे विषय अभि लाखे । मृत्तिन आवे हे ॥
 भंग रंग भंग धाय । शक्ति रक्त हरे काय ॥
 नोऊ इच्छा पाय मन तन का समाये हे ॥
 येही आश्रय भारी । कामकी करारी पारी ॥
 भोग रोग आंग पारी जोंवांकों मनाये हे ॥
 काम अग्नि का नाथ ज्ञानार्जी कहा अमाय ॥
 उपजन मन तन । अनिही तयाये हे ॥
 हान में वादद् अरु । ममुद्र में जो गोना म्नाय

तोही न शीतल धाय संताप समावे है ॥
 प्रज्वलन आठो जाम । बुद्धि बल जाले काम ॥
 सत्व रूप हीन कर । कालास बढ़ावे है ॥
 जले हैं अनंत । जलरहे हैं अनंत जीव ॥
 विटंबना काम एसी । कामी को देखावे है ॥ १७॥
 सर्प ताल पुट थकी । विष है विषम नकी ॥
 अन्य जह स्पर्शी तन फिर प्रागमावे है ॥
 तस उतारन उपाय अनेक मिले जग मांय ॥
 नहीं उतरे तो एक भवमेंही मरावे है ॥
 विषय को विष समरण होत व्यापे अंग ॥
 मंत्र जंत्र औषधि न कोई उप समावे है ॥
 महा विपत्ति देखाड अनन्तानन्त बार मार ॥
 विषय के विष तुल्य विष नहीं पावे है ॥ १८ ॥
 वैरी मारे वैर कर गुप्त दगा डाव धर ॥ १
 ताही से छुटाने वेइ साहाय मिल जावे है ॥
 काम मारे हँस खेल । बनाइ छुबीली छेल ॥ १
 नाम के सज्जन ताही जन के फसावे है ॥
 कुन्दी पूरी करे अरु लव संपत्ति को हरे ।
 विन मोत मरे आगे कुगाँते रुलावे है ॥
 ऐसे वैरी संग मुढ जान कर गुप्त गुड ॥
 काम के समान अन्य वैरी नहीं पावे है ॥

क्या मोहरहा बरकी जो छवी नर दूर चमडा करक्यो नविचारे
 कामी कामीनी को चित्त पेखत आश्चर्य निकामी को बहु आवे
 कहे तूही है प्राण से प्यारे ताही को ते हलाहल खिलावे ॥
 एक को ध्यावे एक समजावे एक बुलाय एकको सार मोवा ॥
 केते भोगे भोगेगी केतेही यह विचित्रतापार को पावे ॥२३॥
 क्षणमें राजी क्षणमें नाराजी क्षण हांजी उदासीही क्षणमें ॥
 क्षणमें राज विरागही क्षणमें क्षणमें शुचि अशुचि छनमें ॥
 क्षण २ रंग अनंक घने यों घाकीन कोइ राखे इनमें ॥
 अतंग्य वेग वेवहें गेनेही कामी कामीनी के एक दिनमें ॥

मेधुन से खुवारी—खडका छंद.

अनंग प्रसंगमतिभंगजन की हुंवाशीच अशीचमेनाहों जावे ॥
 अस्थी मांस रक्त रक्षार स्थान में रुची मानी तल मन मोवे ॥
 अराक्ति हो भोग से रोंगपेदा होवे। सुजाक प्रमेह पथरी सोवे
 काम उदाग निताम यों बहु करे उभय भव मांही कामी हीगोंवे
 जाय नर के मरी यम कोपे भरी पोलाद की पुनलीगम करना
 शूलोंकी नेज मोवावे धर हेज नेग प्रहार उपर धरना ॥
 नन दजाय अगडाय चिहाय पज दया न लाय प्राणोंको हगना
 हिम्रय अघ मोजयों कहेश्वर चांज नव भर भर गे जय बार भरना
 अग्निज्वाला करी मांते उमे दे धरी अग्नि कर नर को चहाव
 कहां जाना है भाग कभोग अनुगन ये कर्त भयन उमरे दवां

मनुष्य भव मझारी सब निज इक
 काम बश नर नारी दासी दास
 अहो निश धावे धन कमावे निठावे
 एक एक की गुलामी कर हर्षत अपारी है
 नोकरों की वारी देवे मूत्र पाल
 ग्रह जान प्राण प्यारी । ऐसा गई मति हारी
 आश्रय आवे है भारी । देख के यह
 किने अकल गई मारी निज स्वभाव विसारी

मैथुन का प्रभाव—न्हद्र विजय छंद

शानी नर अज्ञानी बने अरु चातुर नर सो मुख होव
 शूरवीर का यरंघनरअरु उद्यमी आलसी कार्य
 शुद्धा चारी भूष्टेन अरु क्षमावन्त कोधे ब्रग जावे ॥
 यों मधुन नाश दुर्गुण प्रगटे काम बशे पतको जन
 दिता दिन को विचार रहे नहीं नीती अनीती को
 योग्या योग्य देखें नजर। भराकामी कुठामे जाइ तन
 मान सास पुत्री अग्नी अरु पुत बहु तरुणी को विगारे ॥
 कहा कहे काम उदामकी गंत बूटें जाइ इसे द्विपि विष था
 कामी कोकामनी वाक्वअमृत लगे पंगे हेनेहर प्राण
 कामी कामनी तन श्रृंगारत सोहे फन विद्रामंदारे ॥
 कामी कामनी मन सुख लागत पणसेहीआत दुधपार

क्या मोहरहा बरकी जो छवी नर दूर चमडा करक्यो नविचारे
 कामी कामीनी को चित्त पेखत आश्चर्य निकामी को बहु आवे
 कहे तूही है प्राण से प्यारे ताहि को ते हलाहल खिलावे ॥
 एक को ध्यावे एक समजावे एक बुलाय एकको सार मोवे॥
 केते भोगे भोगेगी केतेही यह विचित्रतापार को पावे॥२३॥
 क्षणमें राजी क्षणमे नाराजी क्षण हांसी उदासीही क्षणमे॥
 क्षणमें राज विरागही क्षणमें क्षणमें शुचि अशुचि छनमें॥
 क्षण २ रंग अनेक बने यों वाकीन कोइ राखे इनमें ॥
 असंख्य वेग वेवहैं ऐतेही कामी कामीनी के एक दिनमें ॥

मैथुन से खुवारी—खडका छंद.

अनेग प्रसंगमतिभंगजन की हुवा।शौच अशौचसोनाहीं जोवे॥
 अस्थी मांस रक्त रुधिर स्थान में।रुची मानी तत्त मन मोवे॥
 अशक्ति हो भोग से रोगपेदा होवे।सुजाकप्रमेह पथरी सोवे
 काम उदाम निनाम यों बहु करे।उभय भव मांहीकामी हीरोवे
 जाय नर के मरी यम कोपे भरी पोलाद कीपुतलीगरम करता
 शूलोंकी सेज सोवावे धर हेज तेग प्रहार ऊपर धरता ॥
 तन दजाय अरडाय चिल्लाय पण दया न लाय प्राणोंको हरता
 दिखअब मोजयों कहेधर चोज तब भर भर रोजयों पाप भरता
 अग्निज्वालाकरी मांहे उमे दे धरी अरिरकर भगने जो चहावे
 कहां जाताहै भाग करभोगअनुराग योंकही श्यम उन्कोदवावे

काष्ट ज्यों अंगजले मीन ज्यों तडफड़े प्रास कर्म से कहो कोलु
पल्य सागर के इवि सीर्यों बहू लइ कामी कामीनी दोनों दुःख
महा मैथुनी आगे नपुंसक होवे

एकेन्द्री विकलेन्द्रि असत्री थाइ ॥

हीं जडा खोजा रु बन्ध्या मृत बन्धा यों व्यभीचार निचि गति प
भगेन्द्र कुस्मांड आदि गुप्त रोग के योग से भवो भव पीडा
काम को जान दुःख खान मतिमान जो छिट काइ सो सुखी रह

कथा—सातवीं.

मैथुन पाप के फल बताने वाली—“काम कुमरकी”

दोहा—विषया शक्त बहुत जीवही । पाये बहुतही सास ॥
रावण पद्मोत्तर कीचकामणीरथ आदि विमांस ॥१॥
ब्रह्मा शिव गुरु चन्द्र इन्द्रा पाये विषय वश दुःख
अन्य सते बहूते कथन कहा २ कहूं मुख ॥ २ ॥
तो भी सद्बोध करन को काम कुमार चरित ॥
सुनि कथा सो वरणवूं । कामकी गति विंचित ॥३॥

ॐ चापा ॐ

मही मंडन मनोहर गाम । तहां अरिजय राजा गुण धाम
सोवन शाद रहे तहां शेठा धनी गुनी जमी जाकी पेठ ॥४॥

द्रव्य बहुत है घरके मांयापुत्र विनासो शुन्य लखाय ॥
 किये बहुत ही उसने उपायापुण्य विना नहीं लागादाव ॥
 ढलती वय यों आये जदा । धर्म कर्म में लागे तदा ॥
 धर्म से कर्म की टूटी अंतरायाशेठाणी के गर्भ रहाय ॥६॥
 हर्षित हुवे दम्पती अपार । परन्तु घटा धर्म से प्यार ॥
 यह पापी जीव के लक्षण जानापालेगर्भ उत्सवमंडान ॥७॥
 नव मास भये जन्मा बाल । काम देव सा रूप निहाल ॥
 काम कुमारतस नामज दिया।प्राण से अधिका पालन किया
 किंचित नहीं दुःखा ते मन । इच्छा सब करते पूरन ॥
 लाड में सो शीखा कुचालागात तात को देता गाल ॥९॥
 अंगो पांग कु बेष्टा करे । लंस्पटी चोके संग अनुसरे ॥
 जाने हम पुत्र पाता सुखादेखे नहीं आगे के दुःख ॥१०॥
 विया जोग वय बाकी भइ । पाठन शास्त्रा में जाता नहीं ॥
 मान तात जरा नहीं दयायादूसरे की कहीमानेही नाय ॥ ११॥
 लग्न किया टाटारंभ करी । थोटे दिन नारीपे प्रितिधरी ॥
 कुसंगत सेवन लग्न व्यभिचार । मनमें बनेपार कीनर ॥ १२॥
 पण घटाने पणघट नित्य जाय । कुंचाला रुडी नारीआय ॥
 कुचवनी तो मन लजाय । कुचउनीने देनीहुवाय ॥ १३॥
 दाहा-नाही आन मोहे रहे । रजपूत 'जेधा' नाम ॥

सुगीला नव भास नीलनाम गगन परिणाम ॥ १४॥

राज कृष्ण से उमर धरे । मरिचि मुख दाम ॥

सर्व दिन नहीं एकसे । जीव बन्ध कर्म पास॥१४॥

चोपाइ

जोधाजी चूके किसी काम मांयाराजा जागीरी जप्त कराय॥
 धन गये सुख गया उस संग। सुशीला पति भक्ति में रंग॥१६॥
 पडवे की लज्जा परि हरी। पण घट चली शिरपे घट धरी॥
 रूप अनोपम गज गति चाला। काम कुमर मोहे तत्काल॥१९॥
 कंकरी मारी उसको उसवारा। वो अतिही शरमी मन मझार॥
 दिन बोले जललेघर आइ। विती बात पतिको जताइ ॥१८॥
 सुन जोधा क्रोधातुर होय। खड्ग ले मारन चले तब सोय ॥
 सिया कर धर कहे समझाय। भूलन कीजे ऐसा अन्याय॥१९॥
 धनवंत को वो पुन देखाय। झगडा बढे मेरी इज्जत जाय॥
 सुन के ठाकुर मुरजा गया। क्रोध हृदय में उछलरया ॥२०॥
 ठकराणी कहे धैर्य धरो। ऐसी युक्ति कोई भी करो ॥
 इस रस्तेवो कभी नहीं जाय। अपने घर में दोलत आय ॥२१॥
 ठाकर कहे सो तूं बतार्ड। इज्जन रहे और धन मिलाई ॥
 ठकगणी कहे मेरी पत्नीत। आप को हो सो करूं मैं येरीत ॥२२॥
 उसको लावूं मैं यहा बुलाया। वंभी आवेगा भूषण सजाय ॥
 धन सब लेके गये घर मांया। कम बक्ती कर कहाडे उस तांया॥
 हर्षि ठाकर कहे शीघ्र यह करो। मेरा डर जरा मन मत धरो॥
 ठकगणी सब युक्ति मित्रायाये। घडा पणवट पर जाय ॥२४॥

केल! कुमर को बैठे देख । कहे ठकराणी हर्ष विशेष ॥
 तेरी क्या मारो कंकर मारामजाह चहो तो आवो मुझ द्वार ॥
 सुन कुमर हर्षित अति भया । रोम २ तब फूली गया ॥
 कहे ठाकर होवेंगे तुम घर । सा कहें गये नोकरों पर ॥ २६ ॥
 एक महीना सो घर नहीं आय । आप पधारो कृपा लाय ॥
 आज शाम को देखूंगा रायाइतनी कहे ठकराणी जाय ॥ २८ ॥
 काम कुमर मन अति उमंग । सजा श्रृंगार अनोखे ढंग ॥
 घड़ी एक वर्ष समी तत्त जाया सन्ध्या होवन की देखे राय ॥ २८ ॥
 श्याम होते चले हुवे नोकर संग । ललकार कहे होके बेरंग ॥
 कोइ मत आवो हमारे लारा । कोप देख बैठे चुप धार ॥ २९ ॥
 ठाकर गये जब घर के वार । काम कुमर 'आ' ठोके द्वार ॥
 सत्कार ठकराणी लै घर मांच । तत्क्षण दीये द्वार लगाय ॥
 कुमरजी बैठे पलंगपर जाय । ठाकर उभे घर वार आय ॥
 हाक मार कहे खोल कमाड । कुवरजी के कम्पन लगे हाड ॥ ३१ ॥
 पूछे कुवर कोन अये यह । ठकराणी कहे ठाकर छह ॥
 अर्चित कैसे । न । अब हरेंगे दोनो के प्राण ॥ ६२ ॥
 सुन कुमर उ० उन्माद । अतिही पाये मन विषमद ॥
 इज्जन और मरगकाडगपसीने से अंग गया सचभरा ॥ ३३ ॥
 कर जोड़ी कहे मुझे छिपाय । मानु उपकार मरणसंघचाय ॥
 मेरे नानके मे एकही पुता । मेरे मेरे हुवे घर मृत ॥ ३४ ॥
 छिपने की यहां जागा नहीं । भिजार्जा ठाकर भोगान नहीं ॥

ठाकरकरे उतावल घणी। 'कामके' अंग छूटी धुजणी॥३५॥
 पाव में पड कहे मुझे बचायासा कहे शीघ्र कर एक उपाय॥
 दासीके बख यहले पर । पीसो धान घट्टी को फेर ॥ ३६ ॥
 चेटी जान नहीं मारेंगे मारानाँद आये भगजाना बाहारा॥
 'कामकुमर' तत्क्षण उसवारा। बख भूपण सत्र दिये ऊतार ॥
 फटी घाघरी ओडणी ओड । चक्की फेरण लगे डर छोड ॥
 खोले पट ठाकर अन्दराआया। ठकराणी को बहुतधमकाया॥
 सन्ध्या से चक्की फेरन काजाक्यों बैठाइ इसको आज ॥
 नमी कहे आप आगमजान । रसवती करण निपावे धान ॥
 दंपती बैठे सेजपेजाय । कामको चक्की फेरत नहीं आय ६
 क्षण २ में विश्रान्ति लहे। ठाकर कोष कर गालतस दहे॥३७॥
 दंड को शिर में कियो प्रहार। मुंडित शिर जाना उसवार।
 पूछे भद्र क्यों तेने किया। कोनसा तेरा पति मर गया॥३८॥
 हंसी २ में दे दंडे की मारा। शिरपीठ उर कर स्थान मझा
 जब अटके तब दंडा लगाया। निशी के तीन पहर ऐसे धीताय
 मारसे काम पडे मुच्छाय । तब ठकराणी यों चेताय ॥
 घर में मरनेसे होय फर्जाती। इस लिये करो ऐसी रीती॥३९॥
 पोट बांध रख आवो बझार मांया। प्राते ले जायंगे सज्जन आ
 ठाकर ने तैसाही तब किया। पोटबांध चोहटे रख दिया॥४०॥
 प्रात लोक बहुत भेले होय । गठडी छोड कर देखे सोय ॥
 काम कुमर देख आश्चर्य भयो। सोवन साह से जाकर कये॥४१॥

सोवन शाह शरमाय घबराया लाये कुवर को घर उठाये ॥
 तीव्रा भिलापकुंवर तनमांदागर्भी का रोग प्रगट्ठाय ॥४५॥
 औषधोपचार सब व्यर्थ गये । शरीर तडाजा युष्य अंत लाये ॥
 मर कर उपजे नरक मझारारज चित्तमणी गये सो हार ॥४६॥

दोहा-इत इत द्रष्टान्त से देखियो मैथुन दुःख कार ॥
 विति दे दोनों भवे । तजो सुख इच्छुनार ॥ ४७ ॥





मंजल चौथा—'मैथुन पापोद्धार'

उत्तर विभाग—“ब्रह्मचर्य”

देहा—सर्वत्र शिर महरो। ब्रह्म चर्य ब्रत जान

ब्रह्म रूप ब्रह्म चर्य हो। कहत श्री भगवान । १ ॥

प्रश्रव्याकरण मृगके । चतुर्थ आश्रय द्वार ॥

ब्रह्मचर्य के गुण कथे । मो यही करु उचारा ॥ २ ॥

ब्रह्म चर्य के नाम—चोपडछंद

‘ब्रह्मचर्य’ ब्रह्म पद आचरण करे । ‘उत्तम’ सर्व ब्रतों में शिर ॥

नियम ईशान दर्शने आरि समाप्त कर्ष्य विनय का मूल द्वार ॥ ३ ॥

नियमादि गृहों में प्रधान । हेमन वसन में तुंभो मान ॥

‘विनय’ प्रसन्न अरु गर्भीय विमिर्ष निश्चल धार धार ॥ ४ ॥

मंद-श्रवण, श्रद्धा, श्रद्धा, श्रद्धा । मोचु जन आचरि विमल ॥

मंद-श्रवण — यही मोक्षकारण । विष्णु-गुण आदर निर्मल ॥

मिद गुरु निश्चल-नेत्र का ध्यान । मोक्षयोग्य अर्थ अर्थिदमान

'पूर्ण' भव-पुनर्भव नहीं करो। पैसत्य सदाभला जेआदरे ॥
 सोम-दीतल 'सुहं' सुन्दरौन । सिव उपद्रवका नाशकजान ॥
 मल-अचल अक्षर्य ही करो। जेईवर-साररकी यतिहीआदरे ॥
 सुंवरिय-यह उत्तम आवरण । सुंताहिय-सुबोधक जन ॥
 सुनिवर नहापूतप सुंवरौ धनवंत । धर्यवंत एना आवरंत ॥
 रीतिविशुद्ध-सदानिर्मल। भद्र कल्याणकर, सुंवसे सबल ॥
 नसंकर्य नही शरम स्थान । निर्भय-निर्भय कारक मान ॥
 नितुल-कवरा सेह रहित । निरसय-वेदरहित करवित्त ॥
 निर्वेलेव-शाय लेप नलगे । निर्वुद्ध-परमशान्ति जगे ॥ १० ॥
 नियम निकंप द्रष्टा रहे । तैप सैयम का मूल जित कहे ॥
 रंजनहावैत की रक्षाकर । सैमिति गुंती ध्यान कवाड परे ॥
 मुक्त, रंजन सुदृढ रक्षक । आश्रय को हे यह भक्षक ॥
 सनाह वैव जो लज्जा सुग्रे । हुंरानि पंथ तज सुंगती रेखे ॥
 ओष्ठुचम सर्व लोक में श्रेष्ठ । पद्मैतरोवर प लज्जेष्ट ॥
 महारथ के और समान । महावैद की शाखा खन्द मान ॥
 महा नगर के द्वार भोगउत्तम । महा इन्द्र दृजा धरेडोरी खनो
 ए आदि सु बहवर्य नामार्थी जिन स्वयं मुख किये गुणग्राम ॥

शालकी ओपमा—इन्द्र विजय छंद.

"देवमं भगवंत " कहे जिन ब्रह्मचारी भगवंत ममाना ॥
 ज्यो जाती पी यो गण में इन्द्र वंदा, आगम गंगागंगमान ॥

अंगोपांग निरखे न लगारा।जिससे जागे काम विकार ॥
 जोनिरखे तोशील नाशहीपायाज्यों कच्ची आखसूर्यदेखाय ॥
 बैठेनहीं स्त्री केआसनपर । जो मन विषय युक्त दे कर ॥
 जो बैठे तो शील नाशहीपायाजों कणिक कोला रहेएकठाय॥
 भीतादि अंतर भोग सेवायानरहे करण शब्द जहांआय ॥
 जो रहे तोशीलनाशहीपाय । घन गरजे जों मोर हर्षाय ॥
 पूर्व कृत क्रीडा न करेयाद । जिससे मन पावे विषवाद ॥
 जो करे तो शील नाशही पायाज्यों शनी 'पाती'सङ्करखाय ॥
 दाव चांप के अहार नैहीं करे।प्रमाद विषय अंग संचरे ॥
 जो करेतो शील नाशहीपायाज्यादाखीचडीसेहंडीफटजाय ॥
 न्हानाधोना न करे शिणगार । देखें उपजे मोह विकार ॥
 जो करे तोशील नाश हीपाया।गिंवारके पास रत्न नरहाय ॥
 शब्द रूप गंध रस स्पर्श पांचाउसपर न जावे मन से राच ॥
 दशमा कोट ब्रह्मव्रत तना।ऐसे रहता बश में मना॥२९॥
 रमता शील सुधा मेंसदा मन।विष किंचित नही व्यापेवदन
 सोही ब्रह्म चारीधन धनाआप समा भाखे भगवन् ॥ ३० ॥

ब्रह्मचर्य की महीमा-मनहर छंद

जिनने ब्रह्म व्रत धारा,उनने सर्व व्रत धारा ॥
 आत्म काज सारा,रु सुधारा नर पन को ॥
 पाप पंज वारा । मोह ममत्व कों टारा॥

काम शत्रु जासे द्वारा रु निघारा सो अधन को
भर नन जारा कितने मन को हकारा ।
मुद गत्य ही निघार, रु निघारा काम रन को ।
नि रत को उगारा । आरम मुनकों संभारा ।
अमान्त नमस्कारा रहस लार्हीके पवन को ॥३१॥
ता रे जग अद्वयगिरांगोही शुद्ध है आचारि ।
ज्ञान ज्ञान मन धारिगर्भी मगता ओ मारी है
नन नान को संभारि । नारी जानी विप क्यारी
नका भर्त्ता भि टारि । न विचारि ननिहारि है
न नद्वय न लगारि । अगंठ नक मारि ।
नन नून नुछ अद्वयानही मन को शिखमारि है
नन नाना क विचारि । एक मुन की इच्छारि
नन नमस्कारा लार्हीको वां वा इहारि है ॥ ३२ ॥
नन नन नन नन । मन जितने मगत्य धारि
नन नन नन नन । नही दिनमुख को है ॥
नन नन नन नन । अद्वय भरा है भंगार ।
नन नन नन नन । निन कान मुख को है ॥
नन नन नन नन । अद्वय मुख पद भंगार ।
नन नन नन नन । अद्वय नन नन नन है ॥
नन नन नन नन । अद्वय नन नन नन ।
नन नन नन नन । अद्वय नन नन नन है ॥

ब्रह्मचर्य का प्रभाव—इन्द्र विजय छन्द

ल प्रभाव दरे तो दुभाव मड़ा विष फिटी सुवाप्रगन वे
 गरी तो कुरंग बने रुमानेग अजाँ विष धर रँजु थावं॥
 तोपुष्य माल बने । अग्नि ज्वाला बने चारी निधी तावे
 जन सजन रंजन शील को है अमोल प्रभावे ॥ ३४॥
 रनमें जनमें धनमें अनमें मनमें जो सदा तुलदाइ
 दगमें अगमें लगमें रगमें भगमें नहीं पीडा कराइ ॥
 जे लाजे ताजे त्राजे पाजे जो सहायक थाइ ॥
 लील अपील अडील है धार अमोल तो सिद्धतिधा
 नरेन्द्र नमें दानव मानव जल सेव करे है ॥
 नरेन्द्र सदा गुण गावे पिशूनकिमून हुआसे डरे है
 से रोग हरे । केइ बाणी सुझानी चित्त धरे है॥
 हीना अपार सूतार हो धार अमोल भवौय तरे है

कथा—आठवी

फल बताने वाली—“सुदर्शन शेटकी”

वहीमां गील की । कहाँ लो वरणी जाय ॥
 वि मुक्ति गयेनां नव गील पनाय ॥ १ ॥
 रगन ४ हाथी ५ बकरी सपे ६ डोरी

मछी नेमी नाथजी वाल ब्रह्म चर्य धार ॥
 और अनंत ही संत सती। कहाँ लो कहं उचार ॥ २ ॥
 तोभी शील ठसावने। योग शास्त्र अनुसार ॥
 श्रेष्ठ सुदर्शन की कथुं। कथा रसिक मनोहार ॥ ३ ॥

चोपाइ

अंग देश चम्पा पुरी जाना। दधी वाहन राजा गुण खान ॥
 अभया राणी रूप अपारा। कला कौशल्यता में होशी। धार ॥
 तहा वसे वृषभदास साहू कारा। अर्हदासी नारी गुणधार ॥
 दम्पति जैन धर्म में लीन। सुसार्थ जाने प्रवीन ॥ ५ ॥
 सुभग नामें तस गोवाल एकागौ भैसी को चरावे हमेश ॥
 शाम को पशु ले घरकों आया। घनमें ध्यानी देखे मुनिराय ॥
 प्राते गयो पशु लेकर तहा। मुनिवर देखे ऊमे ही वहां ॥
 चिन्ते अत्यन्त शीत के माया। सर्व निशी खड़े रहें मुनिराय ॥
 तय मुनि नमो अरिहंताणं उचार। उडगेयशी। घगगनमसार ॥
 गोर गगन गामिनी विद्या जाण। नमो अरिहंताणं नित करे गान ॥
 मुनकर पूछे श्रेष्ठ वृषभदास। कहाँ तेने यह किया अभ्यास ॥
 गोपदीनी सब यात प्रकाश। जाणी भव्य श्रेष्ठ पाये हुलास ॥
 कहे गगन गामिनी एकही गुण। इसमें तूं मत जाण निपुण ॥
 इसमें है सर्व गुण का संचा। उसको शिखाये तय पद ॥
 हरवक्त करे सो उसका जापा। एकदा नदी में जल अमाप

देत उलंघन कूदा जप नवकाराकीला एकपेठा उदरमहार
 नर कर अरह दासी उर नांवापुत्र पने गोप जपना आयी॥
 धर्म पुण्य वृद्धि डोहला लिया। हर्षि श्रेष्ठ सब पूर्ण किया॥१२॥
 तब नव नांति जन्मा कुंवार। पुण्यात्न अंग रूप अपार ॥
 उ त्तवे सुदर्शन नामधपायायोग्य वय पडे कला ताया॥१३॥
 धर्म ज्ञान में निपुण ही न्यामनोरमा विदुषी तैं लग्न किये
 धर्म अर्थ काम तीनों तावेंत। सुते २ यों काल विरंता॥१४॥
 दोहा—इतही पुर नांही रहे । कपिल राज पुरोहित ॥
 श्रेष्ठ सुदर्शन का भयाविमल धर्मि निता॥ १५ ॥
 धर्म करणी नित्य करे । जाके सुदर्शन धाम ॥
 एकदा पूछे नारी तलाक्या करो तुम काम ॥ १६ ॥
 उत्तने सब वरणन् किये । श्रेष्ठ सुदर्शन के गुन ॥
 पुरोहीताणी मोहित हुई । जानी श्रेष्ठ निपुण ॥ १७ ॥

चोपाई.

एकदा पुरोहित परगामजायाइच्छाताधन नारीअवतरपाय।
 एकांत आइ 'सुदर्शन' पातानरनी नशूनी करेअरदास ॥१८॥
 आप मित्र पुरोहित हुवेबीसाराआपको बोलायेसुन्दरनवकार
 'सुदर्शन'माज देने के काम। नरदण आये कपिलके धाम॥१९॥
 सुनेकोनडी में योंकही लेआयागीत धरके दिवेद्वार लगाय ॥
 पुत अंग दिखा के अरदान प्रवेशन पुरो नेगी आत॥२०॥

शील रक्षण सुदर्शन कही॥ मैं नपुंसकु कछ कामका नहीं॥
 कपिलाशरभी दियेवाहिर निकाला 'सुदर्शन' घर आये तत्काल ॥
 अभिग्रह लिया आज पीछे किस घरा अकेला नहीं जाना अन्दर ॥
 कपिल आया न करी कुछ बात। धर्म ध्यान करे सुख से रहात ॥
 दोहा—कोइक मोत्सव देखने। कपिला अभया दोय ॥
 गोखे बैठी एकदा। शैठपूत्र पट जोय ॥ २३ ॥
 माता संग रथ बैठके। जाते उत्सव मझार ॥
 विप्राणी पूछे राणीसे। यह है किसकी नार ॥
 राणी कहे 'सुदर्शन की। तब हंस कर कहे सोय ॥
 नपुंशक नर नारी के। पट पुत्र कैसे होय ॥ २४ ॥

चोपाइ.

राणी कहे नपुंशक कैसे जाने। कपिला वीता कहा वयाने ।
 ठगी तेरे को तब राणी कहे। धर्मी पर नारपे नपुंशक रहे ॥
 चिडाइ कपिला कहे तुम कलावंत। एक वक्त करो सुदर्शन कंत ॥
 राणी कहे कुछ बड़ी नहीं घाता जो करुं तो सची मुझ जात ॥
 वक्त हुये दुनों निज स्थाने गइर। नीधाय को वीती कही ।
 धाय कहे किया तुम खोटा विचार। धर्मी कभी न करे तुम से प्यार।
 राणी कहे एक वक्त मूझ पासा लावे तो सब पूरुं आस ॥
 धाय कला एक करी विचार। शिवका में एक मूर्ति बेसार ॥
 ले चाली राणी मेहल मांशद्वार पाल तस दी अटकाय ॥

फोड़ी मूर्ती धाय तब कहे।राणीजी मौन वृत्त, एक गहे॥३०॥
 मौने लाइ मूर्ती पुजा करे । तो ते अहारपाणी आचरे ॥
 तेने किया राणीका वृत्तभंगानृप से कहे मारावुंकुडंग॥३१॥
 सुनके पोलिया अतिडर पावाकहे अवएसा न कहं मांय ॥
 यों सातो द्वार पाल डराय । इतने में पक्षी पर्व आय॥३२॥
 शैठ सुदर्शन पोसाकिया।निशी चार प्रहर ध्यान धररिया॥
 धाय आय पोषधज्ञालमांय।शैठ कों उठा पालखी में ठाय ॥
 ढंकी पालखी लाइ राणीपासा।कहे अब पुरोतुमारी भास॥
 अभया देख अतिही हर्षाय।कामातुर मिष्ट वचन बोलाय॥
 गुप्त अंग शैठ अंग को लगाया।गाढालिंगन दे ललचाय॥
 शैठका मन नहीं चला लगार।कर कला अभया गइहार॥
 कोपातुर कहे अरे गोवार । सुखइच्छेतोकरमुझअंगीकार ॥
 नहीं तो अभी न्हखावूंमारा।तोभी शैठ चले नहीं लगार॥
 पुक्त अभिग्रह धारा मना।ध्यान पाहं जब टल विघन ॥
 अभया लबूरा हाथे शरीरा।फाडा कंचुक लेंगाचीर ॥३१॥
 दोड़ो २ रायजी करी पूकार।पकड़ो दुष्ट करे अनाचार ॥
 सुनी नरेश्वर दोड़के आया।देख 'सुदर्शन' आश्चर्यपाय॥ ३८॥
 रोती राणी कहे करे शीलभंग।फटे वस्त्र रु वतायाअंग ॥
 कोपातुर नृप कहे रे धर्म ठगा।जान धर्म गुरु लजाये जगा
 कहे भट सेंदो शुलीचडाय । ले जावानगर में फिराय ॥
 भट उठ लाये शैठ को बारा।शाम मुख किया 'खर'स्वार॥

शील रक्षण सुदर्शन कही। मैं नपुंसककुलकामका नहीं॥
 कपिलाशरभी, विवेवाहिरनिकाला 'सुदर्शन' घर आये तत्काल ।
 अभिग्रह लिया आज पीछे किस घर। अकेला नहीं जाना अन्दर।
 कपिल आया न करी कुछ बात। धर्म ध्यान करे सुख से रहात ।
 दोहा—कोइक मोरमय देखने । कपिला अभया दौय ॥
 गोखे घेटी एकदा । शठपूत्र पट जोय ॥ २३ ॥
 माना संग रथ घेठके । जाते उत्सव मझार ॥
 विप्राणीपृष्ठे राणीसे । यह है किसकी नार ॥
 राणी कहे 'सुदर्शन की । तय हंस कर कहे सोय ॥
 नपुंशक नर नार्गिके। पट पुत्र कैसे होय ॥ २४ ॥

चोपाइ.

राणी कहे नपुंशक कैसे जाने। कपिला बीता कहा ययाने ।
 ठगी तेरे को तय राणी कहे । धर्म पर नारय नपुंशक रहे ॥
 बिडाइ कपिला कहे तुम कलार्थ। एकवक्त करे सुदर्शन केत ॥
 राणी कहे कुछ घड़ी नहीं थाना। जो करे तो सही मुझ जात ॥
 वक्त हुये दोनों निज स्थाने गडार। राणी धाय को बीनी कही ।
 शाय कहे किया तुम चोटा विचार। धर्म कर्म न करे तुम मे प्यार ।
 राणी कहे एक वक्त मृज पामालावे तो भय पुनः आम ॥
 घाय कला एक करी विचार। शिवका में एक मूर्ति येमार ॥
 ले चाली राणी मेहलमां । द्वार पाल नम दी अटकाय ॥

फोडी मूर्ती धाय तब कहे।राणीजी मौन वृत्त, एक गहे॥३०॥
 मौने लाइ मूर्ती पुजा करे । तो ते अहारपाणी आचरे ॥
 तेने किया राणीका वृत्तभंगानृप ते कहे मारावुंकुडंग॥३१॥
 सुनके पोलिया अतिडर पाव।कहे अबएला न कहं मांय ॥
 यों सातो डार पाल डराय।इतने में पक्षी पर्व आय॥३२॥
 शेट सुदर्शन पोसाकिया।निशी चार प्रहर ध्यान धररिया॥
 धाय लाय पोषधशालमांया।शेट कों उठा पालखी में ठाय ॥
 ढंकी पालखी लाइ राणीपासा।कहे अब पुरोतुमारी सास॥
 अभया देख अतिहो हर्षाय.कानातुर मिष्ट वचन बोलाय॥
 गुप्त अंग शेट अंग को लगायागाडालिंगन दे ललचाय,॥
 शेटका मन नहीं चला लगार।क कला अभया गइहार॥
 कोपातुर कहे अरे गोंवार।सुखइच्छेनेकरमुझअंगीकार ॥
 नहीं तो अभी नहजावुंनार।तोनी शेट चले नहीं लमार॥
 पुक्त अग्निग्रह धारा मनाध्यान पारुं जब दल विघन ॥
 अभया लइरा हाये शरीराकाडा कंचुक लगावीर ॥३३॥
 दोडो २ रायजी करी पूकार।रकडो दुष्ट करे अनाचार ॥
 सुनी नरेश्वर दोडके आवादेख।सुदर्शन आश्चर्यपाय॥ ३४॥
 रोती राणी कहे करे शीलभंगाछटे वध रु वतायाअंग ॥
 केपातुर नूर कहे रे धर्म ठगाजान धर्म गुरु लजाये जगा
 कहे भट मेरो शुक्लीचडाय । ले जाबानगर में किगाय ॥
 भट उठ लाये शेट को बागजान मुक्त किया नरनर

आगे बजाते फूझ डोलाहाहाकार पुरमे हुवा ये तोल ॥
 शेट पर सन्मुख आये सहामनेरमा देख दुःख पाइयहु ॥
 अभिग्रह धाग मन मझार । संकट टले तो लेनाआहार ॥
 एकांत बैठा ध्यान लगाय । पंचप्रमेठी मनमें ध्याय ॥ ४२ ॥
 दोहा—मय आये शूलै कने।देतेशुली चडाय ॥
 'मुदर्शन' चिन चिनये। धर्महीलणा धाय ॥ ४३ ॥
 जीवन में इच्छा नहीं। धर्म उजाळण फाम ॥
 महाय करी मामण पति। जेप परमेठी नाम ॥ ४४ ॥

चोपाइ

शास्त्रण इष्ट देव महायनाकर्ग। शूलै स्थान सिंहासन धरि
 शेट पे छतर चामर दुलायाजय २ कार गगन में धाय ४५
 मयजन अनिपाये चमत्कार। गजा दोट आ घरे चरणार ॥
 अमया मेहल मे पटके मरी। शील पमाय यितमय टरी ॥
 पाँदथ के फाले पञ्चानन। वस्तु न किया कुट्ट वयान ॥
 नृपती उनकी मजा शिखमार । गज होदे करके अम्बार ४७
 किगट पुरमें दिखैधर पटोचाया। मनोरमा ध्यानसे मुक्त धाय।
 दम्पती जान धर्म उज्जागत। अंग बीना मंगन भार ॥ ४८ ॥
 दोहा—बायु भरी। जीव मेथ कोशटली पुर मांजाय ॥
 देवदत्ता मणिदा घरे । कर जोरुमी रहाय ॥ ४९ ॥
 दम्पती करी शेट बी। गरी का गड मोहाय ॥

जो ऐसा नर भोगवुं।तोही सफल मुझकाय ॥५०॥

चोपाइ

मुनिवर आये करन विहार।दासी ओलख दी उसवार ॥
अहार मिस्र घरमें लेजाय । कदार्थ ना कर मुनिको सताय ॥
मुनिवर नहीं चले लगाराधका देकर कहाडे वार ॥
मुनिवर समतारसमें लीनागाम बाहिर आ ध्यान धरदीन ॥
दोहा—अभया मर हूइ व्यंतरी।सा आइ मुनि पास॥

अनुकुल प्रतिकूल अति । दीनी मुनि कों लास ॥
शीत ताप छेद भेदके । परिसह अतिउपजाय ॥
अचल मुनिश्वर ध्यान मोमेरुगिरीज्यौरहाय॥५४॥

चोपाइ

मुनिवर चिते मन मझार । अजरामर आत्म निर्विकार ॥
विनाशिक तनका होवे नाश।इस से मुझे कुल नही त्रास ॥
ऐसा ध्याया शुक्ल ध्यानाकर्म खापा पाये केवल ज्ञान ॥
उपसर्ग सर्वहूवा निवार। जन पद देशमें किया विहार ॥
धर्म उपगार बहुतही करी । अन्ते अजरामर पद चरी ॥
ब्रह्मव्रतसे ब्रह्म ही भये। ब्रह्मव्रत के गुन ये कहे ॥ ५७ ॥
दोहा—धन २ मुनि-सुदर्शनायथा नाम तथा गुन ॥

अभिज्ञाल न पीगले । राखा शील निपुन ॥ ५८ ॥

धर्म कुल उज्ज्वलके । पाये सुख अपार ॥

अहो सुखेच्छु सज्जनो।यो पालो ब्रह्मचार ॥ ५९ ॥

शेठ मुदर्शन की तरह।थोड़े ही काल मझार ॥

सर्व दुःख से मुक्त हो । पायो मे सुख सार ॥

ए परारम सुख परनामैथुन पापोद्धार ॥

ऋषि अमोलक ने रचा।यह चौथा अधिकार ॥ ६१ ॥

परमपू ज्य श्री कहानजी ऋषिजामहाराज के संप्रदाय के बाल

ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी रचिन अपोद्धार कथा

गार का मेथुन पापोद्धार नाम चौथा मंजल समाप्तम् ॥

दोहा—भहो गहा मुदर्शन लई, निर्विकार त्रिष नाम ॥

कोरो गांगे कुजर है. मर्मा उगंकी नाम ॥ १ ॥

मुनिश्री नार्गबद्रजी.





मंजिल पांचवा—“परिग्रह पापोद्धार”

पूर्व विभाग “परिग्रह”

परिग्रह का अर्थ—रोहा छन्द

निच छुन खानादि दजीनर परिगती करे ग्रहेण ॥
 सोही परिग्रह निन कहोनाच पंचन जगसेन ॥
 प्रस व्याकरण छुन के । पंचन आश्रव द्वार ॥
 नान अर्थ छुन जो कयोसो यहा करे उच्चार ॥

परिग्रह के नाव—चोपाइछन्द

परिग्रहो नर के ग्रहणकिया विषेदवे संवेदो, संविदा ॥
 उवर्चयो विशेष बुद्धिनाथ । निहाननिवान छुन जगेहाथ ॥
 संतानि भार करक यह । संकरी-लज्जही सा देह ॥
 जयपरी-अहुन मनुष्य मिले । पिडीं पीडा काक ठिले ॥
 उवर्चयो जय के नर मिले । सहिंछा-ललच वं इने ॥
 परिग्रहो अनिवंद छान । लोहणी-अन अल्ल प्रमाण ॥

मैंहांदि'-महा विप्ति दातार । उँवकरण'-उपकरण उपाधि धार ॥
 'संरक्ष'गैया'- रक्षा करनी पडे।भैरा-भार वाहक जन खरे ॥ ६
 संपासूपुर्णायरका-करे उपाय । 'कौलिक' करडो'ल्लेशकराय ॥
 'पविरैयरे'-करेदुःख विस्तार।'अणरैयो' संतवा'-अनर्थ परिचार
 अगुंति-तनीं अगुतिस्थान।अय्यासो खेद करे असमान ॥
 'अविउँगो'-मुशकलमेत्यागाया।'अमूँता'-मूक्तिजाते अटकाय
 तण्हो-तृष्णा, अँणस्थको-अनर्थ । 'अरैथा' धनर्थकरे सैमर्थ ॥
 अँसंते;पा-संतोष नशाय।यह तीसनाम परिग्रहकेकहाय ॥९॥

परिग्रह के प्रकार—चोपाइ छंद-

बाह्य परिग्रह नव प्रकार । खेत घेर रूपो सुवर्ण दीनार ॥
 धान मनुष्य पशु धातू सर्वा।इसकी ममत से आवत गर्व॥
 अभ्यन्तरपरिग्रह चउदे प्रकार।मिथ्यत्व विवेद हांस पट धार
 चार कषाय मिल चउदह भेद।भवोभव देताजीव को खेद॥
 मृच्छा परिग्रह कहा वितराग मिरा २ कर धरे अनुराग ॥
 यह मेरो घर हवेली हाटा।चाग माला बाडी खेत बाट ॥१२॥
 कडा सोडा बींटी घेडी हारापैसा रूपा महोर गहूं जवार ॥

मिथ्यत्व २ स्त्री ३ पुरुष ४ नपुंसक ५ हांस ६ रति ७ अरति
 भय ८ शोक ९ दुःख १० क्रोध ११ मान १२ माया
 लोभ यह १४ अभ्यन्तर परिग्रह.

मेरे सा वाप भाइ देन नार । कका वावा नामा मोलार ॥
 गाय भैल गज गाजी रथ । लोता मैना गाडी लय ॥
 याल कचोला हुंम कच्छाभान नगर देश मेरे वश ॥१४॥
 मेरे लव मे लवका मुक्त्यारामेही गुरुक रहे मेरे आधार ॥
 मेरी वक्त पे आवेंगे काम । लंचू पोटू पालुं देहुं आराम ॥
 इत दिव रहा जीव नृच्छायानिज शुद्ध मूला मोह वत्ताय
 लव जगमें हाथ धन की लगी । भाग्य प्रमाणे पावे जगी ॥

परिग्रहका फंड—मनहर छंद

धनकी अलव माया । लारे जगमें फैलाया ।
 कोउ बाकी नहीं रहायलवही फलाया है ॥
 चक्री हरी हल धर । राय मंत्री दलधर ॥
 शेट सैनाधी चाकर । विप्र शुद्ध धाया है ॥
 ठकुराणी रानी सेठणी । ब्राह्मणी न सेठराणी ।
 तुरकाणी गणिकाणी । अधिक मुगायां है ॥
 दावा जोगी न फकीर । लव हैं धनके हकीर ।
 देह रे अमोल धन कौन छिट काया है ॥ १७ ॥
 इन्द्रज को नहीं छोड़े । देवन के तंग मोड़े ।
 भूनादि हुनके दोड़े । धनही की आम्ने ।
 लोभ दोलाये आवे । आम्ने नक्कार आवे ।
 लामने हुकम उठवे । धनही की आम्ने ॥

शेठजी तनका बढावे । मुनीम हाजररहावे ।
 गुमस्ते करे दे काम । देख धन रासते ॥
 धडों की है एसी दशा । गरीबों का कहूं कैसा ॥
 कहो अमोलकौन छूटे धनही की फासते ॥ १८ ॥
 धाजस्त हैं महाराया । यती महात्मा कहलाया ।
 द्रव्य देखकेललचाया । मांग मान को गमायाहै ॥
 याजे धायाजी वैरागी । सन्यासी ह फकीर त्यागी ।
 लव धन ही की लागी । लोक मुठ चीरा ठेराया है ॥
 भाग्य जोग धने पूज्य । कर्म जोग रहे धूज ।
 दोनो पंथसे अलग । बीचमें डुबाया है ॥
 माया की माया अवलोय । अमोल अचंभ होय ॥
 शाधासरे धन तोर्यू । त्यागीही ठगाया है ॥ १९ ॥
 मात तात नारी छोड । बंधू मित्र प्रेम तोड ।
 ग्राम पहाड बन दोड । धन को कमावने ॥
 कम लूखा सुखा खाय । तुच्छ वस्त्र तन ठाय ।
 कोडी का हीसाव करे । खरच को घटावने ॥
 संची कोडी २ जोडे । मरते न नाणा तोडे ।
 दाटे ऊंडा धरती में । चोर से बचावने ॥
 तन सज्जन सतावे । पुण्य में सो क्या लगावे ।
 कृपण कहावे जाने । धन संग लेजाव ने ॥ २० ॥

महाजन बाजे महा यम जैसे करे काजे ।
 गुरु जात से न लाजे । निवाजे बेपारी है ॥
 बने कूँजडे कलाल । रेवारी अरु चंडाल ।
 कंद मूल बेचे ठेका ले दारु निहारी है ॥
 सोवन खत को संचाय । बकरांकी बागण मंगाय ॥
 ऐसे पाप से कमाय । धन बने साहूकारी है ॥
 हाहा धनरे बलाय । लगाइ धर्मी घर लाय ।
 तो अन्यका कहा कहाय । सब मति गड़ हारी है ॥

परिग्रहसे दुःख—इन्द्रविजय छंदः

धन से दुःख अपार संसार में। तो भी बेबिचार नृप कर माने
 आवत दुःख न जावत व्याधे। रक्षण दुःख प्रत्यक्ष प्रमाने ॥
 राजा पंचको दंड धनी भोजनही नोजन बख को ताने ॥
 अपमान हान ही होत धनी को। सब दुःख धनसे आने आने ॥
 सेवा काने की बृद्ध सूर अहभोगके कारण नमगी नरने ॥
 कामल देह सूर सुख कारण । ताह क्षुधा तृषा कर करने ॥
 शीत ताप सह भैं उजाड पहाडमें। कुर्या कुर्य धन आरुपे
 गाल ताल सह हन्माल बने। यों दुःख से कमावन हयें २३
 पेटी तिजोरी कोटार बखार । के पट कमाड मजदूर लगाय ॥
 ताला नाला नाकल डाला । पहरा वाला भुग्न न्याये ॥
 धनपर मोबे दीपक जोये। जले सब न न मरी नाद आय ॥
 खडके भडके उटके धूनाये। मार्ग सुलेकी बने न देना २४ ॥

लेवे तो दुःख देने का है । देवे तो लेने का ही लागे ॥
 तेजी मंदी दोनों दुःख दायक । समाचार जाने दुःख जागे ॥
 भारवहे कुवाक्य सहे नरमी कहे । जाने धनमिले आगे ॥
 यों रक्षण करते बहू धन के प्राणसे धनपे अधिक अनुरागे ॥
 आकर जो कभी जाय विरलाय तो अभागी दुनियां सब केवे ॥
 खान पान सयन गमें नहीं । मिल सज्जन आदर नहीं देवे ॥
 मरने से दुःख ज्यादा मानत तन क्षिण होय चिन्ता अहमेवे ॥
 तो भी मानत है सुख धन से पेख अमोलख आश्चर्य लेवे ॥

कथा—नववी

परिग्रह पाप के फल बताने वाली—“सागरशेठकी”

दोहा—परिग्रह से संसार में पाये दुःख अपार ॥

सागर शेठ की कथा । कहूं ग्रंथ अनुसार ॥ १ ॥

चोपाइ

‘मगधदेश’ राजग्रही नगर । ‘प्रसेनजी’ नामें नरवर ॥

तहां रहे ‘सागर’ नामे साहूकारा क्रोड निर्नोवणे धनरखवार ॥

उस के चलता घड़ा व्यापारा को डंकी नहीं करे उदार ॥

मुलायजा किसीका नहीं करे । दान नाम सृण भृकूटी चडे ॥

देता देखे दूसरे तांय । मनमें प्रज्वलित भस्म होजाय ॥
 जाडे औंछे बल्ल अंग धरे । तुच्छ लूख भोजन तो करे ॥४॥
 प्रहररात को उठ जंगल जाय । छोने लकड़े लावे उठाय ॥
 बड़ी शुभेही फिरे बजारके मांय । पडा अनाजभाजी चुगलाय ॥
 उत्तसे शेटाणी भोजन बनायाऐसी । विधि से काल खुदाय ॥
 विन्दी यें सांघ गादी तकीये किये । सयन में तदा तोहीलिये
 दीपकका नहीं घर में काम । सोवे बैठे धनके धाम ॥
 खडका सुन चौर का वैम आय । तो दीपक से घर सोधाय ॥
 हवेली का जो कंकर खसे । सब गिरनेका दिल डरवसे ॥
 ऐसे संविया द्रव्य कौड चार । प्राण से ज्यादा उस पर प्यार ।
 पुत्र सुरूप हुवे तत्त चार । उनका भी वैसेही करे गृजार ॥
 कोटी पत 'सागर' को जान । दे निज धूया पुर्वो को धनदाता
 देव जोग 'शेटाणी' मरी । गेट मालकी घरकी करी ॥
 जूने कटे बल्ल बहूवों को दियो जो शेटाणी के बच करे ॥
 पीपर से वो लाइ जो माल । गुप्त रखकर लगे दिये बल्ल ॥
 चार तेंहवारे काम यह आय । बहूवों को दो दो ॥
 अवला बेचारी कहे तो करे । पीपर लगे दो दो ॥
 चारों पुत्र को संग लेजाय । इंधन बन नये चुल्ला ॥
 अन्धारे में दे बहूवों तांय । उत्तक से दो दो ॥
 भोजन से निवृत्ती बहूमे कहे । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 इंधन बीण लावो आवे काम । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वेचारी शरमाइ तैसेही करे । बेटे बहू बुढ़ेसे डरे ॥ १४ ॥
 महा कृपण तस नाम प्रकटाय।परन्तुबो जरा नहीं शरमाय॥
 सी खामण दे उसी से ही लंडा।सज्जन मित्रकी परवानहींकरे
 दोहा—एकदा चारों बहू । इंधन को गड़वन ॥

इंधन संग्रही चित्तये । अभी बहुतहे दिन ॥ १६ ॥
 जाये तो काम बनायंगे । शामको जावेधर॥
 विश्रांती ली तरतले । पुण्य जोगते अवसर ॥ १७ ॥

चोपाइ

विद्याधर जावे गगन मझार।विमान स्थंभा करे विचार ॥
 नीचे सातियों देख दुःख मझार । ठिग आ बंदा करे उचार ॥
 बहिनों दुःख मेरे से कहे । चाहिये सो मेरे से तुमलहो ॥
 चारों सुन के विचारे यों । घरका भरम गमावे कपों ॥ १९ ॥
 चारोंही कहें भाइ हमे सुखी । क्या कारण तुम कहते दुःखी ॥
 सुसरा पतिधनसय हम घेरा।फिरनेआइ यह काम हेर ॥ २०॥
 संतोष वन्ती चारों को जान । खेचरकहे हर्ष अतिआन ॥
 गगन गमिनी विद्या लहो । उडके जावो जहा चित्त चहो॥२१॥
 हर्ष के सीझा मंत्र तत्काल । विधी वता खग गया तबचाल
 चारों मंत्र साधा उमवार । धरको आकर ऐसाविचार॥ २२॥
 रत्नद्वीपामहिमाव्याख्यानमेंसुनी॥तब से इच्छा देखन घनी॥
 पहर रात गंध सबजन सो जायातब अग्न चल मंत्रपसाय ॥

पिछली रात को यहांही आंय। अपना भेद कोइ नही पाय ॥
 चारों के सला जाची यह ध्यान। उठ आइ संकेत प्रमान ॥
 लकड़ बड़ा पड़ा घर वारा। चारों उसपर हुइ स्वार ॥
 मंत्र स्मरा उड चली उस वारा। रत्न द्वीप आइ हर्ष अपार ॥
 फिर आइ घर पिछली रात। निजस्थान सूती हुवा प्रभात ॥
 धान पित्ताने सुसरा उठाया। चारों उठ कामें लगी आय ॥ २६ ॥
 घर बाहिर लकड़ उखड़ा देखा। शैठ विस्मय पाये विशेष ॥
 बहुत काल का जमा उखाड़ा कष्ट। यह कोन कभी करे मुझ घर नष्ट ॥
 इतकी चौकस करना जरुर। दिन पुरा किया चिंता पूर ॥
 रात को छिप ऊभे अंधारे मांया। चारों बहूँ तब चल आय ॥
 लकड़ पर बैठ उड गई कल्काल। पिछली रात आइ घर चाल ॥
 शैठ चिते डाकणी मुझ घर मांया। कल देखूंगा कहां यह जाय ॥
 प्राते गुप्त सूतार बोलाय। यह काष्ट कोरे जैसे मनुष्य समाय ॥
 कंजुस गरजी जान धन बहूलेय। काष्ट सुतार सो कोरी देय ॥
 शाम को सुना उसमें आय। चारों सती सो खबर न पाय ॥
 नित्य प्रमाणे चली हो स्वागरत्न द्वीप में उतरी गङ्ग चाल ॥
 बाहिर निकल शैठ रत्न ढग जोया। अनिही हर्षित मन में होय ॥
 चिते नृखणी चारों ही बहू। यह रुक्षणी कवेर ज्यों पड़ी यहां बहु
 थोड़ा २ उठा जा लर्न। घर मांयानो मुझ दग्गि दैती नमाय
 आजना यदा प्रगट नई होन। थोड़ा धन ले चहुं भगवुना ॥
 कल मन जा कर ले ले आवे। मंत्र यह धन नमंद लेन वं ॥

यहां मुझे देख वहु ओं दुःख पावे । रखे मुझे यहां छोड़के जावे ॥
 योंकेइ विचार करता मन मौरत्न भरे बहूते खोलन मे ॥
 और ढग किया काष्ठ मुख आगे । काष्ठ में आप पेठे होनागे ॥
 तनअंतरजहां जगाह रही खाली।बहां२ लिये रत्न सो घाली ॥
 कान नाक मुख अंदरभरीये । लटका लिये बंधेपोटलिये३६॥
 इतनेचारों आ कर बैठी पाटे।मंत्र पडा उड चली नभ बाटे॥
 द्वीप बहिर धन जान न पावे।अटका काष्ठसीम जहां आवे ॥
 चहुंचिनेआजक्या हुवाकारनामंत्र भूली पुनःकरउचारन ॥
 थोडा थल काष्ठ फिर अटका।चारोंका दिल दुःख से खटका ॥
 देर हूइतो सुसराजी रीसावे।लोकों में इज्जत अपनी गमावे ॥
 सुने शेठ पनबोला नहींजावे।मुख के रत्न कैसे बोल गमावे॥
 बोबडाता बोले धीरे २ थालो । सुनी शब्दडरी बहू थालो ॥
 थाइ लकड़ में भूष भरथा।छोडो इमे चल चदरबिछाया ४०॥
 ओढणे पेयैठी मंत्र पढचली।काष्ठ पडा समूद्र में ते काली॥
 ‘सागर’शेठ सागर में गये।धन नहीं छोडा मरण ही लये ॥
 मरके उपने नरक मझार । सागरोंतक सहेंगे दुःखभार ॥
 परिग्रह ऐसा हे दुःख काल । देखो कथा यह हाये विचार ॥

दोहा—आगे जा एक बहूवदे, सेंदी बोली लगीतेह॥

रखे सुमराजी गुस्तरह । आये अपने पीछेह ॥४४॥

लोभ कर रत्न संचिये । काष्ठ अटका इसकाम ॥

बोनो हाथ आवेनहीं । चलो शीघ्र देखें धाम ॥

चोपाइ

होन हार सो होवेइ चाइ । यों चिंता करनी घर आइ ॥
 सुतराजी नहीं सदन देखाइ । बीनी घान पती को चेताइ ॥
 तात मरण फिकर सोलाये।द्रव्य मालक हौं मनहर्षायें ।
 घात नहीं किस आगे प्रकासी।जाने नहीं कहां गयेसो नासी
 देख पिता गत सो समजे मन । लोभ तजी मुक्त करेधन ॥
 कोन कमावे कोन बिलसावे । धन के मालक कोन न धावे ॥
 दोहा—अहो सुखार्थी प्राणियों । परिग्रह जान दुःखःकार
 ममता तज समता बरो।तो पावे सुख सार॥ २९॥





मंजिल पांचवा—“परिग्रह पापोद्धार”

उत्तरविभाग—“अकिञ्चन”.

दोहा—सर्व सुखका स्थानहो अकिञ्चन यह व्रत ॥

ममता तज समता भजेजो है मुनि सामर्थ ॥ १ ॥

प्रश्न व्याकरण सुत्र कोपंचम आश्रवद्धार ॥

अकिञ्चन गुन को कयोसो यहां करुं उच्चार ॥

चोपाइ .

अपरिग्रहजो करेपरिग्रह त्याग।सबुडंसोआश्रवतजेमहाभाग॥
 समणे-सोही साधू कहाय । आरंभ परिग्रह से निवृत्ताय ॥१॥,
 क्रोधादितजे चारुं कपायातेतीसबोल आरंभ सकाय॥
 और अनेक होवे गुनका धारातीर्थकर यश ?करे उच्चार २॥
 पसर्यैसु-प्रशस्त तस अर्थ।‘आँवेतेहैसु’- जाने यथातथ ॥
 सासँय भावे सु-शाश्वतेभावाअँवठियेपु अवस्थित स्वभाव ॥
 संके कँखे निर करिता सोए।शंका कांक्षा रखे नही कोए ॥
 ‘सँदँइ’ श्रद्धे श्री जिन वेणासँन- भगवंत का चले तेन ॥
 अणिर्याणे निदान रहिन । अगौरवे- गर्वनजे विनीत ॥

खाने को तो अन्न । तन ढकन वसन ।
 रहवने मकान एताही ज जन चावे है ॥
 दैव के प्रमान मिले सर्व ही तो स्थान आन ।
 किये खेंचा तान नहीं आवे नहीं जावे है ॥
 काय को विपति करे पुण्यका खजाना हरे ।
 अमोल विचार धरे सोही सुख पावे है ॥१३॥
 निष्परि ग्रही निश्चिन्ता रहे अहो निश चित्त ।
 घोर रु ठाकर विरादरी न सतावे है ॥
 लघुता किसीके पास कभी न करे अरदास ।
 आस पास काटे सोही, पूज्यनिय थावे है ॥
 सब जग सन्मान लये । चाहवे सो आग्रह से दये ।
 सिद्धि रिद्धि विन साधे । ता दिग चल आवे है ॥
 अर्किचन घत भाइ । सब से उत्तम कहाइ ।
 अमोल अर्किचन कोइ पुण्यात्मा पावे है ॥ १५ ॥

निष्परि ग्रही के सुख—इन्द्र विजय छंद

जो मुनिराज गरीब निवाज ममत्त्व तजा जो जगत पूजावे ।
 निर्दोष स्थान सदासु अमान विनादिये दाम रहने को पावे ।
 नित्य सरस अहार इच्छित प्रकार देइ सत्कार सद्गुकार घहरावे ।
 उज्ज्वल वस्त्र मांगे मिले तब परिग्रह त्यागी सदा सुखी रहावे ।
 संचे नहीं कन कोडी नहीं धन हुकमे लखन सु कृत्य लगावे ।

अँलुँदे' सो लंपट नहीं होए।अँमूँडे सुज्ञ कहावे सोय॥६१
मन वच काय की गुप्ति धाराजो सो वीरे-शूर वीर जुजार
यों परिग्रह त्यागी की महिमा कही।प्रश्न व्याकरण सूत्र महीं
दोहा—पूर्व विभागे जो कहे । परिग्रह दो प्रकार ॥

बाह्या भ्यन्तर जो तजे।सो अकिञ्चन अणगार ॥७॥

आसा दुःख सब से बडा । निरासा सर्व सुख ॥

व्रति बर्ते मर्यादमें । तो नहीं पावे दुःख ॥ ८ ॥

चोपाइ-

जो करे सर्व परि ग्रह त्याग।सो अणगार होवे महा भाग्य
वस्त्र उपकरण रखे जो पास । फक्त धर्म लज्जा रखे खास॥
ममत्व उसपर जरा नहीं करे । खप उपरांत जरा न संग्रहे॥
निष्परि ग्रही उनको जिन कहे।जो जिनवर की आज्ञा में रहे॥
ग्रहस्थ से परिग्रह नहीं तजाय । ममत्व मोचन मर्याद कराय
नव प्रकार बाह्य परि ग्रह कहे।जितना जिस मालकी में रहे
आवक जावक स्थित अवलोक । और सब इच्छा दे रोक॥
तो अव्रत बहूत घट जाय।संपत्ति घटे विसि कम रहाय ॥१

परिग्रह त्याग सद्बोध—मनहर छंद

आत्म हित धनी सो घटाते ममत्व मनतनी ॥

जितनी मिले उतनी में संतोष मन लावे है ॥

खाने को तो अन्न । तन ढकन वसन ।
 रहवने मकान पताही ज जन चावे है ॥
 दैव के प्रमान मिले सर्व ही तो स्थान आन ।
 किये खेंचा तान नहीं आवे नहीं जावे है ॥
 काय को विपति करे पुण्यका खजाना हरे ।
 अमोल विचार धरे सोही सुख पावे है ॥१३॥
 निष्परि ग्रही निश्चिन्त रहे अहो निश चित्त ।
 चोर रु ठाकर विरादरी न सतावे है ॥
 लघुता किसीके पास । कभी न करे अरदास ।
 आस पास काटे सोही, पूज्यनिय थावे है ॥
 सब जग सन्मान लये । चहावे सो आग्रह से दये ।
 सिद्धि रिद्धि विन साधे । ता ढिग चल आवे है ॥
 अकिंचन व्रत भाइ । सब से उत्तम कहाइ ।
 अमोल अकिंचन कोई पुण्यात्मा पावे है ॥ १५ ॥

निष्परि ग्रही के सुख—इन्द्र विजय छंद

जो मुनिराज गरीब निवाज ममत्त्व तजा जो जगत पूजावे ।
 निर्दोष स्थान सदासु अमान विनादिये दाम रहने को पावे ।
 नित्य सरस अहार इच्छित प्रकार देइ सत्कार सद्गुकार बहरावे ।
 उज्ज्वल वस्त्र मांगे मिले तब परिग्रह त्यागी सदा सुखी रहावे ।
 संचे नहीं कन कोड़ी नहीं धन हुकमे लखन पु कृत्य लगावे ।

श्री मती कुँवराणी तव। पूछे क्या है काम ॥

खबर दार आज पीछे यहाँ। दुःखका मतलेनाम ॥

चाँपाइ.

वसुपति जब मुत्यु पाये। गुनास्ते बहु सनाचार पठाये॥
 कोइ कहे नहीं कुँवर पे जाइ। इहन क्रिया करीतवधवराइ॥
 मालक विन कौन काम चलावे। तज्जन गुमास्ते सवधवरावे॥
 बंधपडी पंच लाख दुकानों। होय नूकशान औरशोरफेलानों॥
 काणिक राजा सुन घवराये। शिघ्रिसेठ के घर चल आये ॥
 सर्वजन उठ आदर देइ। उंचस्थान राजाजी बैठेइ ॥१८॥
 कर जोडी सब अजी करते। कुँवर साहेब नीचे नहीं उतरते॥
 मालक विन काम कैसे चलावे। राजाजी तब हुकम फरमावे ॥
 कोइ जाकरलावे। कुँवरकेताइ। सबकेहसुरी शक्ती से नजवाइ॥
 दासियों हाथ खबर जो पठाइ। पीछा उत्तर कोइ नहीं लाइ ॥
 एक दासी को नृपती पाठावे। वोभीखबर नहीं लेकर आवे॥
 दो तीन दासी भेजी धमकाइ। शाम हुई कुछ खबर न पाइ ॥
 आसुरत राजा हां घर कौ जावे। शक्तउपाय शोचशुभेआये ॥
 उत्पक्ततबनेवडीदासीआइ। मुनिमर्जाउत्तकाओलखवताइ ॥
 जेगबंधसे नृप उने मगाइ। शक्त हुकूम तब यों फरमाइ ॥
 जाखेन कुशाल नुमतवचावे। एकघंटे में कुँवरले आवे ॥
 नहीं तो तांपने नेहळ उडावूं। मुलायजाकिनका नहीं लावूं ॥

मुणरु चेटी अति घयराइ। तत्क्षणभाग कुमर कने आइ ।
 कहनेकी हिम्मत नहीं चाले। रुदन करे नयनेनिर डाले ॥
 कुमर देखकर आश्चर्य पाये। यह क्या गायननये सुनाये ॥
 जिससे आँख में पानी आये। सुनते देखते अति उमंगाये ॥
 श्रीमति उसे दिलासा देती। रोनेका कारण पूछे उस सेती ॥
 उसने वीती सय सुनाइ। अतिही कोपे कोणिक 'इ ॥
 मुझे यह मरी सोभी यताइ। नहीं जावे तो मेहलवेतेगिराइ
 मुन लक्ष्मी पती हर्षा कहता। देखे राजा फेसा कहाँ रहता ॥
 शीघ्रपोशाख सजके चोला। आयेशभामें सय ने निहाले ॥
 गुलारी मेहताय जोपडाउजाला। राजानजीकलिपतस्काला ॥
 सब ऊभे होकिया सत्कारा। देख पुण्याइ विसमय अपारा ॥
 कहेनृप नगरशेठ पट्टी संभालो। नामथदावोसयकोंपालो ॥
 आगे कैसे सय काम चलाना। सोहुकुमरेइनको फरमाना ॥
 कुमर कहे पुछो पितार्जनाइ। मैं इसमेंकुछ समजुंनइ ॥
 राजाकहेशेठपरभव सिधायो। कुमर कहे पुछना उन आये ॥
 मुनी सना जन हंसने लागे। रायकहे कुमर घड भागे ॥
 मरण दुःख की वान नजाने। जन्म सेसुरकीये हैं पुण्यवाने
 कुंवरसे नृप कहे मंगेनहींआवे। केमे अब यहकामचलावे ॥
 कुंवर कहे कइ गये पितार्ज। जेसा मय कगे मेंहुं गर्जी ॥३३
 मरनी में दिल संग पयगांवायो कही। दूद हवेर्या में आवे
 नृप कहे अब इने मनमतावां। पहिले माफिक काम चलावो

दोहा-कुमार आ बैठे सेजपर । किये अंग वस्त्र दूर ॥

कुमलाये धूप पुष्पजों।उतरा मुख का नूर ॥ ३५ ॥

शिखा पड़ी मुख सन्मुखे । श्वेत बाल तब देख ॥

यह क्या कहां से आगया । करते सोच विसेख ॥

एकाम्र शुद्ध उपयोगसे । जाति स्मरण पाय ॥

देख भवान्तर श्रेणिको । धर्म ध्यान मन ध्याय ॥ ३८ ॥

चोपाइ

संयम से अनुत्तर विमान सिधाय।वहां से चक्कर यहां सुख पाय
 ऐसा अवसर पा करणी न कीनी।पिता मणी साठे कोड़ी लिनी
 धर्म कर्म का भेद न पाया । विषया नन्दमें जन्म गमाया ॥
 निश्चय मर पर भव को जाना।खाली खजाना फिर पस्ताना
 ऐसे ऊंडे पड़े फिकर के मांही।श्रीमती देख जाणी चिन्ताइ
 कर जोड़ी कहे फिकर तजोजी।चाहीये सो धन मुझसे लोजी
 आठ कोटी में पयिर से लाइ ।आठ कोटी मुझ बेनो काही
 इस से सब टोटा पूरा कीजे।निश्चिन्त होकर भोग भोगीजे
 कुमार कहे अहो सुनीये शाणी।धनकी चिन्ता मन नहीं आणी
 मरने का फिकर पडा अति भारी।धर्म विन मेरी होगी खुवारी
 जरा गरमी से इत्ना दुःख पाया।नरका दिका दुःख कैसे सहाया
 एक दिन काल जरूर ले जावे।धन सज्जन नहीं उससे बचावे
 श्रीमती कहे न दुःखावो जीया।यह उपाय मैने पहिले कीया ॥

चिन्तामणी रत्न रत्ना द्वारानिजराणा करें आवे जम जारे॥
 सुम होगा कहेंगी कृपाकीजासरिवार शेर अमर कर दीजे
 नहीं मरोग नहींपरभव जायो।नहीं किंचित् मात्र दुःख पावो
 सुन लक्ष्मी पती को हांसीआइ।कहे भोली ऐसा होताकहाई
 जग जंतु सब जीवना चहावे,कर निजरान अमर होज.वे ॥
 मेरे तात का किया संहारो।प्रत्यक्ष बेसो होवेहमारो ॥
 कृत्य कर्म कल निश्चय पावोयेही चिन्ता से मन घबराये ॥
 शेर हंस शेरानी विशाणी।अचंभी कैसे वने ऐसे ज्ञानी ॥
 चिड़कर कहे कीजें उपाय साचा।जोंनहीं जायें कालके डाचा
 शेर कहे उपाय में लिया विचारी।सो करनानिजइक्ष्वा
 कटण ताइ तो उसमें पड़ेगा।परन्तु यमजोरजरा न चलेग
 श्रीमती कहे शीघ्रही करमावो।बोही करें हममनमेंउमायो
 शेर कहे संयम आदग्ना।निश्चय मिटेगा जिससे मरना॥५
 आठों कहे मची सायकी शिक्षा।आपके संगहमंलेंगीदीक्ष
 लक्ष्मीपती नव लोच किया।वेश गृहस्थ का दूर पराइ ।
 सांसगपती मृग उदा नव आया।संयमवशमवकावहाटाय ।
 लक्ष्मी शपिनीलिया वेशधर्मा।आठोंनामनी कोशदीक्षार
 आगे शपिनीलअर्जिअनार्ली।क्षपक श्रणी शपियरशाली
 मेदल उतर ने कर्म म्पाया।कवल ज्ञान दर्शन बांझे पाये
 धनानुगामी मृगदर्पाय । गंधावात्र गगन नेवजाये ॥
 सुन राजा गन्ध विन्मयराडा।इनने में उने लक्ष्मी शपिआ

अत्यन्त आश्चर्य सबही तवपाये।अवीही केवल कैसेउपाये ॥
 नरसूर वन्दे अति आन्दे।दे उपदेश जिनजी भव्य वृन्दे ॥
 अनित्य सन्पतिसंसार असारो।कुटुम्बस्वार्थीअशुचिदेहधारो
 आयु अनिश्चित जन्म न हारो॥त्रनी वक्त कुछ करो सुधारो
 एकही धर्म सदासुखदाइ । अनगार सागार दो परयाइ ॥
 शक्तिसम ग्रहो पालो उमाइ।जोअव्यावाध सुख चहाइ ॥
 इत्यादि बोध सूनि उमंग।यावैराग्य बहुतोंके मन आया ॥
 एकसो आठ नर सोलेसोनारी॥तज परिग्रह हुवेसंयमधारी॥
 श्रावक श्राविका हूवे बहुताइ।ग्राममें धर्म सहिना फेलाइ॥
 विहारकर भव्य जनउद्धारे । लक्ष्मीऋषीजी मोक्षपधारे ॥
 और सभी ऊंची गती पाये।जिनने परिग्रह ममत्व छिटकाये ॥
 दिगंबर मते यह सुनीकथा । जोडकरी यथाबुद्धियहांयथा ॥

॥दोहा—भावार्थ दृष्टांतका । सोचो सूझ मन मांय ॥

पाप परिग्रह पर हरो । जोंआत्म सुख पाय ॥ ६२॥

अपार सुख संपतिकों । एकही क्षण के मांय ॥

त्यागी लक्ष्मी पतीजी ।मोक्ष विरांजे जाय ॥ ६३

स्वस्थिती सम यों सभी । करो परिग्रह त्याग ॥

तो तुम भी यों पावोगे । अक्षय सुख सोभाग ॥६४॥

स्व परात्म सुख वरनापरिमह पापोद्धार ॥

ऋषि अमोलख ने रचायह पंचम अधिकार ॥ ६५ ॥

परमपुज्य श्री कहानजी ऋषीजीमहाराजकी संप्रदायके

बालब्रह्मचारी मुनिश्रीअमोलकऋषीजी रचित

अपोद्धार कथागार का परिमहपापोद्धार

नामक पंचम भंजिल समाप्तम्





मंजिल छद्म-“क्रोध पापोद्धार”

पूर्व विभाग-“क्रोध”

दोहा-जो करे क्रूर स्वभाव को। सोही क्रोध कहाय ॥
 निज पर आदि अंतमें । क्रोध महा दुःख दाय ॥१॥
 भगवति शतक पंचवे । पंचम उद्देशे मांय ॥
 क्रोध नाम गुण निष्पन्ने । कथे तो यहां कथाय ॥२॥

क्रोधके नाम-चोपाइ छंद

‘कोहे’-क्रोध, ‘कोवे’ कोप जाना ‘रोते’-‘रोश’-‘दोते’ द्वेषवत्तान
 ‘अखँमा’-करे क्षमा का नाश। ‘सँजले’-प्रजले ज्यों अग्नि घाँस ॥३॥
 कँलह-कँश का हे करतार । ‘चँडिजे’-चँडाली होवे जहार ॥
 ‘भंडणे’ भंड जगत में होय । ‘विवाँदे’-विवाद करे हेसोय ॥४॥
 दोहा-यह दश नाम क्रोधके । कहे सुख अनुसार ॥
 आगे भी सुख ते कहूं । क्रोध के जे प्रकार ॥ ५ ॥

क्रोधके प्रकार-चोपाइ छंद

क्रोध का कहा है चार प्रकार। चारों ही जीवको है दुःख कार ॥

चारोंही करे सदुन का नाश। चारों ही से होंवे चउ गति वास॥
 जो अमरोप जाव जीव धरे॥ अनन्ता नु वन्धा तास ऊचरे
 सम्यक्त्व उस जीवों कों नहीं आया नरक गति में मर कर जाय
 चारह मांस लग रीस जो रहे। अप्रत्याख्यानी उसकों कहे॥
 श्रावक पणा सोतो नहीं पाय। तिर्यंच गति में मर कर जाय
 चार मांस लग धरे जो विरोधाप्रत्याख्यानी हे सो क्रोध॥
 साधु व्रत सो वर नहीं सके। मनुष्य गति में उपजै मरके॥९॥
 दो मांस लग रहे अमरोपासंज्वल क्रोध का सोहे दोष॥
 केवल ज्ञान उपजे नहीं तानाहोवे देव गति में वास॥१०॥
 इसतरह क्रोध के जानो भेदाचारों गति में देवे खेद॥
 ज्यादा सो ज्यादा दुःख देखाथाओछो कियाओछा दुःख पाय

क्रोधमें दुःख-मनहर छन्द

क्रोध हैत्री महा आग। जल्ये जिस घट लाग॥
 जावे सब गुन भाग। वन्ही वृत्त ज्यों भडकावे हे॥
 सत्य रू संयम। तप जप सम दम॥
 को सदुन भवम। कृ गुण प्रगमावे हे॥
 कर्म सम्यक्त्व नाश। वने मिथ्या राख रास॥
 कं कृष्ण आत्म नाम। जल्ये दूजे कों जलावे हे॥
 विस्तार बंद अगार। होवे यदुनही संसार।
 प्रबल क्रोध अगार। कपि अमान्य दर्शावे हे॥१२॥

क्रोधाग्नि-इन्द्र विजय .

क्रोधा नल अनल ते अथकी पाणी ते तो बुजी न बुजावे
 अग्नि अभ क्षे बंध पडोयह बडे विन भक्ष अपारही जावे ॥
 अग्नि प्रजले ते स्थान जलोयह दृष्टि मात्र ते अन्य तपावे
 महा ज्वाल प्रवला क्रोधाग्नि।कोई अमोलक संत समावे ॥

क्रोधके दुगुर्ण-मनहरछंद

जैसे कोई अन्य नर । देखे नहीं निज पर ।
 जावे इत उत चर ॥ शुद्ध न लगारी है ॥
 तैसे क्रोध अंध भये । ज्ञान चक्षु जात गये ।
 भली बुरी देखे नये । करे अविचारी है ॥
 अपवित्र अंध स्थान । पंड लोटे जाइ जान ।
 भक्षा भक्ष तान पान । करे निर धारी है ॥
 कैई अंध ज्ञान वान । गुन वान पुण्य तान ।
 पण क्रोधी पुण्य हीन । एक पापा चारी है । १६॥
 महा चंडाल क्रोधी बजोकु कृत्य करतो न लजे ॥
 कीडी को कटक सजे । दया को नत्तावे है ॥
 नान तान भस्मि भ्रान । श्री पनि पुत्र जान ॥
 स्वजन नेवक शर्मा । धान तन चावे है ॥
 अधिक संताप नांग । आंग पीछे न विचारे ।

अन्य पे न वश पूगे । अत्स घात ठावे हे ॥
 जेहर शस्त्र अग्नि जोग । देवे निज तन भोग ॥
 क्रोधी जन महा चंडाल । इन गुने भंडावेहे ॥१५॥

इन्द्र विजय छन्द

जेसे राक्षस पैसत अंगमें । रंगमें भंग सब संग में करता ॥
 तन काँपतहापत उर चाँपत । अरुण नेत्र जग नहीं डरता ॥
 कोइको मारत ताडत काइको । उल्लूकीमाफिक वायव्य उचारता
 वेथुद्ध होय हंसे कधी रोय इज्जतखोय यों क्रोधीके उचरता
 जो म्यावन जेहर चढे तस लेर । मरे एक बेर उपाय उतारे ।
 चडे क्रोध विष तपे अहो निसाबुरी हो जगीस मरे अरु मारे ॥
 भव अनंत मझार करे संहार । मरे रु मार हायत अपारे ॥
 क्रोध महा जेहर महा बुरी लेहराप्रभु करे खरन और ही तारे

मनहर-छन्द

क्रोध कृत्यनी होय । सत्कार न देवे कोय ।
 मित्रता न निभे । शत्रुता सची से करता ॥
 जमी यान तांड । क्रोधी विगाडे हे क्षिण माहीं ।
 स्थिर तन मन नाहीं । दुर्गुण उर भरता ॥
 बुद्धि बल नष्ट होय । मत्व रूप भुष्ट सोय ।
 जमी पेट देवे सोय । सब अपयशः उचरता ॥

क्रोधके दुर्गुण अनेकाकहां लग कथुं छेक ।

अमोल विवेकी जनाक्रोध पर हरता ॥ १८ ॥

कथा—इग्यारवी

क्रोधके फल बताने वाली “बन्धुमति बन्धुदत्तकी”

दोहा—क्रोधके बर अनंतही।इवे जीव संसार॥

प्रत्यक्ष दुःख दायक यहाक्या कथे कथनार ॥ १ ॥

तांभी जन मन रंजने।ग्रंथानुसार कथन ॥

बन्धुमति बन्धुदत्त का । सुणो श्रोता एक मन॥२॥

चोपाइ

‘भृगुकच्छ’पुर, है सुख दाय।‘विमल श्रेष्ठ,धनवंता रहाय ॥

‘बन्धुदत्त, तत्त पूखप्रवीन । विद्याकलारूप गुण लीन ॥ ३ ॥

‘ताम्र लिप्ती नगरी के मझार।रतीतार, श्रेष्ठ धनधार ॥

‘वेधुलीनारी, गुणवंत । बन्धुमती, तत्त घूया सो हंत ॥ ४ ॥

सो परणाइबन्धू दत्त साथ।वाना लघू बय पीयर रहात ॥

‘बन्धुदत्त, धन कमाने काम।प्रदेशचला लेकर बहु दाम ॥

समुद्र रस्ते वो जवजावंत । पापोदय तत्त झहाज फुटंत ॥

काष्ठ लगा हाथे उत सहाया।ताम्रलिप्ति,नगरी डिग आय॥

जाना निज सुतराका गाम।वाहिररहा शरम दिल पाम ॥

सूता एक देवालयमझारामित हाथ भेजे समाचार ॥
 उस वक्त 'बंधुमति, सज सिनगाराखलन को गड़ घरके
 कंकन तस करमें बहु मोलादेख तस्कर कियालेने तोला
 देलालच लगया एकंता जहांकांइ नर नहीं देखें
 निकाले कंकननिकलेनांया हाथ काट ले भगवो
 'बंधुमती, तब करी पुकाराराज पुरुष दोडे उसल
 भागता आयाग्रामेकयहारा तस्कर धितेन छुट्टेइस
 वचन उपायदेखंताजाया 'बंधुदत्त, निद्रामें देखाय
 छूरी कंकनसख दिये उस पासालुपा गुप्त जगेसोन
 राज भट पछिमे वहां आयामाल साहित 'बंधुदत्त
 मकर चोरजाणा धर उठाया पूछीतलास नकोइका
 मारते लाये नृपती पासामालयुक्त वतामका प्रका
 हुकमदिया शूलीदों चढाया चटभट धारा शूलीपर
 दोहा—बंधुदत्त का मित्र नय । आया शेट के पास ॥
 जमाइ आय आप के । सब बातक प्रकाश ॥ १४
 हर्षी शेट उंट लाने को । मुने पूत्री समाचार ॥
 चोर पैसन आय शूली टिंग । ले सो मितकी ला

चांपाड.

मिय शूली पे 'बंधुदत्त' जाय । हल्लाकर मृच्छिन पडासोय ।
 शेट जीनिज्जानान पादवान । अमनाल नदन मांडाउमस्थ

लार अचंभी पूछे तास । शैठ कहे यह जमाइ मुझ खास ॥
से इसकुं जाना तुम चोरातलार वीतक कहा देखा ठोर ॥
बल कहे थक के सूताकुमार । कपटी चोरकोड़ाकेवाअत्याचार
। जाजी सुन शीघ्रतहांआयाशैठमित्र संतोपे समजाय ॥ १८ ॥

दोहा-वन पाल तब आय के । धधाइ हर्षी सुनाय ॥

बाग में आज पधारीयोज्ञानी गुनी मुनिराय ॥

राजेश्वर कहे शैठ से । चलोमुनि श्व पास ॥

यह जुलम कैसे हुवा । पूछके करें तलास ॥ २० ॥

चोपाइ

तब जन मिल मुनिवर ढिगआयाहूली २ नमनि वंदे कृष्ण ।
र जोडी पूछे नरपाला । इत जुलम का मूल फगन केद्वारा ।
मुनिवर कहे नृपादिक सुनो । क्रोधके ऐसे बहुरे कलह्यो
। गंधा भोगवे दोनोही जीयाजिनकी कथा कहु वे संस्र ॥ २१ ॥
शालीमान बसे सुख स्थान । एक दुर्गा, नाम रत्न के प्रान
। कही पुत्र है पिता भड़ा । शरिद्रना दुःख ने कलह्यो ॥ २२ ॥
। बल्लु चगने जावे पार । दुर्गा के कलह्यो कलह्यो ॥ २३ ॥
। कदा शैठ पर राम बहू जाना । कलह्यो कलह्यो ॥ २४ ॥
। के पे रत्न दुर्गा जाय । दा बहू कलह्यो कलह्यो ॥ २५ ॥
। में नही देखा निजमान । कलह्यो कलह्यो ॥ २६ ॥

क्रोधातुर हो भु लोटंत । तीर्जी जाम जर्नीता आवंत ।
 काम करी अति थाकी तेय । कोप वचन तनुज तस केय
 क्या तुझे दीधी शुली चडायातीन पहर गये आइ चलाय॥
 भूखी प्यासी थकी तव माताक्रोधातुर कट्ट वचन सुणात ।
 अरे तेरे क्या कटे थे हाथ । छींके से लेभोजन क्योंनिखात ।
 आति संतापेहुवे करु भाव । वयण भी खोटे खोटा बरताव ।
 तीनों जोग यों एकत्र कु भये।बन्ध निकाचित दोनोंके थये।
 संताप चडा शिर कियाप्रहार । आयू पुर्ण हुवा उस बार
 कुठेक दान पुण्य प्रभाव । दोनों मनुष्य भव पाये ५९॥
 'बंधुदत्त' बंधुमती, यह । माता पुत्र स्त्री पती बने तेह ॥३॥
 'कर्मकी विचित्र गति ये देख । क्रोध बस वचन फल लेख॥
 पुत्रकहाथाक्याचडाशुलीजायाबंधुदत्तकोदियाशूलीचडाया
 माताने कहाथाक्याकटेतेरेहाथाबंधुमतीकेकटे ह।
 यों क्रोध बसे वचन फल लये।आगे भी विसी भवांत दये
 नृप शेठ सुन बेराग्य घटलायासाधू हुवे श्लाघि छिटकाय
 करणी करके पावेंगे सुख।गौतम पुछा ग्रंथमें

दोहा—क्रोधवश एक वचन से ।अनर्थ ऐसा होय ॥

जो जो बदे कुगालीयां।उसकी गती क्या जोय॥३४॥

यों जाणीतजो क्रोध कों।करे क्षमा अंगीकार ॥

तो आत्म सुख पायेगी । सुनो आगे अधि कार



मंजिल छद्म—“क्रोध पापोद्धार”



उत्तर विभाग—“क्षमा”



दोहा— धर्म मूल क्षमा कही । सुख मूलभी येह ॥
धारो धर्मी शूरहो । निजात्मिक धरनेह ॥ १॥

ॐ चोपाइ ॐ

पूर्व कहे क्रोध शत्रु के काम । उससे उलट क्षमावंत परिणाम ॥
श्री जिनवर बताया उपचार । उपशम से होवे क्रोध संहार ॥ २॥
उत्तराध्यान में कहा जिनराय । क्षमा से ही परिसह जीताय ॥
क्षमावंत पर पडे दुःख आया । सम भाव धर सर्व सहाय ॥ ३॥
दुःख का दुःख वेद न लगाय । दुःख को जाने सुख दातार ॥
जैसे बांधे कर्म हम जीव निर्माही पावन । यहां यह रीत ॥ ४॥
बिना भुक्ते तो छूटेही नहीं । मनाप किये दुःखुणें बंधेनहीं ॥

मेरे बन्धे भोगुंगा मेही । कटु वाक्य क्यों अन्य कों केही ॥
 दुःख दाता उपकारी घना । बंधन मुक्त करता हम तणा ॥
 जो सागरारोप से कर्म छुटाया । उन से क्षण में छुटका थाय ॥
 इस से हर्ष ज्यादा क्या होया । अज्ञानी कर्म बन्धे अरु रोय ॥
 मेरा ज्ञान पाये का सारा । चुकावुं समर्थ हो करी उदार ॥
 यों सम भाव धर परिसह सहे । मन परिणाम जरा नहीं दहे
 उनेही क्षमवन्त जनो सही । कर्म संचित पुंज क्षण में दही ॥

क्षमावन्तो की भावना—मनहर छन्द.

जो को कटु वाक्य कहे । ज्ञानी न कटुक गहे ।
 शब्दार्थ निघा द्यो।क्या इसने उचरीया ॥
 चोर जार रु धुतारा । चुगल चंडाल ठगार ।
 इत्यादि कहे सो कर्म । बहुधा मैने करीया ॥
 यह कहे सो साच कहे । साच को न आंच दहे ॥
 जो यह लगे बुरा तो ते कर्म कर परीया ॥
 कु कर्म पे कोप कर । इसका उपकार वर ।
 बैर विरोध जावे हर । आत्मर्थ सुधरीया ॥ ९ ॥
 वैद को बतावे नाडी । पहिले देता द्रव्य कहाडी ।
 फिर वो कहे तन रोगा । येह ये दुःख कार है ॥
 अरि विन नाडी देखे । द्रव्य भी न ग्रह पेखे ।
 दुर्गुग प्रकट करे । जालम दुःख दातार है ॥

औपध लेइ रांग हरे । त्यों दुर्गुण दूर करे ।
 ज्ञानादिक पथ किया । हो आत्म सुधार है॥
 येही क्षमावंत आचार । आप पर सुख कार ।
 धार अमोल हित धार । होत यों उद्धार है॥१॥
 जो आत्म है तेरी शुद्ध । बुरा कहे को अशुद्ध ।
 चोर जार नीच ठग । तो बुरा न मानीये ।
 सोना पीतल कहे कांय । तोते न पीतल इत्य
 कहने से गुन नहीं जावे । निश्चय मन आनन्द ।
 खोटे कों जो खोटा कहे । तो उसकी आत्म हूँ
 में हूँ चाखा कहे खोटा । तो इसमें क्या कह्ये ।
 यह है अज्ञानी अजान । मैं बनाहु ज्ञान अज्ञ
 इतनाही जो रखू भान । तांही मुख कह्ये
 जैसे कोहूँ केवल ज्ञानी । भव्यन पर हूँ
 कहे भावांतर कहानी । जैसा कर्म है वैसा
 तैसे वैरी वेण जान । सम भाव से प्रियुन
 बुरा मत जरा मान । अर्थ सोचें विद्या
 जार चोर नीच ठग । कुत्ता गधा मर्दा
 चंडालादि योंनी माहीं । जन्म नहिं है
 सोही यह चेतवि ऐसा जान
 वो ऐसा न जन्म पावे । ऐसा कर्म विद्या
 क्षमावंतकेलिये हित वाक्य—इन्द्र

सीधी ले सिधीले बात को चेतन्यासीधीलियां सेसीधी हीया
सीधी अस्सी मह अरि विजयहोयउलटीअस्सीमहहाथकट
तेसे सीधे तीन अक्षर“समाता”हो। जो आदरेतो महासुखपा
तीनों सो उलटे “तामस”होये। सो आदरे दुर्भति ले जाये।
जो कोई तोय बुरा कहेचेतन्य । ताका बुरा तुं रंचन मानो
बुरा मकर का मीठा होवेहे । तासे अनेक बने पकानो ॥
तुं न कहे बुरा का तुं को कय हूं । अपने औगुण आप पिछाने
जिम दुर्गुणको बुरा तुं कहता होता दुर्गुण कातूही हेस्थान
जो कोई बनेही गाली तुमको। जोतुमको बुगिसो सब लागे ।
तो कहेको महे पुरी चीजको। बिना गृहे से क्रोध न आगे ।
जैसीजिसपास तेसीनोहीदेनदे। कहांसो लाये भलीजोतुंमांगे ।
मन्थान संग मन्थान न होयरातो तुम चिंता होये न आगे।
सबही गाली बुरमित जानाहो। गृहिलही उसका अर्थ विचारो
साहो कहे नमनार्ग। सदादर । उत्तम रत्ने सब से बेहैन यारो।
अकर्मि न कर्म हीनकहेहो। मो गुनसिद्ध में ताको दानारो
स्वार्थ जावेनव मुक्ति पावे । योसीधीले गाली होये मुगकागे।

अध्याम 'छापदा'—छाप छंद

नानी कहे छत्र दार । देखती छत्र कीजे ॥
पाने दाम मुक्त सो लेय । फारसी पूगे दाने
दया ला मेट कर मेटा । पांडे में फारसी देखे
कं छत्रद कहे दारानो छत्र सहित सो ले

ऐसेही करजा कर्म का।क्षमा धरी जो चूकावेसही॥
अनंत काल दुःख क्षण में खपा अजरामरपद सोलही

क्षमा का फल—इंद्र विजय छंद.

होकर समर्थ क्षमा जो करते। धन्य २ सबउन्ही कों उचारे ॥
छाँसिंदक्रोडिउपवात सेज्यादाही फल होवेएक गालीसहे ज्यारे
शस्त्र सहन। सहज है शूरका।क्षम. करना होता अति भारे ॥
महा लाभ अचिन्त्यहोतहै।लेले रे चेतन्य अव मत हारे॥१८॥

कथा—वारवी

क्षमाका फल वताने वाली—"खन्धकमुनीकी"

दोहा—अनंत बली महावीरजी।सही ग्वालीयोंकी मार ॥
महावीरके अन्यायीयों । करो उसी प्रकार ॥ १ ॥
गज सुकुमाल भेतारजमुनि । प्रदेसी रु काम देव ॥
आदि बहु क्षमा आदरी । पाये सूख अछेव ॥ २ ॥
क्षमा गुन दर्शान को । वरणू खंधक चरित्र ॥
सुनी गुनी श्रोता वने । करे सो आत्म पावित्र ॥ ६ ॥

चोपाइ

तावत्थी नगरी सुख दाय । 'कन्क केतु, वहां दीपता राय ॥

मलीया राणी, शील गुन खान। तस नंदन 'खंधक, गुन वान
 सुनन्दा, तम कन्या गुन वंत । भाइ बेहन के प्रेम अत्यन्त ॥
 दोनों सर्व कला में हों श्याराधर्मज्ञान भी पढ़े विस्तार ॥५॥
 'सुनन्दा, उप वय में आय । कुंती नगरी, पति को परणाय ॥
 यंधव विरह साले तस मन। निरत्र मन धीर का चिंतन ॥ ६ ॥
 वचन से 'खंधक, जी बैरागी । ग्रहवास रहे ज्यों त्यागी ॥
 नहीं रुचे पंचिंद्री के भोग । लेनेकी इच्छा लगी जोग ॥७॥

दोहा-पुण्यांदय उत्सवसरे । 'धर्मघोष' ऋषिराय ॥

अनेकमुनी संग परिवार। उतरे वाग में आय ॥ ८ ॥

राजा रु खंधक कुमार । ओर सब सुन हर्षाय ॥

सज आये वंदन भनी । प्रणमी बैठे उमाय ॥ ९ ॥

चोपाइ

धर्म देशना 'धर्मघोषजी' करमाय । श्रोतावृन्द सुने चितलाय ॥
 अहो भय्यो! यह जीव अनादा जन्म मरण जग किये अगाध ॥
 घबराया चाया श्रुतन उपावामोही अवक मिल्ते यह दाव ॥
 नर जन्नादि मामग्री करी। श्रुते दुःख में जो यरो शिवपुरी ॥
 जो चुके तो फिर गोदानायावृत्त पम्नाय फिर दुर्लभ थाप
 दन लिये अनेहा चेनामश्री। आपछा दिन आप करो उमंगही
 इत्यादि सुन बांध भविष्य । चेने जो धे मांश नजीक ॥
 यथा शक्ति श्रव कर श्रीगुरुगुरुंदन कर गये निजआगाग ॥

‘लंदक’ कुमर कहे कर नमस्कारामें इच्छु लेवा संयमभार ॥
 मुनि कहे करो शीघ्र यह कामावंदना कर आये कुमरजीधाम ॥
 तात मात से करे अरदास । संयम लेवूं मुनिश्वर पास ॥
 सुणी बचन मावित्र मुरछाय । सावध हो कहे सुन बछवाय
 संयम मार्ग आति दुष्कर कारातुं सुकमाल कैसे निभेगाभार
 कुंवर कहे यों कायर से कहो । क्षत्रीपुत्र को शिक्षा नादहो
 जो दुःख देखे चतुर गति नांयावैते दुःख संयम में नाय ॥
 ऐसे प्रभोतर बहुतही भये । दीक्षाज्ञा नात पिता थक गये ॥
 दीक्षा उत्सव बहुत कराया । शिणगार कुमर शिवका में बैठा
 गायन वाजिंत्र गगन गर्जाया । मय्य बजार हो बाग में आय ॥
 सब संतो को वंदना करी । इशान कुण में रहे हर्ष भरी ॥
 तज शिणगार शिलोचन किया । ताधूँव तज गुरु मुत्तरिया ॥
 सज्जन आज्ञाले गुरु दीक्षा देया । नवे मुनि तबही अभिग्रहलेय
 नास २ तपश्चर्या निरंतर कहां एकल विहार ननत्व परहरं ॥
 विराजे मुनि पंक्तिये जाय । दिनय कर अंगें कंठ कीदाय ॥
 सज्जन वंदी निजत्याने आय । मुनि तर संयमैं आत्म भाय ॥
 दोहा—नातापिता बंधक के । चिने नन नहार ॥

मृनिजी विचरती एकल ॥ कर तर दुष्कर कर ॥

रखे जनार्ण तरु नौ उपजे परितह कोय ॥

रखबला रखूं ताथेन । ज्यो तन ज्ञादोय ॥ २३ ॥

सुभट पांच सो से कहे। सदा रहो मुनि संगत ॥

भेदन जाने मुनिवरा। त्यों सुख सहू उपजात ॥ २४ ॥

चोपाइ

एकला मुनि किया उमहविहार। ज्ञान ध्यान तप संयम प्यार
जन पद फिरत कृती। ग्राम आय। मास खमण तप पूरण थाय ॥
पांच सो सुभट करे विचार। यहां मूनि के धन्योदराज करता।
उपसर्ग करने वाला नहीं कोया। आज अपन कां पुरसत होय ॥
क्षोर मुंडण और करे स्नान। चित्त चहाना यनाये खान पान
यों सब लगे काम मझाराटले नहीं उयो होयन द्वार ॥ २७ ॥
पहिले पहर मुनिकर स्वाध्याय। धर्म ध्यान दुसरें पेहर ध्याय ॥
तीसरे पहर अहार के काज। पासादि प्रति लेखे त्याज ॥ २८ ॥
कुंती नगरी में किया प्रवेश। इयां मुमती पंखत खेलें मुनेश ॥
तप सं दूर्यल दृवा अतिही शरीर। म्भइरहुई चजे स्वेव सरेनी
कोमल पग तपे भूमी दिणंद। आये नीचे जहां महेल नरिं
उसी वन्द राजा अरु राजान। चोपट खेलें बेटे गोकर्षण ॥
मुनन्दाने देव तप मुनि गया। प्याग महोदर चितमें आय ॥
ऐसा कट सहना दंगा मृत योग। आन्यों में वर्यन लगात यनीर
आथूं देव राजा आश्रय पाय ॥ इयं समय गंगा कैसे आय ॥
देव नाग जाने मुनि गाय एक दम नृप कां कोप चहाय ॥

इस मोडेका राणी पर प्रेम । इस वक्त भंग किया मुझ क्षेम ॥
 तत्क्षण उतर मेहल नीचे आय । शक्त हुकम नफर सेफरमाय
 इस मोड्या को धके लगाया। पकड ले जावो मशाण के मांय ॥
 सब तन की उतारो खाला। शरम दयानहीं करना हाल ॥
 नफर सो आज्ञा शीस चड़ाया। पकड मुनिवर को धक्का लगाय
 क्षमासागर पूछे मुनिराज । क्यों भाइ यह करो तुम काज ॥
 राय आज्ञा मुनि को सुनाया। मुनि सुनी जरा नहीं धवराय ॥
 धैर्यधर कहे में चलुं तुमलार । तुम कहो उत्तस्थान मझार
 नफर संग मुनि मशानमें आया। आलोइ निन्दी शुद्धात्मकराय
 पादोपगमन संथारा ठाय । उभे मेरु ज्यों ध्यान लगाय ॥
 नफर पातणे किये तैयार । झगनगते तीक्ष्ण तत्त धार ॥
 जैसे पटीया छोले सुतार । तैसे मुनिका चर्म रहे उतार ॥
 चरड २ टूटे नशा जाल । तरड २ रक्त बहे प्रनाल ॥
 अत्यन्त प्रज्वल वेदना प्रगटाय। मुनि जरा नतीसाट क्ताय
 चिन्ते क्षपिरे जीव परवश्य । नरकमें दुःख देखे वे कस्य ॥
 इससे अनन्त गुनी अनन्तवार । सकाम निर्जरा नहुइ लगार
 बन्ध भोगे विन छूटका नाया। बंधे उदय भये संशयमलाय ॥
 अलभ्य लाभ प्राप्तभया यह । हर्षके ऋणदे फारकनी लेह
 अखंड अविनाशी आत्म मुझ । छेद भेद न सकें कोई तुझ
 विनाशीक का विनाशही होय । लान निर्जरा तूं क्यों खोय
 किंचित् दुःखमे सुख अनन्त । ले उलसी यह मोका तन

ऐसे धर्म शुरु ध्यान ध्याय । सब तन चरम रहित जबथा
 द्रव्य आभरण टला तन चर्माभाव आभरण टले तब क
 केवल ज्ञानले छोडा शरीर । ताक्षिण पहाँचे जग पेले त
 महा संकोट करी क्षमा अपार । धन्यः२ मुनि तुमे वारम्ब
 परमोत्कृष्ट क्षमा परमोत्कृष्ट सुखापाये क्षमा फल सबसेमू
 दोहा—मुभट पांचसो ता समे । करे मनमें यों विचार
 मुनिश्वरजी गये गोचरी । आज लगी बहु बार
 वृंदण घाले पूर विषे । नृप दासी मिली तास
 ओलखी हर्षी पूछे तस । क्यों आये क्या तला
 उनने कही मुनि की कथा । आये गाम मझार
 मिलने नहीं हम दुंदते । जाने तो कहो समाच

चोपादं

दासी दोड गइ राणीजी पासभाइ मुनि आये करीअरदा
 गोचरी आपे गये किस जायावृंद मुभट मिले नहीं उनतां
 राणी तब राजाको चेनाय । मुन राजा मन अति मुरसा
 आंखोंने छूटी आंश्रुधार । राणी पूछकर अग्रह अपार ।
 वीनक बात राजा तब कही । मुन राणी मुरछी पड गइ
 छिट २ कन्ना छियो अनयं । मुजरीर मुनि हने अकथं
 राणी रोदन कर अमगल । पांच सो मुभट जाने हाल
 अंगनुरहो कहे निकल राजानाविन गृह हने मुनिके प्रा

तुझे हमभी मरजायँ । यों रहे पांच सोही गर्जाय ॥
छिपगया मेहल मझारालोक मिल तस समजाय अपार
सुने तो खेदाश्चर्य पाय । धिक्कारे सब नृप के तांय ॥
गहार नहीं टाली टलंता ऐसा जान सब समता धरंत ॥ ५९

दोहा—पुण्योदये पधारीये । तहां केवली भगवान ॥
पुरीससेण नृपादिके । वंदे मुनि ढिग आन ॥ ६० ॥
नृप पूछे प्रकासीये । विनं गुन्हे किम जगाद्रेष ॥
अनर्थ मेने बडां कियां । हने शाले मुनियेश ॥ ६१ ॥

चोपाइ

मुनिवर कहेसुनो नृपादिसर्वकर्म महा बली मत करो गर्व ॥
वसंत पूर प्राजापाल भूपाला तस नंदन सर्व कलामें कूशाला ॥
एकदा बैठा सभा मझार । माली काचरा लादिया उत्तवार ॥
कौशलता ए तस कोरा कुंवार । गिर निकाला छाल के बहार ॥
जमा तस छाल लोकों को बताय । कहो गिरहे के नहीं इसमांय
लोक कहे यह अखंड कुमार । कुमर खोल खाली किया जहार ॥
व शभा देख अनि आश्चर्य पाय । कौशल्यता कुमर कीसरसाय
॥ न में फुले कुमर उत्तवार कर्म । निकाजिन बंधन डार ॥
गरा कोड भव भ्रमण करी । शाला बेनोइ यहां अवतरी ॥
काचराका बैर प्रगट भया । विन गुन्हेद्रेष तुम मने गद्या ॥ ६६ ॥

लिया वैर तें समतासे चुकाय । जाके विराजे मोक्षके मांय ॥
 सहजे कर्म यों बंधे जीव । भोगवते दुःख पाय अतीव ॥६७॥
 भुन कथा भव्य प्रतियोधपाय । कर्म बंधन तोड़न उपाय ॥
 पूरीपसेण नृप सूनन्दा संग।पांचसोसुभटभीजैवैराग्यरंग ॥
 लिया संयम खूब करणी करी।मृक्ति गय क्षमा धर्मआचरी ॥
 और भी अनेक ली क्षमाधार । यह कथा कहीग्रंथानुसार ॥

दांहा—धन्य २ खंधक ऋपिश्वरा । अखंड क्षमाधार ॥

भाप तिरे बहू तारीये । बार २ नमस्कार ॥ ७० ॥

अहो सब आरम सुखेज्जु ओ।धारोक्षमा इस पर ॥

तो खंड ऋषीकी परे।होवोगे अजर अमर ॥७१॥

निज पर आरम सुखवरन । क्रोध पापोद्धार ॥

ऋषि अमोलख ने रचा।यह छद्दा अधिकार ॥७२॥

परम पुण्य श्री कहान जी ऋषीजी महाराज के संप्रदायके

बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी रचित

अयोद्धार कथागार का क्रोध पाप उद्धार नामें

छद्दा मंजिल समाप्तम्





मंजिल सातवा - "मान पापोद्धार"

पूर्वविभाग - "अभिमान"

दोहा- जोकरे कठिण स्वभावकों । सोही मान कहाय ॥
 मान बसे नानही बिषे । मानही ज्ञान नशाय ॥ १ ॥
 ज्ञानविना तत्त्व न लखे । तत्त्वविन जलन होय ॥
 जलनविना शिवरद नहीं । यों नानही सर्व बीगोय ॥ २ ॥
 सुत्र भगवती पंचवे । शतैक उद्देशे नांय ॥
 गुणनिष्पन्न नाम नानके । कथे तोयहां कथाय ॥ ३ ॥

नानके नाम - चौपाइ छंद

'नांने' - 'नान', 'नंह' - 'नदय्ये' उक्ते, 'देष्य' - 'डरे', 'थंन' - 'नननेपके' ॥
 'गंवे' - 'गर्व', 'अंतुक्सेम' - 'उत्कर्ष' । 'पर्यांगोय' - 'गनिदामिहप' ॥
 'उकोने' - 'उत्कृष्ट' आपकी ज्ञाने । 'उज्जयंतुत्ताने' - 'उत्तमताहने'
 'दुंदोम' - 'नंह' दुष्ट परिज्ञान । यह दश कहे नानके नाम ॥ ५ ॥

मानके ८ प्रकार-चोपाइछंद

मान आठ प्रकार में आया। शास्त्र में है सो देता बताय ॥
 जोति कूलका करे अभिमान । मात पिता मेरे पुण्यवान ॥६॥
 मेंहुं क्षसी विप्र शेट पटेल । यों अकड कर चलता गेल ॥
 कोन है बलवंत मेरे समान । रूप तेज का मेंहुं निधान ॥७॥
 जहां जायूं तहां लाभ कमायूं । खाली फिर कहां से नहीं आवूं
 विद्यावंत में ज्ञान भंडारी । सबही खुशामद करे हमारी ॥
 तपश्चर्या हमने करी पंनरी । कोन बरोबरी करता मेरी ॥
 मेरे बहुत है दासी परिवार । ऋद्धि सिद्धि मेरे हुकम मेंसार ॥
 मेरे दिन न होवे किसका काज । में ही रखता सबकी लाज ॥
 मेरा ही है सबी कों आधार । और विचारै सब लाचार ॥१०॥
 यों मगरूरी के बचन उचारै । हित शिक्षा किसकी नहीं धारै ॥
 देव गुरु को नमन नहीं करे । यह लक्षण अभिमान अनुसरै ॥
 दोहा—चार प्रकार अभिमान के । मुनियों चतुरसुजान ॥
 घटे उतनाही घटा देया । उतनाही मुख खान ॥१२॥

चोपाइ-

अनन्ता वन्या पत्यस्य स्थन । जाव जीव लग सो धरे दंभ
 अप्रत्याज्ञान झट स्थन जान । बारह मास रहे अभिमान ॥
 गत्यन्यान धन स्थन साय । चोमासी नंतर नम जाय ॥

ज्वल नृण को स्पंन वत्तान। नहीने पीछे नमे गुन वान ॥
 यह चारों चारी गति शतारा चारों उच्च गुन घात करतार
 तम्यक्त्व देरप्रत साधुभाचारा। मोक्षका चोथारोंके द्वार ॥५॥
 येता चारों का जान स्वभाव। घटे उतना घटावे कु भाव ॥
 उत ना ही आत्म अधिक मुख पाया। येही मुखक सत्वाउपाय

नान के दुगुण मनहर छंद.

नानी नान नाहे ठके । अयुक्त वयण दके ।
 हूइ अनहुइ केइ । बातों तो बनावे हे ॥
 नगारा के जैसा पाला । गुन गन करडोला ॥
 नानका तो स्थान खाली । बहुत कर पावे हे ॥
 पेल प्रगट होय । अज्ञान कर सोय ॥
 नेट को गनावे । बहुत मन शरनावे हे ॥
 येता अनिमान । स्वल्प मुख बहुत दुःख स्थान ।
 वोही अज्ञानी नही । नान को घटावे हे ॥ १३ ॥
 नद कहा नान को । तो लागे हेवी नद लन ॥
 छक चडे नान को तो । शुद्धि बुद्धि नाशे हे ॥
 धन धन नारी दून । जन्मा जीवन लून ।
 तुच्छ जान नृण वन । गनावे कु आन हे
 शक्ति आगे स्वच्छ । नो पहिले जेहे लन ॥
 और न आत्म तो । हर वन्त मान हे ।

मरे मारे केड़ तांड़ । अनर्थ अधिक निपाड़ ।
 आगे कौं कुगति मांही । पड़े यम फासे है ॥ १८
 मानौ मछराल । भूपाल छकी मद व्याल ।
 विकराल सेना सज । अरी को न शाये है ॥
 आवे नहीं डाव तो । तें घाव सन्मुख खाय ।
 प्राण तजे रण में नफिगी घर आवे है ॥
 शैठ चड मान कौं । सजावे खूब जान कौं ।
 नहीं देख्यन खजानकौं । ओसर में खरचावे है ॥
 भीतिडा गीनडा रय । कहनी ऐसी जन केय ।
 मान के मडोडे मर । कट्टंय रांवावे है ॥ १९ ॥

मानका पराक्रम-इन्द्रविजय छंद.

कहा पराक्रमवरणुं में मानको, ज्ञान को जोर इसीने न शा
 यों २ तर्षी जर्षी खर्षी नर, मान में छक के धर्मगमायो ॥
 ज्ञानी ध्यानी मानी प्राणी बन । कहे सद्बोध ही पक्ष थपाय
 १ गुनि पडे मान के फंद में, छोड संयम अमीरी चित च
 , के भोगी योगी बने । तज मान शिर पग नंगे किं
 चालकी चले वरदावली संग, चामर झापट डल लिये
 १ पायकृत्तिनोके, लाष्टी के लेस्ते होय रिये हैं ॥

मान के छंद में
 मानकी आन

बड़ाव २ गिराय यह माना फुलाय २ निचोय लिये हैं ॥
 मोनाय २ लगाय तर्कव्यागनाय २ के झुरे हिये हैं ॥
 मान की तान अमान सनाना ॥ दोड २ अजान न पार गिये हैं ॥
 नानीही जान अमान लहे अरु ॥ नानीजन अपदोष करे हैं ॥
 नानी को पानी उतरे अरु नानी के सब सुख बिछरे हैं ॥
 नानी सब को खारा लगे अरु नानी बड के नवि पडे हैं ॥
 जान सृजान विचित्र यौनान को तोही विचिंत नही करे हैं ॥
 मान बस लडे नरन बाहुबल ॥ ध्यान धरा बर्यज्ञान न पाये ॥
 महा क्रुद्धि विद्या धर रावगा ॥ नरा कौन्व कुल नाश कराये ॥
 भ्रौणिक मान से नरक गतिलडा ॥ भ्रौणिक नृत्य अकाले पाये ॥
 अन्य कथा क्या कथुं अनेलक ॥ मान ने ऐसे के मानगनाये ॥

कथा—तेरवी

मान के फल वताने माली—“शंभूचक्रनीकी”

दोहा—शंभु चक्री मान ने । डूबे समुद्र नझार ॥

पहोचे सातनी नरक ने । वरणु लोअधिचार ॥१॥

चोपाड

शंभु देवता स्वर्ग नझार । चक्रा कर ने डून प्रकार ॥

बोनों कहे करो धर्म गुरु परिक्षाजो द्रढ धर्मों नि ॥
 वो धर्म सत्य करें अंगी काराऐसा कर चाले निरधारा ॥
 जैनी कहे भेरे नौतम गुरु । तेरे ज्यून की परिक्षा कह ॥
 आये मध्य लोक रूप बनायापहिले तो जैनी कों चलाय
 मिथुला नगरी 'पद्मरथ'राय,तुल के दिक्षित मार्गें जाय
 वैक्रय रूप शिवमति करी।तीनों दिशा की जीवों से भरी
 चौधी दिशी ऊभी करी शूलामुनि अचंभ देख ए मूल
 प्राणांत नहीं प्राण हणायायों सोची मुनिशुल पें जाय
 भेदत कंटक छूटे रक्त धारा।तोहुं न कम्पे जीव उगार ॥
 उभय अमर हर्षानंद पाया।दुःख हर बंदी मुनिवर जाय
 दोहा-शिवमती कहे मम गुरु।चउवेद पाठी महंत ॥
 ताकी परिक्षा कीजीये । ते कदापि न चलंत ॥

चोपाइ

'मृगकोष्ठपूर, बाहिर आय । तपोवने बहु तपस्वी देखाय
 'जमदग्नी, तापन सिग्दार । ज्ञान तप जप में श्रेयकार
 जटों दाढ़ी मूँछ भुँलगीआय । ध्यानाल्ल वेडे कृश काय
 चिड़ा चिटी रूपदे।मौनकिया।आ घुमे जटोमचिड़ा।कहे विष
 हिमाचल में जाकर आना।चिडी कहे क्यों घान बनाता
 मुझे छंडकं दूमरी नार । नहीं जाने दूं तुझे कोइ वार
 चिड़ा कह गो ब्रह्म शर्पी घान ।नआवूं तो लगो ए पा

ब्रह्मचरु भक्ष रेणुका किया । क्षत्ती चरु वेनकाज रखलिया
हस्तिनापुर 'अनंतवीर्य, रायावहा दिया दुसरा चरु जाय ॥
दोनों के दोपूत्र तय भये । तापस पुत्र 'राम' नाम ठये ॥
अनंत वीर्य दिया कृत वीर्य नाम । दोनों सुखेबधेनिजधाम ।
कलापढे दोनों हुवे परवीन । सुखे रमे पुण्य फल चीन ॥२४॥

दोहा—एकदा एक विद्या घर । पडा विस्ती में आय ॥

राम सहायता तस करी । ते तत्र संतुष्ट थाय ॥२५॥

फरसी मंल पढाय के । खेचर गया निज घर ॥

राम मंत्र साधनकरी । फरसू राम बजे नर ॥२६॥

चोपाइ

एकदा रेणुका वेन घर गइ । वेन्योइ संग लुब्ध सो भइ ॥
पुल प्रसव्या तापस जानासखेद पुत्र त्रिया घर आन ॥२७॥
फरसुराम देख क्रोधे भराय । अनन्त वीर्य नृप माराजाय ॥
कर्त वीर्य तत्र राजा भया । यमदग्नि तापस मारी बैर लथा ॥
फरसुराम कृत वीर्य को माराहस्तिनापुर का राज आपधारा
कृत वीर्य की राणी डर पाय । गुप्त तापस आश्र में आय ॥
दया कर तापस भोंयरे में छिपायापुल प्रसुतो वहां उसेधाय ॥

ग्रह जन्मासंभूमनामदियावैरी से डर गुप्तदोनोंरिया ॥

दोहा—फरसुराम कोषा अति । करु क्षत्ती संहार ॥

क्षत्ती स्थाने फरसी तसामल के दिव्याकार ॥२९॥

जानी क्षती तत्त हने । वने बहु क्षती विप्र ॥ ॐ
सूत गले में देख केर । उसको छोड़े क्षिप्र ॥ ३२ ॥

चोपाइ

एकदा तापस आश्रमआय । फरसुराम फरसी भल काय ॥
पूछे तापस सें क्षती यहां कोइ।कहे तापस ग्रहस्थे हम होइ
संतोष धर निज राज मेंआया।मारे क्षतियों की दाढेग्रहाय॥
थाल भरी छींके पर धरी।निरस्त्रत हर्ष हीयो जाय भरी ॥
एकदा तहां निमित्तिक आया । फरसुराम पूछे मान भराय ॥
जागमेंकोइ मूझे मारन हार । होवे तों यहां करो उचार ॥
कहे निमित्तिक सूनराजान । इतना मत कर मन में गुमान।
जो नर बैठेगा सिंहासन आय । दाढोंकी तब खीर बनजाय ॥
उसे खावे वो तुझ कों मारे । फरसु राम वचन अवधार ॥
वहां पर दीने पहेरे तब ठाई । आतेही मूझको देना चेताई ॥

दोहा—गिरि बैताड कूशलपुरे । मेघानंद नृपाल ॥

निमित्तिक सें पूछीया । पद्म श्री कंत हाल ॥३८॥

संभुत चक्रवर्तीकी । यह होगी पट नार

कहां संभूम प्रकाशिय । उन कहीं ज्ञान विस्तार ॥

संभूम पूछे माना मे बात । पृथ्वी सब इतनी ही है मान ॥

माना कहे पृथ्वी बहनेगी । निकलना नहीं सतावेगेवरी ॥

* अर्थात् वहुत से शर्तियों जनों के धारक देव ज्ञान है

नहीं मानी देखन बाहिर धाया। मेघानंद भी उसवक्त आया ॥
 हर्षी उभय मिले आपसमांही। रानीसें सब धात जताइ ॥
 संभूत कहे मुझे अरी अतावो । मार के पूरुं मेरो उमावो ॥
 खेचर हस्तिना पूर ले आये । देख सिंहासन आरुढ थाये ॥
 क्षुधित थाल में खीर निहाली । सो भोगवे पहेरायत भाली ॥
 फरसुराम से कहे समाचारावो दोडा मारन उसीवार ॥४३॥
 खेचर ने तब अरीवताया । संभूम थाल का चक्र बनाया ॥
 फरसुराम को नरक पठाया । अपने पिता का राज सोपाया ॥
 मेघानन्द कन्या परनाइ । धट खंड ऋद्धि संभूम पाइ ॥
 अभिमान अति मन में छाया। सब विप्रोंको मार गिराया ॥
 कहे छुःखन्द सब चक्री साधे । में चक्र वर्त्ति करुं कुछ जावे ॥
 चले सातमा साधन खंड । सब कहे भलानहीं अति घमंड ॥
 धातकी खंड साधनकरी तैयारी। चरम रत्न नाव समुद्र में डारी ॥
 सब कहे यह न हुइ न होवे । देव मानव खंडे २ जांवे ॥
 चली नाव तब संभूम कहे । देखो मेरे पुण्य देव दुरही रहे ॥
 देव कहे नवकार मंत्र प्रभाव । तिररहीहे समुद्र में नांव ॥
 अभीमानी नवकार घिस मिटाया। पुण्य खुटे सुरमन पलटाया ॥
 हजार सुर चरम रत्न के सहाइ। एक में न उठावुं तो क्या थाइ ॥
 यों हजार ही देव छिटकाइ। नांव तत्क्षण पाताल सिधाइ ॥
 द्रव्ये भावे पातलसो पाया। संभूम सातमी नरक सिधाया ॥
 दोहा—चक्री जेस पूण्यात्मकी । अभिमाने गति येह ॥
 तो क्या कहू में अन्यकी । तजी मान सुख गेह ॥



मंजिल सातवां - मान पापोद्धार

उत्तरविभाग-“नम्रता”

दोहा-मर्दन करे जो मानका । धरे नम्रता अंग ॥
 ज्ञानादि सुख संपत्ति । तजे न बाको मंग ॥ १ ॥
 बिया दृढ़ि मोहणी । नम्रता है नहा मंत्र ॥
 धार सार रे आल तूं । जो मेरे स्वतंत्र ॥ २ ॥

चोपाइ

अष्ट प्रकार मान जयआय । जानी मोचे नडेन उषाय ॥
 उंचता लही उंचता कर । नगा मोचने मन गुन हर ॥३॥
 जानी नड जय व्यापे मन । नव गेना कंजे चिंतन ॥
 लजवांगनी जातिके नाय उच मोच रिकर तु आय ॥
 नम्रति मन हो महाराज उचता मोच नरक गनिजाय ॥

ब्राह्मण श्रेष्ठ पवित्र कहलाय । होइ चंडालादि विष्टापन्न
 चूकशादि नीच कुल पायो । अनेक तांत को तू कहलाय
 कुलका मद जो कभी मनआव । केनो बल कहे तुज में पावे
 दंशैलक्षं अष्टापद बल जे ताइ । बल देव एक में बल पाइ
 दुना वासुदेव चक्रवर्ती दुना । तीर्थकर में बल है अनंगुना ।
 ऐसे २ महाबली सिधाये । तुझ बल कौन गिनतीमें आवे ।
 रूप मद कहा करे प्राणी । दुर्गंधी देह अशुचो की खानी ।
 पांच क्रोड झाजेग रांगतन में भरे होवे क्षिणमें वियोग ।
 लाभ बत हो आवे गर्व । तो क्या तुझ को मिला है सर्व ॥
 नरपति सुरपती होगये जगमांडातेरा लाभ कौन गिनतीमें आवे ।
 एश्वर्य ता बहुत कुटुंब की पायो । बहुत नर रहे हुकम के मां
 याको गर्व जो मनकभी आइ । तो रावण गति देखले भाइ ।
 सूत्र पाठी कवीपद पाया । बादी विजय हो गर्व जो आया ।
 तो देखोगणघर आदि ज्ञानी । चउदह पूर्व त्रिपदे चित्तठानी ।
 तपन्तराय टूटतप होइ । तपस्वी धज मद जो करेकाइ ।
 तो देखे श्रीमहवीर श्रीमती । साहायारा वर्ष एक पक्ष जामी ।
 १) फक्त मासग्यारे उन्नीसदिने । अहमकिया अभिगृहकीने ।
 कहे तुझसे किन्ता तपस्या होवे । करी गर्वियों तपफल खोवे ।
 योविचार आठों मदवारो । कंग करणी नम्रता धारो ।
 प्राप्त वस्तु लेखे लगाडा । थोड़ेमें होवे सेवा पारो ॥ १५ ॥

नम्रताकेलिये बोध—मनहरछंद

अहोमेरे मन । तांवे मिल्यो ऊंचपनघन ।
 तासुं होय म पनन । यहकथन मेरो मानीये ॥
 जातें कुल बेल रूप । लाभ विद्या तैंप अनूप ॥
 ऐश्वर्य ता पाइ । यहतोपुण्य के प्रमानीये ॥
 जो याको गर्व करे । ऊंचा चड नीचा पड़े ॥
 बनी वक्त को धिगाडे । ऐसा कैसा है अज्ञानीये ॥
 तजे अभी मान सो तो । पावे है उंचज स्थान ॥
 अमोल ऐसे ज्ञान वान । मन माहें आनीयें ॥ १२ ॥
 जो जो ऋद्धि पाइ भाइ । नुन्या धिक नहोधाइ ॥
 लिपी लुपी नहीगहाइ । देखत प्रत्यक्षेर ॥
 ओप नहीं माने चडे । ओप मान सैं उतरे ॥
 जान बूज बुग करे । भ्रष्ट भये लक्षरे ॥
 अरे भोले प्राणी जाणी । मत कर हायें द्वार्पा
 ले ले लाभ बने नेतो । लगा के सु भक्षर ।
 येही प्रार्त्ता का नार । अमोल हिन देखे नार
 पाइ सामग्री सुधार । होजा अब दक्षर
 मान तजे ज्ञान होय । ज्ञान वान जान नार
 जान हिना हिन जाय । हिन नहीं नार
 माधे पर हिन मोय । नुजों का नार

पाखंड विगोय । मिला संत पर चांय है ॥
 विनय धर्म मूल । विनय सर्व अनुकूल ॥
 उंचता का लक्षण सो । विनय सं चोयेर ॥
 ऐसे भले गुन जान । करो विनय तजो मान ॥
 हो अमोल गुन खान । वर शिक्षा मोयेर ॥ १८ ॥

नम्रता के गुण—इंद्र विजय छंद.

मान चाहीयेतो मान मती करो । मान तजेसो मानही
 कठिण धातूकी कीमत कमती है । नरमसो मूंगे भाव ।
 कठिण पत्थरसो ठोकरमें गुड़ानम्र धूल उड़ । उंची जावे
 नीचापन उंच पदका दाता है । सुज्ञ अमोल नमी जोर है ।
 मोटापना जन चावत है पन, मोटेपनमें दुःख है भारी ॥
 चंद्र सूर्यको ग्रहण लगत है । ताराही न्यारा रहे है सदा ।
 पूर नदीमें झाड बहीजाय, तृण नमें सो रहे स्वस्थारी ॥
 कीडीको सकर हाथीको अंकुश, अमोल लघुपन है सुबकारी ॥

कथा—चउदवी

विनयके फल बताने वाली—“नंदीपेणजीकी”

दाहा मान तजी विनयकी । तिरिये जीव अनंत ।
 तोपन नंदीपेण का । कहूं रशिक विरतंत ॥ १ ॥

चोपाइ

मगध देशमें नन्दीग्राम । प्रिय राष्ट्र ठाकुर अभिगम ॥
 तहां सोमल विप्र विद्यावन्त । तस सोमीलानारी प्रियकंत
 नन्दीपेण पुत्र तस थया । गुणवन्तो कुरूपे दुभया ॥
 लघुवय मावित्र मरण जोपाय । मामा के घर जा कर रहाया ३।
 प्रकृति गरीब कार्य में दक्ष । वयण मधुर सब काम में लक्ष ॥
 मामा को प्यारो सो घणो । काम प्यारो मत चान को गणो ॥ ४ ॥
 ज्यों ज्यों वयमें मोटा होय । त्यों त्यों रूप विद्रूप भयो सोय ॥
 श्याम वदन मुख मोटे दाँत । चपटी नाक चीभडी आंखा ५
 तुरल बाल चाल भीवंक । उर उन्नत कर पग कृपन्त ॥
 इस लिये इच्छे नहीं कोइ नार । सो मन में दुःख धरे अपार ६
 मामो कहेरे फीकर मत कर । मुझ सात पुत्री एक तूं वर ॥
 सातों सुणी कोपी कहे ताता । नंदी को दोतो करें हन दात ७
 सुनी नन्दी पेण आति अति धरे । विश्वास दे मामा कहेइसतरं
 भागांत राय भाइ तुझ अति । यहां हमारी नहीं चाले मति ८
 नन्दी निज आत्मा को देधिकार गयो पहाड पर मरणो धार ॥
 झंपा पात करता थो तहां । ध्यानस्त मुनिवर देखे तहां ॥ ९ ॥
 नमन कर बैठो आनस पास । पूछें कर्म गति करी प्रकाश ॥
 मुनि कहं भोला यों क्यों कर । नर भव चिन्तामणी व्यर्थ हरे ॥
 सुर भाग विलसवार अनंत । तो यहां क्या बर्सा आवंत ॥

पुद्गल भोग तज कर निज भोग । जिससे मिटे अनादि रोग ॥
 इत्यादि सुन मुनि उपदेश । हृदय ठरसा धर्म की रेश ॥
 तजी ममत्व लिया मंजम धार । विनय से ज्ञान गुण स्वीकार
 अभि प्र० दुकर किया धारन । करूं भक्ति मुनि की एक मन
 लघु जेष्ठ का भेदन धरूं । बृद्ध रोगीकी सेवा तमाचरूं ॥ १३ ॥
 गिल्याणी मुनि सुंणुतहां जाय । औपधोपचार करूं हित लाय ॥
 यों सब को साता उप जाय । विनय से कीर्ती विश्व फैलाय ॥
 दोहा—एकदा प्रथम स्वर्ग में । शकरेन्द्र सपरि वार ॥
 सुधर्मी शभा विराजीये । इस तरे करे उचार ॥ १५ ॥
 अहो भाग्य मध्य लोक के । नन्दी पेण सम साध ॥
 महा विनीत नम्रा त्मा । अहंता ममता तज बाध ॥ १६ ॥

चोपाइ

दो मिथ्यात्वी देव उस वार । थज्जा नहीं इन्द्र धचन लगाय ॥
 गुरु शिष्य दो साधु रूप धारारत्नपुरी के उतरे बाहार ॥ १७ ॥
 अति वृद्ध गुरु रांग अती सार । जिने ग्राम के बाहिर बैसार
 शिष्य आया नन्दी पेण पास । कोपातुर यों करे प्रकाश ॥
 रे विनीत ! सुखे अहार तूं करे । मुझ गुरु रोग से अति तडफडे ॥
 उनकी भक्ति तूतो करे नाय । फोकट नाम विनीत धराय ॥ १८ ॥
 अहार तज तत्क्षण उठ नन्दी पेण । करबंदणा कहे नमीमधुवेण
 खमो अपराध में जाणानाय । कृपा कर देवो गुरु जी बताय ॥ १९ ॥

पानी याचने घरो घर फिरे । देव असूजतो जहां तहां करे ॥
 तो भी मुनि वर लब्धि प्रभाव । लेपाणी गुरुजीडिग आय ॥
 गुरु कोपों दे ओगेकी मार । आप लुल २ करे नमस्कार ॥
 अपराध खमाइ करे अंग शुद्ध । वार २ वो करे अशुद्ध २२।
 दुग्ध अति तामे प्रगटाय । पण मुनि नाके न शल्य चडाय ॥
 नम्रहो कह पधारो उपा श्रये । औष धोष चार करु सुखधये
 गुरु कहे दुष्ट मुझ से नचलाय । उठाइ आप खंधे पे बैठाय ॥
 मार्ग क्रमतां तन पर विष्टा करे । ओगो मरि कहें बोंकोंन्योचले
 नंदीपेण लावेकरुणा मन । महा मुनिवर के महा वेदन ॥
 ने पापी सुख दे सकूं नाय । व्यर्थ विनीत मुझ नाम कहाय ।
 लेजा स्थानक करुं उपचार । होय शांति तोमुझ सफलजमार
 ऐसी भावना भावते जाय । वार वार अपराध खमाय ॥२३॥
 सुख सेजा पर उन्हें पोडाया । वस्त्र अंग सब शुद्ध कराया ॥
 औषधादां करे कर मन स्थिर । सहें परि सह नहीं खन्डे घोर ।
 देवी देव त्वेदा धर्य पाय । नाहक सताये महा मुनि राय ॥
 गुरु शिष्य रूप अदृश्य करे । दीव्य देव रूप दोनों धरी ॥२४॥
 लृली २ करे वार नमस्कार । स्वमे आपराध अहां गुनआगार
 इन्द्र आपकें किये गुन ग्राम । हन नहीं माने परिक्षा कान ॥
 देवा पांर सह किया अपराध । मो नव स्वमे अहां गुनअगाध
 धन्य आपका सफल अवतार । नर्मी देव गंध न्वर्ग मझार ॥
 इत्यादि रचना नयन निहार । मुनि नहीं लाय जग अहंकार

संयम पाला-वर्षा-वैरहंजार । ज्ञान ध्यान दुष्कर तप धा
 अंत अवसर अनमन आदरी । रहे समाधी चित में धरी
 दर्शनार्थ चक्रवर्ति आये । श्री देवी को साथे सो लाये ।
 मोह बश हो मुनिकियानियानास्त्री बलभ होवुं जगम्य
 महा शुक्र स्वर्ग में उपने मुनि।अनोपम सुख भोग धी
 यादव कुल में हुवे वसुदेव । कृष्ण जनक जाने सब हे
 बहोत्तर हजार परणी वहां नारा।अनोपम सुख भोगे सं
 आगे मोक्ष जावेंगे यह सही।अधिकार ढाल सागर के म
 विजय गुन दर्शाने काम । कथा कथी संक्षेप इस ठाम ।

दोहा-धन्य २ नंदिपेणजी । निर्भीमाना विनीत

सुख संपत्तीपाये सहु । चतुर वरो यह रीत ॥२॥

निज पर आत्म सुख वर्नामान पाप उद्धार ।

ऋषि अमोलक ने रचा।यह सतम् अधिकार ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराजके संप्रदा

याल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलख ऋषिजी रचित

अघोद्वार कथागार का मान पाप उद्धार नामे

सप्तममंजिल समाप्तम्





मंजिल आठवां—माया पापोद्धार

पृथ्विभाग—“कपट”

देहा-नाय न्ही अनर्थ कर । नाय उगारीजान ॥
यह शल्य नहा विक रान् होशनों नव दुःख नान ॥
पंचन अंग पंचन शनक । पंचन उव्हो नाय ॥
नाया नान वन्नाणीये । गुन निपन्न अये सहाय ॥
चोपाइ

नाया-नायगेइ, उव्होउपाधी। दियेईविकटवलेवेवक सार्थ
नहोनाहन, गुण-नानिको। केके-कर्म, कुपो-रूपहोइ ॥
नोविहोईकेवोसिहिलमुन्नाअमएगायीछियोवगुनदुन्ना
इहोया-मुत्त, वंचगया-उगाडा। नायकेगेनानकडाइ ॥ २ ॥
शिन शल्य केइ जिनगाय। नाया प्रयनशान्यगिनाय ॥ ५ ॥
नायादारी को जिन केइ चोगदन्ना उन्नगंधन मुव ओर ॥
ये नहोनन्ना नानवगाय नपयाकनाचोर कहाय ॥

तन वृद्ध वयवृद्ध गुणवृद्ध नाय । वय चोर जो वृद्ध वजाय ।
नीच जाती उत्तम रूप सठाण । ऊंचवजेसरूप चोरजाण ।
अथवा रूपे साधु साधुकार । चोर वो जो सेवे अनाचार ।
अचार लोकोंमें उत्तम धताय । गुप्तकु-कर्मों आचारचोरथाय ।
वगल । भक्ति करे जो भक्ताभाव चार गुन मोहमा फल ।
यह पांच चोरी महान् दुःख कार । मर उपजे ॥ १० ॥
नीच देव मिथ्यात्मीकुरूप । एलक तिर्यच होय आगे स्वरूप ।
नरकादि दुर्गति मझार । भ्रमणकरे सो अनंत संसार ॥ १० ॥

दोहा—एसे मायाचारी के फल हे बहु विकट ॥

चार प्रकार याके कहे घटे ज्यों घटा कपट ॥ ११ ॥

चोपाइ

अनन्तानु बन्धी ज्यों वांशकी गांठा । उम्मार भर नहीं छोड़े आ ।
अप्रत्या स्यानी मीठे का श्रंगावारह मांस रहे कपटकादंग ।
प्रत्यास्यानी चलते बेलनीत । चार मांस लग रहे विपरीत ।
संजवल माया पतंग रंग जाना रखे कपट एक पक्ष ।
चारों चारों गतिमें लेजाया चारों चार गुन घात कराय ।
ज्यों घटावे ज्यों ही सुखकार । सारांश येही हीये धार ॥ १५ ॥

कपट के फल—मनहर छंद

नर करे माया तो । मरी के सोनारी धाय ।

नारी करी माया मरी नपुंसक थावे है ॥
 नपुंसक दगाकार पशु में उप जे मर ।
 पशु करे कपट सो विह्वेन्द्री कहलावे है ।
 विह्वेन्द्रीकपट करी । एकेन्द्री में जावे मरी ॥
 एकेन्द्री कपट वश निगोदे उपजावे है
 ऐसी नीच मायाचारी ॥ नीचासे नीचो उतारी
 नीच नीचा होनाचहावे सो माया पोसावेहैं ॥ १६ ॥
 माया वन्तो का तो मनासदाकरे हैं भ्रमण
 रखे जाने कोइ जान । मान म्हारों जावसी ॥
 मुख को छीपावे झूटी बातों को बनावे ।
 केइ परपंच रचावे । जाने म्हारो दाव फावसी ॥
 तोभी कोइ दिन । प्रगटे पाप होवे खिन्न ॥
 वर्षों को जमाइ पेट । क्षीण में गमावसी ॥
 पीछे क्रोडोंही उपाव । आवे नहीं गये भाव ॥
 दगावाज लाज गमा । आखीर पस्तावसी ॥ १५ ॥
 बने साहुकार करे मोटे २ व्यापार ।
 मन में सो दगा धार । चोरीही करत हैं ॥
 खोटे तोले माप । खोटे खत में जवाप ॥
 बनी पोशाख जो साप । कहा पाप से डरत है ॥
 दगा से गमाइ फरतीन करी छपनाइ ॥
 न्यायार्धाश आगे सोतो कांपे यर धरन हैं ॥

पंदे लोहा पेरी, जात भरी लाज को वेपेही ।
 एते पुन जन आगे कृपित राडते हैं ॥ १८ ॥
 पंदे भाग्य जन पन पंदे कन्क नारी मन ॥
 ला नो जन को टगन यम भक्ति की रयां ।
 दीके लमा को नदार । मोरी २ गाळ डार ।
 मदा मनुज ललहार । नेह पुरान वयां ने
 मान याद को पागार । लेके भय नाय भार ॥
 मर पुन अर्पित बार । सं प्रगट नव योने हैं ।
 लो पुन को नमारे । फिर पाल्युह केलां सा
 एव भागे भाग्य मर कर यम भार लो । हैं ॥

१२ विजय अंश

रात को छाया पड़ी मनु जाया । रात रात नारी वने
 जालो नारी को नहि मारी । गुनी गुनी मया मे रने
 नारि को लल रहत रहत साह । एत जन पर जन पालेवने
 निज लोके निज भावाही भावा है । नने भावा नने वने नने
 नारी को नारी आनन दुखी । नारी को नारी को नारी
 नारी को नारी नारी नारी । नारी को नारी नारी नारी
 नारी को नारी नारी नारी । नारी को नारी नारी नारी
 नारी को नारी नारी नारी । नारी को नारी नारी नारी
 नारी को नारी नारी नारी । नारी को नारी नारी नारी
 नारी को नारी नारी नारी । नारी को नारी नारी नारी

गोले भरमावत देखे ये भूत को जोहरीयों पातसो मूल्य न पावे ॥
हारी वहा माया जग मांया। मायाही होय के गलो कटावे ॥

कथा-पंदरवी

माया का फल वातने वाली "पाताल सुंदरी की"
दोहा-इस माया प्रभाव से । दुःखी हुवे हैं अनन्त ॥
पाताल सुंदरी कपट का । कथूं यहां विरतन्त ॥ १ ॥

चोपाइ

विशालापुर नगरी में जान । जयवंत तेन नृप गुन खान ॥
एकदा बैठे शभा मझार । गर्व धरी यों करै उचार ॥ २ ॥
मेरे से कोई कला अजान । रही होवे तो करो वयान ॥
सब कहे आप होजी सब जान । एक कहे त्रिया चरित्र असमान
तेतो पूर्ण जाने नहीं कोय । नृगति सुन कर आश्चर्य होय ॥
देखे त्रिया के चरित्र अनेक । तती तात्त मिली नहीं एक
उतरा सब नारी से नन । एक उराव कीया चिंतन ॥
पाताल घर एक ऊंडा बनाय । एकही द्वार उसके सो रखाय
जन्म ती सूरूप कन्या मंगाय । तागेह में तत्त पालन कराय ॥
धाय मात्त एक पोषण रखी । विन बोले पोये शणगारे तर्की ॥
सुंदर नन अवलोकी काय । पाताल सुंदरी नाम तत्त टाय ॥
यावन वंती दृडमपरण्या नांय । इच्छित सुखार्थिल तेन संगन राय
दोहा-मर्णा दीप का शेट नव । अनंग देव अनंग सार ॥

किराणा चउ चिव लई । करन आया व्यापार ॥८॥
 पनई निजहुया राय का । करे इच्छित रोजगार ॥
 द्रव्य उगाजन बहु किय । गिर्य जाव नृप द्वार ॥ ९ ॥

चोपाइ

कान पनाहा गणिह बहां रहे । छत्र चमर राजातस वण ॥
 अनन देव नम द्रव्य बहु देया । निज वसमें कर सुख मिलसेवा ॥
 एरुहा शेट गणिह मं पूछेन । नृप का निज अभिन क्यों रग ॥
 किमीह दिन शना में आय । क्षणिक ठेहर पीछे चलें जाय ॥
 पानाळ मुदगी चर्ग चेश्या कदी । नृप मन हस सदा उत्तदिगारी ॥
 मुनः शेट का मन मोहाय । पानाळ मुदरी देखन बहाय ॥१॥
 निज देग के छागीगर पोछाय । निज घर में मसुंग म्बोराय ॥
 नानमें आया पानाळ मुदगी पास । जय गये नृप शनामें काम ॥
 तब आया शेट मुदगी पास । देखे करवया अनि कृत्ताम ॥
 किना कना तशमन मात । यह नेलो मुदग वम केमे थाय ॥
 मुदगी टने देख द्यो अनि । नम्रग निटो गों उदु हो प्रोने ॥
 मुन मे अ लमरी होर लमाय । घरा नम दोनो लटकाय ॥
 गवा जव शना ने जय । मुदगी अनग काट्ये पोछाय ॥
 यो निज इच्छित किटम मुख । नदन छाट जाने मनुष्य ॥२॥
 एरुहा मुदगी शेट म दह । नम दमन हः मुन मन मुंद ॥
 देना किम नृप नृप च जोलाय । नम अ इति मरद मर

मैं पुरस्फु जीमावूं राजा भणी।देखो कला तुम नारी तर्णी॥
 जो न करो सुझ वचन प्रमाण । तो मैं तुमारे हरंगी प्राण ॥
 सुनी वचन ये शेठ थरराय । सर्प छिलुंदर न्याय मिलाय ॥
 बंदर गारुडी हुकम आदरे । त्यों शेठ सुंदरी कहनी करे॥१९॥
 शेठ राय से करी अरदास । जीमावा लायो निजघर तास ॥
 पाताल सुंदरी सूरंगसे आय । राजाकुं पास बैठ जीमाय ॥
 राजा देख आति विस्मय पाय । ये यहां कैसे आईचलाय ॥
 के पेसीही है शेठकी नारासाक्षात् पाताल मुंदरीअनुहार ॥
 यों चकडोले चढा नरेश । भोजन की रुची नहींलिवलेश ॥
 तब सा सुंदरी कहे कर जोडा।क्या रही हैं इस अहार में खोड
 राज भोजन आप नित्य भोक्ताय। वणिक घर का कैसे भाय॥
 सुणी वचन नृपअति विस्मायाअन रुचता कुछ भोजनखाया॥
 घृत छांदा गुप्त डाला तत परी।सुंदरी लखी हसी मनमेंजरी
 जीमीराय शीघ्र गये मेहल माय । सुंदरीभी अंगताफ कराय ॥
 शीघ्र आ सुनी गइ नींद घेगयादेखी नृप मन बैन विरलाय॥
 पाताल सुंदरी हपीं अतिचिताकला नेगी तब तिद्ध खचित॥
 दोहा—एकदा सुंदरी चिंतवे । विन गुन्हें पडीमें केद ॥
 शिक्षा करं राजा भणी । पुनं नरी उन्मद॥ २६ ॥

चोपाट

अनंग ने कहे चालो निज देश।मे तुम साथही रहूंगी हमेश ॥

पहुँचाने राय समुद्र लग आयाऐसा करो तुम पुक्त उपाय
 वायुवेग वाहण सज करो । काम फते करें जरा न डरो
 डरतो वाणीयें कहे सो करे । राजा पास जाकर ऊचरे
 मेरे पिताश्रीमुझ बोलाय । आप दर्शन की पडे अंतराय
 जैसा माम मेरोबढायो आपतैसी एक कृपा कराअहोबाय
 समुद्र लग मुझ दो पहुँचाय। यह उपकार न कभी भुलाय।
 महीपतीमानी शेठ की वाताशेठ सब अपनी सजाइ सजात
 राजासेठ और पातालसुंदरी । चाल एकही वाहन चडी
 देखी सुंदर राय अतिविस्माय। अरे यहक्या ॥ प्रेमला ॥
 जीमनके दीन की वात याद करी। पीछामानको लियासंवरी
 सुंदरी नमन करी तब कहे । आप पसाय हमसुख सबलहे
 उपकार आपका हमपर अगाधाखमना हमारा सब अपराध
 सेवक की याद कभी कीजीये । ऐसे वचन सुंदरी बहूकिये
 राजासेठ दोनों मुग्ध हो रहे । नारी कपट काअंत कोलहे
 सयजन समुद्र कंठलग आया। वायुवेग शीघ्रवाहन सजाय
 शेठ सुंदरी नृप को नमीकरी। तत्क्षणगये वाहनमें चडी
 आगे जाँने सुंदरी चनायाउवट चलो ज्यों घतानहीं धाय
 डरके मारे उलटही चले । सुंदरी मन हर्ष अति फले
 नारी चरित्र हैअपरम्पार । देखा इसका आगे व्यभिचार

दाहा-मुकंद नामे एक था । अनंग देव लघु भ्रात

गायन मुनके सुंदरी । ते साथे लब्धधात ॥ ३९ ॥

अनंग देवको न्हाखीयो । कपट करीजल मांय ॥
देखी सुकंठ डर्यो अति । तास हुकम में रहाय ॥

चोपाइ

अनंगदेव कर काष्ठज आया।सिंहलद्वीप उतरा मुनिपाया ॥
लीनी दीक्षा ध्यान लगाया । दैव जोग वाहणभी तदांश्राया
सुकंठ पाताल सुंदरी संग लेइ । वनक्रीडा को तहां लैंवेन्द्र ।
देख मुनि सुकंठ शरमाया । कर्ग वंदना अपराध क्षमाया
लीना संयम करणी कीनी । दोनों गये स्वर्ग मृन्दि द्विप
पाताल सुंदरी भगी वन मझार । तस्कर ग्रही कर्ग निज
इगावाज जाणी व्यभिचारीणी।वेचन भणीवजार
देखा लेगइ रुप निहाली । मार मार नम्र कला
अभक्षभख्यो कियो मदिरापान।कृष्ट गंग प्रच्छिन्न
पका देइ तस घरसे निकाली।हुइ निश्चिन्त
दोहा-जयवंत सेणजी नरपति ।
तत्क्षण आये मेहल में।मृंदगे
चौकस चउदिश में कर्ग।
देखी स्त्री चरित को।वेगल
दिक्षा ली कर्णीकर्ग ।
सान में दिन केवल

: चोपांइ :

'भो भो भव्यो! सुणो मुझवीती।' कपट कलासे कैसी फजी
 पाताल सुंदरी पाली भूमी मांही। कूड कपट तस कोन पडा
 मुझ देखत अनंगदेवसाथे गहा। सुकंठ की फिर नारी भइ
 'हैं। नो संयम ले गति सुधारी। तस्कर पत्नी हुइ मुझ प्या
 'आगे वैद्याका कर्म कमाया। पाप बांदगी फल प्रगंटाया
 'कृष्ट रोग से तन सडी याइ। होभिकारणी दुःख मु...
 संतापे मरी नरक सिधाइ। यमदेव तस गाडीं सहाइ ॥
 मोलाद पूतला उष्ण बनाइ। ता संग ताको भोग कर
 भोगी नरक का दुःख अपारो। दुःख भुक्तेगी अनंत
 माया कपट पेसा दुःख कारो। प्रत्यक्ष देखे सो किये उ
 सुनकर भव्य माया छिटकाइ। सो दोनों भव सुख पाप
 जयवंत सनजी मुक्ति पाया। कथा अनुसार
 दोहा—पाताल सुंदरी माया करी। पाइ अनंत भव दु
 योंजाणी माया नजो। ज्यों मिले इच्छित सुख ॥५





मंजिल आठवा—“मायापापो द्वार”

उत्तर विभाग—“सरलता”

दोहा—वाह्य अभ्यन्तर एकता । शुद्धवृत्ति के धार ॥

सोही सरल माया तजी । तस खुले शिवद्वार ॥१॥

ॐ चोपाइ ॐ

सरल पनेमें सम्यक्त्व रही । सरल शिव मार्ग शुद्ध पाले सही ॥

ने शल्योत्रती ” सूत्रही कहे । सरल ही व्रत धारक सदेहे ॥

सरल ही हैं जिनाइ धार । सरल ही होते भव सिंधु पार ॥

सरल पना ही सुख दे सार । धर धार जीव सरलता धार ॥

सरलता के गुन—मनहर छंद.

कष्ट निवारी, जिन सरलता धारी ।

होवो नाधूया संतारी । सुखी जगके मझारिहे ॥

शगल डेर न लगारि। छिपे नहीं कहां जवामारी ॥

होय जो उचारि, नभा माहे नाटुकारिहे ॥

जम पगति भारी । माने नव गुण करी ।

न नो क न लचारि । अन्य कन लचारिहे ।

대한민국 헌법

대한민국 헌법 제1조 (국호)

대한민국은 민주공화국이다. 대한민국의 최고권력은 국민에게 있다.

대한민국 헌법 제2조 (주권)

대한민국은 영구불변의 단일민족이다. 대한민국의 주권은 국민에게 있고, 모든 권력은 국민으로부터 나온다. 대한민국은 단일민족이다. 대한민국의 주권은 국민에게 있고, 모든 권력은 국민으로부터 나온다.

대한민국 헌법 제3조 (국기)

대한민국의 국기는 다음을 상징한다. (국기, 국장, 국새)

대한민국의 국기는 다음을 상징한다. (국기, 국장, 국새)

대한민국의 국기는 다음을 상징한다. (국기, 국장, 국새)

대한민국 헌법 제4조

대한민국은 민주공화국이다. 대한민국의 최고권력은 국민에게 있다. 대한민국은 민주공화국이다. 대한민국의 최고권력은 국민에게 있다.

विमल जिनका पुत्र गुनवंत । रूप कला गुन से सोहंत ॥३॥
 पढीया धर्मशास्त्र सुचंग । धर्मकरण मन अति उमंग ॥
 संपत्ती पायो दान पसाय । यों चिंती दान अधिक कराय ॥
 समल नाम एक वाणिक पुन । कपटी लोभी निर्लज दूत ॥
 दैव जोग विमल के संग । प्रीति जमी उत्तर्का अंतरंग ॥५॥
 विमल को दान करतो देख । समल मन दुःख धरे विशेष ॥
 कहे अधिक नहीं कीजे दान । धन के साथ गमावोगे मान ॥
 विमल कहे दान से मान बढे । धन के साथ सुखभीचडे ॥
 समल चुगली धन्नादिग करौ । पुत्र तुमारे धन को अरी ॥
 विमल से धन्ना शेठ यों कहे । अति कष्टे हम धन संग्रहे ॥
 तूं तो सहज बाबा कों लुंटाय । करो कमाइ खबरज धाय ॥
 विमल सुणियों तात वचन । प्रणमी तात चला तत्क्षण ॥
 समल भी उस के साथे भया । ग्राम छोड बहूत दूर गया ॥
 समल कहे देख मित्त मुझवातानहीं मानी तो दुःख तूं पात ॥
 चलो पीछा समजावुं शेठ । छोड दान सूखे घर में बैठ ॥
 विमल कहे विदेशे धन कमाय । घर आ कहंगा दानसवाय ॥
 पुण्य जोगे धनीका पुत्र भयो । घर छोडा पन पूण्य न गयो
 समल कहे धर्म सेधेंदुःख लियो । तोभीधर्महट तुझ नहींगयो
 विमल कहे धर्मतदा सुखदायाइस नैं संशय किंचित्नाय ॥
 समल कहे जो तुं मंग माने नाय । तो पुछें आगे गान में जाय ।
 जो कहे लाके पाप से सुख । तो क्या देगा बोल इष्ट मुख ॥

तेरे पास का द्रव्य सब लहूँ । विमल कह भले देवुंगा सहु ॥
 आगे एक कुमाम में आय । मूढ बहुत बैठे एक ठाय ॥१४॥
 समल पूछे सब जन सत्य कहो ॥ धर्मसे सुख के पाप से लहो ॥
 सब कहे पाप किये पावेहें सुख । धर्मी भीकारी पावेहें दुःख ॥
 समल हर्षी कहे वे सब धन । विमल निकाल दिया वस्त्रभूषण ॥
 आगे बली समल कहे भाइ । प्रत्यक्ष धर्म से तू दुःख पाइ ॥
 अब भी छोड़ धर्म का पक्ष । चाले घर होवो जरा दक्ष ॥
 विमल कहे धर्म सदा सुखकारा ॥ पूर्व पाप यह दुःख दातार ॥
 समल कहे तेरे कहे क्या होय । अन्य कहे तो बतावो मोय ॥
 चलो बली पूछे आगे गामाजो कहे पाप से सुख तमाम ॥
 तो क्या देवंगा मुझे इनाम । विमल कहे मुझ ढिग क्या वाम ॥
 समल कहे झूठ जिसकी साख । उसकी तुरत फोड़ना आँख ॥
 सरल विमल यह मानी बात । आगे और एक कुमाम आत ॥
 पूछे सब पापसे सुख बताय । धर्म से दुःख प्रत्यक्ष जनाय ॥
 दान दिये से धन होवे नाश । शील पाले कुलका है विनाश ॥
 तपसे तन दुर्बल हो जाय । भाव से संसार चलता नाय ॥
 विमल कहे यह मिथ्या वचन । दान दिया तो पाये धन ॥
 शील से कुल तपसे नन सुख । सुभाव धरेसे जावे दुःख ॥
 पण माने नहीं मूढ लगार । समल हर्षी मन में अपार ॥
 वन में आये कहे फाँड़ुँ आँखा । विमल कहे तूझ मन जिमराख ॥

पार्याये फोडीया विमलका नेत्राकुवार्मे धक्कांदया तल ॥
विमल वृक्ष धरलटका तहां।कर्म फल प्राप्तये दुःख लहा ॥

दोहा—समल विमल संताप के।हृदय आनंद पाय ॥

कपट से चपट मिले तुरतापाप फल प्रगटाय ॥

चोरमिली जरलूटीयो । मारीअतीहीमार ॥

अंग भंग आइ पढ्यो । एक गाम मझार ॥ २५ ॥

मांगी खावे टुकडा । करा कुछ उपचार ॥

अवसरल विमलका । कहूं आगे अधीकार ॥ २६ ॥

चोपाइ

विमलमन समरे नवकार । अहोजिनराज थारों आधार ॥

निशासमय दीयक्षतहां आय । वृक्षारुढ हो वातोंवनाय ॥

वात २ में कुरापात भइ । एक एक को अवगन कइ ॥

तुझ सम दुष्ट और कोइ नाय।विचारी राजकन्याकोसताय

अंधी करी पडीरहे मुरछाय । यह पाप भोगे कहांजाय ॥

में जानू हूं तेरा उपाय । कोइ कूप पीपल पत्त लाय ॥

आँखमें आंजे तो खुले पट । धूनी दिये तूं भोगे चट ॥

दूसरा कहे तूं पापी अति।तेरे कुटुंब को तूं धानी ॥ ३० ॥

क्रोड निन्याणवे द्रव्य दवाय । एकला रहे हवेली माय ॥

उष्ण सरसव तेल छाने उसजागा।तोतुं वहांसे जावे भाग॥

लडते दोनों यक्ष भगे उस वारा।विमल दोनोंवात लीधार ।

पत्र तोड़ रस अमी में मिलाया आखो आंजे सुधरे नैन ताँप
 औपधी संग्रही बाहिर आयायज्ञ कहा उस गाम में जाय ॥
 ढंढेरा पिटता सुण्या जहांयाराज पूत्री का दूःख जो गमाय ॥
 उसको राजा अर्ध राज देय । कन्याभी परणावे तेय ॥
 सुनी कुमर पढहे ते ग्रहों । भट चट ले राज ढिग गयो ॥
 राजा उसे कुमरी ढग लाय । विमल यक्ष को तब चेताय ॥
 चुप चाप शीघ्र जावो अब भाइनहीं तो बहुत बिटबनापाइ
 मस्ती करे ते माने नहीं याता तब पती ग्रही विमलहाथ ॥
 अमी मिला कुमरीके नेत्र लगाय । यक्ष चिलाइ तब भगजाय
 नेत्र खुले कुमरी हुइ होंशार । राजादि तब हर्षे अपार ॥
 कुंवरी परणाइ दिया आधार राजा इच्छित सुख विलसे ते सात्र
 हवेली में उक्ष तेल छिड़काया उसी यक्ष को दिया भगाय ॥
 नैन्याणु क्रोड धन कर निज हान उसी जगइ में सुखे रहात ॥
 करामती सय विमल को जान । राजा प्रजा देवे अतीमान ॥
 सरलतासे सय पाये अगमा अब समल का सुनिये काम ॥

दोहा—समल सबल शरीर हो । इसही पुर में आय ॥

भिकारी के वेश में । मांगी नन निभाय ॥ ३८ ॥

चांपाइ

विमल फिन्न निकले पुरमांय । समलको देख के आश्चर्य लाय
 आदर दे निज मंग ले जाया वस्त्रभूषण नस अंग सजाय ॥

मल एकान्त में पूछेयाताकहो विमल ऋद्धि किम पात ॥
 वेमल वीतक सब वात सुनाय । ऋद्धीमिली भाइ तुझ पसाय ॥
 दोहा—कूटिल न तजे कूटिलता । करतें क्रोड उपकार ॥
 जिनके पडे स्वभाव जो । मरे भीजावे लार ॥४३॥

चोपाइ

विमल किसकाम को चोहिरजायासमलजीमनभाभीडिगआय
 पुरसा थाल नहीं आस जो लहेराजपुत्री तव नामीकहे ॥
 क्या भोजनमें दौप जनायादेवर क्यों नहींगवावे इसतांय ॥
 कपटी कहे कहेतां दुःखलहूं।सच्चीवात में कैसेकहूं ॥ ४५ ॥
 कुंवरी कहे डरोमतजरा । समाचार कहदो सबखरा ॥
 समलकहे यह ढेडकापुत्र।किस विध अहार करं में अन्न ॥
 जातछिपावण मुझ आदरकरे । कहो में डूबूकैसी तरे ॥
 राजपुत्री मुरझाइ सुनीअति । अरे भृष्टकरीमुझे दुर्मति ॥
 नृपति कों जा किया समाचार।नृपति भी कोपा अपार ॥
 मारने को गुप्त सुभटवैठाय । भाट हने जमाइ बोलाय ॥
 विमल लगेथे जरूरी काम । समलसे कहे जावो नृपधाम ॥
 सुभटविमल को आयोजाण । दी नखार की हननेप्राण ॥
 समल भागा चुकाकेधन । विमलके आगे कही नखवान ॥
 विमल कोपित हो अन्यमजाय।श्वसुर को दून हाथ चेनाय ॥
 दोहा— विनागुन्हें मुझ मारने । रचा गुप्त परपंच ॥

क्षत्रीहोतो रनमे लडो । डरनवीआणोरंच ॥ ५१ ॥

चोपाइ

सचीव पूछे नृपसेकर जोड । यह क्याजुलमअहो महीमोड ।
 नृप कही पुत्रीकही बात । मंत्री कहे में निर्णयकरुं नाथ ।
 गुप्त प्रधान विमल कने आय । रायपुत्री को साथहीलाय ।
 समल कही सो बात जनाय । सुनी समल डरके भागजाय ।
 दोहा—समल धुर्त चितचिंतवे । निशीरही कुपकेमांय ।
 करामात कोइ करलगे।तोविमल ने देवुंभगाय ॥
 विमल डाला उस कूपमें । पडाआपभी आय ॥
 राते आये देवता । कहे आपसे नरमाय ॥ ५५ ॥
 फूट भली नहीं भाइयों । दोनों पाये दुःख ॥
 अरी रहे इस कूपमें । पुरो इस का मुख ॥ ५६ ॥
 कूप पूराजब देवता । दवे समलजी माय ॥
 दगा किसीका नहीं सगा । सोचोदृष्टी लगाय ॥

चोपाइ

समल भगा जानी सबबातासची के मनका वैमविरलात ।
 संतोपे चुपचेठे निजठाम । सरलता जोगसे हुवेसुकाम ।
 विमल समल की चौकसकराय।किसी स्थान नहीं पत्ता पाय ।
 तब धुद्धिसे करा विचार । कुप से लिया सोसब निकार ।

सब से कहा सच्चाविरतंत । दगावाज यों दुःख पावंत ॥
 अपने सज्जन को लिये बोलाया सबको परतीत हूइ सवाय ॥
 दान धर्म विमल अधिको करो वाद्य अभ्यन्तर एकसो संचरे ॥
 आयुष्य अन्त पायो स्वर्ग । ऐसे क्योनी वरे अपवर्ग ॥

दोहा— थोताइस दृष्टान्तसे । समजो सरलता फल ॥
 तजी कपट निर्मलवनो । सुखपावो ज्यों विमल ॥६२॥

निज पर आत्म सुखवरन । माया पापउद्धार ॥
 ऋषिअमोलख ने रचा । यहअष्टम अधिकार ॥६३॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजकी

स्मप्रदायके बालब्रह्मचारी मुनीश्री

अमोलख ऋषीजी महाराज रचित

अपोद्धार कथागार ग्रंथका

माया पाप उद्धारनामे

अष्टम मंजिल

समाप्तम्





मंजिल नवमा—“लोभ पापोद्धार”

पूर्वविभाग—“लोभ”

दोहा—धोभन आवे लोभका । सोही लोभ हे पाप
 बडे विद्रोहों यों कहे । लोभ पाप का बाप
 लोभ तृष्णा वस पडे । वो नहीं पावे सुख
 लोभ समा इस जगत् में । और नहीं है दुःख ॥
 ‘क्रोध’ ‘कपाल’ ‘मानज’ गले । ‘माया’ ‘पेटमे’ रेप
 लोभ वसे सब अंगमें । सबसे बडा है एय ॥ १
 विवहा पक्षेनी सूखके । शतक उद्देशे पंच ॥
 लोभ के नाम जेवरणवे । सो यहा कथुंमरंच ॥

चांपाइ

‘लांहे; लोभ, ‘इच्छा’, ‘मूछाँ जान । ‘कंखाँ, वांछा, ‘गोही; म’
 ‘तण्हा; तृष्णाभिज्जाद्रव्य ध्यानाभिज्जअभीलापा करे पुन
 , आसा सेंगया आसा करे । ‘पर्येणया; प्रार्थन अनुसरे ॥

तालपैणया'लालसा अति।'कामासौ'भोगासा'जीवा'सारति।
 रणासा'मरणसे नहीं डरे। 'नाहरै'गे'अनुराग अतिकरे ॥
 ३ सोल हनाम लोभ के कहे। भगवती सूत्र से सं गृहे ॥ १९ ॥
 णांग सूत्रके मझार। लोभके कहे हैं चार प्रकार ॥
 नैतानु बन्धी किरमजी रंग। प्राणांते न करे द्रव्य भंग
 प्रिया ख्यान खजर का लेप। वार मांस रहे लोभ का चप
 त्या ख्यानी कीचड मेल। चार मांस में लोभ दे टेल ॥ १९ ॥
 जल लोभ पतंगरंगजान। क्षण में समत्व घटे भगवान ॥
 चारों चउगति में ले जाय। जो कमी करे सोही सुखपाय

लोभसे दुःख-मनहर छंद.

तृष्णा की लाय बडी। लगी है जगत् मांय
 कभीन बुजाय जो। खिलाय जग सारो है।
 करे सब भूमीस्वामी। कोश भरे रत्न नामी।
 तोहू नहीं भिटे खामी। अगेही विचारो है ॥
 धन सब लगे हाथ। होवे सब पशु नाथ
 तोहू मन चावे आथ। मिले परिवारो है
 लाभ जैसे वधे लोभ। अवे नहीं कभी धोभ।
 अहां अमोल लोभ अनि सदा दुःख कारो है
 एक वालो दश चावे। दश धणी शैंत भावे।
 सहस्र लख कोड अरब। बडे विस्तारो है

मंजिल नयमां-लोभ पापोजार

भट तलार होने सपे । तलार दीवानो जपे ॥
 दीवान इच्छे राजपद । कैसे होवे भूहारो है
 राजा लूटे अन्य राज । तांही नहीं सीजे
 यों स्वपी के जन्म रतन हारत गीयारो है ॥
 लाभ जैसे धपे लोभ । आवे नहीं कभी
 अहो ! अमोल लोभ । अति दुःख कारो है ॥
 लोभ के प्रेरेही जीव । भोगत हैं अतिरीव ।
 भूख प्यास शीत ताप सही तन सुखावे है ॥
 उन्नत गिरी पे चडे ऊँडी खाइ में ऊतरे
 घसे रन वन मांय । द्रव्यही बधावे है ॥
 करे नीचन की सेव । पूजे पत्थर के देव
 एक धनही की हेव । लछी घर आवे है
 उदधी उलंघ जाय । गांठडीयों बांधलाय ।
 तोही न धपाय यों सण्णाही सतावे है ॥ ११

इन्द्र विजय छंद

राज महाराज लडे सण्णा वस । अनेक नरों का नाश क
 शाहा शाहाके विरोधही होवत । आसामी एककीएक फ
 पटेल पटेल के जूद्ध मचे । जाने मेरेही खेत में ज्यादापा
 जहां पेखो तहां शगडे हैं लोभके लोभी नर कैसे सुख
 लोभ करी राजा राज गमा कर । दास पना भोगव रहे

भ उल्लंघी कुल मर्याद को । महाजन नीच के काम यहैं ॥
 भ के वश भयं है साधु यती । मान गमाइ विपती सहैं ॥
 च को नीच किये इस लोभने । तोहुं लोभ न तज दहैं ॥
 स्थल से आये मालव दक्खन लक्खन पत कंगाल भयें ॥
 द्याधिप होवन नित्य खप ॥ फिरे गामडे शिरपे पोट लयें ॥
 को खावन परन जीरन । नीचन को आश्रय गये हैं ॥
 राजन कर्म करे महायमसे । देखो लोभ अकृत्य किये हैं ॥
 गी को लागी तृष्णा की आगी ॥ भांगी त्यागन आन उल्लंघे ॥
 गे चेला चेली सुख पावेंगे । नहिं सूधारे ते निज दंगे ॥
 के थान धरे पोट बांधके । पातर के गट लेइ के दंगे ॥
 ज यह रीत हटे दातारही बारंवार साधु तब मंगे १७ ॥
 कहूं लोभकी गति, गहन है । बडे २ मुनि कों लोभ डिगावे ॥
 ति महा कष्ट परिणाम अपूर्व । चढी गुणस्थान इग्यारमें जावे ॥
 हां भी गुप्त रहे यह शत्रुखेच । के पहिले लाय गिरावे ॥
 न महंतों की ऐसी दशा करे । तो अन्य की गति कहा कथावे ॥

कथा—सतरवी

लोभकेदुर्गुन बताने वाली—कोणीक राजाकी
 राज महाराजा मुनि गुनि । लोभ से पाये कष्ट
 वरणन् किंवद्वृता कहं । दिखता यह स्पष्ट ॥ १ ॥

पण जनमन समजाववा । कोणिक राय गरिब
घरणु सूत्र अनुसार से । लोभ का दर्शन चित्र ।

चोपाइ

मगधदेश राजमहीजान । श्रृणिक महमांडलिक राजान
राणीचेलना सहुन खान । महाबुद्धिवंत अभय प्रधान
एकतापस रहे पुरकेवार । मास २ अंतरकरे आहार
राय आमंत्रण पारणाका किया । धर आकर वो भूलीगया
दूसरी महीना तापसकीया । स्मरण हूवेराय दुःखलिया
दूसरीवार फिर नोतादिया । राजकाज लग वितर भया
तीजा मास तप तपसीकिया । राजापर आसुरत्त सोभया
पापी मुझे मारना चहाय । मुझकरणीफले माह उस्तताय
नियाणाकर पुत्रपनेऊपना । चेलणालिया सिंहकास्वपना
तीसरे महीने दोहला आया । पतिकालिज मांसखाना चाहाय
अभयबुद्धिसे डांहलापुसीया । नवमास गयेसेपुत्रभया
दुष्टजानदिया उकरंडाल । कूर्कट अंगुली चाचीउसकाल
जानी श्रृणिक लायाउठाय । अंगुलि चुंसी जेहेर गमाय
राणीसे कहेकीजे संभाल । कोणिक नामरायकर प्रतिपाद
दूसराकुमार चेलनाकेभया । विहल कुंवर नाम उसकाठय
राजाराणीका उसपरप्रेम । आठ कन्यापरणाइ देरेम ।
बैकचूल अठार सरहार । विहल कूं दियाराणीधर प्यार
सीचानक गंधदायी दियाराजाना । विहलरह उसमेसुखमा ।

दोहा—पूर्व वैरोदय भया । चिते कोणिक कुमार
 कव नृप मरे कव राज लूं । है तरुण इस वार
 मारी सकुं नहीं एकला । वश किये दश भ्रात
 राज हिस्सा देना किया । सोभी मानी बात १३

चोपाइ

एकदा कोणिक अवसर पाया श्रौणिक को काष्ठ पींजरे फसाय
 आप बैठे गादीपर आय । दुवाइ मुलक में दीनी फिराय ॥
 श भाइ को दत्त भाग दिया । भाग डग्यरवा आप रखलिया ।
 न सहश्र गज गाजी रथ आया तिनकोटी पायक पाय ॥
 ग वंदन मात के जाय । चेलना बैठी मुख फेराय ॥
 हे कोणिक पुत्र पाया राजा माता क्यों तुम हुइ नाराज ॥
 वलणा कहे तूं मुख सही । अरी पूजे सजन दुःखे दही ॥
 नम का विरतंत दिया सुनाया वैर खपागया नरनाय ॥१७॥
 कहे मासे अभी छोड़ुं तात । लेकर फरसी शीघ्र सोजात ॥
 णिक देख जाना मारण आया जेहर मुद्रा खा मरण सोपाय
 आप मरा देख दुःखी अतिभयो मृत्यु कार्य नीती सम किये ॥
 वलणा दिक्षा लीनी जाम । कोणिक का जग हुवा चदनाम
 ओड राजग्रही चंपापुरी गहाया विहलकुमर भाइ साथ ही आय
 रहते दोनों सुख के सांया लोभ कामनी दुःख उपजाया ॥२०॥
 दोहा—विमल कुमार हार्थ चडोले अने उगे लार ॥

नित्य आइ गंगा सर । रमे सो इच्छा चार ॥२१॥
 कोणिक राणी पद्मावती । निसुनी यह वीर तंत ॥
 लोभ जग्यो सो लेन को।पतिसे अर्ज करंत ॥२२॥

चोपाइ

पाटवी हाथी राजा ढिग रहे । बंक चूल हार राणीही गहे ।
 सो तो विलसे विहल कुमारा।वदनाम जिससे होत अपार ॥
 कहे कोणिक तात मात दिया।राज भाग नहीं उसका किया
 वोभी है राजा का कुमार । सुणी राणी प्रजली उसवार ॥
 हार हाथी तो लेवो सोइ । जो पुरुषा तन तुम में होइ ॥
 कोणिक कहे अभी लेवुं मंगाया।भट भेजा विहल को घोला
 हार हाथी मांगे उस पास । वो तब नरमी करे अरदास ॥
 मात तात मुझ हाथ से दिया।राज भाग आपेन नहीं किया ॥
 राज का हिस्सा दे यह लहे । नहीं तो चुप चाप सुखे रहो ॥
 हट कर कोणिक मांग दौय । विहल घर आवे चूप होय ॥
 यहाँ रहने में नहीं जाना सार।गये विशालाना नाकेदार ॥
 घात चेताइ सुख से रहे ॥ कोणिक यह खबर जब लहे ॥
 क्रोधातुर हो दूत पठाय । मेरे भाइ कों देना भेजाय ॥
 दूत चेडाराज कों कहे समाचारा।विचार के उत्तर दे उसवार
 दोनों भाइ मुझ एक समान । परन्तु न्याय से चले राजान ॥
 राज देकर हार हाथी लहे । विना काम भ्रान मत दहो ॥३०॥

गुण कोणिक क्रोधातुर होय । दश भाइ साथे ले सोय ॥

गज सैन्या रणांगण आय । चेडा पे समाचार पठाय ॥

दोहा—चेडा राय सुनी चितवे । फोज बहुत उत्सपास ॥

धर्मी मित्रकी सहाय से । करुं अन्याय का नाश ॥

राय अठारे बोलाइया । सो सत्य सहायक थाय ॥

दोनों फोजों सजहुइ । महा भारत मचाय ॥ ३३ ॥

चोपाइ

चेडाराय की सैन्या माय । सात वन सहश्र गज रथ हय थाय

पायक हुवे सतावन क्रोड । शकठ वाह संग्राम जमा प्रोड ॥ ३४ ॥

कोणिक राय की सैना माय । तैंतीस सहश्र गज रथ हय थाय

तैंतीस कोटी पायक सहो । गरुड वाह संग्रामज भइ ॥ ३५ ॥

कोणिक तरफ से काली कुमार । चेडा सामे हुवा उत्तवार ॥

चेडा राय श्रावक व्रत धार । विन गुन्हे नहीं करे प्रहार ॥

एक से ज्यादा मारे नहीं वाण । वो तो रहे चुप की वहां ठाण

काली कुमार तब वाण चलाय । चेडा नृप काटा उत्त तांय ॥ ३७ ॥

एक वाणे मारे काली कुमार । यों दश दिन में दस भाइ मार ॥

देखी कोणिक करे विचार । एक ही वाने मेरा संहार ॥ ३८ ॥

दोहा—कर अष्टम आराधिये । पूर्व मित्र दोइंद्र ॥

वसन बंधे वों ऊचरे । किया जुलम तें नरेंद्र ॥

चेडा धर्मि क मारे नहीं । करेंगे तेरी जीत ॥

असुरेंद्र शकुरेंद्र तब । कोणिक सहाइ भयेप्रीत ॥ ४० ॥

चोपाइ

कोणिक सज संग्राम भैं आय । सामे चेडा नृप भी थाय ॥
 वज्र कवच कोणिक तनकिया। चेडाका बाण खाली गया ॥
 शकरंद्र के कर डारे बैक्य करामहा सिला हो पड़ी नर पर
 इस शीला कंटक संग्राम मझारो चोरी सीलक्षे मनुष्य संहार
 सुरेंद्र तृण डाले बैक्यमहारथ मृशल होते प्रगमय ॥
 छिन्नलंखं नर उससे मरे। ऐकंकोडं असिलाख संहरे ॥ ४३ ॥
 दो दिन में जूलम यह भया,। अठारे नृपती निज घर
 चेडाछिपे विशाला में आया। द्वार बंध सब दिये कराय ॥ ४४ ॥

दोहा—सामंत चेडा रायका । आवक नतुवा नाग
 निरंत्र छट के पारणे करे । वो आया इस
 अष्टम तप उस दिन किया। लगा आ तिक्षण
 समाधी मरणो करी । उपने देव विमाण ॥ ४५ ॥
 नाग नतुवे का मंत्रीसर । था एक सरल स्वभाव
 उस का भी लगा बाण । आ वो आया उस ठार
 कहे अन्य जाणु नहीं । मिल किया मो मुझ होय ॥
 यों धर्म भाव नहा से चवी । ननुष्य दुवा पुनः सोय
 यह मे जो नृपति ठहरे । सा ई नर निर्वय ॥
 जा उग्र नव नर मरी । देखा लोभ परपंच ४६ ॥

चोपाइ

विहल कुमर अति गंग भगव । लींचानक गज आलुध थाव ।
 गत के कोणिक शैना में आय । अनेक गम नर सार के जाय ।
 कोणिक जाण कर मारण उपाय । रस्ते में गुप्त खाइ खोदाय ।
 खर अंगार से पूर्ण ना भरी । किया सम मार्ग जाणे नहीं जरी ॥
 अचे रात को वहां विहल कुमार । गज ज्ञान से देखी अंगार
 आगे पग जरा नहीं भरे । विहल कोपे गाली ऊचरे ॥
 होण हार हाथी तब जाण । विहल कुमर को भूमी ठाण
 आप जल मरा खाइ मांय । देख विहल अतिही पस्ताय । ५३।
 बंक चुल हार देव लेजाय । विहल अनि बेगानी थाय ॥
 लीदीक्षा आत्मा काज किया । कोणिक परिश्रम निष्फल भय
 क्रोध सान में कोणिक भराय । विशाला लूटण ने चाहाय ॥
 परन्तु कोट नहीं टूटे लगार । सोच तो उत्तका उपचार । ५४।
 आकाश वाणी इस पर भई । भूट साधू इसे तोडे सही ।
 कोणिक तबही बीडा फेराय । नाधव गणिका लिया उठाय
 गुरु द्रोही कुल बालुक साथ । वन में तप करताया अगाध
 गणिका उन्हे पारणा नाय । विरोच औपधी दीनी खिलाय ॥
 हुवा अतिसार कहे कर जोड । मैश्राविका तुम गुरु सिर मोड ॥

भक्ति कर बस कर वहाँ लाय । कोणिक अपना काम
निमिती रूप कर पुर में आय । लंक पूछे यह धियन
सो कहे पाडो थुभिका अभी यह । अभी उपसर्ग टले

दोहा—श्रीमुनि सुवृत्त श्रामीका । नाला गडा उसस्थान
उस थुभ की महिमा करी । कोट न डीगा को मान
चोपाइ

भोले लोक खोदी थुभ उसवार । पडा कोट सेना आइ
चेड । नृप करन लगे आत्म घात । भुवन वासी सूर उठा लेन
वहाँ संधारा कर स्वर्ग गये । कर संताप सां सुखीये भये ॥
कोणिक किया विशाला नाश । तो भी न कली उसकी
फिरा दूहाइ चंपामें आय । राज तृष्णा वृद्धि अति पाय ॥
कल्पित चउदह गत्न बनाय । आप धने चक्रवर्ती राय ॥
ले सेना साधन चले छे खंड । बस किया मध्य खंड घमंड ॥
आये जभ घेताड गिरापास । तिमस गुफा खोलन की
द्वार ऊपर करे दंड प्रहार । रक्षक देव तब कहे नाकार
नहीं मानी ज्वाला प्रगटाय । सेना युक्त राजा नरम
कोणिक संची पाप अपार । उपने छटी नरक मझार ॥
बावीस सागर सहेगा संनापा देखो जबर कैसा

दोहा—ऐसा जानी भव्य जन तजो लोभ दुःख

द्रष्ट संताप धारण करो जोसदा सुख दातार ३



मंजिल नववां—“लोभ पापोद्धार”

उत्तरविभाग—“संतोष”

दोहा—सम से तोपे आत्म को । तो संतोष गुन खान ॥

तज तृष्णा द्रढ सहाही है । अहो सुखे छुप्रान । १

चोपाइ

हिंसे लोभ के दुःख दर्शाये । उनसे छुटन को जो चाहिये ॥

तो संतोष धरे मन मांय । निश्चय विचार करे द्रढ ताय ॥ २

जो जीव पुण्य कमा के आया । अनु भाग बांध कर लाया ॥

मुदत पूरे उसही प्रमाने । मिले तामग्री नहीं संदेह जाने ॥

नाहक जीव तूं इत उत धावे । नाहक जीव तूं पाप कमावे ॥

नाहक जीव तूं करे अनीति । नाहक जीव धरे विप्रीति ॥ ४

हिंसा किये जांकदाधन होव । तो कपाइ क्यों टोकरे डोव ॥

झुठ बोले जां लक्ष्मी आवे । तो लवाड क्यों जग में भंडाव ॥

चोरा किये जो मिलता पैसा। नो चोर देख सुखो है केना।
पापो पाप समाप्ति कहते । तोभी भोले भेद न लेते
जो आत्म तूं हुवा है ज्ञानी। तृष्णा-को जानी दुःख खाए
तो ले यों संतोष चित ठानी । जो तुझ होय सदा सुखदायी

संतोषीकी भावना—मनहर छंद

रेमन विचार यारा। सुखी दुःखी को संसार ॥
संतोषी के तृष्णावार । तूं ही निरधार रे ॥
तृष्णा बंत गोता खावे । संतोषी सो स्थिर रहावे ।
पाना सो तो दोनो पावे । जब पुरे करार रे ॥
बिन अंतराय टूट । लोभी कहां से धन छुटे ॥
मिलत संयोग तब । आडा को आनार रे ॥
निश्चय नय योंही धार । ग्रह ले संतोष सार ॥
अमोल विचार मेरे आत्म । सुख कार रे ॥ ८ ॥
नखराली नारी जैसा लक्ष्मी का स्वभाव धारी
मनाये रीसाय त्यागे आय ताके लार है ॥
भये तृष्णासे दीवाने । मांगे मिलत नही दाने ॥
छोड़ी माया भये साधु । ताको जय कार है ॥
संग्रह न कोड़ी ताके । हुकमे समत छोड़ी ॥
दान ज्ञान दया माहीं । खरचत अपार है ॥

तमा २ वजत नलजत । महाराजा आगे ।
 लोनके त्यागी कों तुर्वा अनोल निहार है । ९
 मांड़ पेट मांही भाड़, निल्यो तुझ लाय आइ ।
 बाहिर पढत स्थन । झूटी दूध धार है ॥
 जटर बन्ही से बचो । पोषा अंन तन नचो ॥
 बोलत न जान्यो तो लो पाल्यो परि वार है ॥
 जब कहा सोचे नर । भरे पेट हर तर ॥
 बोलत चालत कनावत शुचि सार है ॥
 पेही मन विचार । लेखड संतोष धार ॥
 अनोल जग नशार । कनी न लगार है ॥ १० ॥
 पशु बन चारी, पक्षी खग तब विहारी ॥
 जल चारी बंध डारी । दीते संतोष के धारी है ॥
 नहीं जागारी निहारी । नाल की नहीं लगारी ॥
 संगृह नहीं कोइ चारी । जेवे नित्य करण अहारी है
 ताहे बक्त चारी, मिले पोषत है परीचारी ॥
 यह प्रत्यक्ष निहारी । तजो लोन इच्छा चारी है ।
 तूजो नर है करारी । धर धन जन धारी ।
 काय सोचत लाचारी । होय कर भग भारी है ॥

जो अधिको भयो संपत्ति धारक । तामें कहो कैसे ।
 वो नहीं चांदी की रोटी खावत । सुवर्ण शाख मोती कोमिल
 खावत अन्न सो माल मशाले से । तोउ गरी वीसी नहीं
 यों विचार ले धार संतोष को । ते दोनों भव हे सुख दाइ
 संतोषकों नंदन बन भाख्यो । आनंद मांहे सदा मन रहावे
 संतोष परमं सुख कहते । चिन्ता दुःख तस पास न आवे
 संतोष श्रेष्ठ धन कहा वली बिजग राज को ते नहीं चहावे
 संतोष को शास्त्र प्रशंसत । महा पुण्ये संतोषही आवे ॥१॥

कथा—अठारवी

संतोष के फल बताने वाली—“सोमचंदकी”

देहा—अनंत जीव संतोष धर । पाये सुख अनंत ॥
 तो भी जन मन बोध ने । सुणी हुई कथा
 सोमचंद दरिद्री हो । धन पाइ त्याग्यो लोभ
 तो थोड़ेही काल में । हुवा श्रीमंत वधी शोभा ॥

चोपाइ

भूमी भाग एक ग्राम नझार । सोमचंद वणिक रहे नार ॥
 पुष्पा नामे गुण वन्तो नार । मोती चंद पुख सुखकार ॥ ३
 द्रव्य हीन पूर्व भव के पाप । छोटी झोपंडी में रहे आप ॥
 उस के किये हैं तीन विभाग । एक भाग में व्यापार जाग
 एक विभागे भोजन निषाय । एक भाग आया आदर पाय ॥
 क्रियाणाका करे व्यापार । प्राप्त ऊपरर संतोष धार ॥ ५ ॥
 एकदा लाभरुचि मुनिराय । चातुर्य मांस करन कौं जाय ॥
 मारगृष्टि अचिन्ती थाय । भूमी भाग सो ग्राम देखाय ॥ ६ ॥
 शीघ्र आया वणिक घर जोय । ले आज्ञा तहां ऊना होय ॥
 तीन दिन वृष्टि एक सी गढ़ । चोमासी प्रतिक्रमण वक्त थड़
 सोमचंद से मुनिराज कहे । कहो तो चोमासी इहां हम रहें ॥
 तीजा भाग की आज्ञा दीनी । मुनि चोमासी तपस्या कीनी
 तीनों मुनिराज की भक्ति करे । धर्म कथा वक्ते श्रवण धरे ॥
 सील्या ज्ञान गयो हृदय भीज । जाण्यो धर्म एकनत्त्व चीज
 यथा शक्ति तिहुं तपस्या करे । तप के दिन व्यापार परि हरे ।
 और भी बहुत किया पचखाण । तत् गुरु भेटेही प्रमाण ॥
 यों सुखे चोमासा पूर्ण नया विहारकरण मुनिश्वर । ज थया ॥
 करे बितनी तीनों ने वागदूष कर लीजिये शुद्ध आहार ॥
 चोमासी पारणा मुनि तहां कियो । तीनों हृदय हर्ष अनिभवो
 पहों वावन तीनों मुनि को जाया अष्टन तर दिया नांनटाया ॥
 नान पुन छटन तप धारा दोनां आवे किकर निजद्वार ॥

निश्चय नुझको नारन काज । यहउपाव रचाइनआज ॥
 परन्तु मारुमें उसकोजायाबोझया जाने मुझे मननांय ॥
 योंचिन्ती बोचरुउठाय । घबराता निजघरपरजाय ॥
 सोमचंद घरकीछुत्तफाड । उंदादिया चरुसुवर्णसाड ॥
 सापविच्छु कोटे जानैजाय । अर्नीत्तव रतेवाहिरआय ॥
 यहरस्ता देखताथा सोनार । परन्तु जरा नहीं सुनीपुकार ॥
 दाह- छुत्तफाडंक लक्ष्मी । पुण्यामघर आय ॥
 यहकहेवतऐसे मिली । संतोषी धनपाय ॥

चोपाइ

मोतीकहे क्यापडेगीछत । फटीदिखे पडेमठीरत ॥
 सोमकहं निर्भयरहोभाइ । रखेजागे कोइदुःखपाइ ॥
 सुतेतीनो संतोपमनधारादिवत्तप्रकाश हुवाउत्तवार ॥
 प्रतिकमणकर निवृत्तथाय । पोषापार देखे वहांआय ॥
 संनैया ढग देखवित्तमाय । आइलक्ष्मी कैसेफेकीजाय ॥
 चेलपिछान सोमचंदकहे । यहवोहीदेखआयामए ॥ ३० ॥
 छेडआया तोषडाघरभेआय । तच्चपुत्रा प्राप्तवस्तुनहींजाय ॥
 यत्नकर रत्नाधरगझार । अचंभीचुपक रहासोनार ॥ ३१ ॥
 दाह- एकपटेलने उन प्रानमें।मोटीहवेलीबंधाय ॥
 नाथीवनइ देखके । सोमचंद कहैजाय ३२ ॥
 यहजागा वे नुझननी । लगानेलेनंधवा ।

सोसमजो हांतीकरे । देवनेगतेमन ॥ ३४ ॥
 स्वल्पमोल उसनेकिया । दियातवहीलाय ॥
 विस्मित होयजगादीवी । बडेवचन न ॥

चोपाइ

सोमचंद ले धन परिवार । सुख से रहे हवेली महार
 बहुत जन को धन आश्रय देय । जैन धर्मी उनको
 सिखाया बहुतों को ज्ञानादिलाया बहुविद्या दान ॥
 तोपे बहुत दुःखियों के तांया दान पुण्य रु धर्म फैलाय
 कीर्ती गइ सहु गामे पतरासव करे सोमजी का आदर
 द्रव्य वहां सर्व सुख प्रगटाय । सबसे बडा है धर्म ॥
 दोहा—केते काल के आंतरे । लाभ रूची मुनि
 फिरते आये उस मार्ग में श्रावक यादज आय ॥
 पूछे आकर ग्राम में । सोमचंद कहां रेय ॥
 बताइ हवीली मुनिदेखी हर्षेय ॥ ३९ ॥

चोपाइ

सोमचंद देखी गुरू राय । रामे २ नस गये विप्रसाय
 तत्क्षण आया सन्मुख धाय । लुली २ नमस्कार कराय ।
 पुष्कामोति भी दोडे आय । बडे मुनि अति उमंगाय ।
 और भी बहुत मिले नरनार । मविधी सब करे नमस्कार ॥

ख मुनिश्वर अतिहर्षाय । इतने जैनी कैसे हुवे इतठाय ॥
 मोममाती कहे आप कृपाताम । धर्म मे समजा गामतमाम ॥
 मुखस्थान उतारे मुनिराय । अउदह प्रकार नंदान बहराय ॥
 भक्ति करे अन्यपेकराय । धर्मका प्रत्यक्षफल जनाय ॥
 उद्बोध सत्गुरु सुनाय । तत्त्व धर्म जन मन ठसाय ॥
 हुवा बहुत सा वहां उपगार । हुवा बहुत सा धर्म प्रसार
 साधु सती आवे अब घने । तोपे सब को अंदर पने ॥
 भेद भाव किंचित नही धरे । यथाशक्ति सब की सेवा करे ॥
 यों धर्म उन्नति बहुतही करा । स्वर्ग गये आयू पूर्णअवसर ।
 आगे पावेंगे मोक्षका द्वार । कथा कथी है सुने अनृतार ॥

दोहा- सोमचंद्र तृप्पतजी । तजीभजीतसरिद्ध ॥

धर्मवृद्धिसे वृद्धहो । पायासुखसमृद्ध ॥

जाना ज्ञाना इततरह । धारो धिर संतोष

धर्म उन्नति वृद्धी करी । हेवा सुखी सब तोप ॥

निज पर आत्म सुख वरन लोभ पाप उद्धार ॥

ऋषि अमोलख ने रचा । यह नववां अधिकार ॥ ९ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के

संप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री

अमोलख ऋषी जी महाराज रचित

अधोद्धार कथानार ग्रंथका

लोभ पापोद्धार नामे

नववामंजिल

समाप्त

राग के भेद-भेद- मनहर छंद.

राग के हैं दो प्रकार । प्रसस्त अप्रसस्त धार ॥
 पुण्य पाप बन्धन का । कारण दोनों जानिये ॥
 धर्म गुरु धर्मात्म ज्ञानी गुणी तपी नरन ॥
 धर्मोन्नति का जो राग प्रसस्त बखानी है ॥
 कुटुंब स्वजन धन । गेह भूषण वस्त्रन ॥
 इत्यादि पुद्गली राग । अप्रसस्त मानिये ॥
 वातगग दोनों तजे । धर्मी तो प्रसस्त भजे ॥
 धर्म वृद्धि होवे तोही आगे सुख दानी है ॥ ३

रागके लक्षण-मनहर छंद.

राग अपनात तोही । येही बन्तु मेरे होइ ॥
 रखे यह विनाशा पावे । तो मैं कैसा करुंगा ॥
 यथा शक्ति बंदो बस्त । को नन देवे कष्ट ॥
 चोरादि ते रक्षंग नीजोरीदी मैं धरुंगा ॥
 ताला पहंग आदि । कर धरत तमादि नर ।
 वक्त पडे काम आवे । जाने नहीं मरुंगा ॥
 ऐसे रागी बन्तु काज । अरना कर अज्ञान ॥
 देखत भूलत नैल । येही मैं उचरुंगा ॥ ७ ॥

रागसे दुःख-मनहर छंद

राग है दुःख का धाम । राग है चिन्ता ।
 रागी तोहो ते गुलाम । निज आपा खोवे है
 रागी करे हाय हाय । रागी चहू याजु धाय ॥
 रागी जग को मनाय । सर्व मुख जोवे हैं ॥
 रागी के है काम काज । रागी के नरहे लाज
 रागी ही करे अकाज । नर भय विगोवे है ॥
 राग की शक्ति अगाध । बन्ध संसारीठ साधु
 रागसे भोगे असमाध । भयो भय रोवे हैं ॥
 केइ मरे जग मांय । ता का सोग नहीं आव
 अपने का शिर दुःखे । नींद नहीं लेते हैं ॥
 केइ वस्तु नाश होय । उसकी चिन्ता करे
 अपना बन्ध जो छिंदे । तोही बुरा कहे हैं ॥
 केइ दुःख टल बल । ताकी सोन तास कले ॥
 अपना प्यासा जो होवे । तहां रून बेटे हैं ॥
 अथा जहां है आपदा । येही जानो जन सदा
 राग अनेक रूप धर । जगे दुःख देते हैं ॥ १ ॥

गगमे प्रत्यक्ष दृष्टान्त-द्वयविजय छंद

त डुब की जल के अंदर तन पर नीर अधग फिर आवे॥
 नी उत्तका वजन नहीं लागत । कारण आपा नहीं जनावे
 भरी यो धरी शिर ऊपर । तोही जल भार भूत हो जावे ॥
 अपना तहुवा दुःख दायक । अमोल रागयों दुःख देखावे ॥

कथा-उत्तीसवी

रागके फल बताने चाली—“पुष्प नन्दी राजा की”

दोहा—राग बसे दुःख जगत् में । पारहे जीव अनंत ॥
 विपाक सुख आधार से । कहू पुष्प नंदी विर तंत ॥

चोपाइ

हुड नगर वैश्रमण राजान । पुष्प नन्दी कुमार गुनवान ॥
 पधारे महा वीर भगवान । गौतम गोचरी आये नगरम्यान
 में एक आश्चर्य देख । मनुष्य एकल जमे विशेख ॥
 नारी मध्य महा रूपवंत । कान नाकादि उस के छेदंत
 म आयं महावीरजी पास । करिआलोचन करे अरदात ॥
 कर्म से वो नारी दुःख पाया । दोनों भव दीजीये फरमाय

पुष्पनन्दी कुम-जोग जान । सेठपास भेजाप्रधान ॥१८॥
 श्रेष्ठ सुनीआनंद अतिराय । देवदत्ता शिवकानें बैठाय ॥
 स परिवार आये राय पास । भेट करी कुमार जी की तास
 शुभ मुहुर्त पाणिग्रहण कर । दंपति सुख भोग में रहेविवर
 वै ध्रमण राजा नृत्यु पाय । पुष्प नन्दी जब गादी बैठाव
 श्री देवी पुष्प नन्दी की मात । ताकी भक्ती करे दिन रात
 बड़ी फजर आकरे नमस्कार । स्नान कराइ कराय तिणगार
 भोजन कराइ दावे पाय । जाय शभा में जब निद्रा आय॥
 यह अहोनिशि राजा का कर्म विनीत पुत्र का येही हेधर्म
 मात भक्ति में पुत्र नम्र भया । देव दत्ता मन में दुःखलया
 भोगी न सकयइइच्छित भोगाकिर्तीविध कहं माताकावियोग
 एकदा श्री देवी निद्रित जोयाउसके पास अन्य नहीं कोय॥
 शीघ्र लेह दंड उठ्ठ कर लायाश्री देवी की योनी में फसाय
 कर आकन्द मरीचो उत्सवार । दासी राजा से किये समाचार
 मात वियोगेअति दुःखी भया । मृत्यु कार्य कर आनुरक्तपया
 भेट पास देव दत्ता पकडाय । कान नाक ताकी छेदाय ॥
 आजही देवेंगे शूलो चडाय । पूर्व संचित फल यह पाय ॥
 यहां तेनर प्रथम नर के जायातीर्यच वनस्पती तेउवायु-राय
 नृगा लोटिया परे बहु भ्रमी । पाप फल भोगेगा रमा ॥२३॥
 इन पुर श्रेष्ठ धर पुत्रयह थान । नंदन ले प्रथम स्वर्ग जाय॥
 महा विदेह में नर हो जावंगानोनादेवा भव्यो राग केदाय॥

भगवंत कहे इस भरत मझार। सुप्रतिष्ठ नगरसुख कार ॥
 महासेन नामें तदां राजाना सहस्र राणी रूप गुणवान ॥५॥
 सिंहसेन कुमार गुनवंत । युवराज ॥ तस थापंत
 पांचसो राणी उसे परणाय । पंचइंद्रिके सुख विलसाय ॥
 स्यामा राणी रूपवंत गुणवंत। सिंहसेण उसीसे मोह धरंत ।
 चार सैं नवाणुव दुःख पाय । स्यामा को मारण चिते उपाय
 यह बात श्यामाराणी जान । सिंहसेन आगे किया ध्यान ।
 सिंहसेन सब को मारनकामागाम बाहिर एक बनाया धाम
 क्रिडा करण सब राणी बुलाय । नशायुक्त तस आहार कराय
 रात को सब पड़ी मुरछाय। भूवन चौफेर दी आग लगाय ॥९॥
 चारसो निन्यणव सपरिवार । बलमरी उसभुवन मझार
 अहोरागवशकिया जुलम । ऐसाहै यह रागविषम ॥१०॥
 दोहा— सिंहसेण ऐसे पापकर । छट्टनिरक उपजा जाय ।
 बाधीस सागर महादुःख सहोरागफल भुक्ताय ॥११॥

चोपाइ

इसीही राहीड नगरमझार । दत्तसेठ कन्हारा श्रीनार ॥
 सिंहसेण भरकसैं नीसरी । पुत्रीपने यहां आय अवतरी ॥
 दवदत्ता रखा उसका नाम । रूपकला बहूगुणकी धाम ॥
 हुइनव युवतीसज सिंगार । क्रिडाकरती गौखमझार ॥
 तहांनिकले वैश्रमण राजान । केन्या देखी अमरीसमान ॥

पुष्पनन्दी कुम्भजोग जान । सेठपास भेजाप्रधान ॥१२॥
 श्रेष्ठ सूनीआनंद अतिराय । देवदत्ता शिवकामें बैठाव ॥
 त परिवार आवे राय पास । भेट करी कुमार जी की तास
 शुभ मुहुर्त पाणिग्रहण कर । दंपति सुख भोग में रहेविचर
 वै श्रमण राजा नृत्यु पाय । पुष्प नन्दी जब गादी बैठाव
 श्री देवी पूष्प नन्दी की मात । ताकी भक्ती करे दिन रात
 बड़ी फजर आकरे नमस्कार । स्नान कराइ कराव तिणगार
 भोजन कराइ दाये पाय । जाय शभा में जब निद्रा आय॥
 यह अहोनिशि राजा का कर्म विनीत पुत्र का येही ह्यधर्म
 मात भक्ति में पुत्र नष्ट भया । देख दत्ता मन में दुःखलया
 भोगी न सक्यहृदच्छित भोग।किन्तीविध करे माताकवियोग
 एकदा श्री देवी निद्रित जायाउत्तके पास अन्य नहीं कोय॥
 शीघ्र लेह दंड उण्ण कर लायाश्री देवी की योगी में फसाव
 कर आक्रन्द मरीचो उत्तवार । दासी राजा से किये तमाचार
 मात वियोगेअति दुःखी भया॥ मृत्यु कार्य कर आनुरक्तथया
 भेट पास देव दत्ता पकडाय । कान नाक ताकी छेदाय ॥
 आजही देवेगे शूलो चडाव । पूर्व संचित फल यह पाव ॥
 यहां से मर प्रथम नर के जायातीर्थच बनस्पती तेउवायुधाय
 नृगा लोटिया परे बहु श्री । पाप फल भोगेगा रती ॥२३॥
 इन पुर श्रेष्ठ धर पुत्रयह धान । नंदन ले प्रथम स्वर्ग जाय॥
 महा विद्वत् में नर हो जावेगामोक्षदेखा भव्यो राग केदोष॥

दोहा—राग रसिक जो जीवडा । ऐसा करे अकाज ॥
 विटवणा यहू भम लहे । तिह सेण ज्यों राजा २५॥
 ऐसा जान सुखार्थी यों । तजो राग महाभाग ॥
 सदा सुख दायक भजो । ऊक श्री बेराग ॥ २६ ॥





मंजिल दशवां—“राग पापोदार

उत्तर विभाग—“वैराग्य”

दोहा—जो निवृत्ते राग से । द्वेष मन नहीं लाय ॥
 सोही भाव वैराग्य है । हलु कर्मों को आय ॥१॥

चोपाइ

वैरागी जग रचना निहार । अनित्य अस्तरण जाने संसार ॥
 जो जो वस्तु देख मोह आय । अंतर गुन सोने लप लाय ॥२॥
 जिस वस्तु का स्वभाव पलटाय । उत्तर राग कैसे स्थिर रहाय
 जो करे तो निभे नहीं राग । आपही हो वैराग्य दुःख दाग ॥३॥
 यों ज्ञान पहिले वैरागी बनो । जिससे सुख सदा रहे मन तनो
 एकही भाव सदा सुख दाय । न पलटाय न कोय दुनाय ॥ ४

वैरागी की भावना—मनहर छंद

असुखी शरीर । भरा मांसरु रुधीर ॥

नशा जाल हाड पिंड । मल मूत्र का भंडार है ।

अच्छे भोजन खवाय । तेतो विष्टा होय जाय ॥

पाये शरवत नीर । सो तो वहे मूत्र धार है ॥

अच्छे वस्त्र भूषण । तन लगे होय खीन ।

जग मांहे सर्व वस्तु । करे तेनही विगार है ॥

ऐसे ओगन की खानी । ज्ञानी शरीर को जानी

नहीं राग भाव आनी । सो अमोल सुखी सार है

मात पिता भाइ धेन । काका मामा भूवा सेन ॥

मासी मासा माभी व्यान । सुत सुता कन्तना

स्वजन सगे स्नेही । मिल आदि मिले केइ ॥

मतलवे आदर देइ । जाने तूझ को आधार है ॥

गँड गले भग आवे । गँड गले भग जावे ॥

ऐसे प्रत्यक्ष देखावे । केसो कुटूँब को प्यार है ॥

ऐसे जग जन जाणी । निसंगी रहे त ज्ञानी ।

नहीं राग भाव आणी । सो अमोल सुखी सार है ।

बाग बाड़ी गुलजार । घर हाट रंगदार ।

पइसा रपाइ दीनार । भरा अनाज भंडार है ॥

धर भुषण बहु मूल्य । भरे वस्त्र भी अतुल्य ।

गज गात्री रथ आदि । वस्त्र शस्त्री अपार है ॥

पन हाँसमे विचार । यह ना प्रत्यक्ष है भार ।



मंजिल दशवां—“राग पापोद्धार

उत्तर विभाग-“वैराग्य”

दोहा—जो निवृत्ते राग से । द्वेष मन नहीं लाय ॥
सोही भाव वैराग्य है । हलु कर्मों को आय ॥१॥

चोपाइ

वैरागी जग रचना निहार । अनित्य अंतरण जाने संसार ॥
जो जो वस्तु देख मोह आय । अंतर गुन तामे लय लाय ॥२॥
जिस वस्तु का स्वभाव पलटाय । उत्तपर राग कैसे स्थिर रहाय
जो करतो निभे नहीं राग । आपही हो वैराग्य दुःख दाग ॥३॥
योजान पहिले वैरागी बनो । जिसते सुख सदा रहे मन तनो
एकही भाव सदा सुख दाय । न पलटाय न कोय दुभाय ॥ ४

वैरागी की भावना—मनहर छंद

चांपाह

मति सुंदर अयोध्या नगर । हरीसिंह राजा सुख कर ॥
 शीलवती राणी पद्मावती । पृथ्वी चंद्र कुमार शुद्ध मति ॥२॥
 सर्व कलामें निपुण कुमार ॥ एकदा बेठा गोख मझार ॥
 रस्ते जात देखे मुनिराज । रूप सेंदा कुमार कौ लगान ॥ ३ ॥
 इहापो देतां कर्म खपाय । जाति स्मरण ज्ञान जय पाय ॥
 संयम पाला स्मरण भया । विपायानु राग तत्क्षण गया ॥ ४ ॥
 भृंगारिक तजे उपचार विचार । संवगी शुद्ध पाले आचार ॥
 राज काज से मन फेरीया । ज्ञान पठन मनन चित दिया ॥
 मुनि दर्शन अवसरे अनुसरे । माता पिता की भक्ति करे ॥
 यों देखी राजा करे विचार । शुन्य मति क्यों भया कुमार
 राज पुत्र के लक्षण नहीं । मुनि पुत्र पर यह तो रही ॥
 कैसे निनावंगा राज का भार । रस्ते राज जावे यह हार ॥ ७ ॥
 संसारनु राग जमाने काम । पर पावुं नारी गुन धाम ॥
 जानि कुल रूप कला श्रेष्ठ जेया आठ नारी जाची तब सो
 देख प्रथवी चंद्र करे विचार । धिक २ राग जबर संसार ॥
 मुझ रागे मुझ पिता लुब्ध होय । मुझेह फांस फसावे सोय
 ना कहें नहीं मानेगा लगार । इस लिये लग्न करुं एक बार
 जो हो वेगी दलु कर्मो नार । तो तजेगी मुझ मंग संसार ॥

वैराग्य भाव जाठ नारी बरी । शयन तदन बैठे ध्यान धरी ॥
 आठों देख अति आश्चर्य भइ । नब्रहो ललित वचन से कही
 दोष हनारा प्रकाशो नाथ । क्यों नहीं कर ते हम रंग बात
 न्हावे कटाक्ष हाव भाव देखावे । ब्रीकला करी राग जगावे
 ल्यों ल्यों कुवर का बड़े वैराग्य । नगियों बोधन कहे महा भाग्य
 यह तन क्यारी आफुकी जान । वर शोभे अन्दर भरा धान ॥
 किंपाक फल जेते हैं भोग । परिणामे दुःख भोगवते मन्योग ।
 तृती न होवे भोग कोइ वार । सागरों बंध बीतेस्वर्ग मझार ॥
 मोक्ष मार्ग के विधन कर तार । नेतो कभी नहीं करुं अंगीकार
 तुमभी इच्छो आत्मिक सुख । यों कही नून यही तब सुख ॥
 वैरागीणी आठों करे अरदात्ता । हन भी नहीं फने मोह फांस
 चारित्र्य लेगी रजा दीर्जाये । हरीं कुनर कहे जरा सुस्त रीजाये
 नवही दम्पती नित्य धर्म करे । राजादि देख अति आश्चर्य धरे
 यों किये तो नहीं सुधरा कुमार । राज देकर रत्नावुं संतार ॥१७॥
 राजो तब नृपति जब करे । कुनर तब आश्चर्य चित्त धरे ॥
 सनजाया नहीं समेज राजान । अवतर देख नानी तात बान ॥
 जल कमल बत् राज जो करे । धर्मोन्नति प्रसारण अनुत्तर ॥
 बंदी खाने सब खाली किये । देशमे अनारी पट्टहाजा दिये ।
 यथा राजा तथा प्रजा पाय । धर्म फैला सर्व देश के नाय ॥
 धर्म धन जन्म पाया प्रमान । ऐसे ननार नै रह भले मान ।
 दोहा—द्वार पाल आ बीनवे । विदेशी व्यापरी आय ॥

आप भेटण उमंग धरे । नृप लावो फरमाय २
 ते आकर लुली २ नम्यो । पूछे पृथ्वी चंद ॥
 कहां से आये किस कारणे । कइो तुम सर्वसम



चोपाइ



शेठ कहे श्रीमती सुनो विरतंता गजपुर नगर से मैं आवंत
 वहां देखी एक आश्चर्य कामासोही यहां भी देखुंगा श्रीम
 रत्न संचय शेठ गजपुरे रेह । गुण सागर तस पुत्र गुण गेह
 मूनिदर्शने जाति स्मरण पाय । दीक्षा ग्रहण तात रजामंगा
 तात कहे तेरी स्यादी जो करी ॥ आठों नारी लावो पहिलेव
 फिर तुझ इच्छा सो कीजीये ॥ इतना कहा मेरा मानीजीये
 अवसर देख कुमर माना वचना कहाया कन्या तात सेतक्ष
 कन्या पिताने कन्यासे किया । हर्षी उनने ये उत्तर दिया
 सतीयों के होवे एकही भरतारा ॥ हमने लिये गुनसायर धार ।
 वो सशक्त तो हमें लेजाय । हम सशक्त तो रखें घर मांय
 सुन सब हयें उत्सव मंडाय । वर राय बैठे मंडप में आय
 आठों पास बैठ कला करे । गुन सागर धर्म ध्यान चित्त
 बैठे नाशाग्र दृष्टि लगायालय लीन बने अध्यात्म मांय ॥
 चिते जो मेलेता संयम भार । तो कगता तप जप इसवार ।
 कर्म स्वपाता ब्रह्मानन्द चीनालेखे लगते मुझ निशीदिन ॥
 पूर्व भय में जो पड़ा था ज्ञान । उसका प्रगट आत्मभान ॥

अपूर्व उपयोग शुरूहुवा ध्यान। धातिक कर्मका करेधमगान
 अ. ठों नारी पति ध्यानस्त जोय। तानन्दाश्चर्य वैरागीणा होय॥
 अहो अप ने तो हैं अहो भान्य। पनि मिले भव तारण की लाग
 साथही लेवेंगी संवन धार। साथही जावेंगी मेक्ष मझार॥
 ऐसी उत्कृष्ट लगी एकही लगन। घन घाती कर्मलागे भगन।
 नवही पाये जब केवल ज्ञान। देव दुंदर्भी वाजी नभ म्यान॥
 देव वृंद वहां प्रगट धाय। नवही साधु सति भेष सजाय॥
 सुर राचित सिंहासन बैठे भगवन्। तनीयों सन्मुख बैठे हर्षधन
 दिग् मुढ विम्मितवने सब लांगा। एकाग्र रहे रचना छोग॥
 रत्न संचय सुमंगल दोड आय। देख रचना सो संवेग पाय॥
 पूरपति श्री शम्भर सपरिवार। आकर वंदे संत सती चरणार॥
 मेभी जान गया वहां चाल। आश्चर्य कारक देखा सब हाल॥
 दोहा—केवली मुझ उदेशी वदे। सुधन तूं अयोध्या जाय॥
 यहां ते आश्चर्य अधिक तूं। वहां देखेगा शभामाय॥
 शीघ्र आयाहूं इहशभा। देखे क्या आश्चर्य होय॥
 इस कही सो चुर रहा। उल्लुक्ता घर सोय॥

चोपाइ

यों सुनी पृथ्वी चंद्र नराधीश। मन माहे जागी अधिक जगीश
 धन्य २ गृण सागर सह कुट्टंवा जगनाथ ने टाला सर्व विटंब॥
 धिक्कार २ होना मुझनाय। जान कर फमा राग फास मांय॥

अब मैं त्यागूं सर्व संयोग । सुपथ वरू आदरू योग ॥ ४० ॥
 ज्ञान का ध्यान कहें लुं तत्व चीन । ऐसे बने ध्यान में लीन ।
 पूर्ण घट में भग धैराग्य । भाव बाह्य अभ्यन्तर त्याग ॥ ४१ ॥
 अपूर्व करण निर्वेदी अरूपाय । होतेही धातिक कर्म स्वपाय
 के ल ज्ञानी पृथ्वीचंद्र भये । सुर आइ साधु लिंग वये ॥
 देव हूं वभी गगन गणाय । नर सुर बहुतही भेलेथाय ॥
 आठों ग्रीयों तहां दांडी आय । देख केवली केवल सो पाय ॥
 हरीसिंह पद्मावती आयंता केवली देख आनंद पायंत ॥
 सुधन सार्थ बाह आदि सब । सानदाश्चर्य हुवे अब थय ॥ ४४ ॥

दांडा—पूछे हरीसिंह रायजी । कहां श्री भगवान ॥

हम मोह आप में अति जगे । क्या कारण पैछान

चांयाइ

केवली कहें सुनो राजेश्वर । तुम हम प्रीती पुर्व भव सर ।
 चंपानगरी जय नाम गजान । तुम थे राणी प्रियसती मान
 में धातुत्र कुसुमायुध नामा तीनों लिया संयम धैराग्य पा
 करणी कर शनींगये विजय विमानमें ऊपतासर्वाधिनिद्रम्या
 वहां मे मर यहां अनुक्रम अउतरे । पुर्व भव स्नेह यह वृद्धिक
 यो सुनरात्र रागति जाति स्मर ग पाया भाव चरना केवली सांया
 साधु सती लिंग देवता दिया । इग्यारे जन केवली भया
 अनिदी आश्चर्य रदा फैलाया भव्य जीवोकि हृदय उमंगाव
 दांडा—सुधन सार्थ बहानमा । पूछे कहो भगवंत ॥

गुणसागर जिन आपका । एकसा क्यों चिरतंत ॥

चोपाइ

पृथ्वीचंद केवली करे उचार । अहो सुनो सुधन साहूकार ॥
 गुण सागर पूर्व भव मझार । काम युद्ध था मेरे कुमार ॥ ५१
 यह आठोंहीथी मेरी नार । वो आगे उसकी नार धार ॥
 सब जनलीना था संयम भार।सबउपने अनुत्तर विमान मझार
 यहां आ मिला ऐसाही संयोग । वोतो सब लिया तुम छोग ।
 इस भवमें सब हुवे एक सार । आगेही है सुख अपार ॥ ५५
 यों सुन सर्व शभा हर्षाय । त्याग वैराग्य बहूतेही थाय ॥
 साधु सती सब किया विहार। जन पदमें किया बहू उपकार॥
 कर्म क्षय कर अजगमर भये । राग त्याग के चरित कहें ॥
 धन्य पृथ्वीचंद गुणसागर । तपरिवारे बंदू सिर कर ॥ ५५
 दोहा—देखो राग के त्याग से । कैसे हुवे महा भाग्य ॥
 ऐसा जान शिव अर्थी यों । सदा रमो वैराग्य ॥ ५६
 निज परात्म सुख वरन । राग पाप उद्धार ॥
 ऋषि अमोलक ने रचा । यह दशवां अधिकार ॥ ५६
 परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के स्मप्रदाय के
 वाल ब्रह्माचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
 अयोध्या कथागार का रागपापोद्धार नाम दशवां मंजल

समाप्त



मंजिल इग्यारवा—“द्वेष पापेद्वार”

पूर्वविभाग—“द्वेष”

दोहा—दूसरा बंधन द्वेषका । कहा श्री जिनराय ॥
 राग में नीमा द्वेष की । द्वेषे राग भजनाय ॥
 रागी से द्वेषी अधिक । संचय अशुभ कर्म ॥
 रागी धर्म समा चरे । द्वेषी न जान मर्म ॥ २ ॥
 इस लिये अहो भव्य जनो , द्वेष महा दुःख दाय ।
 द्वेष तजे नहीं जहां लगे । तहां लगे सुख नहीं पाय ।
 द्वेष विरोध कलुषता । मत्सर घृणा आद ॥
 अनेक नाम कहे द्वेषके । उप जावे असमाद ॥ ४

चोपाइ

द्वेप बंधन में बंधे जो जीवावहूतही पाते जगत् में रीव ॥
 संकल विकल मन सदा रहे द्वेषाग्नि गुण गुण को दहे ॥
 द्वेषी को जो जो वस्तु देखाया गुण को तज दुर्गुण सो सहाय
 सर्वस्थान अनिष्ट सां जोयाता चित्त शांति कैसे होय ॥
 किसी स्थान न रहे तासु मिलाया गुण करते मिले अपवशछाप
 यों होवे द्वेप से दुःख अनेक । सुखार्थी द्वेप तजो धरिविवेक ॥

द्वेप के प्रकार—मनहरछन्द.

द्वेप कहें दोषप्रकार । देखाने जगत् मझार ॥
 प्रशस्त अप्रशस्त । परिणामों से जाणहैं ॥
 पुत्रशिष्य आदिभणी । हितशिक्षादेवेधणी ॥
 न माने कटुचचना प्रहारभीठाणाहैं ॥
 सो कहा प्रशस्तद्वेप । परीणाने हितरेष ॥
 शत्रुअन्याइपर अप्रशस्त द्वेप मानाहैं ॥
 दोनोंदोनों भवअयोग्य । इसलिये तजनेजोग ।
 नहीं सुख द्वेपसेहैं । हृदयपेछाणाहैं ॥ ८ ॥
 भोलनारे पुत्रनार । जानेमें देतासुधार ।
 पगन्तु अधिक विगार ! करत अनार्णीहैं ॥
 जो ला नमझे निधामांहीं । नोला सुधागहीथाइ ॥
 रंग भार मुझनाइ । भयएमा आणीहैं ॥
 मारिने इतरजाय । माग्लेमी मुझनाय ।

कथा- इक्कीसवी

द्वेषके फल वतानिवाली-“दुर्योधनकी”

दोहा- द्वेषप्रभावे जगत्में । पाते दुस्त्रअपार॥
दुर्योधन कोटवालज्यों । विपाकसूत्र अनुसार॥१॥

चोपाइ

मथुरा नगरी श्रीदामराजान । राणी बंधुमतीरूप गुण खान॥
नेदी वर्द्धन कुमार गुणवंतायौवनमद छकीसो चितवंत॥२॥
पिता तरुण मुझ कब मिले राज।कोइ उपाय सेंटृहमणाज
राजा का विस्वानु नाविक । चित्र नाम भरोसे बंध टीक॥
अंत उरादि फिर सर्वस्थान।आजीविका बहुत दी राजान॥
उसे कुमार निजमंत्री बनाया।विस्वासी मनकी बात जनाय
राजानार दिला राज मुझ । आधा राज मैं देवुंगा तुझ ॥
नाविक मानी बात उत्तवार।फिर उत्त के मन हुवा विचार
राजेश्वर कभी जाने पहचाती।तोलह कट्टेव को मेरी घात॥
इसलिये राजा को पहिले कट्टे।तो अखंडित प्रेमीराजाकारहुं॥
एकान में नृप को कहीनबवान।सुनो भूपती आनुरक्त धात॥
तत्काल कुनर को कंद कराय।रुहे यमराज देवुं नुझताय ॥
लोकनिहानन लोहका भूषण । अग्नि में कराये अनिउष्ण ॥

सिंहासन नंदी वर्धन वेठायाभूषण सब तस अंग सजाय ॥
 सीसा तहवा रस रूप उकालाअभिषेक उससे करा उसकाल
 और घिंटवना बहुतही करी।देखने लांक बहुत गया भरी॥
 दोहा—ते कोल तहां पधारीये । श्रीमहावीर जिनराय ॥
 गौतम लेप्रभू आज्ञा । गौचरी ग्राम में जाय ॥
 देख अभिषेक कुमारका । आश्चर्य आतिपाय ॥
 बंदी पूछे भगवंत कौ।किसकमें दुःख सहाय ॥११॥

चोपाइ

श्रीवीरजी कहे गौतमजी सुणीयोद्वेपके फल रहाहे लुणीप
 इसी जंबुद्वीप भरत मझारासिंहपुरके निहरथ सिरदार॥१२
 दुर्वोधन नामें कोटवाल । महादेपी पापी निर्दधीकाल ॥
 कु-कर्म कर हर्षिन होविकूर । अन्य गुन्हें दंड करे भरपूर ॥
 दंड के साहित्य ग्यन सजायानिरस जीवोंको संताप उपजाय
 अनेक लांछनी कुंडीसांयाउकलना धातु का रस भगाय ॥
 किननेक कुंडी में भगाहे क्षाराअश्व गज उंटका मूत्र उकाल
 खोडा वेडी श्रृंखल रु डोर । वांश बेंन लुडी लना कटारा॥
 पापाण-गोला शिला मुद्ग दाअनेक मंग्रहो हें यंत्र कल ॥
 तांक बंडूक नली म्वदू तरवारालुग भाला बरछीरु कटारा॥
 गुती फरनी कुडाडी मुग्गलंअनेक शस्त्र के किये दगले ॥
 सदाहो सोचें अन्य दुःख उपायानिगंत्र प्रवनें मन देखभाव

माले परितार दूँ लें दूँ दूँ धनार्थों गौड़ ध्यान करे सदा चितन
 चोर जार धाँतक धूल ठगारा अन्याइ अल्प बहुत गुन्हेगार
 देखे सुने जान ने भे आय । आप धरे सुभट से पकड़ाय ॥
 धातु का रत्न उखलना पायानारी फाड़ी बर क्षार छंटाय ॥
 बहनों के छेदावे अंगोपांग । खोडावडी में दे उंदे टांग ॥
 बहनों के पा न बहुत बजन उड़ाया नीच कर्म कइ पातकराय ॥
 कितनेके अंग में जाले टोकाया कितनेका मुद्रल से चगदाय ॥
 कितने का भूमी में गड़ाया कितने का तन शस्त्र से उड़ाया ॥
 देवातुर यों अकार्य करी । ऐकंतीस तो वर्ष आयु पुणें मरी ॥
 छद्मिनरक आयु बाबान लाग । भोगी विती बहुत दुःख भर
 वहांसे मर यह हुवा राजलूमार । प. पादय हुवा खोटा विचार
 नाठ वर्ष आयु आज पूर्ण करी । रत्न प्रभा नरक में अवतरी ॥
 नृगा लोटा परभनेगा संतार । मच्छ हो हस्तनापुरमझार ॥
 मच्छी धर के हाथ से मगी । तहांही सेठ घर कूमर हो करी ॥
 धर्म सुन दीक्षा कर अंगीकार । मृधर्म स्वर्ग में ले अवतार ॥
 महा विदेह में नर हो संयम लेया । मुक्ति पावेगा कर्म करक्षय
 दोहा—दुयोधन दूषे करी । पाया दुःख अपार ॥

ऐसा जानी सूझ हो । दूषे न करो लगार ॥ २६ ॥



द्वेष करने से कर्म बंधाय । उस का फल आत्मा भुक्ताय ॥
 यों समजी सम धारो रेजीव । जिस से नहीं पावे कदा रीव ।
 एकही सन सर्व सुख दातार । बिन महेनत इच्छित करतार

समभावी की भावना-इन्द्र विजयछंद.

वस्तु स्वभाव तो परिणमें चेतन्या।उस से बुरा तेरा क्याथावे
 जो तुझ को तो खराव लगेतो ।क्यों प्रणती तूं उनमें रमावे
 जानी फसे बिलसे तूं विभावको।स्वभाव में दुःख कौप्रगनमावे
 यह अज्ञान तजी भजी ज्ञान । तोही अमोल तूंही सुख पावे॥
 वस्तु बिगडे बिगडे कहा तेरारे । वस्तु सुधरे सुधरे तुझ कांइ॥
 ते तो परा धीन से पलटे पन । तूं तो स्वा धीन करे तो पाइ ॥
 तूं बिगडे बिगडे सब बात ही । तूं सुधरे सब होत भलाइ ॥
 तेरेही हातमें बात चिदा नन्द । वस्तु स्वभाव न तेरे बुराइ॥८
 तूं चेतन्य ते जड रे चेतन्य । ता संगीतो तूं तो नत होवे ॥
 तेरो स्वभाव नहीं पलटन को । आपणे हाथ आपो नत खोवे
 जो तूं अनादी बुरो है ताही तो फल परिणती तोय बिगोवे
 ताय फिरा रे गिरा निज भान में।अमोल सुख ता क्षण में जोंवे

नमभाव करने का विचार-भनहर छंद

जो जे जग नर नागी । पशु आदि कार्य करी ॥
 बुद्धि अनुमति नो सुयोग किया चांवे है ॥

ता में जो योगाड होय । ताका यश नहीं सोय ॥
 कही क्षण मार भाइ को सँत चुनवै है ॥
 जग बुद्धिमान ताका पैरों के करे गुमान ॥
 अनेक उपलब्ध वेद ताही को मानवै है ॥
 काम को विगाड दियो । तेनो भई नहीं दियो ॥
 इय यों अज्ञानी बना जग को फसावै है ॥ १० ॥
 अर अकल बान नर काम में लूँ लीला मान ॥
 नर होय नुकसान काइ एक बार है ॥
 काइ पुत्र का दमाय । नय नर मन कैसी आवै ॥
 ताहि समजावै लही । अब भूख जावे है ॥
 होके ऐसा बुद्धि बल । एक पे लुकी भूख ॥
 कम बुद्धि भूख नाम । आश्रय कहा लोवे है ॥
 अपना न मुन्हा जाइ । अशुभ अन्ध के अन्धोइ
 इय यों अज्ञानी बना । जग को फसावै है ॥ ११ ॥
 जो नृ भया डरे । दूत को नरि वेड ॥
 वेही दुष्ट का लगे वा । फल दुष्टों लगे वावे है ॥
 नोकर न दुष्ट लावे । वा नरि डरे वेड वावे ॥
 दुष्ट काम न लगे । मुन्हा के लोवे है ॥
 दुष्ट जन न लगे । डरे जन नोकर डरे ॥
 नही का लगे न लगे । कम लगे लगे वे ॥
 जो किहा मुन्हा नृ नरि डरे नही मानव ॥

द्वेय यों अज्ञानी वश जग कों फतावे है ॥ १२ ॥
 गुरु गुराणी जो होइ, शिष्य शिष्यणी अवनीत जोइ
 द्वेय भाव लाइ, निन्दे दुःख उप जावे है ॥
 तैसे शिष्य शिष्यणी ही । हित शिक्षा जेष्ट तणी ।
 सुणी अपनानी कटु वचन सुणावे है ॥
 होइ दुःख दाइ दोनों भणी दोनों भव मांइ ॥
 वश को गमाइ धर्म लोपाइ सिद्धावे है ॥
 धर्मी को मुगे खाली नहीं रखी जगे ॥
 द्वेय यों अज्ञानी बना जगत् कों फतावे है ॥ ३ ॥
 द्वेय दुःख दाइ जानी । सम भाव धरे जानी ॥
 मैत्री सब साथ । रखत सदाइ है ॥
 अवगुण न अवलोच । गुण ग्राही नित्य होय ॥
 गुण का खजाना भर जगत् में पूजाइ है ॥
 कोइ नहीं तात्त बेरी । सर्व स्थान वशः लेरी ॥
 सहायक अनेक तस सहज हों में पाइ है ॥
 सम सदा सुख कर । अमोल ताहे आचर ॥
 दोनों भव सुख भोग । मुक्ति में सिद्धाइ है ॥ १४ ॥

शियालसन्मुख सिंहनहोविकदा । इसविचारसे जावुंमैंयदा ॥

जीतीदमदंत आयेनिजठाम । चरिसुनराजा डरेतमाम ॥

अखंडआण दमदंतकीफिरे । अन्यकीक्याकथा पांडवडरे ॥

दोहा- उत्तअवसार पधारीये । धर्मयोपमुनिराय ॥

दमदंत नृपआदिसव । सजहोवंदनजाय ॥ ११ ॥

परिपद बैठीउमंगधर । भव्यतारण ऋषिराय ॥

फरमावेधर्मदेशना । सुणेसवसनलगाय ॥ १२ ॥

चोपाइ

अहोभव्यो आयेभवसिन्धुकंठ । अवन्त होवोतुमउपरंट ॥

शिषगति साधननग्नबलही । पारहोवोउयम करमही ॥

ऋद्धिमुख पायेवार अनन्त । गरजनसरी नहीनिकलातंत ॥

योधोजसंपम दुर्लभ । सोअवमिला गमावोनअव ॥

अगजीतकी बारअनंत । तासुनवदुःख नाहीटलंत ॥

परजतिन सुलभ कक्षाजिन । मुष्कल आत्मा जीतेविन ॥

आत्मजीतासो सवजीतीया । संचेअगनो करोगीतिवा ॥

आत्मजीनेकर्म हारजवाय । अजगत्तर अक्षदसुर्याथाय ॥

इग्यादिमुनिबांध धवगदरी । नृपनगदा संवेगमेभरी ॥

नल गज लीनि दीक्षाधाय । रीन ये वनेवट अगवार ॥

नम्रहृदय नृप नकलविह र विन्तजाये हस्तनादुर पार ॥

नम्रहृदय नृप नकलविह र विन्तजाये हस्तनादुर पार ॥

दमदंत मुनि देख आश्चर्य पाय। स्तु ती वंदन कर आगे जाय।
 पीछे दुर्योधन दुर्मति आय। देख मुनि को कोपे भराय ॥
 अरे दुष्ट किया हमरा अपमान। ते कर्म भिक्षुक हो मांगे धान।
 निन्दा कर पत्थर मारीया। ठट्ठा करत आगे सो गया ॥ २० ॥
 यथा राजा तथा पञ्जा होय। पीछे नर आये सब सोय ॥
 एकेक पत्थर मुनि पर न्हाखीया। ऊभे मुनि को सब ढांकीय
 मुनिवर नहीं किया किंचित् द्वेष। समभाव रखे अति विशेष
 आत्मा युद्ध महा निर्जरा स्थान। जान नहीं चला जराही ध्यान
 फिर पांडव पीछे तहां आय। मुनि स्थान पत्थर ढग देखाय।
 पूछे सैं जाना सब हाल। पत्थर दूर किये तत्काल ॥ २३ ॥
 करी वंदना लम्बापराध। आश्चर्य लाये देव मुनि समाध ॥
 क्षपक श्रेणि चढे ऋषि वरा। सकल कर्म का नाशज करा ॥
 केवल ज्ञान हो गये निर्वाण। सुर महोत्सव किया उस स्थान
 पांडव हारि निज घर आय। मुनि गुन गाथा अति हर्षाय ॥
 दूसरे दिन राय शभा मझार। दुर्योधन आये धर अहंकार।
 पांडवा दिक सब दे धिक्कार। महा मुनिन्हाखे विन गुन्हेमार
 नगर घेराया तब कहां गया बल। अब को गरूरी होये अकल
 क्षपा सागर मुनि राजसंताप। कहा भांगोगे यह प्रबल पाप
 यों निभृच्छा करी शभा सहा। वांभी शरमाया मन में बहू ॥
 प्रभावे नरक में गया। द्वेष और समभाव फल क्या ॥
 दाहा-दमदंत मुनिवर पर। समझो दां द्वेष त्याग ॥

मंजिल इग्यारवां-राग पापोद्धार

२७७

वरो सुख तैसे सवी । इस अवसर मे लाग ॥ २९
निज पर आत्म सुख वरन । द्वेष पाप उद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा । यहग्यारवा अधीकार ॥
परम पूज्य श्री व हानजी ऋषिजी महाराज के

स्मप्रदाय के वाल ब्रह्मचारी मुनिश्री

अमोलख ऋषिजी महाराज रचित

अधोद्धार कथागार ग्रंथका

द्वेष पापोद्धार नामक

इग्यारवी मंजिल

समाप्तम्





मीजिल चारवा—“कलह पोपाद्वार

पूर्वविभाग—“क्लेश”

चोपाइ

हा-जगत् दहन यह क्लेशहे । दे दुःख सागर शोक ॥
 फसी भारत इस जाल मेंवन बैठे हैं फोक ॥ १ ॥
 क्लेशकहे कु संप को । जंप न लेने देय ॥
 लंप लगे घट घट में । वरणी घतावूं तेय ॥ २ ॥

चोपाइ

नेजमति विरुद्ध मुने जाने याता।उस से होवे प्रकृति उत्पात
 तस वश अन्य को वचन सुनाय।सोविरुद्ध अन्य को प्रगमांय
 नय विरुद्ध ता कारण लही । द्वेष भाव मनमें परगमही ॥
 ही अन्य को प्रगमाने काज । प्र-रे क्लेश प्रचल साम्राज ॥
 जि के अन्दर क्लेश भराय । तो समूल राज नाश कराय ॥
 त- अश्वदंती पायदलासहस्रों गमे की होवे कतल॥५॥

शैठ के हाट जो पेशे क्लेश । तो द्रव्य का नाश होय हमेश ॥
 थोड़े दिन में कंगाल बनाय। शैठजी भिक्षुक बन जाय ॥
 ग्रहस्थ के घरमें क्लेश जो होय । कुटुंब कदाग्रहीवन के रोय।
 फूटे घर टुकड़े होय अनेक । दुःखमन रगड अवसर देख ॥
 कुनम्ह कर भइ भाइ लड़े । लुटावे धन कचेरी चंड ॥
 भंडावे आपसमें मां और बापा। भोगवे केइ महं संताप ॥ ८॥
 धर्मस्थान क्लेश पेशियो । धर्म विगाड़ भरमज कियो ॥
 नास्तिक बहुत धर्मी जन बने । कदाग्रह कर बहुत ही हने ॥
 यों क्लेश पतरा है सब संसार । जहां तहां किया सत्य संहार
 इसलिये पाप में सुखीया यह । प्रत्य देखे ज्ञानी जन कहे ॥

क्लेशका स्वरूप—मनहर छंद.

वीतराग के अनुयायी । फले क्लेश फास नांही ॥
 निज शुद्धि को भुलाइ । धर्मनाम को डुबाइ है ॥
 गच्छ संप्रदा चन्पाइ । एक का अनेक पाइ ॥
 कुछ तत्व न जनाइ । व्यर्थ रुढ़ीही थपाइ है ॥
 जरा जरा भेद महाज्ञानवाहन जो लडाइ ।
 शास्त्रार्थ जो फिगड । निज हट्ट ही थपाइ है ॥
 सत्संग को छिगड । उन्मुख को जमाइ ।
 हुंय जग निन्ध नहि । एन क्लेश दुःख काड है ॥
 कर दया धर्म नृप । गये सत्य अर्थ भूल ॥
 नर इम में प्रति कर । नृप अहंपद नांही है ॥

निज भक्तों को बहेकावे । प्रति पक्षी से लज
 शिर केड़ के फोड वे । रक्त ना लीयों वही है
 धर्म कही धन संचावे । मांस आहारी को
 स्व धर्मी यों हरावे । ताते अति हर्पाइ है ॥
 दया धर्मी के लक्षणादेख मन हुवे क्षीण ॥
 हंसे अन्य मति जन । क्लेश ऐसा दुःख दाइ है
 फसी क्लेश फंद मांही । मूल सम्यक्त्व गमाइ
 तो श्रावक साधु पन भाइ किस विध रहाइ है
 प्रथम लक्षणहे सम । सम्यक्स्त्री खावे गम॥
 रहे सद्य से हो नरम । सो तो कचित देखाइ है
 हरामी से नरमाइ । स्व धर्मी से करडाइ ॥
 साधु सती से ध्रीठाइ । कर सम्यक्स्त्री कहाइ
 जरा २ बात मांही । जुदा स्थान क बंधाइ ॥
 ऐसी क्लेश भ्रमणाइ । भाइ बडी दुःख दाइ है
 दोहा—क्लेश है ऐसा धर्म में । तो संसार की क्या बा
 जलें जा अग्नि लगी । तो भट्टी में क्या रहा

फूट से फजीती—इन्द्रविजय छंद

न्याया लय में फूट धसी । कांमती एक एक को नहीं च
 ग्राम रक्षक पण फूट कांम कम । रक्षक को भक्षक ठेरावे

राज घराणे में फूट पड़ी तब । राज गमाइ गुलाम कहावे ॥
 कलजुगी हिन्द में फूट की लूट । अखुट लो चूट सबीके पावे ॥
 जागीरदारों फूटमें फूट के । पीडीयों की जागीर गमावे ॥
 साहूकारों में फूट भरी । परतीत गमाइ व्यापार डूबावे ॥
 शेटकी पेठ गमाइ है फूटने। एक की एक आत्मा फटावे ॥
 कलजुगी हिंद में फूट की लूट । अखुट लो चूट सबीके पावे ॥
 फूटसे बाप देवे धन और को । फूट से बेटा बाप मरावे ॥
 फूट से सासु बहु धमकावत । फूट से बहु सासु को दवावे ॥
 फूट से भाई यों जात लजावता बाप को धन दरबारे पहुँचावे
 कलजुगी हिंद में फूट की लूट । अखुट लो चूट सबीके पावे ॥
 पती पत्नी में फूट पड़ी तब अन्य नारी अन्य नर संग जावे ।
 गुरु शिष्य में फूट पड़ी तब । अन्य गुरु को नाम बतावे ॥
 कृत धनता धनी बधगइ फूट से गावन वालो कहाँ लगगावे ।
 कल जुग में फूट की लूट अखुट । लो चूट सबीके पावे ॥
 बधा नहा बली रावण राज में फूट पड़ी तब राज गमावे ॥
 हावली पांडव कौरव फूट से नाम डूबाइ महा दुःख पावे ॥
 से ऐसे की खुबारी करी तो । अन्य की कहानी कहा कथावे
 कलजुगी हिंद में फूट की लूट अखुट लो चूट सबी के पावे ॥

कथा—तेवीसवीं

केश का फल बताने वाली-“चार मित्रोंकी”

दोहा-फूट पडाइ पिशून्य जन । साधे अपना काम ।
 फूट पडी जहां जाय के । गये सुख संप तमाम॥
 यह स्वरूप दर्शाववा । चउ मिल दृष्टांत ॥
 सुनिया जैसः यहां कथुं । सुन समजो धर खांत ॥

चोपाइ

जनपद नामें पुर शोभाय । पिशुन जय राजा सुख दाय ।
 सो भागी राणी गुणवंत । गर सिंह नामें पुत्र सोहंत ॥ ३॥
 सुधुद्धि मंत्री को पुत्र सोहन । शंकर पुरोहित पुत्र मोहन ।
 धना शेठ को पुत्र धनंत । यह चौ मिल सदा संपे रहंत ॥
 विद्याऽभ्यास विन भूले भान । सेवे सात व्यश्र तज कान ।
 हट काण कोइ की नमनाय । स्वइच्छा चारीकरे अन्याय ।
 एकदा क्रीडा करन सो जायाचारों ग्राम के बाहिर आय ।
 खेत मक्का का पकाहुवा देख । चला मन खावे अब सेख ।
 चारोंही पेटे तबखेत मझारारखवाला देखकरकरे विचार ।
 मोटे घरके ये चउ बलवंत । हटकन से नहीं कहा मानंत ।
 में एकला यहतो हैं चार । लडनेसे होवे मुझ हार ॥
 मालक का कैसे करूं नुक शान । जिसका पेट में पडाहेधान ।
 किसी उपाव से बचावूं मालासोची नउकने आयो तत्काल ।

ली लुली आते किया प्रणाम। भले पधारे कृपाकरी श्वाम
 र पाति पुत्र प्रधान जी साथ। पुरोहित पुत्र है ब्राम्हणजात
 तबु वनीया क्यों आया यहां। इसमें हक इसका है कहां ॥१॥
 डे दूणे पहिले ले दाम । घर में इसने रखे हैं श्वाम ॥
 तों हर्षे कृपी भक्ति जोय । कहे सच है पटेलके सोय ॥
 नीया कैसे खावे यह माला। कृपी पकड़ा उसको तत्काल ॥
 लले के एक स्थंभ से बांधा तीनों से कहे फिर तक सांध ॥
 अन्य भाग्य पधारे राज कुमार। प्रधानजीके बेटे तुमलार ॥
 गह्वण भिकारी हैं ऐया। मांग के धान बहुत गया लेय ॥
 फेर आया खेत लूटने काज । यह तों अच्छा न लगे महाराज
 दोनों कहे सच पटेलकी बात । दूजे स्थंभ पुरोहित बांधात ॥
 हर्षाकुमार से कह कृपान । खेत मालिक आप कृपानिधान ॥
 प्रधान जी पहिले हम पास । तैसी ली चुका लिया धन रास
 कित न्यायते भुट्टे ये खाया। नृपति आप न करो अन्याय ॥
 राज पुत्र तब नीचा जोय । सचीव पूत स्थंभे बांधा सोय।
 अब एकही रहे राज कुमार । कृपी क्रोधातुर हो उसवार ॥
 कहे राजपूत हो चोरी करो। जरा गरम घर की नहीं धरो ॥
 चोथे स्थंभ बांधयो कही । चोर पकड़े प्रकार तब सही ॥
 सुनकर लोक बहुत दोड आय चारो बंधे देख आश्चर्य पाय
 फिट २ निंदे सहू जन ताता। शरमी चारों रहे बेबात प्रकाश ॥
 चारों के पिता खबर ये पाय अपमानी देश पार कराय ॥९॥

मिले उत्तपर धरते संतोष । समजे नहीं कैसे होवे रोष ॥
सन्ध्या समय सब मिल बैठताशेठजी हित शिक्षा देवत ॥
निर्मल मन सरदे सब सचाकरे अंगीकार न करे कच पचा
बहु पुण्य जोग बहु संगम थायाबहुन मिले बहुतही शोभाय
बहुत मिले होवे बहुतही काम । एक राजासे नवसेगाम ॥
एसा जान सब संपस रहे । जिससे वित्ती क्षण में बहो ॥
इत्यादि उपदेश शेठ सुणाय । सुने सही उसी तरेहवरताय
दारिद्रता तस अतिसताय । तोभी ते दुःख वेदे न जराय ॥
दोहा— उत्सवक उनकेधामकी । पड़ीअचानकर्मात ।

यांयनको दमडानहीं । खुलीरहेफर्जात ॥ १२ ॥

सबमिल हातोहाततथ । करनेलागेकाम ॥

समरसे अशुभकर्महटे । शुभपुण्यप्रकटेताम ॥ १३ ॥

चोपाइ

मृत्तिकाकाजे धरतीबोदायानारतकुदाल अवाज बहांपाय ॥
धन भरीयो चत्त्वो बहांदेख । आश्चर्यराये हर्षविशेष ॥
शेठहुकमे ततलिया निकाल । दूतगउसके नीचेनाल ।
उसे नीकाला तीनरादेवाय । उसेनिकाल शेटनचेताय ॥
अतिलोन भाइ दुःखदाय । इननेनेनव सुखहीपाय ॥
गडापुरकर बंधाईनेन । द्रव्यनेवधी सुखजनप्रीन ॥
नवनवान बग्नभूषण किया । द्रव्ययमाय सुखनयलिया ॥
बहालीएक स्वर्गशाहरहे । धनपरिवार बहुतनमगहे ॥ १४ ॥

चोपाइ

एकदालक्ष्मी उससुरसंग । गगनजातेदेखा धनदत्तदग ॥
 सुरकहे लक्ष्मी तूनिशरम । अनइछितजगरहे तुरम ॥ १९
 चाहेतहां तोतूनहींजाय । तबहीपगमे रहीठेलाय ॥
 लक्ष्मी कहे संप जहां मुझ वासाते अब तुझे देखाबु खास
 कमलाअर्धनिशीमें वहां आयाधनदत्त से कहे क्य करो सहाय
 शेठ कहे सुता हुं तू नारी कुणासा कहे में लक्ष्मी सुणो निपूण
 विन बोलाइ वसी तुझ घर । तुम राखो मुझ कचरा पर ॥
 नरेंद्र सुरेंद्र मुझ आदर करो।न रहे तुझपास रखे इस तरे३२।
 शेठ कहे कल खडा खोदायागाडी देवूं तुझे उस मांय ॥
 खिशाणी हो बोली सासुरी।खड्डेमें दाटो ऐसी में नाबुरी।३३।
 में तो नहीं रहूं क्रोड उपायाशेठ कहे करो ज्यों सुख थाय॥
 दोलत आन जाने की में जान । पहिले इस्तरे रखी इस ठाण
 सुरसंग सुरी फिरी शेहेर मझार । मुझरहने उत्तमठारे देखाइ
 दगा कुसम्प सब जगह देखाय । धन दत्तसम घर एक नपाय ॥
 फिर आइ लक्ष्मी धनदत्त घर । बडे पुत्र से कहे इस पर ॥
 में लक्ष्मी शेठजी कहाडे मुझ । मुज गये जावेगा सब सुखतुझ
 तुम राखो तो रहू तुम आवास । बडा पुत कोपी कहे तास ॥
 शेठ हुकम विन क्यो आइ पास । जा शीघ्र नहीं तो पावेगा त्रास
 दूसरे पास जा विनंती करी । मुझे तुम राखो कृपा करी ॥

दीनी गाली कहाडीललकार । यों सब कने पाइ तिस्कार ॥
 पस्ताइ सुरी सुर से कहे ताम । सुखे रहने को गमायो में ठाम
 औरभी देखे इनसबकासम् । फिर धन दत्तपास श्रीआइ जम्प
 कहो शैठ जी घर यांगे केम्हारा । शैठ विचार नश्य हारें वं ॥
 घर धन सब लक्ष्मीका बाइ । लक्ष्मी कहें तुम तेजो इस तांइ ॥
 तत्क्षण शैठ उठ घर बाहिर आय । हाक मार सबी को धोलाव
 शैठ घघन सुन सबी उठ भागा । मोटा छोटा डेकेरु नागा ॥
 कर जोडी कहे हुकम फरमावो । शैठ कहे श्री किंयो रीसावो ॥
 वस्त्र भूषण उसका उसे देना । फक्त तीन २ वस्त्र सबी रखलेना
 सुनतेही सब फेंक दिये तत्क्षणाजरा नहीं दुःखीयो किसकामन
 आगे शैठ पीछे सब चला परिवार । धनमें आये बट वृक्षनिहार
 विसामा लिया शैठे चिंता भराइ । खाने मांगे गे देवुंगां में कांइ
 बुद्धि उपाइ कहें गांसनोड लावो ॥ चार जने मिलरस्सीबनावो
 घेच के भोजन करेंते भाइ । सुन सब लगे उसी काम मांइ ।
 दुःख विपवाद किसके मन नहीं । उलट हय रहे सब सनाइ

दोहा—कमला बैठीतिहांसोचकरायक्ष आया वहां चाल

डर पायो मनमें आति । रस्सी बटतले निहाल ॥
 पूछे मानव रूप कर । रस्सी बटो किसकाज ॥
 शैठ कहे हम भूतका । करेंगे इससे इलाज ॥४९॥
 भूक का भूत निवळ गया ॥ पूण्य पसाय वचन ॥
 मेरा किया मेने लिया । चमका भूत तब मन ॥५०॥

चोपाइ

करजोडी कहे करोगुन्होमाफ । अवनहीं संतावूंगा कदाफ ॥
 अगमबुद्धि वनीया भूतजान । कहेलछी रूशीतुझहान ॥
 भूतकहे मेरावारह क्रोडधन । सोआप लेकरकरोगमन ॥
 लक्ष्मीको मेलवूमनाय । तत्क्षण सो लक्ष्मीपासआन ॥
 कहे तूछ वचनेपुण्यात्म सताये । मेरेपीछे क्योंतेनेलगाये ॥
 चलोशीघ्र तत्तमनाइ लावें।जिससे अपनदोनों सुखपावें ॥
 लक्ष्मीकहे पहिले थेंमुझछेडी॥परकाजघडेपडे उत्तपगवेडी ॥
 दोनोंमीलआये धनदत्तपास । धरेपधारोयों करेअरदास ॥
 धनलेभूत श्रेष्ठसंगभया । सपरिवार श्रेष्ठ निजघरगया ॥
 चमत्कार पुरजनसबदेख । आश्चर्यानन्द मनहुवे विशेष ॥
 वीतीवात श्रेष्ठसबसुनाइ । सम्पसत्य प्रत्यक्षसुखदाइ ॥
 रूठीलक्ष्मी मुझमनाइलाइ । वारेकोटी धनभूत बसथाइ ॥
 सुनसबजन तत्तमाहिमाकरी । सत्यसम्पलिये बहूतेवरी ॥
 धनदत्त सपरिवार दीक्षालाइ । स्वर्गगये मोक्षपावेंगेसही ॥
 दोहा— श्रोताइसदृन्तसे । पेखोसम्प सुखदान ॥
 धनदत्त परेसवरहो । द्रढसम्पको सदाय ॥
 क्लेशतजो सम्पकोभजो । गजोधर्मभूमेड ॥
 सजोप्राचीन साजको । वरताजैन अखंड ॥
 निजपर आत्मसुखवरन । द्वेषपापउद्धार ॥

नमो भगवते वासुदेवाय । द्वावशमो अधोद्वार ॥ ६० ॥

परमपूज्य श्री कृष्णजी ऋषिजी महाराज

के सम्प्रदायक बालब्रह्मचारी मुनि

श्री भगवन् ऋषिजी महाराज

रचित- अधोद्वार कथ. ग. र.

ग्रंथका देवप. पत्रद्वार

नामद्वावशवा अधोद्वार

समाप्तम्





मंजिल तेरवा—“अभ्याख्यान पापोद्धार”

पूर्वविभाग—“कुआल”

दोहा—इर्षा धर अन्य ऊपर । जों दे कूडा आल ॥
अभ्या ख्यान सो पापहे । सद्गुण भक्षण काल ॥

चांपाइ

इसजग में पुण्यात्म प्राण । पुण्य पसाय कीर्ती मंडाण ॥
सो पापात्मा को न सुहाय । उसे दाटण कर उपाय ॥ २ ॥
दुष्टात्मा चिन्ते मन मांय । सबही मानते उनके तांय ॥
सबही सद्गुण बाकोही कहे । सबही पंथ ताही को गहे ॥ ३ ॥
मुझ न पूछे दुकडा साट । बोलाये न करे को बात ॥
मेरे मत में कोई नहीं आय । जब लग कायन यह रहाय ॥
इसलिये ऐसा करूं को उपाय । जिससे कीर्ती जिसकी दबजाय
यों विचार छिद्र ग्राही होय । सद्गुण को दुर्गुण कर जाय ॥ ५ ॥

जो कभी किंचित दुर्गुण पाय । तो राइका पहाड बनाय ॥
 ठोर २ वक्तो सो फिरे । ज्यों परिणाम जगत् कागिरे ॥ ५ ॥
 जो कभी दुर्गुण लगे नहात । तो सद्गुण को दुर्गुण बनात ॥
 भोले लोक को सो भरमाय । दुर्मति तामे प्रागमाय ॥ ७ ॥
 खोटा कलंक तस सीस चडाय । उभय भवका डरनहीं लाय ॥
 ब्रह्मचारी को व्यभिचारी कहे । तपस्वी को भक्षसी कहदो ॥
 ज्ञानी को अभिमानी मनंत । वक्ता को कु-कथन कथंत ॥
 विप्ररीत यों सबही प्रगमाय । अच्छे कु-कलंक चडाय ॥
 ऐसे जो हैं अधर्मी जीव । भोगवत दोनों भव-रीव ॥
 आखिर तो सत्यही प्रगटाय । तब अभ्याख्यानी मुहछिगाय ॥
 फिट २ वज्रता लोको के मांयावयण परतीत कोइ नहीं लाय ॥
 ताको पाप ताकें सिर पडे । सचे कलंक तास सिर चडे ॥

अभ्याख्यान दुर्गुण-मनहर छंदः

जे नर अभ्या ख्यानी । ताकी मति सदा भृष्ट मानी ॥
 गुण आच्छादन मनी । दुर्गुण सो जोवे है ॥
 आप की जमावे पेठ । अन्य की बतावे हेठ ॥
 इर्या को भर्यो ठर्यो पर माम खोवे है ॥
 अच्छता चडावे आल । बोले जैसो काटे व्याल ॥
 नाहक सतावे गुणी । सती संन होवे है ॥
 लही महात्मा का आप । उपाजें महा पाप ॥

अभ्याख्यान पाप ऐसे जग को विगांवे है ॥ १२ ॥
 ईर्ष्या भराये जन गुन को करे औगुन ॥
 त्यागी ब्रह्मचारी मुनि । अस्त्रानी जो रहावे है ॥
 जा को मेला कही निंदे । जाने कोइ नहीं बंदे ॥
 शुचाशुची भेदकों । अज्ञानी कहांसे पावेहैं ॥
 देखलो पुरान अशुची चारतरह पहचान ।
 दयाहीन निंदक मैथुनी चोरधावेहैं ॥
 यहचारोंकु कर्मकरे । ताकोतो शुचीउचरे ।
 अन्ध अभ्याख्यानकी उलटही दोखावेहैं ॥ १३ ॥
 केइधर्मधारी कर्मवशहैं संसारी ।
 पालेपरवारी करेनिर्वद्य व्यापारीहै ॥
 अभ्याख्यानी छिद्रजोय । धर्मगुण ढंकेसोय ।
 कुडाकलंक लगाकहे । यहतोढोंगी भारीहै ॥
 हाथमांहे माला राखे पेटमेंकोदाला ।
 गुप्तकरे कर्मकाला भाला लेखणीका मारीहै ॥
 थापण दवाय ऐसेकलंक लगाय ॥
 ऐसे अभ्याख्यानीकी तांदोना भवत्वाहै ॥ १४ ॥

इन्द्र विजयछंद.

नरतम्य जागेकेइ योगविने । अन्यकीकीर्ती नहींसुहावे ॥
 अन्यमतकेकेइ तपीजर्षागुनी । नहींकर्मम कलंकसोटावे ॥

हीनाचारी अज्ञानी वताकर। उनके भक्तों के भावफिगवे ॥
 बडो अभ्याख्यान घुस्यो धर्मीघरा देख अमोल अचंभोइलावे ॥
 श्वेताम्बर दीगाम्बर को मिथ्याती के। दीगाम्बर श्वेताम्बर ने ठेरावे
 साधू मार्गी मंदीर मार्गी । यह विध एकेक पे आल ठावे ॥
 सत्य को असत्य असत्य सत्य कर। अपनी टेक को पक्की जमावे।
 बडो अभ्याख्यान घुस्यो धर्मीघरा देख अमोल अचंभहीलावे
 कलंक हे वंक अचंक लगे सो जगे दुःख शंक निरंक उपावे ॥
 देवकी के गये पुत्र छहो हरी। हरिण गमेपी सुलसा के पहुँचावे ॥
 कलंक से सीता वसी वन वासही। योही कलंक अनेक सतावे।
 यो दुःख कार अपार कु आल है। दोनों भव दुःख को ये उपावे ॥

कथा—पच्चीसवीं

अभ्याख्यान के फल बतानेवाली—भव भूत क्षत्रीकी

दोहा—बहुते जीवन कलंक दे। दुःख पाये संसार ॥

भव भूत नामें क्षत्री की । कथूं कथा सुनी सार ॥

चोपाइ

मेदनी मंडण ग्राम मझारा भय भूति क्षत्री रहे धन घर ॥
 विधय लंपटी सदा दुर्मति । परदारा भांगन लुब्ध अति ॥ २ ॥

दुष्ट इच्छा पूरने के काज । काजा काज की न धरे लाज ॥
 परंपंच रच करे इच्छापूर्णा मत्पूरूप उससे रहे सदा दूर ॥
 तहां रहे एक मंगल शाह शेटा मंगला नारी गुण की पेठ ॥
 महा रूप वती तेसी महासती जैनधर्म प्राति विद्यावती ॥
 एकदा भवभूती मंगला को देखा लूरे मोहा काम पीडा विशेष
 वस करने किये अनेक उपाय । परंतु न चला एकही दाव ॥
 पापी तब खोटे परंपंच रचे । काज साधन जों मन जचे ॥
 मोतिजुगल अतिसुंदर लाया बाण में तांघ नस धरम फेकाय
 सोमिलिये मंगला सती तांघ । भूषण से पडे जाने मनमंघ
 नथनी में लो लिये डलाय । दासी हाथ भवभूती भेद पाय ॥
 गोशाक क्षत्री याणी की बनाया तस धोवन को दी सो जाय ॥
 तांच दे मंगला नेह में मुकाया मंगला भेद जानन नहीं पाय ॥
 मंगला शब्द सम एक बैद्या तांघ । आधिगते रथ में बैठाय ॥
 मंगल शेट घर सन्मुख रही । तब सुने ऐसा शब्द कही ॥
 मंगलशा दुःख दे अति मोय । इस लिये यहां रना नहीं हांवेय
 जावूं में भवभूतीजी घर । यों पुराण रथ भग गया तर ॥
 मंगला मंगल शेट सुनी नहीं येहा अन्य सुनी जचे मोहिह ॥
 प्राते मंगला नदी नहाने जाय भवभूती तम नारी थाय ॥
 धा सुभा रथ उग्र घटी कर पुन में पुन नाम दिया घर ॥
 उग्र उठा सती घर जब आय नथ्य वलां क्षत्री कर नहाय
 अही शीघ्र काज करने घर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

सती कर छोड़ावन करे जोरापापी न छोडे धरा कठोर ॥१३॥
 लोक बहुत भेल वहां होय । भव भूती को दवावेसाय ॥
 भव भूती बख में मांस देखायासती बख डाल दिये उसठाय ॥
 निडर भव भूति रुकी से बहे । आज रात मुज दर दह रहे
 पुछे पाडोसीसे कही आइ भाग।कहे पाडोसी सुनाथा राग ॥
 पुनः भवभूति नथ मोती बतायाखरीदे उस जौहरीकौजताय
 इत्यादि प्रत्यक्ष भेद पाय । लोक चुप रहे अचंभा लाय १६
 सती को अती उपजा संताप । चिंते प्रगटे पूरा कृत पाप ॥
 खसावे नहीं सा तहां से पायामंगलशा अतिगये मुरझाय ॥
 राज भट दोनों राज में लेजाय । नृप सन्मुख ऊभा कराय ॥
 सती गुंम हुइ बोलानहींजाय।भव भूती औरभी बात बताय
 क्षत्रीयाणी की पोशाक इस घरधरी।बो पहरी के आतीहमपरी
 भेज सीपाइ पोशाक मंगायादेख सच्च हूइ भव भूती की बाय
 धवराइ रुती तयकंह पुकार।अहो प्रजा पितानिराधारआधार
 जितने कृतघ्न भव भूतिने किये।एकही भेद स्वप्न नही लिये
 निदोष अवला में कहू प्रभृशाखा।डुबी लाज पिता तूं ही राख
 सब जन कहें स्वप्न में महारायामंगला खोटी दूम जानी नाय
 भव भूती खोटा जन्म से सही । परंतु यह परपंच समझे नहीं
 सब की बुद्धि गइ चक्राया।किम विध करें अब ये न्याय ॥२६॥

दोहा-विमल बुद्धि रायपुत्रिने । सुने सबी यह हाल ॥

राजशभा में आ कहे । मैं करूं न्याय एक ताल ॥

चोपाइ

सती कों अग्ने पास बैठाय । भव भूतसे कहे सत्य कहे वाय
 इसने क्या किया तेरे घर आहार । कब खाया सत्य कर उच्चार ।
 भव भूति कहे आज कीरान । खा आइ ये मांस दाल भात ॥
 फिर पूछे तूं सच कहें वाइ क्या । वस्तु कब तेनं खाइ ॥ ३० ॥
 सती कहे कल सन्ध्या समय । दाल शाक रोटी खाइ मय ॥
 औपधी देत सधमन कराय । दाल रोटी पडीमूं आगे आय ॥
 राय पूछी कहे देखो सब लोक । भव भूति की बात सब फोक ॥
 पुनः वाइ पूछे सती के ताय । तुझ वस्त्र में मांस कैसे आय ॥
 सती कहे न्हाने नदी में गइ । धोसुका वस्त्र बांधे शुद्ध सही ॥
 फिर न्हाइ चलीये गांठी उठाय । न जानूं मांस कैसे भराय ॥
 कन्य कहे सती निधा चुकाय । पापी दाना मांस इसमें ठाय ॥
 भलां वाइ मोती कैसे आये हात । सती कहे मुज आंगणमें पता
 कन्या कहे पापी दिये तहां न्हाख । घर के जान लिये इन राख
 अच्छा पोशाक कैसे धरी घरमांय । सती कहं गठ डोदी धोवन लाय
 तैसी ही मे संदूक में धरी । और बात में जानूं नहीं जरी ॥
 तहीं तब उस धोवन को बोलाय । दीधमकी सच्चदान वनाय
 दोहा—अदल इनसाफ वाइ किया । टाला सति कलंक ॥
 सुन सब जन आनंदी या । वहा वाइ बुद्धि वंत ॥ ३१ ॥
 मंगलशा मंगलावती । माना अति उपकार ॥

हूँ जन कों तारीये । विद्या बड़ी संसार ॥ ३८ ॥

चो पाई

याइ सती कों धर्म बेन बनाय । नृगति पुत्रीजानी ताय ॥
उत्तम वस्त्र भूषण सजावाभाउंघरे तस घर पहुँचाय ॥३०॥
सती कहे घर अच जायूं नहीं । देखी जग रचना में यहीं ॥
कमौदय कोइ किसका नायासंयम लेवूं गुरुजी दिगजाय ॥
अति उत्सव तम दीक्षा दी रायाज्ञ न ध्यान में आरममा ॥
करी करणां स्वर्ग सोपायाथाडे ही भव से मोक्ष संथाय ॥

दोहा—भव भूत शरमाइया । सब कर अति धिक्कार

५६॥ नृगमी यह पापीयो । थूं थूं करे नर नारय ॥

चोपाई

भव भूति का अति जाण अन्यायानृपती अति कोपातुर थाय
या धन उमका दिया लेंटाया मूढ मुंडा शम मुन्य कराय ॥
रक्त वस्त्र तस अंगपदगाय । लेंवा कण पर तस वेटाय ॥
कराया सब चोदं मांय । बकाश करे जो किया अन्याय ॥
सब जन देने उने धिक्कार । निकालदिया पुर के याहर ॥
पापदय प्रकटा तन रोगाअनेक विरती मे दृश तन गिरा ॥

दोहा—नरकादि दुर्गति विषे पायादुःख अवार ॥

अन्यायान नरागर कोनजो मुन्य इच्छना ॥



मंजिल तेरवा "अभ्याख्यान पापोद्धार"

उत्तर विभाग-मौन

दोहा—ईर्ष्या न करे कोइ कां।वाणी न बदे दुःख दाय॥
तद्वोध वक्त उचरे । सो मौनी मुनिराय । १॥

चोपाइ

पर अवगुण पर दृष्टी न दये।निज अवगुण अंतर द्रग गये॥
अपार अवगुणी निजात्मज्ञान । तदा करे गुणी गुणका ध्यान
पंच में अंग में कहा जिनरायाजो अभ्याख्यान अन्य तिरठाय
ताही तस आवे कलंक । यह बात श्रद्धी होकर निशंक॥
कलंक किसी तिर जरानधरो।निज हित चिंत पाप परिहारो
आप गुणी हो पाडो अन्य पे टापाज्यो देखी गुणी सुधरेआप
द्वोधकर सद्गुण प्रनार । जिनतरह गुण इच्छक धारे ॥
दतर दोग्य गुणी गुण उचांगे।ताही मुनी नहीं दुःखे दुतरार

अभ्याख्यान से बचने कीरीत-मनहर छंद

पूर्ण कर्म के संयोग । मिले शुभा शुभ जोग ॥
 अमन्योग व मन्योग्य । ज्ञानी जन यों विचारी ॥
 कभी कलंक जो आय । संचित कर्म के पसाय ॥
 निज बन्धे प्रकटाय । ऐसा निश्च निरधारी ये ॥
 पहिले दीना जो कलंक । उससे लगा यह डंक ॥
 ऐसी कर्म गति बंक । भोगूं धरी में लाचारी ये ॥
 भोगवतो दुःख पावूं । तो क्यों नया में संचावूं ॥
 जिसमें आगे न पस्तावूं । गों अमोल मन बारीत ॥
 सचालगे कलंक खाटा । हीये दुःख का जो चोरा ॥
 तो न बांधे नवी पोटा । तुज आगे न सतावेगा ॥
 न धर दाता पेंद्रेय । जाणी धर्म की रेय ॥
 लाय दया तूं विशेष । यह किया आगवायेगा ॥
 जैसा गमाया है सुख । तैसा पावेगा ये दुःख ॥
 नव कूटेगा ये मुख । किये उदय जय आवेगा ॥
 यह तो कृपा देनदार । तूं तो कर्जी मत हों पार ॥
 धार अमोल विचार । नाहीं सुधी सदा रहावेगा ॥
 जो नृप हो मन निशंक । नही कलं किन अंक ॥
 कृपा दीया कीद गुरु । ना नंग क्या जाय है ॥
 मग म्हात्मा जानें लोकर । आसोर होवेगा यह फोर ॥

बैठ तूतो क्रोध रोक । जोक तुझ नहों आव ह ॥
 कभी खोटा कहे सहू । तो न करना मन लहू ॥
 यह तो निर्जरा है वहू । लहू थोड़े काल थावे हे ॥
 आखीर ते सत्य तेरे । ऐसा जेष्ठ जो उचरे ॥
 तेहा नीवडे आखीरे । यों अमोल दरशावे है ॥
 कभी न होवे कलंक दूरा । तोभी मन मती झूर ॥
 धैर्य कर्म बंध चूर । शूर हांके भव विचार ने ॥
 चोरी जारी व्यभिचारी । कवि कर्म अनंती वारी ॥
 हुवा नाच रगो वारी । सब दिया तुझ धिकारने ॥
 तहां परवश्य सहे दुःख । नहीं रख कर्म लुक ॥
 यहां स्व वश्य सन्मुख । कर निर्जरा ये अपारने ॥
 एक भव निकल जाय । आगे नहीं दुःखपाय ॥
 यों अमोल मन समजाय । शुद्ध ज्ञानसे विचारने

हितशिक्षा—इंद्रविजय छन्द

मतदे मत दे कलंक कोइ को । लगा कलंक सहो सम भावे
 कलंक अंक अति दुःख दायकाजाण दूसरे का कलंक गमावे
 कलंक दिये से कलंक लगे । अरु कलंक सहंसे कलंक न आवे
 गुणकी स्थाप करे यथा योग्य । तोही अमोल सदा सुखपावे

मुनिका उपकार—भनहर छंद.

जग कलंक निवारे । एसा महात्मा विचार ॥
 करे खेवट अपार । निज मूख को विमार्ग है ॥

फिरे सदा ग्रामो ग्राम । रहे मिले जैसे धाम ॥
 खावे निर्वय जोपाम । दृष्टो पराहते धारी है ॥
 बांचे सरस व्याख्यान । मधुर रागश्वर तान ॥
 कट्ट मधु अयसर पाम । पन सब हित कारी है ॥
 सुणी चेतो भव्य प्राणी । त्यागो कलंकी जं जार्ण
 पावे सुख आगे बानी । ऐसे गुरुकी बली हारी है ।
 जो हैं गुरु ज्ञानवंत । सब का भला जो चावंत ।
 कर कृपा फरमा वंत । सत् तत्त्व निरधारी है ॥
 पाप पुण समजावंत । धर्माधर्म दरशावंत ।
 हिता हित ठसावंत । निज बुद्धे विस्तारी है ॥
 सूत्र अर्थ कथा न्याय । ढाल सबैया सज्ज्ञाय ॥
 यों नाना कर उपाय । बात गले दे उतारी है ॥
 ज्ञानी रस्ते शीघ्र आय । अज्ञानी मन मुरझाय ॥
 जैसा होत तैसा थाय । गुरु दूषण नलगारी है ॥
 मत दोबो कुडा आल । बोलो मत आल पाल ।
 चालो मत खोटी चाल म दुःखाबो परातमा ॥
 मत उचारो अलिक । धरो अपयश विक ॥
 रहो नम्र हो वर्नात । जो आवो थे विख्यातमा ॥
 तजो सर्वही दुर्गुण । ग्रहो सर्वही के गुण ॥
 तजो अनीती विकर्म । भजो परम परमात्मा ॥
 ऐसी शिक्षा बहुप्रकार । देके करें जग सुधार ॥

मा जल तरवां-अभ्यान्यान पापोद्धार
धार सुधरे नर नार तो तां मिले सुख शांतन

गुरु उपकार-इंद्रविजय छंद.

धर्मक्षर दातार गुरु के उपकार में पार वां किमपी न होवे ।
तो दातार नम्यक्त्व सुमन के, ना सु प्रसाद मुक्ति नग जो
ता उपकार को पारनवार होयों भव्यात्म मन में चावे ॥
तहु जन्म भक्तिकर पर पहुँचावे। तो हो शुश्रूष्य उभयभवतोवे
जे जग में तजीव निजिब के पदार्थ तब हैं उपकारी ॥
इत इह भव के डर पराभव । आये है कान रु विति टरी ॥
किमेपि को अजोग बने तो । ना उपकारन टार विकारी
ल करे कन लगानुं अंक को। तो अभ्यान्यान को निवारी

कथा—छव्यमिर्वी

मौन वृत्त के फलवताने वाली—“नवींग सुंदरीकी”
दोहा—मनभाइ कलंक सहन कमान दे किन को दोष।
तरींग सुंदरी नवींगरे । तो आवरी राय नवींगरे ॥

चोपाई

र नगर वां नवींगरे शय धारक उन धर्म धार ॥
वी नवींगरे नम जान । नवींग सुंदरी नम सुनी वनान ॥

साकेत पुर एक दूसरागाम. अशोक दत्त शेठ काव- हां धाम
 उभय पुत्र तस रूप निधाना समुद्र दत्त, वरदत्त, गुनखान ॥
 एकदा अशोक दत्त किसकामागजपुर आयें शंख शेठ धाम ॥
 सर्वांग सुंदरी का रूप निहारा जानी पुत्र समुद्र दत्तसार ॥
 सगाइ कर आया निज घर । समुद्रदत्त कों दीनी खबर ॥
 लग्नोत्सव कर व्याईतासा आयें शयन भूवन में खास ॥
 कर्म जोग जहां अन्यनगछायादेख समुद्र दत्त संशय लाय ॥
 चुप उठ आया साकेतपुरावेमकी बात प्रकट करी भुर ॥
 मानी सचही सची बात । अन्यस्थान तस लग्न करात ॥
 साधही वरदत्त को परणाय । श्रीमती कांतिमती ले आय ॥

दोहा—पाछे सयन भवन में। सर्वांग सुंदरी आय ॥

पति जोयें मिलीये नहीं। तय ते अति घबराय ॥८॥

तान मात मे जा कही। साकेतपुर ग्वर कगय ॥

अन्य परण सो जान के। दुःख अति मन पाय ॥९॥

चांपाइ

सर्वांग सुंदरी धैर्य मन सायाजाने कर्म प्रकटरे अंतराय ॥

धर्म ध्यान दान मुकृत्य कर। दुःखीयेकें दुःख स शक्ति हर ॥

भाग्योदय मुवना मनी आयाधर्म कथा मुन वैर. ग्य लाय ॥

ली दीक्षा शिक्षा दो मर्ह.। दुःख तपश्चर्या च्याने अनुसनी ॥

विचरन फिरन साकेतपुर अ या अशोकदत्त पर गोचरी जय ॥

दोनों भ्रात नारी वंदन करी। भोजन देवन रसोडे संचरी
 तासमे कर्म उदयवली आय। मयुर खूटी मोतीका हार लाय
 त्रिआर्जका आश्चर्य पाय। गुरुणी को सब दिया सुनाय ॥१३॥
 सोडे से दोनों आइ बाहिर। हार देखा नहीं खूटी पर ॥
 आर्जिका का बैस लाइ सोय। अयुक्त बात ये कैसे होय ॥
 निन्दासती की करी गाम मांय। सती सुन द्रढ मौनरही सहाय
 ज्यों निन्दा सुनेत कान। त्योंत्यों ध्यावे उत्तम ध्यान ॥ १५ ॥
 धर्म ध्यान से शुक्ले चडी। कर्म दग्ध कर दिये उसी पडी ॥
 क्षपक श्रेणि चड केवल पाय। जय २ देव करे व्योम मांय ॥
 ते अवसर सागर दत्त सन्मुख। खूटी मयुर हार उगले मुख ॥
 सागर दत्त आश्चर्य पायो आपर। निजार्तन को दे धिकार ॥
 ऐसेही छांय सयन घर पडी। दिन गुने में सती पर हरी ॥
 यहां भीतस दिया कूडा आल। हाहा में हूं कर्म चंडाल ॥१७॥
 धन्य २ सती की गर्भार ता खरी। आज लग केही वाणिजान उचरी
 चारों मिल आया साध्वी पास। केवल महिमा जो पायेहुलास
 वंदन कर बैठे सन्मुख आय। कृत कर्म चिन्ती शरमाय ॥
 सुरनर की वहां परिपद भरी। केवल ज्ञानी धर्म कथा ऊचरी ॥
 दोहा—सुणो भव्यों एकाग्रचित्त। अभ्या ख्यना दुःखदाय
 जितविध बंधे जीव ये। उसी विध मुक्ताय ॥ ३१ ॥

वसंत पुर नगरी के ज्वान । उभय शंठ वसते गुनवान ॥
 गुगवंत परनी धन बहू घर । विध्वातस भस्मो धनश्री कर ॥२२॥
 धर्म धोषकृपि महोष पसाय । जप तप धर्म करे उमंगाय ॥
 भ्रात आज्ञा मे सुकृत्य मांय । यथा शक्ति सो द्रव्य लगाय ।
 बंधू प्रेम की परिक्षा करग । एकदा खोटा करे आचरण ॥
 रात को भाइ मृते घरने आय । भो जाइ कोसा पास बैठाय
 जोरसे हित शिक्षा यों दये । शील कुल रखे लज्जा रये ॥
 दुर्शीलका कभीन बरा पथ । भ्रात मेरा प्रेम अलंड धरंत ॥
 भाली भाजाइ कहें मत्यवान । धनरति के तब वैम भरात ॥
 मुझ नारी ये वर्णन चागीणी । तब भस्मि हित शिक्षा देते भणी
 बनीता जब आइ पनिकपाम । ललकारी कढ़ाडी दी तास ॥
 ते विचारी गइ मन मुग्धाय । विन गुन्हें किम अपमान कराय
 आम्हनी मां घर के बार । धन श्रीदेख हर्षी अपार ॥
 वृद्ध भाइ का मया हें प्रेम । अब लघु भाइ का देखें प्रेम ।
 एकदा लघु भाइ मृता घर नाय । लघु भोजाइ को भ्रात चंताय
 पतिव्रत धर्म नारी का शिष्यगार । अन्यन देखणा द्रष्टी पसार
 सुर्गा लघु भाइ वैम मन लाय । पति वाम जब नारी जाय ।
 चिक्रागी तम कढ़ाई बार । नें मुग्धार्णो येन हर्षी धार ॥
 दोनों विगृहणी दुःख दिन्तबर । नण्डने एकदा अर्जसो करे
 विन गुन्हें हम को नजीन न भ्राना । नण्डने हमका निहालो मान

धन्य श्री दया लाय । दोनोंसे पुछे अजान जों थाय ॥

ना गुन्ह किम नजंदा भोजाइ। सो कहे तुझ शिक्षासुनवाइ
श्री कहे भोले तुम सहो । में तो सहज धर्म शिक्षा दइ
संवती नहीं करे अक्राजा। ऐसे कभी लेनी नहीं लाज ॥

नो शरमा किया नारी सत्कारा। दोनों नारी डरीमन मझार
नो ही रहे नणंद हुकममांही । अभ्याख्यान तहां कर्मबन्धइ
वसरे पांचोही लीना दीक्षा। करी करणी पढकर धर्म शिक्षा
लोचन ते कर्मकी न करी । पांचो मर स्वर्गे में अवतरी ॥

दोहा—स्वर्ग से आयु पूर्ण करा। यहां लियो अवतार ॥

दोनों भाइ भाइहूवे । यह दोनों नार तुम नार ॥

धन श्री कुल कलंक दे । सर्वांग सुंदरी हूइ मेय ॥

कलंक दीयो कलंक लीयो। देख्ये प्रत्यक्ष तेय ॥

छांया पूरुप लख धण तजी। मयूर खुटी गिल्योहार

पाप खुटे पाछा ब्रम्हा। मौन से निपजा सार ॥

चोपाइ

मौ प्रत्यक्ष अभ्याख्यान। फल । मौन के फल भी देखे। सकल
अभ्याख्यान के किये पत्तखाना। हलु कर्मों वैराग्य मन आन
सर्वांग सुंदरी का मय कुटंवा। जग जंजल को जान बिटंवा ॥
सती पाम लीनो संयम भार । ज्ञान आचार की शिक्षा धार
कवली आयु अंते मोक्ष पाय । और मयी तो स्वर्ग मिधाय ॥

प्रकाण रत्न से कथा ये लही । यथा बुद्धि यहां कथ दइ ॥४१॥

शोरठा—यों जानअभ्यासान । छोड़ो सुगुण सब तुम ॥

ज्यों रहे अविच्छलमान । दोनों भव सुख पावोंगे ॥

दोहा—धन्य सती सर्वांग सुंदरी । विकट प्रसंग मोनघारा

कर्म कलंक दोनों हरे । येही सुने का सार ॥ ४३ ॥

कलंक न देना कोई को । सहना अपना समभाव

तोसर्वांग सुंदरीपरे । पावोंगे सबउत्साव ॥ ४४ ॥

निजपर आत्म सुख धरन । अभ्याख्यान पापोद्धार ॥

ऋषि अमोलख ने रचा । येह तेरथा अधिकार ॥ ४५ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के

सम्प्रदाय के घाल ब्रह्मचारी मुनी श्री

अमोलख ऋषी जी महाराज रचित

अघोद्धार कथागार ग्रन्थ का

अभ्याख्यान पापोद्धार नामे

चउदशवां मंजल

समाप्तम्





मंजिल चउदवा—“पैसुन्य पापोद्धार”

पूर्वविभाग—“चुगली”

दोहा—इतउत चुगली जो करे । तो हे पैशुन्य पाप ॥
अनर्थ दंड जर यह । उपजावे संताप ॥ १ ॥

चोपाई

भारी कर्मी ओछा उदरी जीव । खुसी होय देखी पर रीव ॥
नारद दिया जो पेल्लाय । शांति स्थान संतान उपाय ॥ १ ॥
पहिले मिले हांसिल तानन । जाने के मुत रखे दगप्पान ॥
पीछे देवे अग्नि लगाय । तान अगी को देवे भर नाय ॥ २ ॥
अन्य नमन देवनन मन जरे । करन विंगट कुयुद्धिबलनले
कग जगडं अप देवे म्याल । हन हनवि बजाव तान ॥ ३ ॥

देखी सुनी जानी नइ बात । सुनाने दूसरे को मन उभरात
जहां लग नहीं निकसेमुख वार । तहां लग चेन पडेनलगार
यों प्रत्यक्ष दुःख प्रदेयेह पाप । अपयश दुःख दायक अमाप
यों जान जीव जो करे परिहार । सोही सुख पावेए संसार ।

चुगली के दुर्गुण-मनहर छंद

जो नर चुगली खोर । ताको चित्त है निठोर ॥
विगोइ उभय ठोर । आपाही विगोवे है ॥
शांति में लगावे आग । सम्प में करे विभाग ॥
तोडे साचा अनुराग । द्वेषही जगावे है ॥
आगे मो विरोध बंड । जुलम सो अति करे ॥
केइ यों केप्राण हरे । अनर्थ निपावे है ॥
यहां अपयश पावे । आगे नर कादि में जावे ॥
पेशुन्य यह पाप बहून जीवों को सतावे है ॥ ७
निज हितको विसारी । होइ पर दुःख कारी ॥
करे चुगली नर नारी । सुसज्जन फोड़ावे है ॥
पाप घेट को लड़ाव । भाइ भाइ को भिडाय ॥
सामू यदू को बिडाय । क्लेश कागदा मचावे है ॥
शेट गुमाने लंड । संगे न्यायालम चंडे ॥
धन इज्जन को दरे । पीछे बहून पस्तावे है ॥

चुगल देख ठर्प धरे । महा पाप संचय करे ॥
 पैशुन्यता पाप बहुत जीवों को सतावे है ॥ ८ ॥
 चुगल खोर ठोर ठोर । करत हे खोटा शोर ॥
 जोर से भिडावे ओर । मौर को ठोकावे है ॥
 होवे राजों की लडाइ । देते बहुतों को कटाइ ॥
 रक्त नाले को बहाइ । महा पातक उपावे है ॥
 वो विरोध आगे भाइ । चले जेता काल तांड़ ॥
 जे अनर्थ निपाइ । तस फल चुगल पावे है ॥
 कलुं नहीं आवे हाथ । पाप लेके जावे साथ ॥
 पैशुन्य यों पाप बहुत जीवों को सतावे है ॥ ९ ॥

चुगली सं दोनों भवमे दुःख-इन्द्रविजयछंद

इहभव वैरी हुइ बहुतों का । अविश्वासी हुइ निजपेठ गमावे
 कोइन संग करे जन बाकोकदी गुत स्थानमें पेसन नहीं पावे
 चित दुष्यानि अहो निशीध्यावत । बिन बोले बितचैननपावे
 चुगल खोर इह लोकफजीत हो । आगेहीगति नरक सिधावे
 चुगल के मुहमें यम नरक में । तीक्ष्ण लोहकी शूलभरे हैं ॥
 छेदित जिहवा त.डित नर्जित । ऐसे फर्जाती बहुत करे हैं ॥
 आगे भवों में सबका विरोधीहो । दुःख से आयुष ताससरेहै
 पैशुन्य पाप संताप देना यों । जान सुजान गंभीर्य धरे है ॥

कथा—सत्तावीसवी

पैशुन्य पापके फल बताने वाली—“यज्ञदेवकी”

दोहा—चुगली फल दर्शनको । यज्ञदेव चरीख ॥

गून्थ अनुसारे यहां कहूं । जाणी चेतो मित्र ॥ १

चौपाइ

महाविवेह महा क्षेम मझार । चक्रवाल नगर श्रेय कार ॥
 अप्रतिहतचक्र तहां शेठ । सुमंगला शेठाणी विशेष ॥ २ ॥
 तास पुत्र चक्र देव सोहत । कृतज्ञादि गुण गण बंत ॥
 विनय विद्या परिणण करी । तस कीर्ती पुर में बिस्तरी ॥ ३ ॥
 सोम श्रम पुरोहित यहां रहे । नन्दी वर्धन नारी गुण गहे ॥
 यज्ञदेव तस पुत्र मलीन । कृतघ्न द्रोही इर्ष्यालु दीन ॥ ४ ॥
 देवयोग्य चक्रदेव के संग । प्रीति हुइ बरते एक रंग ॥
 चक्रदेव सदा रहे सरल भाव । यज्ञदेव खेलत रहे दाव ॥ ५ ॥
 चक्रदेव घर श्राद्धि अपार । यज्ञदेव देख धेर मन खार ॥
 कैसे करुं इसका धननाश । जिससे यह बनरहे मुझदास ॥ ६ ॥
 छिद्र पेखनहीं अवगुण पाय । तब कूआल चडाना चहाय ॥
 चंदन सार्थ बड़ा तहां रहे । राज्यमान्य धन बहु तस गेह ॥

यज्ञ देव तहां चोरी करी । बहुत मोलके भूषण हरी ॥
 चुपछिपी चक्रदेव पास आय । धन उसको सो सब वाताय
 मित्रमेरा तूं जीवन प्राण । तुझ से छिपी कोई घातम जान
 यह गुप्तधन मैने भेला कि । मुज दत्तपे काम आवेगाजिय
 रखेने लाया मैं तेरे पास । अघोरख लेवूंगा जब होवेगासास
 चक्रदेव बहु मूल्य भूषण देख । रुंशय मनमें आया विशेष
 कहे भाइ मैं यह धन रखुं नाथ । अन्यस्थान रखइस तूं जाय
 तेरे पर जैसा यह नहीं देखाय । बुरा मतमान यहांसेल जाय
 कोप करी यज्ञदेव तब कहे । क्या तुमुझे चोर जार सदेहे ।
 ऐहकियेका यहहुवासार । क्याआगे प्रेम पाड़ेगापार ॥
 सुणचक्रदेव मनमुरझाय । भूषणउठारख दियेपरमांष ॥
 यज्ञदेव परगवा खुशथाय । होणहार तेतोदलेनाय ॥

दोहा— चंदनशाह तबजानीयां । चोरीहुइमुझपर ॥
 प्रदुतहीदेखे नबनिले । भूषणऔर तस्कार ॥
 अजीर्णतब राजमें । नृपदेवेगारिथाय ॥
 पांचदिनमें प्रगयो । आगे पकड़इसजाय ॥

चोराइ

तइदिन यज्ञदेव नृपदान । दूतजकरे नग्नीअग्दान ॥

सिंहदेव चोरीहुइतेराय । अघोरख तस्कारिजाय ॥

पतुर दुर्गुणी मित्त जान । देखो जैसा मे करु वयान ॥
 चक्रदेव शठ पुत्र घरमांय । चोरीकी धनसब है महाराज ॥
 सुनीधरणीधर आश्चर्यपायाकहे यहवात कैसेनत्यमनाय ॥
 यज्ञदेवकहे लोभवश महाराज । बडे करंतहैं अकाज ॥
 देखोचक्रदेवका भंडार । जरनिकलेगा मालउसीमहार ॥
 नहींनिकलेतो सजामुसकरो । येहीविनंती ध्याननेधरा ॥
 नरेश्वरतव पंचोको बोलाय । कहेचक्रदेव घरतपासोजाय ॥
 पंचसुनि अतिअश्चर्यपाय । कितकावेम राजादिललाय ॥
 चंदनशाहाका भंडारीलेय । चक्रदेव घरआयेतेय ॥
 शरल चक्रदेव कियासत्कार । मुझलायक सेवाकरो उचार ॥
 पंचकहे देखावो भंडार । क्याक्यामालहे तुमआंगार ॥
 सर्वमाल सन्मुख रखदियाचोरीकामाल उसमेमिलगया ॥
 पंचपूछे चक्रदेव सत्यकहो । यहमाल तुम कहासेलहो ॥
 येहीहैं चंदनशहाका माल । हुवामो सबप्रकाशोहाल ॥
 चक्रदेवसुन मनमुरझाय । भिन्नकाभेद दियानहींजाय ॥
 चक्रदेव कहे मुझे नहींभानाकैसेमालआया मुझघरन्याय ॥
 अश्चर्यधरी आग्रहसे पूछेसब । सचकहोतो बचोतुमअब ॥
 नहींतो फजीती होवेगाअपाराइसका कगेजरा उंडाविचार ॥
 चक्रदेवतो कहेएकवात । मालसाहित नृपपासलेजात ॥
 अकृतीये गुणलख नृपविस्माय । पूछहुइसोदेवो दरशाय ॥
 चक्रदेवकहे एकहीजवान । जबकोपातुरहुवा राजान ॥

कहेइनेकहाडो पुरदइवार । राजभटकीया उर्षाप्रकार ॥
 चक्रदेव अतिमनमुरझाय । जातकुलनुझवर्म लजाय ॥
 अवजीतवर्म नहीकुछतार । फात्तीवांधी मरणोमनधार ॥
 सत्यरक्षक देवसहायताकरी । तत्सत्यंभननहांकिय उत्तघरी ॥
 राजमातेकेशरीरमेंआय । किंकालीकर योंचेताय ॥
 प्रमादीभूपकरे अन्याय । नाहकसत्य वन्तोकोसताय ॥
 यज्ञदेव धूताराकेकहे । सत्यवन्त चक्रदेवकोदेहे ॥
 यज्ञदेव चोरिकरले माल । चक्रदेवके घरदियाडाल ॥
 चुगलीकरी तेगेपासआय । जाणके चक्रदेव नहींजणाय ॥
 मित्रद्रोहो चक्रदेव नकियो । जितसे उसेदेश बटोदियो ॥
 सोशरनाइ मरेफात्तिलेय । ग्रामवाहिर बटतलेछेय ॥
 शीघ्रजाला तत्तकरसत्कार । जोतूनर्व इच्छेचेनचार ॥
 नहींतो समूल करंतंहार । देववचन मिथ्यान लगार ॥
 योंकिह देवअदृश्यथाय । राजाअनिही डरामनमाय ॥
 तेतेही नृपग्राम बाहिरगहो । चक्रदेवफासो डुरकियो ॥
 बहूतजनूदोड आयनृपतिलार । नृपति नभीतसकियासत्कार ॥
 गुप्तलाये तत्तनेहलमझार । पंचकनेटी भरीउत्तवार ॥
 यज्ञदेवको नफरहाय बोलाय । तेजाने इनाम देवेमुझराय ॥
 तेदीप्रआयो नृपतिपास । नृपबंधनने डाल्यांतास ॥
 पूछधनकाइ कहेनलवान । कितनेकरी चोरीशाहद्वरान ॥
 पापी फिरवाला मि ध्याबोला । मालमिला अवक्यामुझताल ॥
 नाइननर्जन अनिहीकरी । नवनेधृजन सत्यउचरी ॥

मेचीरकिंधा महाराज । मित्रनाममें झूठालियाज ॥
 राजादेव कोपकिया प्रकाश । आजहोतामुझ सबकानाश ।
 यज्ञदेव महादुष्ट, चंडाल । लेजावो इसेमारो इसकाल ॥
 दोहा—सुनी, वचन चक्रदेव, तव । तुर्तही बोलनम्र होय ।
 मेरे प्यारे मित्रका । गुन्हा माफ करे दोय ॥ ३९
 सर्व चकित भये देखके। धन्य कृतज्ञ कुमार ॥
 आपकारी पे उपकारतो । विरला जग करतार ॥ ४०

चोपाई

नृपति कर जोड़ी कहेतास । अहो पुण्यात्मा भत कर पक्षयास ।
 यह कृत्घनी पृथ्वी भार । शीघ्रहोने देइसका संहार ॥ ४१
 कंटाबुं जिहवा फोडावूं तन । तब शीतल होवे मुझ मन ॥
 फिर न करे कोइ ऐसा काम । राज धर्म यह चुररहो धाम ॥
 चक्रदेव कहे मारा नहीं जाय । नृप कहे ठीक कहं तैसा उपाय ।
 कृष्ण मुख हरित पग करी । लंबो करणे बैठो, धजार में फिरी ।
 ग्राम हववाहिर दिया निकाल । तबसब लोकजाने सचेहाल ।
 फिट २ हुवा विन माराही मरा । चुगली का फल वरणनू का ।
 दोहा—चक्रदे यह चित्त लख । बैरग्य आतेमन लाय ॥
 गणघर अग्नि भूतजी । तस भाग्य तहां आय ॥
 लीदीक्षा शिक्षा वरी । करी करणी अपार ॥
 पंचम स्वर्गमें उपने । आगेखेव पार ॥ ४६ ॥

चोपाई

यज्ञदेव अपमा नीया गया । किसीभी स्थान सुख नहीं लिया ।
 भटकी महादुःख से मरत्यू पाय । नरक दूसरी में उपना जाय ।
 भोगे वहू भवान्तर विस्तार । समरादित्य चरीत मझार ॥
 चुगली फल जाणन कथा येकही । सुखेच्छु चुगली तजदही ॥
 दोहा—यों चुगली दुःख दायनी । जान तजो सुसंत ॥
 होंवेगंभीर समता धरो । दो भव सुख मिलंत ॥



जानी सुनी देखी विपरीत । कदापि नहीं विगाडे चित ॥
जाने जग का अनादी स्वभाव । फिरत सदा न रहे एक साव
योंचिन्ती व भी मन वच काय । वर्ते नहीं ज्यों अन्य दुःख पा

गंभीरताकेगुण — मनहरचंद

छांडी चुगल ताड़ भाड़ । धारांनर गंभीराड़ ॥
आप पर सुख दाड़ यह होवत सदाड़ है ॥
पर हीनता दर्शाड़ । देते सज्जन लड़ाड़ ॥
ताके हाथ कहा आड़ । व्यर्थ पातक लगाड़ है ॥
ऐसा डरी मन मांही । नहीं झलके कदाड़ ॥
शन वेन न जनाड़ । दूसरेकी हीनताड़ है ॥
सोही सागर सेकहाड़ । अमोल तेही जगमाही ॥
इह लोक सुख पाड़ । आगे स्वर्ग सिधाड़ है ॥ ८॥
वधे गंभीर का यश । होत जग तस वश ॥
आदर पावत सब लोक के मझारी है ॥
पंचों सभा में बोलाय । लेते सला तस चहाय ॥
गुप्त रखे नहीं काय । जानी तस भारी है ॥
बोतो जाने सब कथन । नहीं जाने कोइ तस मन
चाहाते है बोलाय क्यो तेहितही उचारी है ॥
यो इस भय मांय । गंभीरता सुखदाय ॥
सुख संपत सौभाग्य । बना रहे तस दारी है ॥

अरे नर खाइने पचाइ जाय मणों बंध ॥
 निर्जीवी वात एक केसे नपचायरे ॥
 अपचा से रोग बहूत । पेदा होते तन मांहीं ॥
 तैसेही चुगली भाइ । क्लेश को बढ़ायरे ॥
 पचा अहार गुणकरे । पुष्टकर होवतहे ॥
 तैसेही पचाइ वात । गुणकर थायरे ॥
 योगायोय विचारी उचरिा म उचरिायरे ॥
 अमोल प्रत्यक्ष यह । दृष्टान्त लगायरे ॥९॥
 गंभीरों का घोखा टेल । इच्छित सो आय मिले ॥
 बैरीयों का मान गले । गंभीरता धारते ॥
 तनमें आवे पुष्टाइ । रूप बल अधिकाइ ॥
 बुद्धि निर्मळरहे । मन अवीकारते ॥
 लोक सब अच्छे कहे । जावे तहो आदरलहे ॥
 बहूत जन सेवे तस रहे जेविचारते ॥
 इत्यादिक बहूत गुण । गंभीर ता मे निपुन ॥
 जाणी अमोल क इसे करोने स्वीकारते ॥ १० ॥

कथा—अठावीसवीं

गंभीर्यताकेफल बतानेवाली — “परदेशी राजाकी”

दोहा—केइहैगुणी जन विश्वमे । गंभीर गुण अलंकृत ॥

अघो द्वारा—कथागा

पण वक्ते जो गंभीर रहे । ताके गुण गवावंत
राय प्रदेशी मरणांत तक । गंभीर्यता रखी धा
रायप्रसंणी सूत्र से । कथा कथूं यहां सार ॥

चोपाई

कैकदेश सेतांविका पुरी । परदेसोराय नास्तिकमत धरी ।
जीव देखन हने बहूजी काय । परन्तु जीव उत्ते नहीं पाय ॥
चित्तप्रधान से एकदा केह । सावधी पुरी जावो भेट लेह ॥
जीतशत्रु नृप को भेट ये करी । सुख समाचार ले आना फिरी ॥
बहूत ठाठ से चित्त सवाधी आय । जीतशत्रु को भेट कराय
सावधी पति अति सत्कार । सुखस्थाने रहे भोगे चैन चार
दोहा—उत्त अवतर वहां पधारीये । केशी श्रमण कुमार ।
चले जन वंदन बहूत । देखे चित्त उत्त वार ॥ ६
पूछे मुनि आगम सुणी । आपभी वंदन जाय ॥
परिपद बैठी भरय के । गुरु सद्बोध फरमाय ॥ ७

चोपाई

सो अहो भव्यो इत वार । आये किनार होवो पार ॥
विधी धर्म जग नागण नावा । अणगारी आगारी लो चावा ॥ ८
न भिन्न भेदकर दरसावीये । भव्यो गृहने को

यथा शक्ति करी व्रत अंगीकार । परिषद् गइ निज २ आगार
 पीछेसेउठे चित्तप्रधान । लुलीबंदे कहेवचनप्रमान ॥
 नहींसमर्थ होवनअनगार । श्रावकवृतकिये अंगीकार ॥ ॥
 नवतत्त्वादके हुवेजान । अपूर्वधर्म पायेहर्षआन ॥
 सेतांविका जावनसजथाय । नमनकियाकेशी गुरुकोआय ॥
 करजोडी नमीकरे अरदास । मुझपुरी पावनकरो गुणरास ॥
 मुनिकहे पारधी रहे उसजाग । पक्षी कैसे आवे दुःख लाग ।
 चित्त कहे नृपसैंक्या आपके काम । श्रावक बहुत पावोगेआराम
 कहे मुनि अवसरे देखा जाय । हर्षी प्रधान विदा तब थाय ॥
 मार्ग ग्रामे सब कों चेताय । सेवा करना जो केशी गुरु आय ॥
 पुरी बाहिर बाग माली से कहे । केशीगुरु कों जगाये दये ॥
 बधाइ देना मुझे तूं आय । दरिद्र तेरा देउंगा गमाय ॥
 फिर भेट प्रदेशी बात सब कही । निज घर धर्म करे सुखे रही ॥
 दोहा-पांचसो साधुसे परिवारे । कर केशी श्रमण विहार
 सुखे आये से ताम्बिका । उतरे बाग मझार ॥ १५॥
 माली बधाइ दी चित्त को । दिया द्रव्य तस अपार ।
 श्रावक बहू साथे लही । बंदे आमुनि चरणार ॥ १६

चोपाई

सुण व्याख्यान कहेअहो महाराय । मुझ राजाको देवोसमजाय

तुम्हें साधु दर्शने आय । तन्मुख मिले बंदे अहार बोहर
 तो साधु तत्त कर उपदेश।चित्त कहे ठोक यहां लावुं नरे
 नवीन अश्व रथ को जोताय । केत नृपसंग चित्त तहां अ
 वाग में मुनि देखराजा कहेकोन जड मुड वाग धेरी रहे
 कहे प्रवान यह हैं विद्वान । जीव कथा गहे जुही २ नान
 हुनी नुर तब मुनिडिग आय । पुछे बनावो नृमी जीव कथा
 निक्के तूं नेराचोर राजान । नुर कहे क्या चोरी कर्मिजान
 नि कहे तेरा वाग चोराय । क्या शिक्षा उत्तकी करे राय ॥
 तनजो राय कियो नमस्कार । जाने वेप्रना तारन हार ॥
 पूछे नुर यहां में बैठ नहराजा।मुनिक्के यह हैं तेरी जागाव
 तबे साधु ग्राही को जान।मुनि सिग्ला नन नुरका पैछाना
 कहे देखत जड मुड हने कहे।नुर कहे छव नेदे कैसे लहे ॥
 मुनि कहे अवधी जानं करी।वनक्या नुर वाग लखी लरी ॥
 फिर पूछे राय है जुही जीव कथा।मुनि कहे इतने संख्य नाय।
 श्रवण कहे मुझ दादोनहा पारिषो।आरक कहे गनरकलोगये
 वो जो आकर मुझको बेतय । जो नानू नैमुझ बेविकय ॥
 मुनि कहे रागी नुरीकंगलंग । को उत्तम जो लेवे अनंग ॥
 को शीला केनी करे तूं रायराय कहे देखुं तीस उडाय ॥
 कहे बेनाजावुं नर मांय । तूं नन जाने देक्या राय ?
 कहे जिग छंडूहीनाय।मुनि कहे ऐसे नमझ तूं राय ॥
 राय करना को छंडे नहीं।मुझ दादो आठारेलेकेही ॥

२ राय कहे दादी मेरी धर्मात्मा देवलोक में गई तस आत्मा
 वो आकर जो मूझे चेताया तो जुदा मानूं जीव और काय ॥
 मूनि कहे नृप तैंने सजे शिणगाग कोइ बोलाय पायखानंमझार
 तूं उस जगे जाय के नहीं जायानृप कहे अशुचि में कैसे जवाय
 तैंसे ही राय यहांकी दुर्गंध । जोयण पैंचसो जाय उतंग ॥
 इसलिये देव सके नहीं आया जुदी मान राय जीवर काय ॥
 ३ जीवता भरा कोठी में चोरासीसे सुर बंधकिये चउ और
 फिर खोली कोठी चोर नरापाया कहो स्वामी जीवकिंदरसे जाय
 मूनि कहे गुफा के जडे कमाडा अंदर रहे कोइ ढोल बजाइ ॥
 तस शब्द ग्राहिर जैसे आया तैसेही जीव गया जानोराय ॥
 श्रीमती तैसेही चारकोठी में बंधकिया । निकाले असंख्य कीड़े दखिया
 कैसे गये जीव अंदर भराय । मूनि कहे लोह पिंड कोइ तपाय ॥
 जैसे अग्नि उम में पेसत । ऐसे ही जीवकोठी में धसत ॥
 ५ राय कहे जीवजां एकमा रहे नो जुवान वृद्ध सरफंके जेहे ॥
 एकमा दुग क्यों नहीं जाय । मुनि कहे सुन द्रष्टांत तूं राय ॥
 जुने धनुष्य ग्रान दिग पड़े । नव धनुष्य से जाये परे ॥
 ६ नृप कहे जवान वृद्ध नर दोय । बरोबर बजन उठाये न सोय
 मुनि कहे ठीके नवे ज्युन परो उपकरण सम भार दोनों धरे ॥
 ७ नृप कहे जीवता मरा नालानरा बजन दोनों का द्रुवा बरोबर
 जीव गये हलका नहीं पड़ा जीव का बजन अधिक न चड़ा
 मुनि कहे मशरू द्रुवा भर । नाले नराजु में कोइ नर ॥

चोपाइ

जाना राजा को धर्म में लीन । राणी का मन हुवा मलीन ॥
 यह पति मेरे काम क्या आए । इस बैठे अन्य कर सकूं नाए ।
 अवके पारणा मेरे घर कराय । जेहर देकर मारुं इस तांय ॥
 आइ नृपकने करी परिणाम । अवके पारणा मुझे घर करोआ
 राय मानी हर्षीसाधर आयाखान पान आसने में विपमिला
 भूपति बैठे आ आसन परे । तत्क्षण जेहर तस अंग संचरे ॥
 जाबा भूपति पौषध शाले आये । सलेपणा कर धर्म ध्यान ध्या
 भारी गंभीरता नकरी यात । रखे समभाव सबजीव स्वमा
 पुत्र प्रधान आदि आपुछंत । नृप ध्यान लीन नजरा बोलंत
 राणी डरी रगे कहे नृप भेद । मुझको फिर उपजे महा खेद
 यदन करंती पौषधशाल आय । सुख पूछती गले नख दवाय
 तोभी राय जरा शब्द नकियो । सागर घर गंभीर हो रियो ॥
 अपूपूर्ण कर मुधमें स्वर्ग जाय । सूर्यामदेव चारपल्य आय ॥
 तेरेही बेलामें किया कल्याण । महा विदेह त्रि जावेंगे निर्वाण
 दोहा—तुन धर्म प्राप्त करी । धरी गंभीरता अपार ॥
 परदेशी राजा भणी । वारम्बार धन्य कार ॥ ५५
 अहां ज्युन धर्म धारियों । लंघुष्टान्न ये ध्यान ॥
 बना गंभीर मर्च सुम्यलहो।वग पद शिव स्थान ॥

निज पर आत्म सुख वरन । पैशुन्य पाप उद्धार
 ऋषि अनोलख ने रचा । चतुर्द शवां अधिकार
 परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज
 के स्तम्भदाय के बाल ब्रह्मचारी
 मुनि श्री अनोलक ऋषिजी
 रचित अयोध्या
 काण्डाग्रगण्यका
 पैशुन्यपापोद्धार
 नामक चउदवा
 मंजल
 समाप्त





मंजिल पन्दरवां—“परपरीवाद पापोद्धार”

पूर्वविभाग—“निन्दा”

दोहा—निन्दा निन्ध सदा कही । संगे पातक घोर ॥

मृग गूथ कविता विषे । निन्दा निन्दी टोर टोर ॥

चोपाइ

देखो दशवे कलिक उत्तगाथेन । टाणांग सनवायांग केन ।

भगवति ओर अनेकही टाम । पीठमांस भयो निन्दा कानाम

मांस भक्षामां नरक में जाय । निन्दक उगै निगोद कंसाय

नरक में निगोद में दुःख अनेक । भोगे जेपर निन्द कांन ।

त्रिमूर्तिनिन्दा करमांदुःखपाया निन्दक निजामदुर्गुणेंदुनाद

त्रिमूर्तिनिन्दे माद (मर्दाना) यों अनेक निन्दामेंदुःखार्थान

अंधा मर्यादे पाय पुर । मुमनो उममे रही सदा दूर ॥

मदुग नवे दुर्गुण मा गइ । गुण गुनी में दुःखमने रई ॥

निन्दक निन्दामें धर्म स्थाय । कटनी के केइ गूथ बनाय ॥
 पड़े सुने सोही निन्दाही करे । कहा अंत कहू इसपापका अरे
 योंअनेकों कोंअनेक भवमांय । निन्दा होय अनंत दुःखदाय ।
 योंनिन्दा की जान खोटी रीत । धर्मात्मान करे कभी प्रीति ।

निन्दा के दुर्गुण-मनहर छंद

अति पाप कारी प्रभू निन्दा को निहारी ॥
 सूत्र पाठ के मझारी । मांस भखी जोउचारी है ॥
 आचार का आजीवन । ठाणांग में जिन भणे ॥
 करी हुई करणी का नाश करन हारी है ॥
 असमार्थ दोष मांही । अविनीत गुण गवाइ ॥
 ऐसे बहुत स्थान इस निन्दा को धिकारी है ॥
 निन्दा ही निन्दक करे । निन्दकही कान धरे ॥
 निन्दक है निन्दा । ऐसा अमोल विचारी है ॥
 निन्दक समान नीच । नहीं कोई जग बीच ॥
 उपमा देवाय लक्ष । भंगी से नीचाइ है ॥
 भंगीतोविष्टा के तांड़ । गूहे कष्टा दिक सहाइ ॥
 एकन्ता में जाइ तास देत सोपठाइ है ॥
 निन्दक दुर्गुण विष्टा । हृदय में करे प्रनिष्टा ।
 जिव्हा से गृहीने अन्य करण में न्हस्वाइ है ॥
 आप नन मेली भरे । अन्य को मलीन करे ॥

सार्थी साथ लेकर नरक निगोदे सिधाइ है ॥ ९ ॥
 सहुण अनेक तजी । एकदी दुर्गुण भजी ॥
 राइ सा विस्तारी ताको मेरु सा बनावे है ॥
 करे आपकी बडाइ । दाखे अन्य की नीचाइ ॥
 जाने मुझसम गुणी । जगमें नकोइ पावे है ॥
 जबझूठी पड़े बात । तब मनमें मुरझात ॥
 निन्दक निन्दाइ जग धूत पस्तावे है ॥
 स्थान २ झूठो पडी । आपणी विगोइ घडी ॥
 निन्दकजी मर आगे दुर्गति सिधावे है ॥ १० ॥

इन्द्र विजय छंद

निन्दा करीजन निन्दालहे जग। निन्दक कोमन मेलोसदाहोइ
 ब्रोही बने जपी तपीसंजमीको । महागुणी कोपणन्हाखेविगोइ
 आप लहे संतापसहे परितापदये सो सुखी कैसे होइ ॥
 दुःखकी खान दुर्गुण का स्थान निन्दाके समान नदूसार कोइ
 सूत्र कृतांग के सुतलंघ दूसरे । अध्येन सात में गौतम केवे ॥
 जोजपी तपी ज्ञानी गुणी संयमी । आचार्य आदिके अवगुणलेवे
 निन्दा करे सो हारी करणीफल । किलविधि सुरमें जादुखसेवे
 आगे अनन्त संसार भमेंयो जान सुजान निन्दा तज देवे ॥

कथा—एकुनतीसवीं

निन्दा कैफल वताने वाली—“वेगवती की”

दोहा—निन्दा से इस विश्वमें । पाये दुःख अपार ॥

पन इहां सीता सती तणो । कथुं पूर्व भव सार ।
निन्दाकरो निन्दा लही । सज्जन विरह वनवास
वेगवती सीता भइ । कही कथा रामरास ॥२॥

चांपाइ

भरत क्षत्रे मणीकुंडल गाम । श्रीभूति विप्र सर स्वातिवाम
वेगवति तस धूया बुद्धि बंत । मिथ्याशास्त्र पठी निपुणवर्णत
एकदा कोइ महामुनिराय । वनमें रहे कायो त्सर्ग ठाय ॥
तपोधनी महाध्यानी देख । दर्शन नरवृन्द आय विशेष ॥
तहां वेगवति क्रिडा कों जाय । देखी मुनि को द्वेष भाय ॥
इर्या लाकर निध्या कहे । अहो लाकों यह ढोंगी अहे ॥
व्यभिचार सेवत मेंने देखीयो । यहां ये वन बैठे सेखीयो ॥
धूतारो ठग इने ठगे लोक बहू । सब मानो जोवचन मेंकहूं
ऐसी निन्दा बहूतही करी । मिथ्या मति मानी सबही खरी
सम्यक्त्वी नहीं चले लगार । वेगवति बान्धे कर्म अपार ॥
मुनिश्वर चिन्त मन मझार । अवर नमुझको कोइ विचार ॥
जिन सानन कीर्हालना हांय । यह दुःख नहीं खमावे मोय
अभिगूह धारा उसही वार । जहां लग अपवादनहोय निवार
तहां लग नहीं भोगवु चउ अहार । ध्यानमें रहू दृढता धार

सासन देवी यह बात को जान ॥ वेगवति पर हुई रुष्ट मान
 वेदन प्रक्षेपी तात शरीर । वेगवती मुरछा पड़ी पीर ॥ १० ॥
 जल विन भीन परं जड फडोआक्रन्द रुदन अनि ही को
 धर्मी कहं देखो निंदा के फलाकर्म उदय यह हुवे अटल
 थिकारे बहु लोक नम तांयामहांमुनी को और सताय ॥
 तस सज्जन वेगवती उठाय । मूनि चरण द्विग मंली लाय
 वेगवती तब कहं नरमांय मिथ्या में बोलीमहा राय ॥
 कुह कलंक आप शिरदिया । शर्मों २ करी मुसपर मयां ॥
 यों कही वारम्बार नमन करो साशन देव तब ॥
 देखा मन में पश्चात्ताप पूरावेदना उसकी कीनी दूर ॥
 सुची हुई देवी चमत्कार । मच्चा जैन धर्म जाना उस
 साध्वी पाम ले संयमभार करी करणां ज्ञानादिक धार ।
 आलोचना विन सा मरकरी प्रथम स्वर्ग में देवी अवतरी
 तहांमिचव मनुष्य लोक मक्षार जनकगय घरकुमरी हुई ॥
 सीता सती हुई जगत विख्याताराम अंगना गुग गणनात
 राम लछमन संग रही बनवापारावण दगाकर लेगयातात
 राम रावण माग लावे छुड़ाया शोकांतम इरपों में भराय ॥
 पूछे सीता में देखा रावण रूपाम्बिता कहेकक्तपगदेखचुम
 कुकम पटीये पर डाल लायाभोली सीता पास पग मंडाय
 शोको पुष्पादि नाप चटाय । रस दिये एक आलेकनाय

मंजिल पन्दरवां—परपरिवाद पापोज्जार.

दोहा— रातको फिरतेरामजी । धोबीघरटीग
होनहारकंजोगसे । वचनवोंकाने सुनाय ॥ २० ॥

चोपाइ

धोवणकहे झटखोलकीमाड । धोबीकहे कहांगइधीगांड
क्याघरोघर रामहीदेखाये । दुशीलसीता घरमेंलिये ॥
सुनीराम मुरझाये अतिमन । अपकीर्तिकालगालांछन ॥
चिंताकरते मेहलमेंआय । चित्रपग रावणके देखाय ॥
पूछेसैंसोकोंयोंकीये । सीतानीत पूजेफिरअन्नलिये ॥
सुनीराम अतिआश्चर्यपाय । लक्ष्मणसे वीतकचेताय ॥
लक्ष्मणकहे स्वपनेनहींहोय । सीतामाइइच्छ नहींकोय ॥
तोपणराम नहींमानेवात । सीताकेकर्मउदय जबआत ॥
रथसारथीको रामबोलाय । कहेसीताछोडो वनमेंजाय ॥
रामहुकमें रुपटसोकरी । गर्भवती सीतावनमेंधरी ॥
वियोगविविधि तहेअनेकप्रकार। कलंकशल्यमनताले आशर ॥
यज्ञजंघ राजातहाआय । सीतारूपदेख आश्चर्यपाय ॥
पुछेचाइतुम कैसेइनन्धान । सीताइसी नननन्कारजान ॥
अंगके भूषण देखउतार । तबनृपकहे नहींमैंचोरजार ॥
मैंहैंअहंतकाधर्मकधरक । यथशक्तिपर दुखवारक ॥
सीताहर्षी निजवर्तनसुनाय । जाननर्न निजघमलेजाय ॥
हार्सीता प्रनवे जुगलकुमार । स्वयंअकुश नान्ध्रयकार ॥

सुखे बडे पडे हुवे होंदियार । नारद मुनि आये उसवार ॥
 दोनों कुमर से कही संव वात । क्रोध भरा कर सेनासजात
 अनेक नौरेन्द्र परां जय करी । अर्योध्या ढिग आये हर्ष भरी ॥
 सुना परचक्रा राम आय । सेना सजी सोभी सन्युत्त थाय ॥
 मचा संग्राम जीते सीता नन्द । नारद राम से कहा सन्यन्ध ।
 पिता पुत्र योग्य मिले हर्षाय । सीता जीको राम बोलाय ॥
 अपवाद निवारण धीज तब करी । ऊंडीखाइ अग्निसे भरी ॥
 सीताजी क्रुद पडे उसमांय । अग्नि फिटी तब जल ॥
 नरसुर सब करे जय २ कार । मिटी निन्दा हुवा यश विस्तार ॥
 सीताजी तब दिक्षा बरी । ज्ञान ध्यान तप करणी करी ॥
 अचुत स्वर्ग में इन्द्र थाय । एकही भव से मोक्ष सो पाय ॥
 दोहा—वेगवाति निन्दाकरी । दोनो भव पाइ दुःख ॥
 कथा सार ये गृही करी । तजी निन्दा बरो सुख ॥





मंजिल पन्दरवा—“परपरीवाद पापोद्धार”

उत्तरविभाग—“गुणानुवाद”

दोहा—सर्व गुणों में प्रथम गुण । गुणानुवाद पहिचान ।
गुन वन्त बनने के लिये । प्रथम उपाय यह जान ॥

चोपाई

ज्ञाता सूत्र अष्टमें अध्याय । तीर्थंकर गोत्र उपार्जन उपाय ॥
बीस बोल कहे श्रीभगवान । सात पहिले कागृहो ज्ञान ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध सूत्र और गुरु । स्थि त्रि बहू सूखी तपे श्वरु ॥
इन मानों का करे गुणानुवाद । मोतीर्थ कर हो पावे समाद ॥
यों गुनीयों के करन गुण उचार । हाय गुनवन्त गुनका दानार ।
गुण इच्छक गुणानुवाद करो । निज परात्म सुख दे सुख वरो ।

गुणानुरागसेगुन—“मनहरछंद”

गुगवन्त होना जो चहाइ । गुग रत्नीविनो भाइ ॥
 तासु गुण आकर्षाइ । तेरे पास आवेगा ॥
 गुणवन्तो से गुणी मिले । गुणही गुण अटकले ॥
 लेन देन गुणकाहो । दुणा बढ जावेगा ॥
 बहू रत्नी वसुं धरा ॥ गुणी जन से रही भरा ॥
 गुणीही गुणों को जाणे । तबही सर सावेगा ॥
 जो गुणी गुणको सर साइ । गुणीहो जगमें पूजाइ
 अमोल गुणानु वादी । सदा सुख पावेगा ॥ ५ ॥
 धन्य सम्यक्त्व धारी । धन्य भावक शुद्धा चारी ।
 धन्य साधु महावृत्ती । धन्य अग्रमादी हे ॥
 धन्य ज्ञानी धन्य ध्यानी धन विनीत धन्य दानी ।
 धन्य तपी जपी खपी । धन्य जो मर्यादी हे ॥
 धन्य पर उपकारी । धन्य सती ब्रह्मचारी ॥
 क्षमावन्त दयावन्त । धन्य सत्य वादी हे
 यों सदा गुणानुवाद । करे जोहे गुणी जन ॥
 अमोल गुणानुवाद । सदा सुख सादी हे ॥ ६ ॥

गुणानुवादी की भावना—इन्द्र विजय छंद

आपही आपमें सोचले नर तेरो तुझे क्या प्यारो लागे ॥
 गुणानुवाद करे कोई तेरा तो तापर प्रेम तेरा कैसा जागे ॥
 ताही को तू तो अहो निश चहःवेरुइ गुण प्रकाश करे तूं आगे ॥
 तेसेही तूं करे अन्य के गुन तो अमोल महिमा होवे विन मांगे ॥
 जो कोई तेरी निन्दा करे तो तेरे मन ऐसा विचार करीजे ॥
 धोवी धोवे वस्त्र दामहू लेत है यह विन दामहू मेल हरीजे ॥
 मेरे मल ले लगावत पोतेये । और बुरा ताको कहा कीजे ॥
 यों अंतरमें निहाल अमोलक निन्दक ऊपर प्रेम धरीजे ॥ ८
 तप जप कोटी किये कटे पातक ते पातक कटे क्षणके मांहीं
 जो निन्दक मुखसे सुन अवगुण द्वेषकी बुद्धि जरा नहीं लाइ
 पाप पखालन घर बैठे गंग जान अमोल ये सन्मुख आइ ॥
 मन धैर्य मुख मौन गृही कर पूरा कृत अधसे ले नहाइ ॥ ९
 जो मन हांवे निन्दा करनेको तो कर आत्म निन्दा सदाइ ॥
 जासुं आत्म पवित्र बने अरु आगे अजोग न बने खदाइ ।
 पन मतकर कभी पारकी निन्दा जो दोनों भव है दुःख दार्ड
 पाप को निन्दे मत पापी को निन्दारे अमोल एशिक्षा सुख दार्ड
 जो जाका ग्राहक तां सोइ पादत गुण ग्राही गुण अवगुणी औ गुण
 दोनों वस्तु मे विश्व भरा यह न पमंद कों मुखसे मत धुण ॥
 तो तूं बने गुन सागर जावरे लेले जगत् में सद्गुण को लुण
 यह शिक्षा सद्गुरु की अमोल न धारके होले सदाही निपुण

कथा—तीसवीं

गुणानुवाद के फलवतानेवाली—श्रीकृष्ण वासुदेवकी

दाहा—देखो कृष्ण नरेश्वरू। गुण ग्राही गुग वंत ॥

सडी स्वानी अंगके । आप बखाण दंत ॥ १ ॥

चोपाई

प्रथम स्वर्ग सौधर्मा मझार । शक्र-सिंहांसनें स परिवार ॥

बैठे शक्रेंद्र अवधी निहार । सब सुरों सें यों करे उच्चार ॥

शोरठ देशे द्वारका पुरी । कृष्ण वासुदेव नृपेश्वरी ॥

द्रढसम्पत्की गुणानुरागी । नहीं अन्य दिखता ताकेलागि ॥

क्रोडों दुर्गुण भोगुण चुन लेयानिसार दुर्गुण सब तज देय ॥

सर्वदेवता कहें सत्य ध्वनाएक सुरके नहीं मानी मन ॥ ४ ॥

करण परिक्षा मृत्यु लोकआयासडी। स्वानी का रूप बनाय ॥

क्रभि पडे हैं सब तन मांया। अतीही दुर्गंधरही गंधाय ॥ ५ ॥

रक्त पीरू बहे तांके अंग। देखतेही मन होजाय भंग ॥

द्वारानगर राजपंथ मांय । तहां पडी सो कूथी आय ॥ ६ ॥

दोहा—तासमें कृष्ण स्वारीसर्जा। वन कीड़ा कों जाय ॥

मार्ग में टेंगडी पडी । लांक कहाडे चहुताय ॥

नाडी तन्जी अती धनी । चिह्नाय ते नहीं जाय॥
सकल लोक धू धू करे । विद्रुप रहीं गंधाय ॥ ८ ॥

चोपाइ

कृष्ण शब्द सुन दया तत लाया कहे सब ते ताडो मारी नाय
लोक कहे देखने नहीं योग्या तडी दुर्गंध अति अमन्योग ॥
कृष्ण कहे यों निंदो नाय । पुद्गलों का यों स्वभाव पलटाय ॥
कृष्ण चली तत नजीक जाया सर्व लोक दुर रहे नाकदवाय
कृष्ण नहीं दृभायो जरामनापाम खडे तत करे अवलोकन
दाडिम कलीसम तत मुख दैतावरोवर जमेसोहे नली भाँत
कृष्ण कहे देखो सब लोका क्यों तुम निंदा करो हो फोक ॥
दैत पंक्ति वन केत । नोभाए एता और कहां कहां देखाय
सुण वयण सुर आने आश्चर्य राया तत्क्षण श्यानी रूप विरलाय
आकाश से देव प्रगट भयो कुंडल मुकुट वन दीप रहे ॥ १३ ॥
धन्य गुणग्राही यादव सिरदार । वार २ सुर करे नमस्कार ॥
नम्र होय विनये इम नरे । शक्रेन्द्र तुम पर नेंस्या करे ॥ १४ ॥
परीक्षा करी कृष्ण रूप दनाया । गुणग्राही तुम सा और नाय ॥
नम्यस्त्वा के शृद्ध लक्षण धारा नर न प्राप्त धारों अवतार ॥
भों पांय कुट आजा दीजो । कुंडक ना करी मुझन लीजो ॥
कृष्णजी कह नज दो निधाना धारा जिन धर्म नम्य दर्शाना ॥
नम्यस्त्वा वन देव गुरु नम नान भरी दे भद्र पाके न्यान ॥

एक वक्त यह भेरी बजाय । जहाँ लग इसकाशब्द सुनाय
 तहाँ लग छे नांस लग तांय । मरी मारी रांग नर्हा प्रकटा
 पर उपकारी तस जान । लाने कृष्ण हर्षा मन आन ॥ ।
 देव प्रणमी देवलोक जाय । महिमा अत्री लग रहो फेलाय
 कृष्ण आगे तीर्थकर पद पाय । जग उद्गारी मांक्ष सो जा

दोहा—गुण ग्राहक श्रीकृष्णजी । भेरीली यश प्रसर ॥

आगे तीर्थकर पदवरी । करेंगे खेवोपार ॥ २०

ऐसे सब निन्दातजी । गुणानुवादी लोक ॥

तोइहभव परभव विषे । मिलेंगे वांछित थोक ॥

निज परआत्म सुख वरन । पर परिवाद पाप उद्ध

श्रुपि अमोलकने रचा । यह पन्दरवा अधीकार ।

परमपूज्य श्रीकहानजी श्रुपिजी महाराज

केसमप्रदायके वाल ब्रह्मचारी

मुनिश्रीअमोलकश्रुपिजी

महाराज रचिन

अघोद्वारकथागार

गूथकापरपरी

वादपापउद्धार

नापेपन्दरवा

मंजल

समाप्तम्



मंजिल शोलदां—“रतिअरति पापोद्धार”

पूर्वविभाग—“प्रवृत्ति”

दोहा—पुद्गल परिचय अनादिसे । स्वभावे, वृत्तिप्रवृत्ताय
अशुभ शोक शुभमें हर्ष । तोरति अरति कहाय ।
चोपाइ

सब सकर्मी जगत् के जीव । कर्म स्वभाव पलटे है सदाव ॥
शुभका अशुभ अशुभ शुभहोय । प्रणति तामे परिणमावेसोय
शुभमाने जिन पद्मालों ताय । तासंयोग रति सुखपाय ॥
जिन पुद्गल को अशुभ ले मान । अरति उपजे होयदुःखखान
इन दोनों में से एकसदाही रहे । संकल्प विकल्प करमनदेहे
यह हीज है अज्ञानता स्वभाव । आत्मा तांहुं धरत विभाव
इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग । रोगोदय और इच्छे भोग ॥

यद् यत्प्रारति उपजायामुलटे रति आति ध्यान ध्याय ॥
 क्षण में हंसेन क्षणमें रोय । इस विचित्र तासे जन्म विगोय
 यदा दुःख आये गतिकुपाय । रतिअरति पाय दुःख लदाय

यशस्विन्यार-मनहर छंद

भजन छंदो धन धान और निज बेही ॥
 निज की माने बेही । वियोग नचावे है ॥
 इनके नजाने जोग । मिले जोरुदा संयोग ।
 चोर सिद्ध विष आदि । दृष्टो मत थावे है ॥
 उनके संयोग अर्थ इनका वियोग चदाय ॥
 मंछन विच्छन यों चित्त उपजावे है ॥
 यदा स्थिता रह जाय । छिया किसी का न थाय ।
 दोनों अर्जन पाय । जीव को मनावे है ॥ ७ ॥
 सब जीव मुझ चदावे । गंगादि से दूर रुदावे ॥
 दोनों कर्म तम मनावे । उदय जय आवे है ॥
 ईदछेदोगिने दना पद पद गेन गिन ॥
 जने दोहा गेन जग मंत्र छिन थावे है ॥
 दोहा उदावे दार । दोन गग दार नदार ॥
 गेन उदावे दो दार । अर्जुन दार आवे है ॥

सातवेदनी में रति । असाता से ले अरति ॥
 योरति अरति पाप । जीवको सतावे है ॥ ८ ॥
 रति उपजाने काज । मुढमति करे अकाज ॥
 स्थावर त्रस जीवोंके जो घमशाण करावे है ॥
 श्रवण नयन घृणा । फरस रसन पोषाण ॥
 वाजित्र नाटिक गंध । रसादि निषावे है ॥
 तान दूटे घर फूटे । विरस दुर्गंध छूटे ॥
 वस्तुका स्वभाव नाशे । क्लेश मन पावे है ॥
 जगत् के स्वभाव लारे । आत्मा विभाव धारे ॥
 यों रतिअरति पाप । जीवों को सातावे है ॥ ९ ॥
 संपति अन्य की देख । मन में झुरे विशेष ॥
 याकी कैसी कद्वि । ऐसी मेरे क्योंनी थावे है ॥
 यह अरति मिटायवा । केइ करे हावा थावा ॥
 अपने भले को दूसरे का घुरा चावे है ॥
 निज कृत्य अनुसार । पावे जग सुख सार ॥
 यह बुद्धि विस्तार रतारति चित्त लावे है ॥
 यों कुकर्म को उपाइ । जावे दुर्गति मांइ ॥
 योरनिअरति पाप । जीवों को सतावे है ॥ १० ॥
 रतिपाप वड्य रन । हाकर करे अनर्थ ॥
 भक्ष अभक्षण नेवे डेउया पर नर के ॥

जुवा चेरी मदिरापान । मृगया सेहरे प्रान ॥
 यह सातों खोटे व्यशन । सेवे दुष्टों चार के ॥
 इनों से प्रगट आय । दुःख शोग रुप लाय ॥
 रोग भोग से पीडाय । बुद्धि बल हार के ॥
 घातकी यह सातों पाप । जान के तज देवो साप
 कहत अमोल दीर्घ वृष्टी से विचार के ॥ ११ ॥

रतिभरति से दुःख-इन्द्र विजय छंद

रतिभरतिरुप रोगलगो जहां । तहां चित्त कोविश्रान्तीनहीं
 जोदेखे सुने वस्तु मनोगम । ताहींकों गृहण करन चित्तचार्हीं ॥
 जेता पुण्य तेती वस्तुपावत । अधिक मिलेनहीं तयपस्ताहीं
 प्राप्तहींजावेतोहीदुःखपावे । अमोलक चित्तकीहै विकलताहीं
 छत्तायस्तु अनृती से भोगत । उससे अधिकी जोसुनपाइ ॥
 मनोग्य वस्तु अमन्योग लागत । अधिक गृहण करनसोपाइ
 कूड कपट झगट करे केइ । पुण्य विना सोहाधान आइ ॥
 अतिलालसा सो कर्मको संचतहोय अमोलचित्तकीविकलाइ
 एकसे एक अधिक मुन्नदायक । नाना वस्तु हेजग के मांहीं ॥
 सबही नमिले एकही जीवको । नाने कभी संनोप नआइ ॥
 चिन्ताही चिन्तामें आयु करे छिन्नद्वय जीरण नृप्यनजिरणाइ
 अनिभरति कय के वश्यमें जन्म चिन्तामणी देन गमाइ ॥

कथा—इकतीसवीं

रति अरति के फल बतानेवाली—“ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिकी”

दोहा—रति अरति पाप बड़े । दुःख पावे संसार ॥
ब्रह्मदत्त चक्रीपरे । दोनों भव मझार ॥ ११ ॥

चाँपाइ

कम्पिल पुर ब्रह्मनामै राय । चुलणी राणी अति सुखदाय ।
चउदे स्वप्ना ले जन्मापृत । ब्रह्मदत्त नाम रखा सुख सूत ।
ब्रह्मराय असाय रोगी भयो । दीर्घराय मित्र बुलाकर कहे ॥
राणी पुत्र की तुम संभाल । ब्रह्मदत्त संभाले वहां लग पाल ।
दीर्घ दीयो संतोष ब्रह्म कियो काल । मर्णक्रिया कर करे प्रतिपाल ।
चुलणी दीर्घ राय बड़े भइ । व्यभिचार सेवे ब्रह्मदत्त देखलइ ।
दीर्घ कहे पुत्र होगा दुःखकार । चुलणी कहे मैं न्हानुं नार ॥
लाख को मेहल बना परगाय । दम्पती को उत्त में सोवाय ।
जापीराते दी अंग लगाय । नवीन रंगीनी सुरंग खोदाय ।
उत्तमें से ब्रह्मदत्त गया निरुल । प्रदेश फिर थापा राज बल ।
चक्र वर्ती हो कम्पिल पुर आय । नारी दीर्घ नृप सुखत हांरहार ।
संचित पुण्य से जना नय नाज । भोगवे भोग शनै सुखेराज ।
दोहा—सुखिनाय नगविषे । शेट नइन नान चिन ॥

सो पहिले भव पांच काव्रह्मदत्त का मित्र ॥८॥

दीक्षा ले ज्ञानी भयो भाइ समजाने काम ॥

आये कम्पिल पुर बाग में ब्रह्मदत्त वंदे ताम ॥९॥

चोपाइ

मुनिवर तस सद्बोध सुनाया पूर्व भव का सम्यग्बोध यथाय
दशारण देशमें दोनों थे दासाभृगु हुवे कालंजर पर्यंत प
दोनों हुंसे हुवे गंगानदी तीरगंगा नगरमें भातंगंशी
यहां सर्वाधिक किया अन्यायागय मारण दिया पिताके
उसे छिपा रखा अपने घर। उस ने अपने को पढ़ाये नेह
अपने ही घर किया। उसने अन्याया आपन निकाल दिया। उस
को हर्षानापुर में हुवा प्रधान। अपने करने लगे पुर में गा
मोहित हो लोक छीये अभडाय। आपन को पुर बाहिर कर
अपमानित हो मरने का ज्ञापहाड से पड़ने देखे मुनि
आपन वंदे उन दिया उपदेश। आपन संयम ले पुर मुनि
किन्ते आये हथिना पुर बाग प्रधान देखा किया उलट वि
पुरमें जाने थे दिये अटकाया। आपन दिया संथारा ठाय
तुम को पाते जूटेश प्रकट करी। मैं तुम मुख दाथ दिया तब
धूम्र गोटा गया पुरके मांयाटा चक्रा राणी साथ ले आ
वंदन तुम देखा आदेश रूपायद नियाना तुमन किया
देवलो क हो यदा उन आय। नियाने जोग अलग जन्म पाय
नव चक्रा वंदे कर्णीक के फल में नः यद भोग दृ विमल

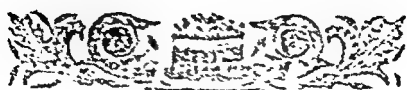
मुनभी आपराजक मांयाभांगवो सुख इच्छित सदाय ॥
 मुनि कहे जिस से पाये सुखाउते पूनः वरो भिटे तव दूःख
 राज भोग रति नरक लेजःयानिश्चय एक दिनसव छिटकाय
 मै भी पाया था बहुतही रिद्ध।छोडके करू आत्म कार्य सिद्ध
 राय कहे यहतो अब छूटे।नायाभारी कर्मा तस जानामुनिराय
 दोहा—मुनिवर कियो विहारतव।ब्रह्मदत्त भोगे लुब्धाय
 अति रति जिस जागा रहे।तहां अरति प्रगटाय ॥

चोपाइ

एक ब्राह्मण ब्रह्मदत्त ढिग आयानामी कहे याद हैमहाराय॥
 वनमें मार्ग बतावन हार । दियो वचन अब पाडो पार ॥
 राय कहे मांगो जातुमे चहाय।विप्र कहे आपभोजन मुझेकराय
 समजायो समजो न लगाराजिमाइ खीरउपजो महावीकर
 घर आ कियो मात पुत्रीसे भोग।तन फटीयो उपज्योकुष्ठरोग
 कुबुद्धि चक्री पर क्रोधेभराय।मारनचिंतन लगा उपाय ॥
 एक वन में एक भील देखीया॥एक वान बड पत्त बहुछेदीया
 उसे वश्यकर कही मनकीवातागो कहे में करूं राजाकीघात
 वन क्रीडा को आया राजान । भील गलोल मारी तवतान।
 फोडी दोनों आँख तत्काल । चक्री कोप्या जैसा काल ॥
 भट भील कां लियो पकड । उम ने विप्रकी बात दीकर ॥
 कुबुद्धी जानी ब्राम्हण की जान।मग कर उमकी आँखमंगात

मसली पगतले क्रोध आतिलायानित प्रतेँ यों ब्राह्मण मरायः
 सचीव योजी जोग उपाय । गुंदा फल बीज दे नित लाया॥
 पग तले मसले विप्र नेत्र मानारति अरति ध्यावे आर्तध्यान।
 साँतसो वर्ष लायू पूर्ण करी॥सातमी नरक गया सो मरी ॥
 एक श्वास केँ भोगवे सुखात्रेपन पल्य लिये झाजेरे दुःख ॥
 सातसो वर्ष सुख का परिमाण।तेँ तीस सागर दुःख लियेजाण।
 दोहा—रति अरति के पाप वइयाब्रह्मदत्तपायादुःख ॥
 यों जाणी निवृत्ति वरो । ज्यों मिले पूर्ण सुख ॥





मंजिल सोलवा-“रतिअरति पापोद्धार

उत्तरविभाग-“निवृत्ति

दोहा-पुद्गल परिणति मनकी । निवाग निवृत्तिचार ॥
रतिअरति चितना धेर । तेही सुखी संसार ॥

चोपाइ

रतिअरति पाप मक्षार । स्वभाविक मन करे परिचार ॥
उस स्वभाव को ज्ञान सेगोड । टाले यह अनादि ग्योड ॥
अनंत बकजो हुवा मनबन्ध । उन मननामै रहा मनबन्ध ।
उनमे उन्मे उपजनाहोय । भव भ्रमण निटाना बहोबसोय
यांजाने पुद्गलका स्वभाव । शुभाशुन हे भक्षण भविभाव ॥
ना स्वभाव मे परिणति नही । नार निर्वन मे निर्वननही
यहीगल है सुख उराव । देह नयनता मोक्ष का राव ॥

तत्त्वज्ञ योगी महानुभाव । करे खप होवे विश्वके राव ॥ ५

निवृत्तिस्वरूप-मनहरछंद

रतिअरति निवार । निवृत्ति भावकों धार ॥
 पुद्गल परिणति विचार । चैतन्य स्वभावरे ॥
 एक रूप जोनरहे । तासुं कैसे निभेनेह ॥
 देखले तूं तेरी देह । खेले कैसा दावरे ॥
 मेरी तूतो ताको करे । तेनेह न तुझे धरे ॥
 पुद्गल की घनी अंतः पुद्गल मिलावरे ॥
 कभीरोगी बृद्ध थाय । पोपत्तही गिरजाय ॥
 दगादार फंद मांय । अमोल मत आवरे ॥ ६ ॥
 मनुष्य समान वली । और कौन लणस्थली ॥
 छोडदे कायरता तो । सिद्ध बने उपावरे ॥
 जेहर को अमृत करे । अग्निकी उष्णता हरे ॥
 गज सिंह जैसे कूर । कामोडे स्वभावरे ॥
 स्यावर जंगम तीर्यंच का स्वभाव फेरे ॥
 तोक्या ज्ञानी चैतन्यका नहोवे पलटावरे ॥
 अडग होसाध काम । सध पूरे तेरी हाम ॥
 रतिअरति मन भाव । कदापि मलावरे ॥ ७ ॥

निवृत्तिका उपाव—इन्द्रविजय छंद

रतिअरति जेहर निवारण । मंजु ज्ञानी ग्रन्थों में बतावे ॥
 निल रखे अभ्यास वैराग्यका । पुद्गल परणाति कदा नहीं ध्यावे
 तासे भिन्नपना लखी आपना । निज स्वभाव तामे नरमावे ॥
 निज आपो भज पर आपो तज । तोही अमोल सदा नन्द पावे
 रेमन ज्ञानी ! होजराध्यानी । वात लें मानी अभिन्न नहोइ ॥
 जोकभी जोग बनाशुभ वस्तुका । तुझको शुद्धन करसकें सोइ
 अशुद्ध मिलेतूँ अशुद्ध नहोवताजो निज भाव को न पलटोइ ॥
 यह द्रढ़ ठान न आनरतारति । तोही अमोल पर मानन्द जोइ
 यमं नियमअसैन प्राणायाम । प्रत्याहारधारणा ध्यान समाधी
 यह अष्टउपाय मनप्रसन्न करने । धारले पालेसेविधी आराधी
 रोक क्रेयोग को योगी बनासन । बाह्य आभ्यन्तर त्याग उपाधी
 बुद्धहो शुद्धहो नहो विलुप्ततूँ । योंही अमोल भेटे सबव्याधी ॥
 जिनेश्वर चक्री हलधर नरवर । खेचर भूचर विज्ञ बहूताइ ॥
 रति उपजाने केसाज मिलेसब । अरति कारक तास लखाइ ॥
 तज प्रवृत्ति निवृत्ति वरी वर । अमोल आत्म संपत्तितो पाइ ॥
 संत अनंत बने शिवकंत । यही वात तंत महंत बताइ ॥ ११

कथा—वत्तीसवी

रतिअरति से निवृत्तिके फल बताने वाली—“जंबुकुमारकी”

दोहा-रति अरति कुं पर हरी । वरी निवृत्ति सन्ध ॥
जंघू कुमार के पड़ने से । कथु संक्षेप सम्बन्ध ॥१॥

चोपाइ

राज ग्रही रूपभदन साहुकार । प्रभूत धनी धारणी, नार ॥
महा गुणी उनके जंघुकुमार।सुरूपसर्व कलामेंहोंदियार ॥२॥
आठ कुमारी संग सगपनकिया।व्यावन दिन बाकी कुछरया
तहां पधारे सधर्मा अणगार।विद्या चरण करण गुण धार ॥
पांच सो साधु के परिवार । उत्तरे गुणशील बाग मझार ॥
धंदन आये लोक अपार । साथही आये जंघू कुमार ॥४॥
श्री गणधर मद्दोष सुणाय । परिपदा सुणं चित्त लगाय ॥
अनंत पुःल परावर्तन किया । अनंत दुःख जाव भुक्तिय ॥
अनंत पुण्यो पायो नर अवतार । अनंत सुखका आपनहार
इस से अधिक अनंत वार । ऋद्धि सुख पाये संसार ॥६॥
गगन मरी नहीं एकलंगार।जहांलग नहीं मिलीसम्यक्त्वसार
यह अथमा मिलाहे अथ । नारा आतमा भरी जन सच ॥
जो चूहे नां गये मचह र । फिर पम्नाये न तार लगार ॥
चे नां चे नां ! चतुर मुजान।दुल्यादि बांध दिया भगवान ॥
भट्यों घट्टन किये त्याग पचवाना।जंघू कुमार बैराग्य मनआन ॥

घर आते पुर द्वार के मांयातो प गोळा पडा पग विचअ
 चम के चिते अवी पातामरणाधर्म विना जाता विन गर
 पुनः आये सुधर्मा गुरू पासाश्रावक के वृन धारे ऊचान ।
 सर्वथा करे अव्रह्म पचत्वाना आमातपिता ढिग कहे नर मा
 आज्ञा देवो लेवुं संयम भरा नुन मावित्र दुःख पाये अपार
 कहे अबल तुम करो अवीव्यावाहमारे मनका पुरो उत्तर
 जेवु कहे आठों कों दो चेताया परण के दिक्षा लेंगा मेजा
 आठों सुन कहे फिकर न लगारा हम समर्थ तो रखेंगी भरन
 ओत्तव कर परण आठों नार । सयन घर में वैराग्य सोध
 मुनि परे बैठे ध्यान लगाया रतारनी तजी निवृत्ती ध्याय
 आठों अचंभी कहे करी शणामास्या गुन्हा कियान बोला बो श्वा
 लायो जैसा करो निर्वाह धन यौवन लान लो उत्साह ॥ १४
 जेवु कहे पेही मेरा परिणामा जन्म विषय में न करुं निर
 आठ रुधा जुदी २ नारी कही । कथा युक्त उत्तर जेवु तत्तद

दोहा—चोर प्रभदा ने मृणा । जेवु नान पुनार ॥

कोड निन्याणव टावडा लाये घर मलगा ॥ १५

पाच भां चोर न आवे दा विद्यामलय के मोवा

पेटा जेवु मरन में धन के नाटो पयय ॥ १६

शकेंद्र आसन चला॥देखी चिते मन ॥
 कल दीक्षा जंबु लिये । लोक करेंगे चितन ॥
 धन गये सं उदास हो॥साधु हुवे कुमार
 यह अपवाद निवार ने । स्थंभे चोग उसवार ॥१९॥

चोपाइ

जंबु लिया युन जागते जोयाचिते मुझ विद्या चाली न कोया
 पांचसे चार स्थंभे निहाराजाने जंबु विद्या घली अपार ॥
 विद्या लेने आया जंबु पास॥अति नरमी यों करे अरदास ॥
 निद्रित करण ताला तोडना॥दोनों विद्या आप लो मुझ कन ॥
 स्थंभन विद्या कृपाकर दीजीये॥जंबु कहै इने क्या कीजीये ॥
 में फजर लेवुंगा संयम भार॥सून तस्कर अचंभा अपार ॥
 कहे समजा पंसा करना नाया॥विलसा नशणी संपदा पाय ॥
 एक कथा प्रभवे कही । कथा युन उतर जंबू तस दही ॥
 सुनी प्रभवा पाया वेगग्या॥कहे में दीक्षा लेवुंगा महा भाग्य
 पांचनों चारों ने कहे जावों घगहम तो साधु होवेंगे फजरा॥
 पांचमों ही कहे हम भी नुमलाग॥दुवा २ वका एही विचार
 जाने जंबु के मान पिना अ यानव के वेगगी देख अचंभाय

कन्याके तात मात कों बुलाया सोलही मिल सोभी आय ॥
 जंबू कहे बाल वैरागी भयोवृद्ध हो लोभाइ तुम क्यों रये ॥
 इत्यादि सुन समजे सबजना पांचसोसतौवीन का हुवाएकमन
 सुण कोणिक आश्चर्य नन्द पाया सब ऋद्धी से महंत्सयकराय
 लिया संयम सुधर्माजी पास । ज्ञान ध्यान तर किया अभ्यास
 जंबूजी पाया केवल ज्ञान । महा उपकार कर पाये निर्वाण ॥
 और गये सब स्वर्ग मझार । लागे मोक्ष पावेंगे सार ॥
 रति अरति त्यागन के फल । जान के भव्यो बनो विमल ॥

दोहा—योंजाणी सुखार्थियों । रतिअरति त्याग ॥

जंबूजी परे सुखवरो । धरो चित्त वैराग ॥ ३० ॥
 निज पर आत्म सुखखरन । रतिअरति पाप उद्धार
 ऋषि अमोलख ने रचा । यह सोलवा अधिकार ॥
 परमपूज्य श्री कहनजी ऋषिजी महाराज
 केस्मभदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री
 अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
 अघोद्धार कथागार ग्रंथका
 रतिअरति पापोद्धार नःमे
 सोलवा—मंजल

समाप्तम्



मंजिल सतरवां-माया मोसोपापोद्धार

पूर्वविभाग—“गुढ-असत्य”

दोहा—दूसरा नवमां पाप मिल।पाप सतरवां होय ॥
एकही अति दुःख दाइ है।तो दो की गति लो जोय

चोपाइ

माया मोसा मेटा है पाप।इस के अंदर मिथ्यात्व की छाप
कहलाते उतम स्थान मांय।यह पाप वहां रहां छिपाय ॥
ऊपर से बनते भक्त राज।मन में मेले करें अकाज ॥
भक्त महात्मा नाम धराय।लोक ठगन केइ भेष बनाय॥
पोथा थोथा संग्रह करे घना।लोभावे मन कामी लोभी जना
मार गपोडे शभा को।हंसावे।मिथ्या लाभ बता ललचावे॥
सत्य के आगे पड़दा झंलीया।कलयुग में पाखंड मालीया

अहंताममता विन मोरो। माया मोसा जो लगावे हेयुगम
 ऐसे केइ साधु यती। रखे ओगा रु मुदपती ।
 केइ शुभ्र केइ मैलो। वस्त्र धारी ही देखावे हैं ॥
 ऊंचे-पाट पर विराजें । शास्त्र कथा कथे गाजे ।
 केइ एकांत उत्सर्ग । केइ अपवाद ठसावे हैं
 पोते पाले न पलावे । श्रद्धा भृष्ठ जो करावे ॥
 धलके धगले की चाल । आल अन्य पेचडावे हैं ॥
 आप थापी महापापी। मिले सुक्ति न कदापी ।
 ऐसे महात्मा कहाइ । माया मोसा जो लगावे हैं ॥

इन्द्रविजय-छन्द.

बने भक्त राज शिरताज से साज केइ अवाज मधुर उचारे।
 शुभ्र पोशाक सुपाग धरे तिलक छापे लगाये विचित्रप्रकारे
 गले कर माल छोटी बड़ी डाल घेठे उंची गादी बने साहूकारे
 घात २ में इश का नाम कहे इस ढोंगसे अपना मतलब सोर
 माया मोसीभाइ करन ठगाइ। स्वभाव पडे अडे धर्ममें आइ
 महामा यधारन ठोंग रंच केइ होवेटे सामे बगलाके साइ।
 मोठे जीकारे व्याख्यान सुने श्रद्धे नहीं जरा आंच लगाइ ॥
 भक्त्य करे भंडारे भर पापी । जान गुरू और धर्म लजाइ ॥
 सनमंहुत को ठगे माया मोसी। धान घनावे करी नम्रताइ ॥

अहंर पानी वस्त्र ओपधकी । अति आग्रह करी भावनाभाइ
 द्वार लगाइ बैठे घर अन्दरायोग्य वस्तु को असुजती ठाइ ॥
 गुप्त अपमान करे मुनि राजको।पापी ऐसे वज्र कर्म बंधाइ।
 पूर्ण पुण्य से माया मोसी की।कदाक कीर्ती जगमेंफलाही॥
 नाया मोसा महा पाप सेवनसे।संचित पुण्य खुटे क्षण माही
 उत्तही भवे जो फल लगे तो होय निंदा बहुतही शरमाइ ॥
 पर भव में होवे नारी नपुंशक कटुवचन दीनत दुःखपाइ॥
 भक्त बने केइ ठगे भगवान को।डोंगी भक्ती रचे भाव देखाइ
 गुणानुवाद करे छंद बंधही।नमन खमन गुणभी दरसाइ ॥
 यश सुख लक्ष्मी चहाय धरो।नहीं आत्म के हित की चिंताइ
 फीकी भक्ती में शक्ति कहां रहे।माया मोसी ठगे ईसके तांइ

कथा तैंतीसवी

माया मोसाका फल बताने वाली “कालू नाइकी”

दोहा—माया मोसी मानवी हित साधन करे पाप ॥
 खाडा खोदे और को । उसजें डूबे आप ॥ १ ॥
 जग जन सहकहत हैं । दगा सगा नहीं होय ॥
 इनाम पुरोहित को मिलानाइ नाक दिया खोय॥

चांपाइ

व संत पुर पिशुन जय राज वाणी शंकर पुंगेहिन गुणनाज

वाक्य पटुत्व रींजे राजान । नवी २ कथा नित्य सुनेकान
 फुरसत राते पुरोहित जी आयाकथा सुना रुका लेजाय ॥
 प्राते भंडार से नाणो पाया उससे सुखे निज खरचचलाय
 कालूनावीक राजा का दासाराते पग चंपी करावे तस पास ॥
 रशीली कथा पुरोहित जी सुनायानिशा उसी में बहू बताय
 पग दावता नाइ थक जाय।क्रोध पुरोहित परसो लाय ॥
 चिते करुं नृप विप्र विरोधावहांडू उपाय ऐसा कोइ सोधा
 एकदा पुरोहित किस कामे गेयानृपति नाविक दोनों हारये ॥
 माया सोसा नाविक तब करे । बहुत नरमी वयन प्रचरे ॥
 धन्य २ श्रामी आप के तांय।आप जैसे कोइ गुणवंत नाय ॥
 अवगुनी ऊपर करो उपकार । जीव से ज्यादा रखते प्यार ॥
 पुरोहितजी है गुण के चोर।निंदा करे आपकी ठोरठोर ॥
 कहे राजाजी करे मदिरा पान।उसमें मस्त श्रद्धे नहीं ज्ञान ॥
 मुख भी उनका अति गंधाय । पास मेरेसेवैठा नहीं जाय ॥
 करुं क्या पडा पेट के वश्य । कथा सुनाने लगा राय का रस
 गये बिना तो चालेही नहीं । मुख बांध अब जावुंगा सही ॥
 दूर बैठे देवुंगा कथा सुना । ऐसी बात में ने भुनी महाराय ॥
 नृपति कहे देखें गे काल।तो सच्च मानेंगे तेरे कहे हाल ॥
 सुनकर नाइ मन हर्पाय । अब देवूं पुरोहित को सयजाय ॥
 दोहा—पहर निशा द२तांथक।आया पुरोहित पास ॥
 लली २ नमन किया।मधुरी करे अरदास ॥ १३ ॥

माते आपको जगाये आज । सो गुन्हा माफ करो महाराज
 आप गुरु मेरे आप हित काज।इस वक्त आया गुप्त साज॥
 आज आप नहीं पधारे दरवार।आपकी बात करी सिरकार
 पुरोहित आता नित्य कांदाखायाजिससे मुख उसका गंधाय
 सदा आकर बैठे मेरे पास । ब्राह्मण जाण न बोलुं तास ॥
 समझे नहीं सो पढ़कर ज्ञानाकल करुंगा मैं तस अपमान॥
 यह सुन लागामुझे अतिदुःख । तुर्तहीआकहा आपसन्मुख ।
 देखो आपका कहां उपकार । देखो राजा का कैसा विचार ॥ ६
 कल सेदूर बैठना आप । मुख पर बंध कोई बख साप ॥
 यह चेताया आपके हितकाज । रखे बुरो मानो महाराज ॥
 सरल विप्र कहे भली चेताइ । उपकार कोई वक्त फेड़ुंगा भाइ
 कल मुख बांध आवुंगा शभामांइ । अदबते रहुंगा अब सदाइ
 हर्षाइ नाथी आया निजे घरे । कलतो मजा देखुंगा भलीरं
 दूमेरेदिनविप्रैतसहिफिया॥राजा नाथीकाकहातच्चभ्रदलिया
 पुरोहित रसीली कथा सुनाय । राजा क्रोधमें गये भगय ॥
 रक्षा लिखखामण कर दिया । पुरोहित उठ तब निज घरगिया
 नाथिक भीगया उनके लार । कहे देखा क्रोध नृपका इस बार ॥
 पुरोहित कहे राखी गेजी ये मुश । आज का इनान देखुंननुश
 योरक्षा नाथीक को दिया । नाथी हर्ष कर निज घर गया ॥
 पुरोहित सुये सुते पर नांच । कर्म रेकल करनाही पाय ॥

यांची भंडारी अचंभीयो । छुरी गुप्त कर लेय ॥
 एकान्न लेइ नाइ को । दीनो नाक उडाय ॥
 मेंनही मेंनही करतही । नावीक नकटो धाय ॥

चोपाइ

नारीक पुत्तार राय पे करी । राय कडे क्यो मे चिड्डी गिरी
 नारीकतर गयोमन मुरशाय । राजातच पुरांहीत कांयुल
 पूछे क्यो म्हा नाइको दिया । पुगेहीतकडे उपकार उसनेकि
 नृ।पूछेभ्या क्रिया उपकार । विप्र कडेन द्रुवा आपकागुन्दे
 मुन मु ७ गेव आपका मन दुभाय । उसने चेतया येडादूरअ
 मुर्गा नारीक मायामोसीनृ।जाणाजाना । पीकीपापमेहाण
 निकटा दियानावीको गामवार । पुगेहीनजीका क्रियासल
 कडे पुगेहीत मुनिगोमिरदारण्ठ दांहा मुस उपजाइमश
 दोहा—दगा किर्मका मगा नहीं । करदंभारे भाइ ॥
 म्हा तो भटती कोयाया । नाक कटायो नाइ ॥

चोपाइ

येमुन समजे मवदोमन माय । मुत्रमाया मोयदियाडिटका
 तिनने छोटारा मुनिया भया । मुन द्रुवा दृष्टान्तरद कया
 दोहा—किंचन माया मायमानावीक पाया दुःख ॥
 मदा क्क म्हा कामनि । जनी नजो वो दुख

सरलसल होलये सदांघ-मनहर छंद

समय के अनुसारी । शक्ति नर के मशारी ॥
 यने तेनही आचारी । आने तेसही विचारी है
 जिसमें वशनलगारी । उसमें नहीं गुन्हें मारी ।
 कैसे यजन उठ भारी । जोहीन शक्ति धारी है
 गोपे करण अधिक तारी । गोपे शक्ति न लगाती
 तो भी नहीं पहोचे पारी । तहां तां दरजा लाचारि
 मन निन्दा नर नागि । यंशो गुनी बारम्बारी ।
 सो अमोल तिरे तारी । कलयुग के मशारी है ॥
 ज्ञान निजारम मुधारी । सांझी पर को उगारी ।
 बिना छिद्र की नाचारी । पांने तं पर तारी है
 कहा माधु कहा संसारी । जिन तो परमान कर्मि
 नहीं भेष को पारी । को गुन भव पारी है ॥
 गुन भेष रोजां निल । तो निश्चय व्यवहार
 शीघ्र भव केग दले । गेमी जिनजी उभारी है
 कथा ब्यल्लर मिष्टुद्र । पेदी मन श्री बुद्ध ।
 अनोठ यों पार पार । बाले गनि चारी है ॥
 छिन्ने दो संसारी । इह उनय नर भारी ।
 जो निरोग न.वा चगे । यने मोघही व्यापारी है
 इह उह पुर नागि । इह कावे दो देवारी ।

रमें धर्म में संसारी । मनसा नमति हारी है ॥
 करे निजात्म निन्दारी । रटे गुणी गुण धारी ॥
 सोहे जग में साधु सारी। जावूं ताकी बली दारी है
 माया मोपा जो निवारी । सोतो सदाशुद्धाचारी
 अमोल यह संसारी । रहे धर्म को दीपारि है ॥ ८

इन्द्र विजय छंद

माया मोसा वस्य लेभ माने कस बातको सत्यनदी दायरी
 मानी यश व धारण कारण धारी माया मीटी चानदारी ॥
 लोभी फसी महा आसकी फास खरी मेंखोटी बन्नु धिक्कारी है
 जानो जानी इन गुप्त ठगारों को आन नदे पास मायधारी है
 पड़े मानमें अकड मकड कर । एव छिभा निज अन्धारी है
 करे राइ और पहाड बतावन । खोटको ओपंदे खोले है
 धर्मी इसे जाने दुर्गति कारण । इह भवमें भीतरी है
 नकरे मान जो माया मोसाधर । अवसर अन्धारी है
 सत्य आचर सत्य विचार है । सत्य उचर को ही मरारी है
 अवगुण गुण यथातथ्य जानत बनावण नदी नदी है
 डर खुशामदी नकरे किनकी । नधरे गुनारी है
 मध्यस्त वृति स्मृति वहे लहेसो अनेक मोल नदी है
 सोही गुनीजानी घ्यानी जगतनें नदी नदी है
 संत महंत पदे सोभित नर सुगन नदी नदी है ॥

शाहा बादशाह की लायकी तामेही गुरु शिष्यसोहीगुणपाइ
जहां नहीं माया मोसा अमोलक तेही पुनित सद। सुखदाइ

कथा--चौतीसवीं

सरल सत्य के फल बतानेवाली--“केशी गौतमकी”

दोहा—अनेक ग्रही साधु गुणी।माया मोसा छोड़ ॥

आत्म परमात्म रूप कराहुवे जग जंतु मोड़ ॥ १॥

अवी चतुर्थ काल में।केशी गौतम महाराज ॥

सरल भावसत्य आदरी।कर चरचा मिला समाज ॥

श्रीउत्तराध्येन सूत्र के।तेवीस अध्याय अनुसार ॥

कथाकथुं सो सुणगुणी।करो ते कली में प्रसार ॥

चोपाइ

श्रीपार्श्व प्रभुजी मुक्ति गया।श्री महावीर साशनसुरू जवभया

तव पार्श्व प्रभू के संतानियो।केशी कुमार श्रमण बखानियो ॥

विद्या चरण गुण के सागर।पांचसो मुनि के संग परिवर ॥

आयेथे सावथी नगरी वारा।उतरे तिंदुक वाग मझार ॥५॥

उसी वक्त श्री गौतम स्वामा।महावीरके शिष्य गुण धाम ॥

च सो शिष्य सावथी वारा।उतरे कोष्टक वाग मझार ॥६॥

निं केसाधु मिल आपसमांया।देख भिन्नता संकित थाय ॥

लोकों केमन में भी भ्रम भया।दोनों जैन सत्य कोनसेरया ॥

एक कहें नहा वृत चार । दूसरे पंच महावृत के धार ॥
 एक के वृत्त है बहु मोल । एक के परिमाणिक धरे तोल ॥
 दोनों के परूपक जिनराजादोनोंही खपते मुक्तिके काज ॥
 निर्णय इतका होय तो भलाजरूर मिटा चाह गलबला ॥
 गोतम मन पर्यय ज्ञान धाराजाना साधू श्रावकका विचार ॥
 निर्णय करन का निश्चय करी ॥ विनय भाव दिल में आदरी ॥
 पहिले हुये पार्थ जिन मोटे जानागोतम गये केशीजी स्थान
 केशी गोतमका किया सत्कारादोनों के मिले साधु हजार ॥
 और नर नारी देव नरे अपाराकोतुक धरे कइ मन मझार ॥
 केशी गोतम दीपे शशी रवी पंगवणी गणधर का पद सोधरे
 दोहा-केशी धमण तीनज्ञानधरागोतम धरे ज्ञान चार ॥

केशी धमण पञ्चोकराअधिक ज्ञानी नत धार ॥

१ पार्थ प्रभु कहे महावृतचारानडासीर पंच महावृत उत्तार
 दोनों जिनेश्वर फेर करी पदागोतम श्रानी उत्तर तबंदेय ॥
 पहिले जिन के सधु सरल जड मनसे दुर्लभ ले साव पराड ॥
 उले जिनके मुनिजड और बर ॥ दुर्लभ मनसे पाते देवद
 इस लिये पंच महावृत सिद्धे । बनक कानगी जुड़े २ लिये ॥
 पावन जिन मुनि मन्त्र दुद्धितभोटेने मनसे मुद्धपावन ॥
 मनस (पान) पोधा महावृतकारी बनक नागी दोनों हो जडारी
 अही गोतम जो महा बुद्धिमान पहिले प्रथम का विज्ञानपावन
 २ दुर्लभ प्रथम बर ॥ ज्ञानी । इतके बडनेलिये केने की ॥

गोतम कहे धर्म साधनलिंग होयामूर्त्तिका कारण नहींहैंसाय
 लिंग से लोकको परतीत आयामौक्ष साधन सहायक भीथाय
 जान दर्शन चारित्र्य मोक्षदेष । दूसराभी मिट गया संदेह ॥
 ३ अनेक घेरियोंके गणमेंरही।कैसे उन्हेतुम जीतो सही ॥
 गोतम कहे एक मननश करे । तो इंद्रि कयाय सब घेरी डरे॥
 ४ अहो,गोतम इसलोक के मांयाबहुतलोक फासमें रहेयंथाय
 तुम कामकोछेदके विचरोकैसे।गोतम कहे सुनो केशीजीपेसं
 जिनाज्ञा तीक्ष्ण शास्त्र गिरि।राग द्वेष स्नेह पासछेदकरी ॥
 ५ लका हो में ।चरुसदा । समझे चोथे प्रश्नका मुदा ॥
 ५ हृदय मेंलना अनिवृत्त रई॥विष भक्षण समफल तसकहीं
 मभूल नाश तस कैसे किया।गोतम केशी को उत्तर दिया॥
 भव नृणा बेल अनंतहै नायाजिनाज्ञा सम शास्त्र साय ॥
 तम छेदी मंतुष्ट मुर्धी गट्टु । केशी कइ बली प्रश्न कहूं ॥
 ६ महाप्रचलितआला तन मांयाबुद्धि बल सयगुण जलाया
 आधरं तूम कैसे दीर्घा वृक्षायाकहे गोतम सुनो मां उपाय
 तीर्थंकर महा मेव मे दृढ़ वर्षादासुप्र धाराशीतल अगाध
 कया । अग्नि वृक्षा शीतल भयो।प्रश्न छडा का उत्तर कयो
 ७ दृष्ट अश्व वायू रंगी धाय।अरुन्ट हो चलायो आज्ञामांया
 आधरं दामे नुन कगे उपायागोतम नय उपाय बनाय ॥
 मन घांटा सुन बचन लमानाधर्म शिक्षण पन्थाण मुटाम॥
 पुनामं नय सुनामं चलें । केशी श्रमन सुनकं हरेन ॥



समय पलटा उसके अनुसार । केशी समण सर्व परिवार ॥
 चार महावृत्तके पंच मद्रवृत्त किये । हजासाधु सर्व एकत्रभये
 सर्व लोक अति पाये आनन्द । गुण उचारे गये घर पगवन्द ।
 गोतम केशीरहंशोर ढिगआय । बहूत उपकार कियाजगमाय
 दोनों मोक्ष पाये भगवंतानाम लिये ही सुख वरतंत ॥

दोहा—माया मोसा तज करासरल सत्यता धार ॥

गोतम और केशी गुरु । पाये सुख अपार ॥४३॥

तैसे सब सरल सत्य धरावरतो जग मझार ॥

तो दोनों भव सुख लहोआशीर गेवा पार ॥

निज परात्म सुख वरन । माया मोसा पाप उद्धार

ऋषि अमोलख ने रचा।यह सतरवां अधिकार॥४४॥

परम पूज्य श्री कदानजीऋषिजी महाराजकी

सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारि मृनि श्री

अमोलख ऋषीजी महाराज रचित

अधोद्वार कथागार ग्रंथका

माया मोसा पापोद्धार नामे

सतरवां—मंजल

समाप्तम्



मंजिल अठारवां मिथ्यादंशण शल्य पापोद्धार पूर्वविभाग—“मिथ्यात्व”

दोहा—पाप सत्तरे शिर शेहरो । मिथ्या दंशण शल्य ॥
काल अनादिते जीवकेलना यह महा मल्य ॥ १ ॥
बार अनंती त्यागियो जीव सत्तरेही पाप ॥
अठारवां त्यागे विना । तरीन आत्मा आप ॥ २ ॥

बांसाइ

निपास तो लुटा रहे पापारोमान-धृष्टा जो मन मोह ॥
मल्य क्या कोटे का सुपाप । अशदसा पाप तो पाप ॥
मिथ्यात्व के मूल रूप प्रकट अनिमिह अननिग्रही पाप ॥
अनिनिग्रही पाप ही अनिमोघापाप अनादि आत्मन मोक्ष ॥
१ अनिमिहो मिथ्या ही दोईपद-पजिबदूरी सब मलमल्य
शल्य पाप अनिमिहो पाप ही लेगी प्रसाद के साक्षात् ।

- २ अना अभिगृही निर्बुद्धि होय । सत्यासत्य नहीं समझे सोय
सर्वमत को माने एकही सार । समझायो नहीं समझे गीवार ।
- ३ अभिनिर्दिशक अभीमानी नर । अपने मत मिथ्याजान कर
गर्भव पूछ ज्यों छोड़े नहीं । उत्सूल क नी अधिक बढ़ाय ॥
- ४ संशयिक सरथ पक्षी सही । परन्तु मति की नुन्यता लही ॥
सर्वज्ञ कथित को मिथ्य करे । शंकासे सम्यक्त्व को हरे ॥ ८
- ५ अनाभोग अनजाने लगे । चौधीस दंडमें खाली नहीं जागे
डूबे इस बड़ब में पड़े जीव । भोगे अनंत संसार मे रीव ॥ ९ ॥
- दोहा—देभेद मिथ्यात्य के । लोकीक लोकोत्तर जान ।
लोकीक लगे अन्य मतमें । स्वमत लोकोत्तर मान
एकैक के भेद तीन तीन । देव गुरु और धर्म ॥
सु-कुभेद मानता विषे । वरुण ताका मर्म ॥ ११ ॥

कुदेव गुरु वरुण-मनहर छंद

मिथ्या मति प्राणी । अज्ञान मदिरा छकाणी ॥
देव गुरु धर्म छोटे । सत्य रहे मानी हे ॥
ज्ञानादिक गुन विन । देव गुरु स्थापन किन ॥
हिंसा झूठ चोरी रत । पास रामे रानी हे ॥
यमभूषण सजाय । फल फूल भीचाढाय ॥
धृष दीप अंतरादिक । सोभा यह सजानी हे ॥
भाग उपभोगरत । बड़ा केसी बेरग्य मत ॥

डूला डूली काहे ख्याल । तामें धर्म माने वाल ॥
 महा अनर्थ निपाय । कैसी अकल गड़मारी है ॥
 घूमे अंग देव लाय । केइ ढोंगतहां जमाय ॥
 तोभी भोपारु पुजार । सदा देखते भिख्या गीहे ॥
 जो अन्य को सताय । सोस्वपने नसुख पाय ॥
 थापी मानी दो डूवाय । यामें बैम न लगारी है ॥
 जड पूतला घनाय । वस्त्र भूषणे सजाय ॥
 केइ ठाठ को जमाय । फेरे ग्रामके मझारी है ॥
 नाचे हींजडे की तरे । ताता थे लटके करे ॥
 गान तान नाना परे । ढोल जंजीरे झणकारी है ॥
 छत्र चामर धराय । गुलाल अंतर उडाय ॥
 प्रभु कर के घोलाय । खुशी ताकी करण धारी है ॥
 धर्म प्रभावना समजाय । देखी आश्चर्य आय ॥
 ऐसे घाल ख्याल रचे । कहो कैसे पावे पारी है ॥

कृगुरु लक्षण—मनहर छंद

कहूं गुरु गत भाइ । केत्ते इस जग मांही ॥
 साधु शंन्याशी कहाइ । जोगी यति भीवजाइ है ॥
 पट काय को हनाइ । मृषा भाषा जो बोलाइ ॥
 चोरी करे रुकराइ । करे सेंघटा जो नारी है ॥
 धन का संचय करे । क्रोध मान माया धरे ॥

लोभे रागे द्वेषे पडे । कलह कुआल ठारी है ।
 चुगली निन्दा जो करे । हर्ष शोक कपट झूठवरे
 ऐसे मिथ्यामति ताको कैसे गुरु धारी है ॥ १७ ॥
 हुवे जगत् के पूज । रहे जगत् से धूज ॥
 पेट के अर्थी अबूज । निज सृजन लगारी है ॥
 परम्परा चली आइ । तैसा भेष लेवनाइ ॥
 भेद भावन समजाइ । गावे राग ललकारी है ॥
 वने कोडीके लाचार । फिरे सदा द्वारो द्वार ॥
 साथ छोरा छोरी नार । और भार सिर भारी है ॥
 तैतो कहलाते महाराज । सजे वेगारी कासाज ॥
 ताहे देखे आवे लाज । एक येही रुज गारी है ॥
 केइ जटा कों बढाय । केइ मूँड जो मुडाय ॥
 केइ भभूती रमाय । केइ नमही रेवता ॥
 केइ बहू रंगीवने । छ पा टीके दीये घने ॥
 केइ रहत हैं वने । केइमठ घर सेवता ॥
 भांग धतुरा चडावे । गांजा तमाखू फुकावे ॥
 केइ विषय लीला गावे । केइ पूजे केइ देवता ॥
 वेद पुरान सुनावे । अर्थ विस्तारी समजावे ॥
 एक दया घट आये विन सर्व भाव भेवता ॥
 गच्छाद्रिप होइ घने । छुके अभिमान पने ॥

जोगा जोग नहीं गिने । तने खेंचा तान में ॥
 सम्प्रदाय को बढावे । मूंडे जैसा तैसा आवे ।
 सो तो क्लेशही मचावे । नहीं समजे जरा पान में
 फिर दोष को छिपावे । ऐसे सडे को बढावे ।
 आगे बहुत धिगड जावे।तो लजावे मत जहान में
 बिना वैराग्य भावआये । नहीं मिथ्यामती जावे ।
 कहो कैसे मत दीपावे । कैसे आवे मुढ ज्ञान में॥
 बिना सम दम पन । ज्ञान ध्यान रू नमन ।
 अवज्ञान रू खमन । ते तो जानीये अयोग्य है॥
 हट ग्राही क्लेश कारी । लोकीक न सुधारी ।
 अभिमाने मत विगारी । धारी ईर्ष्याइ भोग है ॥
 जो आप न सुधारी । वो अन्य क्या उगारी ।
 लक्ष जाको अनाचारी । भारी कर्म को रोग है॥
 गुरु घने ने संसारी । यह मिथ्यामत टारी ॥
 रे आत्मा निहारी । हारी जाय मां सुजोग है ॥
 भेरव व्यवहारी बनायो । पक्ष दृढ कर थपायो ।
 मत अनमत न शायो । ये ही गायो है पुराण में॥
 जाने न्याय विसरायो । भेद हाथ नहीं आयो ।
 मूल लखी न सकायो । गायो ज्ञानी जो ज्ञान में॥
 सत्य मन को छिपायो । सत्य मति को हरायो ।
 कली पाखंड बढायो । भुलायो अवज्ञान में ॥

नशो कुप में घोलायो । गुरु सर्व जग पायो ।
 ताते चुप भयो डायो । तो समायो खड म्यान में ।
 एक किरिया सत्य माने । एक किरिया झुट ठाने ॥
 एक विनय बखाने । एक ताने अज्ञान में ॥
 एक कोरा ज्ञान कथे । एक कोरी करणी मथे ।
 एक दूर रह सव ते एक नास्तिक ठान में ॥
 एक एक के अनेक । मतांतर जग देख ।
 लगी सत्यही पे मेख । रेख छिपी घटा भान में ॥
 छायो धोर अंधकार । डूवे जग काली धार ।
 कहा कथे कथनार । समजावे आत्मान में ॥ २३ ॥

कुधर्म वरणन-इंद्रविजय छंद.

धर्म को धर्म न जानत टानत । निध्यामंत कुयुद्धि अनुतारे ॥
 धर्म अजीब को भेद जाने बिन दया मूल धर्म मुखे उचारे
 करे धर्मशाण छः कायको अहोनिशी । हर्षित ताते मन अपारे
 ऐसी जो धर्म तो भरम रूप नर मुडही धारे रु नाही तो धारे
 १ नर्ही नरही धर्म स्थान बनायता देवालय नट नाना प्रकारे ।
 ध्यान को शायत तिला फेडावता तात्तंग प्रसन्न स्थावर संहारे ॥
 धर्म स्थान किये मोक्ष जो पावे तो चक्रवर्ति मंथन स्था धारे
 ऐसी जो धर्म तो मानस्य नर मुडही धारे रु नाही तो धारे ॥
 २ अतः धर्म को अनन्य शाय आत्मनः ध्यानमे धर्मोत्तरे

जल में शुद्धी जो होनी कदापि नो अपवित्रकोले पवित्रवन
 जलचर बैठा नार्थ नदी नरपार्य ही मोक्ष पावेगे वयोरे।
 ऐसा जो धर्म सो भग्न रूप नर मुहर्ही धार क नार्ही सोत
 ३ दशही दशा का भ्रम हो इच्छा भक्षनी जीवों पडते धनु आ
 व्याघ्र पदार्थ हामन ना मार्हा ना राक्षसी क्या पावे प्रपतार
 दीप नय यज्ञ देग रुचार । ४५० ॥ १५० ॥
 ऐसे जो धर्म सो भग्न रूप नर मुहर्ही धार क नार्ही सोत
 ४ वायु ही रक्षा करे आन मुखा कल भजानी अन र्थ सोसं
 देव गुरु का नाप निवारन । लगा न पने क प्रपतार ॥
 होल नगाहे क रामनी कृत्वा करना बार प्रभुकी प्रश्न तार
 ऐसा जो धर्म सो भग्न रूप नर मुहर्ही धार क नार्ही सोत
 ५ हरी का जान लो हरी भानन भग्न प्रभु रूप अनंत जीवों
 हरी ही जीवन हरी सहायता कर । कपल कल पत्र विदार ॥
 मंडप अंगीया गवाय गवायन म्यागी करुण का भांगी कियार
 ऐसा जो धर्म सो भग्न रूप नर मुहर्ही धार क नार्ही सोत
 ६ अर्थ नंद में कली अनार्यता देखन दुःख धर्मो आत्मार
 श्रुती कही हने मरण विच्छिन्न अंगु अश्वगो एलक अग्नि मंत्रार
 नै श्रुती नृप को दुःख देखन मझा अद जातेव । मार ॥
 ऐसा जो धर्म सो भग्न रूप नर मुहर्ही धार क नार्ही सोत
 अग्नि शीतल शशी । कभी नै प्रपतार
 अनन्य मोक्षक वांछ । १५० ॥



इस लोक अर्थ लगाय के । उलटे पाँधे कर्म ।
 उलटे पाँधे कर्म । कष्टनिवारणतेला ।
 बुद्धि धर्मन आँधिल । कमाइ को सामायिक पक्षि
 महा निर्जग क धर्म काकरे लिलाम पड़े भर्म ॥
 कितने क भोलें जीवडें । करते करणी धर्म ॥ ५३

मिथ्यात्व कथन-इंद्रविजय छंद.

धीनगम कथन से ओछे । अधीकी विपरीत अद्भुत न करनार
 अद्भुत दयापक एक आत्मा मानन कोइ कहें सरसव समर्थ
 कोइ उरजी कहें पंच भुनम कोइ लोक कर्ता इच्छा कोइ ॥
 नय नय जाने विन पंडित आरम परमारम रूप विगोइ ॥
 हिमा मय अधर्म का धर्म कहें समर्थ दया धर्म की निर्दिष्ट धर्म
 कन क कोना धर्मगुरु मानि अस्मानि मंत्र क दिग जाना द्वाहा
 अज्ञात हो जीव अज्ञात हो निर्जीवि मागे दुन्मागे दुलदही उवा
 के हो अर्क हो के नेह न जानना सो मिथ्यात्वी • उमानि का

मानान्य मिथ्यात्वी-अष्ट छंद.

अनेक गुरु उवाहो नया अविनय कर ।
 आत्मनिष्ठ दूध दूध मा दिव्य मे ना ॥
 अनेक आत्मा दूध मान, अज्ञान नो धर्म ॥
 यह कह मिथ्यात्वी अज्ञान नो इच्छा नही निवे ॥

कथा—पैंतीसवी.

मिथ्यात्व के फल वतानेवाली—“जमालीकी”

दोहा—अनंत जीव मिथ्यात्व में । डूब रहे संसार ॥

करणी उत्कृष्टी करे । लेखे न लागे लगार ॥

ते स्वरूप दर्शाववा । भगवड़ अंग अनुसार ॥

जमाली की कहूं कथा । सुगो स्थिरता चित्तधार ॥

क्षत्री कुंड नगर सोभाय । तहां क्षत्री राजा एक रहाय ॥

धारणी नामें गुगवंती नार । उसके जनाली नामें कुमार ॥

मैहलो में उदार भोगत्रे भोग । विविध पंच इंद्रिके मन्योग ॥

सूत्र में जाता जाने नहीं काल । मशगुल जग में पुण्य विशाल ॥

उत्त अवतार श्रीजिन वृद्धमाना । तहथो गमेसंग मुनिमहान ॥

महाणकुंड नगरकेवार । विराजे बहुशाल बागमझार ॥५॥

क्षत्रीकुंड जन सुनहर्षाय । बहुजन संव निल वंदन जाय ॥

जमाली दास ते जाना भेद । तजो च आदर्शन की उमेद ॥

द्वादश परिपदा गड़ भराय । महावीर सद्भावसुनाय ॥

चूजो २ शीघ्र सुखार्थी जन । तामगी नरनकी मिली सुधन ।

ज्ञान दर्शन चारित्र आदर । कर्म हरी होवो अजर अमर ॥

अपूर्व बोध सुन भव्य हर्षाय । यथा शक्ति नो धर्म आचगय ॥

जमालाजी पावे वैराग्य । कइ प्रभुने दीन लेवुं मे भ न्य ॥

सुख उपजे सो करो वीर फरमाय धर्म में ढील करो जारना
 हर्षा वंदी आये निज नदन । मात तात से किया न मन ॥
 कहेमें जाना अस्थिर संसार । दोआज्ञा लेवु संयम भार ॥
 मात तात कहे सुन वच्छ वात । तूं नव यौवन सुन्दर गात
 तुझे पाला तूं हमे देसुख । फिरलें संयम हम हांवे मरण मुख
 कहे कुमर यह उदारिक शरीर । अकची रोग भरा जरा तरि
 विव्धंसन धर्म कोन पहिले जाय । अभी संयमलेवूं वापमाय
 कहेमावित्र तुझजैसी आठनार । नवयौवना रूपगुणगणधार
 नमणी खमणी संगभोगी भोग । हमनरेवाद आदरजो जोग
 कहेजमालीनारी तनअपवित्र । मोक्षविघनी भोगेदुःखविचित्र
 मुनिनिन्दे अनंतसंसार बढायामरण विश्वासनहीं दोआज्ञया
 अम्मापिता कहे पुत्रसुजानासातपीडीको संचयो धनधान ॥
 सोविलसी फिर संयमधर । इत्नी कहीतोकर अंगीकार १५
 कहेकुमर द्रव्यमें सातसीराजमीज्वालाचोरैकुटुम्बरीयनीर ॥
 अनित्य यह पुर्व पश्चात जायालेवुं दीक्षा ढील कहमें नाय ॥
 भोग बहुते आमंत्रण कीधाजमालीं चित न चला को विधा ॥
 तय संयम कठणाइ बताय । कोइ भी उपाये रहे घर माय ॥
 जाया संयम अतिदुकर कार । भुज सिन्धु तरे चडे गंग धार
 शीत ताप सहे ले निर्दोष आहारपीछ पस्तावां करेंगाकुमार
 कुमर कहे कायर अज्ञानी तांयासंयम दुःख कारक लखाय ॥
 आत्म हितच्छु कों सुख खानालेवुंगा पालुंगा जीवन प्रान ॥



उत्तर नहीं दिया पुछा दोतीनवारा तब स्व इच्छा से किया विहार
 फिरते सावर्था नगरी आया कोष्टक उद्यान में रहे सुख मांया
 अर्चित अंग दहाज्वर प्रकट। या शिष्य के पास विछाना कराया
 पूछे असहाय वेदन से घबराया किया। विछाना के करोहो भाय
 हाल नहीं किया करे है श्रमायाँ सुनते उनके फिर परिणाम ॥
 वीर “कडे, माणे कडे” कहाया यह मिथ्या हुवे कार्य किये थाय ॥
 “कडे माणे कडे चले माणे चले” यह वीर वचन झुटे अटकले
 मिथ्यात्व तब उपार्जन किया। हाथ आया रतन गमना दिया ॥
 सर्व साधु को बोला दे उपदेश। यह वीर की जाणो मिथ्यारेश ॥
 नहीं श्रद्धा जो संत बुद्धि वंता छोड जमाली मिले जा भगवंत ॥
 कितन को साधु रहे जमाली लार। आये फिरते चंपा नगर मझार
 वहां विराजे थे वीर भगवंत। जमाली प्रभू को नहीं मानंत ॥
 अभीमान धरी वचन यों केय। केवली होकर आयों मॅय ॥
 गौतम प्रश्नोत्तर पुछंत। लोक जीव शाश्वत के अशाश्वत ॥
 सुन जमाली चुपकर रहे। तब जमाली से प्रभुजी कहे ॥
 इस का उत्तर देवे ममछ अस्तमुनी। केवली से क्या छिपाहे गुनी ॥
 द्रव्यास्तिकनयशाश्वत्वा लोकापर्यायास्तिकनय अशाश्वत थोक ॥
 ऐसे ही जीव शाश्वता सदार है। अशाश्वत गति रूप पलट है ॥
 जमाली नहीं श्रधे यह वचन। द्वेष ईर्ष्या अति व्यापामन ॥
 धर आहंकार विन वंदे जाय। आप हुवे बहू जीवों डुवाय ॥
 बहुत वर्ष ऐसे विचरं सोय। अर्धमांस अणसण अंत होय ॥

लंतक कल्प तेरे सागर स्थिती । किलविपी देव हुवा नीचगती
तहां सें आगे चार पांच भव लही । तिर्थच मनुष्य देवता भइ ।
संसार पर्यटन यों पापसे करी । फिर मोक्ष गती पावेगा खरी ॥

दोहा—ऋद्धि तज संयम लियो । करणी दुकर कीन ॥

एक जिन वचन उत्थापते । मिथ्यात्वी भयेहीन ॥

तो जो उत्सृज भाखके । कुपक्ष बांध करे तान ॥

करनी करे सिद्धी तरन । कैसे पाय निरवान ॥४२॥

ऐसे डर भव्यातमा । करो जिन वयण प्रमाण ॥

संचा तानी छोडकर । पालो जिनवर आन ॥ ४३ ॥





मंजि लअठारवां “मिथ्यादंशण—शल्य पापोद्धार”

उत्तर विभाग—“सम्यक्त्व”

दोहा—सम्यक्त्व सर्व का मूल गुण । प्रथम चाहीये एया
वृत्त करणी लेखलगे । सम्यक्त्वा शिव लेय ॥ १ ॥

चोपाइ

संख्य असंख्य अनंत प्राकार । सम्यक्त्व केशाख मझार ॥
संख्यात-सातपांचतीनदोय । असंख्यात-संसारी सम्यक्त्वीहोय
सिद्धआश्रिय अनंतही कहे । सातका अर्थ आगे सुन लहे ॥
मिथ्यत्व सम्यक्त्व प्रथम जान । नेगम नय रहे अंशगुनमान ।
वेप मिथ्यात्व प्रकृति उपशमाय । कृतव्य सम्यक्त्वी के कराय,
सम्यक्त्वपडवाइकेसास्वादान । नहलगर्नहोवहें । मिथ्यास्थान
मिश्रसा मनमें गडबड होय । दोनों कर्नकर एरुसम जोय ॥





मंजि लअठारवां “मिथ्यादंशण—शल्य पापोद्धार”

उत्तर विभाग—“सम्यक्त्व”

देहा—सम्यक्त्व सर्व का मूल गुण । प्रथम चार्हाये एया
 वृत्त कर्णी लेखलगे । सम्यक्स्वी शिव लेय ॥ १ ॥

शोभाइ

सम्यक् असम्यक् अनंत प्रकार । सम्यक्त्व केशास्त्र मक्षार ॥
 संन्यास-सातसंचर्त्तनदोये । असम्यकान-संमारी सम्यक्स्वीक्षोष
 मिद्धाश्रिय अनंतही कहे । मानका अर्थ आगे मुन लहे ॥
 मिथ्यत्व सम्यक्त्व प्रथम जान । नेगम नय रहे अंशगुनमान ।
 वेप मिथ्यात्व प्रकृति उपशमाय । कृत्य सम्यक्स्वी के कराय ।
 सम्यक्त्वपट्टवादे समाध्यादान । अदालगर्नदोये । मिथ्यास्थान
 मिथ्यसो मननें गदुवट हांय । दोनों चर्त्तन पद्वम ॥



श्रद्धान यह रखे चार । सोही सम्यक्त्व धार ।
अमोल सम्यक्त्व । रत्नउत्तम ही आचरे ॥ १२ ॥

२ लिंग तीन-इंद्रविजय छंद.

जों क्षुधातुरे इच्छिन भोजन मिले ताहे ॥
ज्यों कामातुर नवयुवाति मिले प्रेमोत्सुक
ज्यों बुद्धिवंत विद्या इच्छक पण्डित से ज्ञान
त्यों सम्यक्स्त्री इच्छे जिनवाणी श्रवण जे

३ विनयदश-अनुष्टुप

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपध्या ॥
गण संघिक्रियावन दशोका । नि

४ शुद्धतातीन-अरल

देव अर्हंत गुरु निग्रांथ, धर्म ॥
मनसे अच्छा जाने, बचने की
काया से करे नमन, अन्य
तीनशुद्धता अमोल सम्यक्स्त्री

५ दूषण पांच -छपय छंद

गहन केवली वचन नसमझे शंका

देखी अन्यन्त डोंग स्वन्त से सैन नहीडगावे ॥ ॥
 निश्चय करणी फल होय अगुन तज शुनवडावे
 हितक करणी की नहिना नइच्छे न चरवावे ॥
 पालन्डीका परिचय कोनही। पांच दोपनजगुणआचारे
 अमोल रूपितो तन्वकर्ता । निश्चयनव सागर तरे

३ लवन पांच—कुडोज्या छंद

समै जाण तव प्राण को । को पतला देप राग ॥
 वैराग्य नाव हृदय धो । शक्ति आरंभ को त्याग ॥
 शक्ति आरंभ को त्याग । दुःखों की अनुकन्यालावे
 जैन धर्म धरे अनुराग । आत्मता रखे दृढ़ रहावे ॥
 यह लक्षण पांच तन्वक्त्वके धरे तदा महाभाग ॥
 समझने तव प्राण को कर पतला देप राग ॥ १०

७ नृपण पांच—उपजति छंद.

कुसल तदाई धर्म कम नई
 तीर्थ चारों की सेवा नित्य बजाड ॥
 तीर्थ गुन जाने अस्थिर निर्भर कता ॥
 जिननन शंकावे नृपण पांच धरता ॥ ११ ॥

८ प्रभावना आठ—गाढ़ल विच्छेदित.

मज्झिमा-संन्यास-विधायिका-विशेष-पापाङ्गा
 अद्भुत-यद्-सर्व-व्यापार-संन्यास-धार ।
 अमान-संन्यास-धार । अन्त-मही-आचरे ॥ १२ ॥

२ लिग-नान-उद्भविजय-लंछ-

जो-श्रु-यानुर-इन्द्र-भोजन-भित्ति-नाह-उत्सुकता-से-अहां
 ज्यो-कामा-नुर-नवयुवनि-मिन्द्र-प्रमत्त-भोगे-का-प्यारे ॥
 ज्यो-युद्धि-वत-विद्या-इन्द्र-परि-मं-जान-गृह-सत्कारे ॥
 ज्यो-संन्यास-इन्द्र-जिन-वागी-श्रवण-जंग-वने-अवधारे ॥

३ विनय-दश-अनुष्टुप-लंछ-

अद्भुत-वि-दश-व्यापार-विशेष-संन्यास-धार ।
 अद्भुत-वि-दश-व्यापार-विशेष-संन्यास-धार ।

श्रुद्धि-नान-अम्ब-लंछ-

११-१२-१३-लिग-व-वम-इया-मही ॥
 १४-१५-१६-व-वने-इ-ती-कती ॥
 १७-१८-१९-व-वने-इ-ती-कती ॥
 २०-२१-२२-व-वने-इ-ती-कती ॥ १५ ॥

२३-२४-२५-व-वने-इ-ती-कती

२६-२७-२८-व-वने-इ-ती-कती ॥ १६ ॥

देखी अन्यमत दोंग स्वमत से मन नहीं डगावे ॥ ॥
 निश्चय करणी फल होय अशुभ तज शुभवडावे
 हिंसक करणी की महिमा नइच्छे न चरचावे ॥
 पाखन्डीका परिचय करे नहीं। पांच दोषतज गुणआचारे
 अमोल ऋषिसो सम्यक्त्वी । निश्चयभव सागर तरे

६ लक्षण पांच - कुडलिया छंद

सम जाण सब प्राण कों । करे पतला द्वेषराग ॥
 वैराग्य भाव हृदय धरे । शक्त आरंभ कों त्याग ॥
 शक्ति आरंभ कों त्याग । दुःखों की अनुकम्पा लावे
 जैन धर्म धरे अनुराग । आसतों रत्ने दृढ रहावे ॥
 यह लक्षण पांच सम्यक्त्वके धरे सदा महा भाग ॥
 समजाने सब प्राण को कर पतला द्वेष राग ॥ १०

७ भूषण पांच-उपजाति छंद.

कुशल सदाई धर्म काम मांड़
 तीर्थ चारों की सेवा नित्य बजाइ ॥
 तीर्थ गुन जाने अस्थिर स्थिर करता ॥
 जिनमन दीपावे भूषण पांच धरता ॥ ११ ॥

८ प्रभावना आठ-शार्ङ्गल विक्रीडन.

जोजाणे सर्व शास्त्र निपुण मति, धर्म कथें आं
लिकाल के ज्ञार्ता होवे धर्म अपवादें सहू दुरे
विद्या पारंग तर्प दुकरकरे, वृत प्रगट आनरे ॥
रधि कविता धर्म दीपावडा प्रभावक वसु ए लरे

९ यत्ना छः—वसंतिलका.

स्यधर्मी सम्यक्स्त्री मिले आपस मांहीं ॥
एके वार बहुवार हर्षी तसे बोलाही
दे इच्छित वस्तु निजकी सन्मान कराही ॥
गुणानुवाद नमन करे छःयत्ना कहाही ॥ २० ॥

१० आगरछः—भुजंगी छंद

करे अधरी राजा जो पंचो दवावे ॥
बैली वश्य पडे लास देवीं उपजावे ॥
पडे अंटेवी में तात मर्ता सताइ ॥
आगर छः सम्यक्स्त्रे वहा लगाइ ॥ २१ ॥

११ स्थानकछे—हरीगीतछंद

धर्म रूपी वृक्षका सम्यक्त्व मूल हीजाणीये ।
धर्मकू नगरकाट सम्यक्त्व पेटे धर्मकी मानीये ।
धर्मकाट वासका नीमें सम्यक्त्व होंटहे धर्म मालके ।
धर्म भांजन भांजन समकित स्थान पटये मालकी ॥

१२ भावनाछः—शिखरिणी

अस्ति है आत्मा की । नित्य अमर आत्म हेतु
आत्मा कर्म की कर्ता । भुक्ता यह नछूटे कदा ॥

मोक्ष आत्मही पावे । ज्ञान चरण आदरे जदा ॥
 यह हैं छेही स्थानक । सम्यक्त्वी श्रद्धे मुदा ॥ २२
 दोहा—व्यवहार सम्यक्त्वके । सतसई बोल बेहोय ॥
 जोइनको आराधेगा । सम्यक्त्वी है सोय ॥ २३

सम्यक्त्व—मनहर छंद

नही वेप जग तारे । नहीं कुपक्ष उगारे ॥
 नहीं मत करे पारे । जेयने मत बाले हैं ॥
 मतबालता निवारी । मत बालता विदारी ॥
 मत मति की सुधारी । मत ताही जग बाले है ॥
 पाले रुडो व्यवहार । शुद्ध आत्मा आचार ॥
 ऊंडो जाही को विचार । नहीं तुच्छकार हाल है ।
 तेही सम्यक्त्व साता । जगजीवन के भ्राता ॥
 सेव चरण हिन आता । साता पावन नगले है ॥
 जो सम्यक्त्व रंगले । नही गाले नहीं ढीले ॥
 रोधर्म सेजो लीले । पीले मोह अमिधायक ॥
 दने पाखण्ड के कीले । जैन उज्जती ने लीले ॥
 गंद नही न लीले । नो हट पदचरण के ॥
 दूर नयन न लीले । दूर नयन न लीले ॥
 नही गाल न लीले । नही गाल न लीले ॥

शांत दांत क्षांत शीले । मोह मद माया छीले ॥
ज्ञान ध्यानके रसीले । धन्य अमोल ताकी मातकों

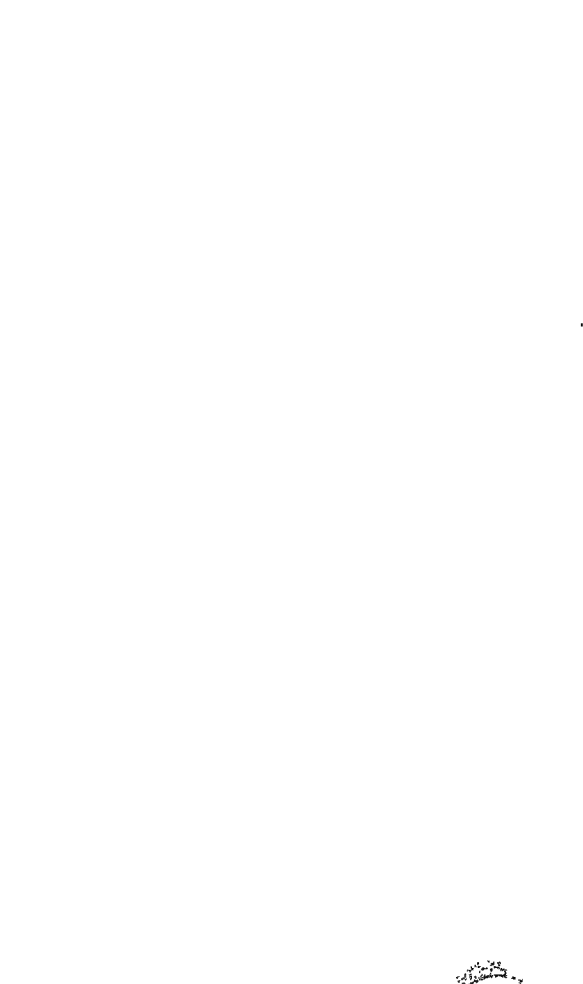
कथा-छत्तीसवी

सम्यक्त्वके फलवतानेवाली-“विजयरायकी”

दोहा-सम्यक्त्व धर्म आराध कर । तरे अनंते जीव ॥
विजयरायजी की कथा । गून्थ सैं भणु अतीव ॥

चांपाइ

दक्षिण भरत विजय पुर मझार । विजयराज सम्यक्त्व केधार
त्रिखंड पति तीन राणी सुन्दर । तीन पुल ऋद्धिज्यों पुरंदर
एकदा सुधर्मा पति शकेन्द्र । विदेहमें वंदे सीमंधर जिनेन्द्र
पूछे अयी कोइ भरत क्षेममांय । वृढ धर्मी श्रवक रहाय ॥ ३ ॥
प्रभु प्रकाशे विजयपुर पति । विजय राय निर्मळ समकिती ॥
देवदानव नहीं सके चलाय । सुनि सुधर्मापति हर्षाय ॥ ४ ॥
निज शभामें किया व्याख्यान । एक मिथ्यात्वी देवान मान
आया भरत में श्रावक बना । जैन पंडित नाम पूजे घना ॥ ५ ॥
फिरता २ विजय पुर आय । राजा की पौषभशाले उतराय ॥
धर्म चरचा कर हुये राय प्रसन्न । सत्य मानेसब उमके वचना
एकदा धर्म चरचा के मांय । निगोदादि सुक्ष्म भाव जनाय



सुनराजा मनमें खिन्नहोया। हितशिक्षा यहां नहीं चलेकोय
 और मुनिश्वर सब गुणवंतायेही टोठा पापीपाप सेवंत ॥
 चुप चाप फिर निज घरआया। रस्ते में मुनिकेइ खोटेपाय ।
 आचार्य निकले अंतेउर मांयाराजा आश्रय अतिही लाय ॥
 श्रावक कहे देखा राजान । जैन मुनि कैसे हैं गुनवान ॥
 रायकहे सब खोटे नहीं । कर्म गति से विगडे यह सही ॥
 सूर्य से कदापि न होयअंधकार। तैसे जिन वचनसदाश्रेयकार
 पंडित कहे तुम दृष्टी राग पूरा। दुर्गुण गुणकर मानों भूर ॥
 सुणी वचन तस मिथ्यात्वजिान। धोलगो बंध कियोराजान ।
 श्रावक तब कर गये विहार। नृप नहीं पुछो शुद्ध लगार ॥
 दोहा—देव चिन्ते पर परिक्षासे । चला नहीं यह राय ॥
 अब बीतांबु घर पर । तबही इच्छित थाय ॥ २० ॥

चोपाइ

राय प्रधान मुख्य सामंत तांय । देव कहे स्वपने में आय ॥
 सर्व उपसर्ग पुर में होनार । जैसा पहिले हुवान कोइ वार ॥
 इसलिये नाग देवालय जाय । राजा प्रजा पुजो बंदो हितलाय ।
 प्राते सब बैठे समामें आय । तब निर्मितक एक अय चैताय ।
 राजा प्रजा पूजो नाग देव । होता उपसर्ग मिटे तत्खेव ॥
 स्वप्न निर्मितक कीमिली एकवात । तबके मनमें निश्चय आत
 मंली सामंत सर्व पुर लोक । पूजे नाग देव दीनी धोर ॥

फक्त एक नहीं गये विजदारय । तब देव अति कोपित थाय
 सहश्रोंगमे नागरूप बनाय । प्रचण्ड काले क्रोधे धम धमाय ॥
 राजघरे अंते उरादिस्थामाफिले डरे राणी रक्षक तमाम ॥
 डरे रोवे सब इत उत धायासरप भी उनके पीछेही जाय ॥
 प्रधानादि नृप से अर्जि करो देव कोप आगे नरका क्या चले
 इसलिये आप पूजो नागदेव । लोकीक शरम निजहित धरहेव
 वहां एक तर के अंगमें देव आय । कोपातुरहो कहे सुनराय ॥
 सर्व मुझ माने तुं अवज्ञा करे । मेरी शक्तीसे जरानहीं डरे ॥
 एक क्षण में सब कुटुम्ब साथ । तुझे यम सदन पहुँचावुं नरनाथ
 यो कही देव अंतर ध्यान थायाते तले तहां समाचार आय
 तीनों राणी तिनो कुमर तांया । अही काटा पडे मूरछा खाय
 तब गारुडी एक चल आय । सामंत सत्कार करने में पाया ॥
 दया धर गारुडी नृप से कहे । यह महा जेहरी फणी प्राणलहे
 मंत्र शक्ति से मैं करूं आगमा । सब राखो मन में विश्राम ॥
 कन्या के अंग नाग देव बोलाय । कहे गारुडी जेहर हरो नागराय
 कोपी देव कहे सुन गारुडी वातासध मृद्धे पूजे सीस नमात
 सुखकाष्ट सम नहीं नमेराय । अवज्ञा करहुं छोडंगा नाथ ॥
 जो नमें तोस्त दुःख अवि हरूं । और उपाय सातानहीं करूं
 गारुडी कहे यह तो सहज वाता नमोना जोडी नाग केहाथ ।
 राजाजी बात धर नहीं कान रुडी कहे तुम जेनी राजान ॥
 मेभी कुछ जानुं जैन काज्ञान अपवाद न तेनही दोष प्रमान ।

छछोंडा में भी यह आगार । नमो राजेश्वर समय विचार ।
 राय कहे कायरों को आगारापाप में साक्षात् नहीं लगारर
 धन परिवार पाया अनंत वाराधर्म मिलना बहुत दुस्कर कार ॥
 प्राणांतेन नमुं निजस्वार्थ काजाकु देवगुरु और खोटासमाज
 आधा तू पम्नावेगा शयार्थो कही गारुडी कोपे उठजाय ॥
 कैं डोंगसं भुजंग उत्पन्नभयोरायपरिवार को लपटी गये ॥
 एक महा भुजंग अनिविकरालानृप अंग लपटा जैसा काल ॥
 दंश किया सर्व अंग करुगानरक सी वेदना हुई भरपूर ॥
 हाहा शरमचा मेहल के मांयातय सुना राणापुत्र मृत्युपवाय
 विजयराय सुमेरुसे धीर । जाने होनहार सोहोवे आलीर ॥
 सामंत गारुडी बुलाकर लायासो कहे क्या करूं नहीं मानेराय
 समज २ नृप मन हो धीठ । क्यों गमावे मिली योग्यतानीट
 राय कहे ऐसी व न मन कराजाने तो दे मुझ प्रश्नउत्तर ॥
 जो किम नो ऐसा दंश थायाकितने दिन सो जीता रहाय ॥
 कहे गारुडी उत्कृष्ट छः मामावेदना वधे, सब पायेमास ॥
 राय कहे युगांतर ये दुःख रंयानांभी धर्म न छंडू मेय ॥४२॥
 अनंत दुःख नोंन अनंती वागयह दुःख नव दुःख कावनहार
 दानस्त दृढ हो वगैष्टि ध्या रामदा मुनिपर विश्र न थाय ॥
 देव देव मन अनि अचंचलायादनृशय मय हीदुःख विरलाय
 मंददण्ड की कृती वश करी । देवप्रग्टा अनि दिव्य मिगी ॥
 मुकट धरा नृप चाग के माया वाग्यार अपराध न्यमाय ॥



केवल ज्ञान भानु प्रकट भयो॥साधु वेप देव आगल ठयो ॥
 पहरा वेप देव करे जयकाराजानी सब स्वजन हर्ष अपार ॥
 नर सुर की परिपद भरायाजिनजीतये सहोध सुनाय ॥
 तीन नारी तीन पुत्र जय भ्रातातजी माया सब साधु पात
 भुमंडमें फिरी कियो उपकाराकेवली गये मोक्षमझार ॥
 ओर भी पाये स्वर्ग धिमानाआगे पावेंगे सवा निर्वाण ॥
 अर्ध दीपिका ग्रंथानू सार । उत्तरार्ध कही कथासार ॥
 सम्यक्त्व यह उत्तम फल।आरार्थी सुखी बनो अमल ॥

दोहा—शुद्ध सम्यक्त्व कों आदरी कियाविजयरायकल्यन
 त्यों सब सम्यक्त्व आदरी।बरो सुख सब जान ॥

निज पर आत्म सुख वरना।निध्यादंशुण उद्धार ॥
 ऋषी अमोलक ने रचा।ये अष्टदशवा अधिकार॥५१॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
 सम्प्रदाय के बालब्रह्मचारी मुनि श्री
 अमोलस्य ऋषीजी महाराज रचित

अवांछार कथागार ग्रंथका

मिथ्यादंशुण शल्योद्धार नामें

अष्ट दशवां मंजल

समाप्तम्



शिखर उपसंहार—“सर्व पापोद्धार”

पूर्व विभाग—“पाप”

दोहा—एकेक पाप सेवन करी। पाये दुःख अपार ॥
जो अठारह सेवन करे। उनके क्या हवाल ॥ १ ॥

चौपाइ

१ एकाइ राटोड जीवों दुभाय। मृगा लोढा होकर दुःख पाय।
आगे भी भमे बहुत संसार। दुःख विपाक सूत्रे अधिकार व
२ दसुराय ममत्व गृही करी। पाप थापा अनत्य ऊचरी ॥
अकाले मर नरके जाय। शलाका ग्रंथ में कथाये पाय ॥ ३ ॥
३ अभगत्तेन चोर तत्तावंत। चोरीने दुःख पाया अत्यन्त ॥
कुटुम्ब साथ मर नरके गया। विपाक नृत्रने वीरजी कय ॥
४ काम कुमर कुशील प्रभाव। लाज सुखगम किये एन्नाव

- दोनों भव सो दुःख पायीया । कथा सुणी जैसी गायीया ॥
- ५ सागर शेट महा परिगूह धार । तृष्ण सेहूवा समुद्र मझार
मरके नरक में पची याजाय । गोतम कुलके कथा कहाय ॥
- ६ क्रोध कुवचन धंधुमति कहे । बाल विद्याहो बहू दुःखसेह ॥
- दोनों भवमें विसि पाय । गोतम पृच्छा से कथा कहाय ॥
- ७ संभुमचक्री मानेंमें चडा । सत्तम्वंड साधन समुद्रे पडा ।
नरक गया भमेगा जगमांय । शलाका चरित्रे येकथांय ॥
- ८ पातलसुंदरी माया करी । अत्यन्त दुःख भोगी नरक पढी
अर्धदीपीका अंतरगत कथा । माया के फल बताये यथा ॥
- ९ लोभवसकोणिकभाइसेलडा । चक्रहोवनइच्छासेवलमरा
भाग्यविन मनकीचलेही नहीं । निर्यावलीसुख रंगूंधे सेकही ॥
- १० रागवश्यपुष्पनन्दी कुमार । चारसेनिन्याणधराणीसंहार
दोनों भव पाया दुःख अपार । विपाक सुखमें यह अधिकार ॥
- ११ द्वेषसे दुर्योधन कांटवाला बहू ते दुःख पाया विकराल ॥
भव भ्रमणमें दुःखीया भया । विपाक सुखसे कथनये कया ॥
- १२ क्रुशसे चारों मिल खेत मांय । बांधेरूपी दीइजत गमाय ॥
जिनदास चरित्र अंतरगत कथा । फूटहोवे दुःख दायी यथा ॥
- १३ मत्ता पर कुआल भवभूत दिया । अपयशी होदुर्गति गया
कहानियों की पुस्तक में कथा । मनानुमार कहिये यथा ॥
- १४ चक्रदेव मित्र चुगली करी । मान गमाया दुःख सेमरी ।
भवो भव दुःख अनिही लिया । गल प्रकरण दृष्टान्त दिया ॥

१५ संत की निन्दाकरी वेगवति । सीताजीहोदुःख सहेअति
 सीता चरित्रमें यह अधिकार । परपरीवाद पापदुःख वार ॥
 १६ भोगगति दुःख अरनिधर । ब्रह्मदत्तचक्री गधेनक मर ॥
 उद्योग्ययन सुत्र अधिकार । पापकी गती विचित्र प्रकार ॥
 १७ ननमेला मिष्ट वचन उचारी । कालुनाइ नाकइजतहरी ॥
 जगमें प्रचलित यहै कथा । नावानोसा काफल है यथा ॥
 महावैरागी जमाली अनगारनिन्हव वने गये किल्वपिनहर
 मिथ्यादशण से दुःख पावीया । भगवती सुख में यह गावीया
 पों अटारेही पाप ऊपरी । एकेक कथा की रचना करी ॥
 अनंत जीव दुःख भांगे संसार। ऐतही सव जानो पाप चार ॥

दोहा-पाप फल को देखने। सोचो यह दृष्टान्त ।

सहज कमाये कर्म कों। पाये दुःख प्राणांत ॥ २१ ॥

पाप प्रभावे प्राणीजा । दूर्गति नाहै जाय ॥

नरक तीर्थै नर देवता । रहे दुःख बहु पाप उत्तरा ॥

नरक का परणर-चोपाइ

अथो लोक में नरक स्थान का। महाअंधकार नरनरकइत्य
 रत्नप्रेतामि कलेखल मलकपातरकप्रभा हैमिजिह्वीकीकार ।
 वायुप्रेता में उपपन्नोसो। यो दह। सोकेदनामि गुरुमानकदश
 धनप्रभापुत्र है १०८ मर । धन प्रभावे नरक प्रेता १०८ ॥
 तम तमः प्रभावे पाप अंधकार। देवता नरक मान दुःखदिवार

एक एक नीचपद सात । पाणिजीव कनहां उपजावु : स्वपोंतिरा
एकतीन भात दश भंतरा जाना धार्यासैं तेंतीस सागर आयुमान
आयु जघनर धर्य दशहजार पदिल में उत्कृष्ट हूजी जघन्य धारे

नरक के दूःख—इंद्रविजय छंद.

हिनेक को मारे हथोपारों से । झूटे बाले की जयान उखाड़े ॥
चोरों कों चांचे भार धरे शिर । भैरुनों उष्ण स्थंभ चोंटाड़े ॥
परिमदी के अंगार दे हाथ में । कर्धी को अनिक्रोधि से ताड़े ॥
मानों को मरदं मार्यो को छेत्तरे । लोभा कों आनिघ्रास देखाड़े ॥
गुगी अरु द्वेषकों संताप दे । क्रुद्धों को अतिक्लेश करावे ॥
अभ्याम्यानी को भेदे भाले से । चुगेल की जिवहा काने छेदावे ॥
निंदक के पीछे कुत्ते लगावत । रैनारनी कों रोदन करावे ॥
भैया मोपी कों तो शूल चडावते । मिथ्या स्त्री को नाना विध सतावे ॥
दाहा—यों नाना विध दुःख दे । जिन में पाव अटार ॥
औरनी विषी घटून है । करुं संक्षेप उचार ॥ २९ ॥

दशप्रकार की श्रेय वेदना—इंद्रविजय छंद.

अनंत दुःख अनंतही तृषा । अनंतही नीन मरा पर गड़ा ॥
अनंत ताप अनंत मुजली चला । अनंत दहावर अग दताही ॥
अनंत रोगरु अनंत मोगहे । अनंत भय म मर ॥ ३० ॥
अनंत पर वडयना मोरदय यह दश । श्रेय वेदना नरक समाई ॥



याँनाना विध कर्म करं जिन तैसे ही यन तहा दुःख चखावे ॥
 तीसरी नरक के नीचे यम नहीं । तहां आपस में लडत सदाइ
 जैसे कोइ नवा कुत्ता आये सो अन्य कुत्ते पडे उसपर जाइ ॥
 पंजे दाँतों से तन तस फाडत । मारके अति वास उपजाइ ॥
 त्यों तहां नरक में एकेक नेरी येकों । आपस में मार ताड सताइ
 पिंपलिका सम कीडे घनाते, वज्र मुख तास अति तीक्ष्ण ताइ ।
 आपस में एकेके के तन में उन को भरीं आरपरांभेदाइ ॥
 चालणी से छिद्र पडे सब तन में कोडों विज्जु दंश सा सो दुखाइ
 पाप प्रभावे पापी नरक में । अनंतानन्त दुःख भोगे सदाइ ॥

तीर्थच के दुःख का वरणन-मनहरछंद.

तैंतीस सागर तांइ । सातमी नरक मांइ ।
 उत्कृष्ट दुःख भाइ । पापी जीव पावे है ॥
 आँख के टमकारे मांही । समय असंख्य थाइ ॥
 तैंतीस साग के तो । समय केते थावे हैं ॥
 एक एक समयपर तैंतीस सागर दुःख ।
 सागर तैंतीस के सम यों का दुःख किती भावे है
 तासेही अधिक दुःख निगोद एक भव मांही ।
 तीर्थच के दुःख का तो पार कहा आवे है ॥
 सूइ अग्र भाग जित्ती साधारण वनस्पति
 यथा दृष्टांत तामे जीव वास पावे है ॥
 श्रेणि यों असंख्य श्रेणी २ में प्रतर असंख्य ।
 प्रतर २ गोले असंख्य समावे है ॥

एकएक गोले मांही । असंख्य शरीर राही ॥
 प्रेतेक शरीरे जीव । अनंत भरावे है ॥
 एक श्वाश मांहे साडी सतरे जन्म मरण ॥
 तियंच के दुःख कातो । पार कहा आवे है ॥३९॥
 पृथ्वी पाणी रुअग्नि । वायु अरु वनस्पति ॥
 एकेके शरीर जीव । असंख्य रहावे है ॥
 छेदन भेदन अरु । खांडन पीसन मांही ॥
 प्रतिकुल द्रव्य काजो । संयोग मिलावे है ॥
 अहो निशी जगत् में । स्थान वर संहार होत ॥
 ताको दुःख कौन कहो । गिनतीमें लावे हैं ॥
 असंख्य काल तांड । पापी पचे ताके मांही ॥
 स्थावर केदुःख । ऐसे ज्ञानी दर्शावे हैं ॥ ४० ॥
 रथावर सजीव निर्जीव का आध्रय लई ॥
 कीडों कीडी पटमल । जुंवा दिक रहावे हैं ॥
 ताको संहारत तेतो । नरत है बीच मांही ॥
 केइक अज्ञानी जान । नारत नरावे हैं ॥
 हलन चलन लेख देत । केइ नरे जीव ॥
 प्रवाहीक वस्तु मांही । पड दुःख पावे हैं ॥
 शीत उष्ण धुन्नजल । आग्नी आदिते नरने केइ ।
 दिहेंश्रीमे दुःख ऐने । पारशीजोय पावे हैं ॥ ४१ ॥
 पलवर गज गाजो नाइ । देल मेम अदिनाइ ॥

परवश्व पडे वध धन्धन में बंधावे हैं ॥
 वक्तसिर पेट पूर मिलनहीं आहार पाणी ॥
 तुच्छ थोडा मिले जब खाय के सो रहावे हैं ॥
 पहाड खाड झाड बीच काँटे भोटे मांहे खीच ॥
 अतिभार भरकर । ताकोही फिरावे है ॥
 तीव्रमार मार । कितने कोस नविचारे ॥
 पापीजीव पशुहोके । ऐसे दुःख पावे है ॥ ४२ ॥
 हिरन सुसले आदि केइ । वनचर जीव ॥
 वृक्ष गिरी कन्दरा के आश्रय सँ रहावे हैं ॥
 मिलेवन मांहे उतना खान पान कर रहे ॥
 शीत ताप वृषाऋतु । तीनही सतावे हैं ॥
 आपसमें मार खाय । शीकारी भी मारजाय ॥
 अग्नि पाणी वायु अदि । विषन केइ आवे हैं ॥
 रोग सोग मांय तस शरणन कोई थाय ॥
 पापके प्रभावे पशुहो कर दुःख पावे हैं ॥ ४३ ॥
 जल वासी प्राणी तड फड मरे जल खुटे ॥
 धीवरादि गृही मारेपचावे रुखावे हैं ॥
 पशुको जाल तीर गोली से गिरावे मारे ॥
 अन्डे घेस पीछे भूखे प्यासे मरजावे हैं ॥
 पीजरे में बान्धे खान पान कीन सार पुरी ॥
 साप ऊंदर घंस आदि इन भीसतावे हैं ॥

केइ तन वल दीनअहो निशी झुरत हैं ॥

लेने का देने का अरु रहने का सहने का दुःख ।

इज्जत रखन केइ करे हिफाजत हैं ॥

केइ म्लेच्छ देश भांही उत्पन्न हुवे जाइ ॥

पशुसा आचार जाका नगन फिरत हैं ॥

पाप कर पाये दुःख पापही कमावे मुख्य ॥

आगेही दुःखी सो होय पाप फल भरत हैं ॥

देवगति के दुःखका वरणन-मनहर छंद

अकाम कष्ट के जोग पापी पाय देव गत ॥

वांही सदा दुःख सोगे काल गुजरत हैं ॥

अभी योगी देव होय सदा तस कामें चोय ॥

भोगन भोगी सकत मनमें झुरत हैं ॥

देव होय पशुयने नोकरी में सदा धने ॥

नाट किये नाचतरु गंधर्व गावत हैं ॥

किल विपी हीन जात । रुप सुख हीन पात ॥

देव हुवेतोभी ऐसे । पाप को भरत है ॥ ४८ ॥

अन्याय करत देव । दूजे धरे तत्सुखेव ॥

पञ्च प्रहार इन्द्र तहे को लगा वता ॥

पटमास तांइ तसतन अग्नि सा दजाइ ॥

रोवन अरडाइ तव महा दुःख पावना ॥



शीखर-उपसंहार-“सर्व पापोद्धार”

उत्तर विभाग “धर्म”

दोहा-एकैक धर्म अराध कोपाये सुख अपार ॥
जो आठरह आचरोतो निश्चय तरे संसार ॥

चांपाइ

१ पारेवा पाला मेवगथ राय । दया धरी अर्पिनिज काय ॥
२ पाटुवे उत्तम छः पद्री धार । शांति चारिल में ये अधिकार ॥
३ सुनन्द व्यश्न मानों सेवनो । एक सत्यवृत्त दृढ लेवतो ॥
४ तैलना बना नृप प्रधान । धर्म कथा कोषे में बयान ॥
५ ब्रोट्टाशाह शर्मिष्ठा हारया । चांगी नजी चांग्याशाहमया
६ धर्म धन पाया मुघ्न मार । धर्म कथा कोष अधिकार ॥४५
७ सुदर्शन शेट्टा २ म्बन्तनाडी । गृन्ती किट्टी गेनहास नयाइ

यशः फेलाया तरे संतार । योगशास्त्र ग्रन्थ म अधिकार ॥
 ५ लक्ष्मी पति रहे सुखी सदा । किंचित दुःखे तजी संपदा ॥
 तबही पाये केवल ज्ञान । दिगम्बर ग्रंथ में यहव्यान ॥ ६ ॥
 ६ खंधकमुनिकी उतारी चमाडी । महा परिसहेक्षमा आचरी
 तेरे कोडभवका बैर चुकाया मोक्ष गये कहा धर्मकथामाय ॥
 ७ महा विनयवंत नन्दी पेण । देवभी नहीं चला सका तेण
 वसुदेव हो सुख पाविये । हरीवंश चरित्र में गाविये ॥ ८ ॥
 ८ विमल सुख पाये शरल ताकरादेव अरी हरा के ऋद्धिवर
 समल कपट से गया आपमरा धर्मकथा कोपमें उचर ॥ ९ ॥
 ९ सोमचंद गरीब संतोषधरा । तो घर बैठेही धन आपडा ॥
 धर्म आराधी सुख पाविया । धर्म कथा मुजबदर्शाविया ॥ १० ॥
 १० वैराग्य धर पृथ्वीचंद राज । ग्रही वेशे केवल पायाज ॥
 तरण तारण हुवे सो संतार । रत्नप्रकरण में अधिकार ॥
 ११ समता धारी दमदंत मुनिराया । दुर्गुणी पररहे समलाय
 तो भव व्याधी दीनी गमाया । पांडव चरित्र में यहकयाय ॥
 १२ धन दत्त श्रेष्ठ रहेसम्प करालक्ष्मीयक्ष हुवे चाकर ॥
 यशः सुख पाये सो यथा । जिनदास चरित्रे अंतर कथा ॥
 १३ मौन वृत्त धरा सर्वांग सुंदरी । कलंकगमया केवलश्रीवरी
 सर्व जन पाये हर्षअपारा । जैनकथा रत्नकोषे अधिकार ॥ १४ ॥
 १४ धरी गंभीरता प्रदेशीराया । महा पापयोड में दियाखपाय
 धर्मात्म इका अवतारी होयाराय प्रसंगी सुत्र में लोजोया ॥

१५ गुणानुवाद किया कृष्ण नरेश दुर्गंधी श्वानी को प्रशंसा
तीर्थकर गोत्र उपजिया । जैन कथा रत्न कोप दशविधता ॥

१६ निघत्ति भाव धरे जंबुकुमार। आप तरे बहुतेको तार ॥
चरम केवली इस काल में भयो जंबूपइना में यों कये ॥

११ शरल सत्य केशी गौतम धरी। धर्म चरचा से एक श्रद्ध करी
जगत् में धर्मज फेला दीया । उत्तराद्धेन सुत्रे फरमावीया ॥

१८ वृढ सम्यक्स्त्री विजयराजान। ग्रहस्थः श्रम लिया केवलज्ञा
सम्यक्स्व धर्म अती फेला दीया । जैन कथा रत्न कोप गाइया ॥

यों अठोरही धर्म ऊपरी । एकेक कथा की रचना करी ॥ २० ॥
अनंत जीव सुख पाये संसार। ऐसा ही जानो धर्म उपकार ॥

दोहा—धर्म फलको दाखने। सोचे यह दृष्टान्त ॥..

मृशकिल स निपजेखरो । पण सुख देत अनन्त ॥

पाप तजो धर्म आचरो । शुद्ध आचार विचार ॥

करो तारो निज आत्मा । जन्म पाया को सार ॥

धर्मी धर्म प्रशाद से । सदा रहे सुख मांय ॥

आगेभी सद्गति वरे । छेवट मोक्ष सो पाय ॥ २३ ॥

नरक में सुख का वरणन—चोपाइ छंद.

धर्मी जन नहीं नरक में जाय । निश्चय मनुष्य देव गति पाय

परन्तु पहिले आयु बंध किया । ताजोगे कभी नरक में गया ॥

वो पूर्व पाप के संच प्रभाव । क्षेत्त वेदना सहे समभाव ॥

जिससे दुःख थोड़ासा लगे । कर्म क्षय करने उमंग जगे ॥

कर्म उदय जान समता धरे । अन्य को पीडा नहीं सो करे ।
 अन्य उसे पीडा नउपजाय । यम देव भीतत छिटकाय ॥
 स्वल्प काल पूरा कृत भोग । सम से थोड़े में होय निरोग ॥
 आग उंचगति सो पाय । धर्म करणी के फल प्रगटाय ॥२॥

तिर्यंच के सुखका वरणन्-छपय छन्द

धर्मी जीव मर कर तिर्यंच गति में नहीं जावे ॥
 पूर्व आयु बन्ध जोग अरु वृत्त भंग प्रभावे ॥
 कदापि होय तिर्यंच सो जुगल पनाही पावे ॥
 देव जैसे सुख भोग तीन पल्प तहां रहावे ॥
 फिर मर होवे देवता । आगे सुधरे गति सही ॥
 धर्म सदा सुख कार । जावे तहां साथरहा ॥२८॥
 कर्म भुमी में होय तो।पशु उंच पद धारे ॥
 अश्व रू गज रतन । देव सेव तत्त सारे ॥
 मिले इच्छित खान पान सयनादि सुख कारे ॥
 काम विशेष ना पढे काल यों सुखे गुजारे ॥
 कुगति में सुगति समां, धर्म सुख दाता होवेसही।
 धार सुखेच्छु धर्म, जावेतहां साथही रही ॥ २९ ॥
 मनुष्य गति के सुख का वरणन्-मनहर छन्द.
 उत्तर।ध्यायन तीजामहीं । दिया जिन फरमांइ ॥

दशबोल जोग तहां धर्मी जीव आवे हे ॥
 वाग रु सदन बहुत, धन धान पूर्ण होत ॥
 गोआश्वदि पशु दास बोलएक कहावे हे ॥
 मिलै न्याति गोती घने, ऊँच गोत्र रुपेंत ॥
 निरोगी बदन महा प्रज्ञा बुद्धि पावे हे ॥
 अभीर्जात यशवंत बलिष्ट यह बोल दश ॥
 होय तहां धर्मी जीव आकर सुखी रहावे हे ॥३०॥
 तीर्थकर पद पाय । इन्द्रा दिकों से पूजाय ॥
 जुगली यों की इच्छा सदा कल्य वृक्ष पुरावे हैं ॥
 चक्रवर्ती बने बलदेव वासुदेवपने ॥
 मंडलिक सामान्यराज सेना पति थावे हे ॥
 शेठ गथापति रुपटेल आदि ऊँच पद ॥
 पाकर सुख संपति सदैव बिलसावे हे ॥
 आचार्य उपाध्याय । मुनि श्रावक समदृष्टी ॥
 ज्ञान ध्यान तप कर । मुक्ति सो सिधावे हे ॥३१॥

देवगति का वरणनू-चोपाइ छंद

देवताकेहें चारप्रकार । भवेनपति व्यान्तर ज्योतीपी धार ॥
 विमानिक रहतेहें उर्द्धलोक । स्वर्ग लुब्धीसका हे थोक ॥
 ईशान सनैतकुमार महर्षि ब्रह्म लांतक शुक्रसहसार ॥
 आनं पौन औरण अरु अँचुतायहकल्प धारह मर्यादि सुत ॥

भद्र सुभद्र सुजात सुमानस । सुंशण प्रियदंसण वास ॥
 आँमोए पडिभद्र जमोर्धर । यह नव अविेकउचर ॥ ३४ ॥
 विजय विजयंत जयंतवर।अपरोजित सर्वार्थसिद्ध अनुत्तर ॥
 यहचउदह कल्पातीतजान । अहमेंद्र स्वेच्छारहे सुखमान ॥
 अधोलोकमें भवनपतीरहे । मध्यमें व्यं .र जोतिपीकहे ॥
 परमाधामी भवनपतीमांय । त्रिझमक व्यन्तरमे समाय ॥
 लोकांतीक छट्टेस्वर्गपास । किलविपी एकदो छट्टेवास ॥
 ऐसेदेवके रहनेका स्थान । उपजतजीव करनपरमान ॥
 भवनवासी आयुएकसागर । व्यन्तरका आयुप्यपत्यभर ॥
 पत्यझाझरा जोतिपीकाजान । त्रिमानिकका आगेवयान ॥
 दोसागर पहिले दूसरे देवलोक।सातसागर तीसरे चोथेरोक ॥
 पांचमेंदश चउदेहैछह । सातमेंसतरेवर एकएकअधिकलेह ॥
 सर्वार्थसिद्धमें सागरततीसायेउत्कृष्टआयु जघन्यवरणीश ॥
 दशसहश्रवर्ष पहिलेदोस्थान।जोतपीमें पल्पआठ भागमान॥
 दोस्वर्गमें एकपत्यजान।आगेनीच उत्कृष्टसो जघन्यवरठान॥
 जो अधिक करणी धर्म की करे।सो उंचा जायअधिक सुखवरे॥

देवताके सुख का वरणन-मनहर छंद.

धर्मी पावे देवगत । कल्पोत्पन्नामें उपजत ।
 देव देवी जाने तब । आय के वधावे हैं ॥
 अभिशप कराय, वस्त्र भूषण सजाय ॥

तहां नाटीक निपाय । सहश्रों वर्ष ही बीतावेहें ॥

सामानिक आत्मरक्ष । त्रयांसीस परिपद ।

सात सेना अग्रम हेंपी।आदि ऋद्धि बहु आवे है॥

रत्नो के विमान । रूप करत इच्छा फरमान ॥

ऐसे देवता के सुख धर्मीजन पावे है ॥ ४२ ॥

जितने सागर आय उतने सहश्र वर्ष मांय ॥

होत भूख की इच्छाय । तृप्तीही तत्र आवेहें ॥

सागर जे ते पक्षजानालें श्वासोस्वास मान ।

होत भोग में गुलतान।सहश्रों वर्षही बीतावे हैं ॥

कल्पातीत मांय फक्त साधुजी मरके जाय ॥

ताके भोग इच्छा नायाज्ञान ध्यान मग्न रहावे हैं॥

यह तो कहा कुछ सार।सुख देव के अपार ॥

निजकरणी अनुसार । तहां धर्मी जन पावे हैं ॥

मोक्षके सुख का वरणन् —अरल छन्द.

आराधक उत्कृष्ट धर्म पाप तजतहें ॥

बोसय कर्म खपाय मुक्ति पद भजत है ॥

मुक्ति के सुख अनंत अनोपम जिन कहे ॥

पुनरावर्ति नाकरे जोसिद्ध स्थाने रहे ॥ ४३ ॥

अक्षय अव्याधाव चलत्र शिव स्थान है ॥

वर्ण गंध रस स्पर्श वेद नहीं जान है ॥

जन्म जरा गंघा सोग मरण सब दुःख दही ॥

अनन ज्ञान दर्शन परणामिक पण गही ॥ ४५ ॥

दोहा—धर्म प्रसाद से जीवियोंचागों गति के मांय ॥

सुख अनुभव लेतहै । आगे सो मोक्ष पाय ॥ ४६ ॥

भगवइ अंगे जिन कहे । पाप अटारह त्याग ॥

अरुणी आत्मिक गुण है । प्रगटे तेसुभाग ॥ ४७ ॥

मिष्ट फल यों धर्म के । प्रत्यक्षही देसाय ॥

ज्ञाने जान हितेसे गृहे । सोही सदा सुख पाय ॥

अंतिमसार-इन्द्रविजय छंद

इत्यादि बोधसुता महावीर की । भव्य हृदय अमृत सेभरायो ॥

त्याग्य मिथ्यात्व अवल जिने । सन्यस्त्र रख धिते द्रढसायो ॥

देशसे त्याग हुवे केइभावक । सर्व तजे सो मुनिपद पायो ॥

भवन पठन मनन कोसारये । धार अमोल जन्म सुधरायो ॥

केइक भारी कर्मों पापाणसे । जिन बोधसे नहीं हृदयभेदायो

पुद्गला नन्दमें राख रहे जेह । ताको आत्मानन्द नाहींसुहायो

निश्चय भव्यतव्य तासो होवइ।तहां कहा चोल संत उपायो

दीवीर गइ परिपदा तब । सदा रहो यह आनन्द छायो ॥



विज्ञापति—हरगीत छंद.

अपोन्द्वार कथा आगार यह ग्रन्थ रचनाजोकी ॥
 हितनी सूत्रनुसार ग्रन्थाधार सुनि गुनि ऊपरि ॥
 आशय पाप उद्धार आरम सुधर की मन मेंधरी ॥
 यह लक्ष धर पाठक श्रोता गुण ग्रहं दुर्गुणपरहरी ॥
 प्रत्यक्ष पाप प्रभाव से नृतमान में दुःख बढ रया ॥
 अनेक गंग दुष्काल दुःखनेभारत खंड पीडित भया
 दुमय्य और कदाग्रह कर सत्य प्रेम मन से गया ॥
 अनुभवे यह सत्य समजो जो सदांध इस में कया ॥
 प्रत्यक्ष धर्म प्रभाव से नृतमान में सूर्या देखिये ॥
 दिया सत्य शीलनेन के घर कूटुंब संपत्ती पमिये ॥
 सम्मान ले गज पंथ में चित्त निर्मल हृषि विदोस्त्रीये
 अनुभव लयी अंतस में यों धर्म के फल लेस्त्रीये ॥
 अहो भव्य गणो! सुख इच्छको! विदोय कहो क्याभीतीये
 दुःख सुखं पंथ यह बनायोइच्छा होये सो लीगीये ॥
 दुर्गुण नजा सदुग नजो यह विनिंति चित्त दर्शिये ॥
 अनोल तामान आवद्ध धर्मात्मा सुमी गीतोये ॥
 चोरोस में तिन महारी को चोरोस सो यव होगया ॥
 अदोसको दीवानी को दह दय मन पुग भया ॥

सुस्थान चारकमान हैद्रावाद, (दक्षिण.) देश में ॥
 लाला सुखदेव शाह्य दीहै जगह रहे यहां सदा एस में ॥
 श्री महारार के पाटानुपाट आचार्य पद्वी पाविया ॥
 पूज्य कहानजी ऋषिकी सम्प्रदाय जग में धर्म दीपाविया।
 महात्मा खूवाऋषिके शिष्य केवल ऋषिजी गुनि ॥
 * सेव में रहे अधोद्वार कथागार रचा अमोलक मुनि ॥६॥
 जिनराज ज्ञान बिल्ख अशुद्ध लेख जो इस में किया ॥
 तो मिथ्या दुष्कृत ऊवरी शुद्ध करुं निजपर जिया ॥
 वक्ता श्रोता के आनन्द मंगल जय विजय धर्म की रहे ॥
 आत्मिक सुख सम्पति वर कर सर्व परमानंद लहो ॥७॥
 परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के सम्प्रदायक
 महात्मा श्री खूवा ऋषीजी महाराज के शिष्यवर्य
 आर्यमुनिश्री चना ऋषीजी महाराजके शिष्यबाल
 ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषि जी रचित
 अधोद्वार
 कथागार
 नामक
 ग्रंथ

समाप्त



अधोद्धार कथागार ग्रंथका-शुद्धिपत्र.

पाठक गणों ! अव्वल निम्न लिखे मुझव शुद्धकर
फिर यत्नामे पढियेजी.

पृष्ठ.	ओली.	अशुद्ध.	शुद्ध	पृष्ठ	ओली.	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	ग्रद्ध	वृद्ध	"	८	वदन	वदन
२	१६	ननरककेआं	नरक के मं	"	"	स्थभ	स्थभन
३	२१	मुख १	मुखन	२९	१०	रे	"
४	८	त्मनृद्धी	रुद्धि	२९	११	का॥	करे
५	१	अप्य	अप्य	३१	"	प्रमा	प्रमाति
"	२	है	तडां	३२	१२	अपेक्षतं	अपेक्षत
"	१६	बहुतगा	बहुतगांय	३५	१०	अमडी	चमडी
"	१९	बहु	बड	३७	३	झुष्ट	भुष्ट
६	२०	माल	तमाल	३९	१९	जिन	जित
"	६	ठोर ठोर	ठोर ठोर	४१	२०	डिक	कोड
"	८	ढेक	ढेक	४७	२०	मगा	मगा
"	९	चालि	चाल	४८	६	गौतमजी	गौतमजी
"	"	पपय	पपया	५१	१७	जानिसाया	जान लिया
"	१०	हाद	होद	"	नोट	भागवे	भागवे
"	"	झरणा	झरणी	५६	१०	पथ	पथ्य
"	१५	सपर्यवांशाठ	पृथवां शिला	"	१३	यत्ना	यत्ना से
८	१	विद्यापति	विद्यापति	६२	७	छाडे	छेडे
"	२	साधन	साधन	६३	७	छाडे	छाडे
९	२	बोधये	बोध पाये	६४	२१	काळ	काळक
"	४	देशवक्त्रो	दे सर्व कोझा	६२	२४	अमसन	असन
"	१६	बपु	बपु	"	१५	असत्र	असत्र
१२	१४	शब्द	शब्द	७०	४	चरे	चरे
१३	२८	इम	इम	१३	१३	यह	है
"	१९	जग	जग	७६	७	है	है
१४	२	कैरु	कैरु	८०	६	जाय	जानो
"	३	न्युना	न्युना	८३	१४	सुनि	मुनि
"	१२	परसिहजपति	परसिहजपति	१०५	४	हाये	आते
१६	१३	धेव	धेव	१०६	२१	करे	करे
१८	२८	आइजो	आईजो	११०	२	युक्ती	युक्ती
"	१९	तप्पा	तृप्पा	"	११	विजय	अमग
२२	१८	कता	कता	११३	१५	देखे	देखे
२३	१४	तितने	तितने	११४	३	अद्व	दत्त
२४	१	चल	चले	११५	८	वदानी	विदानी
२५	३	वदन	वदन	११८	१०	विजय	इंद्रविजय

१११	१४	खष	सख	२३१	१	ये ह	मय ह
"	१६	हेषु	वेषु	२३२	१३	नामराय	नामरम्य
१२१	३	सघाट	सचाट	२३४	१२	भापिन	भापन
१२३	८	दाता	पात	२३६	६	फकर	फकर
१२५	१	जो	ज्यो	२३७	११	भय	भया
"	२	जहैनके	जनके है	२३८	१४	जभ	जर
१२५	५	ऐसे	स ऐसे	२४०	१०	दूर	दुंद
"	१२	अचम्मो	अधम्मो	२४३	६	ऊपर	ऊपर
"	२०	यहेतसि	ये है तसि	२४४	२०	निकात	निकातन
१२६	१३	जाँयो	जाँयो	२४५	१०	महा	महा
"	२०	वायदु	जुवाय	"	१५	चक्र	चक्र
१२८	११	घनरभक्य	घने भरु	"	१३	चुपक	चुपका
"	१२	भुनने	भूषणने	"	२०	लेनधया	लेयाधन
१२९	४	सर माये	सा रमाये	२४६	१४	हयोली	हयला नेद
"	७	राज	राम	२४७	३	प्रकारन	प्रकार के
१३१	७	उपकागाधाकम है	देखो शाबिप-	२४८	११	निन्यणय	निन्य पय
		के भगत में		"	१६	राहोड	राहोड
१४४	१	कुक्छ	कुछ	"	१८	वधवसा	वधवसा
१५५	१४	टल	टल	"	२०	बन्या	बन्या
१५८	१३	फाल	फार	१५९	५	घंठाय	घंठाय
१६६	६	ह	ह	"	१८	तार्यथ	तार्यथ
१६८	२	रदूम	गुश	"	१०	थाय	थाय
१७५	८	धोता	धोता	"	२०	धाम	धाय
१७७	७	धर	धर	१७४	४	उक	एक
१८१	१३	निकाजित	निकाजित	१५७	१५	दहा	दोहा
१९५	३	अपमान	अममान	१६४	२	द्वय	द्वय
१९६	९	जैय	जीय	१७१	७	प्रगममाये	प्रगमाये
१९७	२	पाय	पाय	१७५	१३	गया	मन गया
"	"	भा	वा	१७९	५	भइ	भाइ
"	१२	सा	सा	१८१	१४	जुगमे	जुग दिदमे
२००	३	अनार्थी	यताओ	१८६	११	शाख	शाख
२०१	१०	मुखा	मुखी	१८९	१६	उसक	उसके
२१६	१३	घता	घात	१९०	१	बधाइ	बधाइ
२२१	२१	लाके	लोक	"	८	कुय	कुदुम्य
२२२	९	सलम	समल	२११	१४	दखाइ	दखाइ
२२४	१२	उक्ष	उष्ण	२१२	७	ढंकरु	ढंकरु
२२५	६	बोहिर	वाडि	"	१५	हय	हय
"	१५	भाट	भट	"	१३	घटनल	घटने

पृष्ठ ओली अनुद शुद्ध पृष्ठ ओली अनुद शुद्ध

११९	१४	खष	सख	१३१	१	ये है	गय है
"	१६	हंघु	वेंघु	१३२	१७	नामराय	नामरभ
१२१	३	सघाट	सचाट	१३४	१२	आंगन	आंगन
१२३	८	दाता	पात	१३६	६	बंकर	बंकर
१२५	१	जो	ज्यो	१३७	११	भय	भया
"	२	जहैनके	जनके है	१३८	१४	जभ	जय
१२५	५	ऐस	स ऐस	१४०	१०	टूट	टुटे
"	१२	अचमो	अधमो	१४३	६	ऊपर	ऊपर
"	२०	यहैतसि	ये है तसि	१४४	२०	निकाल	निकालन
१२६	१७	जाँयो	जाँयो	१४५	१०	महं	महं
"	२०	वायडु	डुवाय	"	१५	चरु	चरु
१२८	११	घनरभरुय	घन भरु	"	१७	चुपक	चुपक
"	१२	भूतने	भूतन	"	२०	लेंमधया	लेंमधन
१२९	४	सर मांये	सा रमाये	१४६	१४	हवीलो	हवीला तह
"	७	राज	राज	१४७	३	प्रकारन	प्रकार के
१३१	७	एकगाथाकम है	देखो शृङ्गिपड-	१४८	११	निम्यणय	निम्य णय
		के अन्त में		"	११	राहीड	राहीड
१४४	१	कुछ	कुछ	"	१८	दयदत्ता	दयदत्ता
१४५	१४	टल	टल	"	२०	कन्या	कन्या
१४८	१७	काल	कार	१४९	५	यंठाय	यंठाय
१६८	६	राइ	राइ	"	१८	तारियच	तारियच
१६८	२	रुम	रुम	"	"	थाय	थाय
१७५	८	धोता	धोता	"	२०	धाम	धाय
१७७	७	भर	भर	१५०	४	उक	एक
१८९	१७	निकाजित	निकाजित	१५१	१५	दहा	दोहा
१९५	३	अपमान	असमान	१५२	२	द्वय	द्वय
१९६	९	जय	जाय	१५३	७	प्रगममाये	प्रगमाये
१९७	२	पाय	पाय	१५४	१७	गणया	गन गया
"	"	भां	बां	१५५	५	भर	भार
"	१२	सा	सां	१५६	१४	जुगम	जुग हिंदम
२००	३	अनार्थी	यताभां	१५७	११	शान्न	शान्न
२०१	१०	मुखा	मुखी	१५८	१६	उसरक	उसरक
२१६	१७	घता	घात	१५९	१	घथाइ	घथाइ
२२१	२१	लाक	लाक	"	८	कुय	कुटुम्ह
२२२	९	सलम	समल	१६०	१४	दखाइ	दखाइ
२२४	१२	उध	उध	१६१	७	ढेकरु	ढेकरु
२२५	६	योहिर	चाहि	"	१५	हय	हय
"	१५	भाट	भट	"	१७	घदनल	घदत

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412	1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436	1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	1460	1461	1462	1463	1464	1465	1466	1467	1468	1469	1470	1471	1472	1473	1474	1475	1476	1477	1478	1479	1480	1481	1482	1483	1484	1485	1486	1487	1488	1489	1490	1491	1492	1493	1494	1495	14
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	----

पृष्ठ	भोली	अनुद	शुद्ध	पृष्ठ	भोली	अनुद	शुद्ध
१११	१४	स्य	स्य	१३१	१	ये ह	गय ह
"	१६	हेपु	वेषु	१३२	१७	नामराय	नामरस्य
१११	३	सचाट	सचाट	१३४	१२	आपन	आपने
११३	४	दाता	पात	१३६	६	बकर	दकर
११५	१	जो	अयो	१३७	११	भय	भया
"	२	अहेनके	अनके है	१३८	१४	जम	जय
११५	५	ऐस	स ऐस	१४०	१०	दुद	दुद
"	११	अयमो	अयमो	१४३	६	ऊपर	ऊपर
"	२०	येहेनमि	ये हे तीम	१४४	२०	निकाळ	निकाळन
११६	१३	जायो	जायो	१४५	१०	महा	महा
"	१५	दाय	दाय	"	१५	चरु	चरु
११७	११	एनअकय	एन अक	"	१७	चुपक	चुपक
"	१२	भूतन	भूतन	"	२०	लमधया	लमधन
११७	६	सर माये	भा रमाये	१४६	१५	हथीली	हथीली तह
"	७	राज	राज	१४७	३	प्रकारन	प्रकार फ
११८	अहमाधकम है देखा शादिक-			१४८	१०	नित्यणय	नित्य णय
	क भान म			"	११	राहाड	राहाड
११८	१	कुछ	कुछ	"	१६	दयदत्ता	दयदत्ता
११८	१६	टल	टल	"	२०	अम्या	अम्या
११८	१३	कार	कार	१४९	५	पेडाव	पेडाव
१२०	६	राह	राह	"	१६	तीर्यच	तीर्यच
१२०	५	गुम	गुम	"	५	घाय	घाय
१२१	६	धाता	धाता	"	२०	धाम	धाय
१२३	३	अर	अर	१५०	६	अक	अक
१२५	१३	निकागिन	निकागिन	१५१	१५	हहा	हहा
१२५	६	अममान	अममान	१५२	२	हय	हय
१२६	१	अय	जाय	१५३	३	प्रगममाये	प्रगमाये
१२७	२	दाय	पाय	१५५	१३	यगया	मन गया
"	"	आ	आ	१५५	१०	भा	भा
"	१५	मा	मा	१५६	१५	जुगम	जुग हिम
१२८	३	अनाया	अनाया	१५६	११	शाम	शाम
१२८	१०	मुखा	मुखा	१५७	१६	उमक	उमक
१२८	१३	घना	घान	१५८	१	अभा	अभा
१२९	२१	लाक	लाक	"	६	कु	कु
१२९	९	अमल	अमल	१५९	१६	दमा	दमा
१२९	१५	दुध	दुध	१६०	३	दक	दक
१२९	६	कादिक	कादिक	"	१५	हय	हय
"	१०	मद	मद	"	१३	अन	अन



पृ. नं.	मोली.	अ. नं.	श्रुत.	पृ. नं.	मोली.	अ. नं.	श्रुत.
१८	१८	१८	१८	४३३	३	मयह	मनहर
१९	१९	१९	१९	४३३	१	सुदि	प्रदि
२०	२०	२०	२०	४३४	७	सोपुगुत्तम	शोती नयपुं
२१	२१	२१	२१	४३५	१	उपाजत	अपजित
२२	२२	२२	२२	४३६	६	अपकर्म	अपकर्म
२३	२३	२३	२३	४३७	७	अपकर्म	अपकर्म
२४	२४	२४	२४	४३८	२	अपकर्म	अपकर्म
२५	२५	२५	२५	४३९	४	अपकर्म	अपकर्म

पृष्ठ ११० की ७ वीं मोली के नीचे दो ओलीयों रहगइसे
 जाकर तो शील नाशाही पायाज्यों छान्छीक प्रेदी मजाप
 नेत्यप्रत नहीं करेसरम आहागजिममेजागृक होवेकानधिकार
 इन अशुद्धियों मियाप औरभा हस्यदीर्घ काना मा
 या भक्षर चणोरला या विंगल सम्बन्धि यष्टतई अशुद्धियें
 त्यत्ययुद्धि दृष्टिदाय वरुणों जिष्टर की अविज्ञता से रसगई
 उन सय को स्वमत्यनुमार गुधार कर ग्रंथ कर्ताक आचार्यकी
 नरक लक्ष रम्ब सयें दृग्गुणों को त्याग कर पढ़िये और सद्गुणों
 का स्वीकार कीर्त्तये पापका त्यागर धर्मात्मायन भगन्दा न
 निर्दिष्टनेय ! पेदी नम्र विनंती हैजी.

वीरसंवत्सर २४२०

अमोलखर्कदि.

भाद्रप पूर्णिमा

जैनस्थान पारकमान हैद्राबाद.



